# मानवता में व्यावहारिक अनुसंधान के उपरांत प्रस्तुत शोध प्रबंध

| | | |
|---|---|---|
| **अनुसंधान का विषय** | - | **पं. श्रीराम शर्मा आचार्य: उनका व्यक्तित्व एवं कार्य और मानवता** |
| **शोधार्थी का नाम** | - | गोवर्धन आड़कुजी बिसेन |
| **पंजीयन संख्या** | - | HR/३६९/६४ दिनांक- २७/०७/२०२३ |
| **शोधार्थी का पता** | - | गायत्रीकुंज, गजानन कॉलोनी, अंगूर बगीचा रोड़, कुड़वा, गोंदिया (महाराष्ट्र) पिन- ४४१६१४ |
| **शोध पर्यवेक्षक** | - | डॉ. अजीत कुमार जैन,<br>प्रोफेसर, एस. व्ही. कॉलेज, अलिगड़, उत्तर प्रदेश |


## दिव्य प्रेरक कहानियाँ मानवता अनुसंधान केंद्र

**DIVYA PRERAK KAHANIYAN HUMANITY RESEARCH CENTRE**

An ISO 21001:2018 Certified Research Institution

Regd. Under Indian Trust Act 1882, Government of India

पंजीकृत कार्यालय- ठेकमा, जिला- आजमगढ़, उत्तर प्रदेश (भारत)

Website: www.dpkavishek.in I Email: dpkhrc@gmail.com

# शोधार्थी घोषणा पत्र

मैं **गोवर्धन बिसेन** पुत्र - **आड़कुजी बिसेन** पता - **गायत्रीकुंज, गजानन कॉलोनी, अंगूर बगीचा रोड़, कुडवा, गोंदिया (महाराष्ट्र) पिन- ४४१६१४** पंजीयन संख्या - **HR/३६९/६४** दिनांक- **२७/०७/२०२३** यह घोषणा करता हूँ की प्रस्तुत शोध प्रबंध शीर्षक "**पं. श्रीराम शर्मा आचार्य: उनका व्यक्तित्व एवं कार्य और मानवता**" जो व्यावहारिक अनुसंधान का मूल भाग है तथा अप्रकाशित है। इस शोध प्रबंध को **डॉ. अजीत कुमार जैन, प्रोफेसर, एस. व्ही. कॉलेज, अलिगड़, उत्तर प्रदेश** के मार्गदर्शन में हमने पूरा किया है।

मैं यह भी घोषणा करता हूँ की इस शोध कार्य में हमने किसी प्रकार के साहित्यिक चोरी नहीं की गई है तथा इससे पहले किसी अन्य संस्थान में डीग्री डिप्लोमा के लिए उपयोग नहीं किया गया है। हमने यह अपना अनुसंधान कार्य **दिव्य प्रेरक कहानियाँ मानवता अनुसंधान केन्द्र** द्वारा प्रतिपादित सभी नियम व निर्देशों के तहत पूर्ण किया है।

**दिनांक — २६/०८/२०२५** **शोधार्थी का हस्ताक्षर**

**(गोवर्धन बिसेन)**

# पर्यवेक्षक घोषणा पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि दिव्य प्रेरक कहानियाँ मानवता अनुसंधान केंद्र अंतर्गत शोधार्थी '**श्री गोवर्धन बिसेन**' पंजीयन संख्या - **HR/३६९/६४** दिनांक- **२७/०७/२०२३** शीर्षक- "**पं. श्रीराम शर्मा आचार्य: उनका व्यक्तित्व एवं कार्य और मानवता**" के तहत प्रस्तुत अनुसंधान/शोध प्रबंध मूल व अप्रकाशित भाग है। इनके द्वारा मेरे निर्देशन में यह शोध कार्य किया गया है एवं शोध प्रबंध साहित्यिक चोरी रहित, उत्कृष्ठ तथा शोध प्रकाशन के लिए उपयुक्त है।

वर्तमान में यह व्यवहारिक अनुसंधान कार्य समाज में सामाजिक समरसता, आपसी एकता, प्रेम, सहयोग, परोपकार तथा नैतिकता, मानवता युक्त सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाने में अति महत्वपूर्ण साबित होगा। इस तरह का अनुसंधान कार्य करना, अनुसंधान कर्ता की कार्य कुशलता व सच्ची मानवता के प्रति समर्पण को दर्शाता है।

यह भी प्रमाणित किया जाता है कि शोधार्थी ने अपना अनुसंधान कार्य **दिव्य प्रेरक कहानियाँ मानवता अनुसंधान केन्द्र** द्वारा प्रतिपादित सभी नियम व निर्देशों के तहत पूर्ण किया है।

मै शोधार्थी के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

**दिनांक — २६/०८/२०२५** **पर्यवेक्षक का हस्ताक्षर**

नाम - **डॉ. अजीत कुमार जैन**
पद नाम - **प्रोफेसर एवं (पू.) विभागाध्यक्ष**
पता - **एस. व्ही. कॉलेज,**
**अलिगड़, उत्तर प्रदेश**

# गुरुदेव वंदना

(*दोहा छंद*)

हे युगऋषि! प्रकाशपुंज, मानवता की खान।
गोकुल वंदना करता, गाकर के गुणगान ॥धृ॥

श्रम, साधना, सेवा का, अनुपम जीवन-दीप।
तेरे तप से प्रकाशित, मानवता का सीप ॥
हर दुखित जन-मन को दी, आशा की पहचान।
गोकुल वंदना करता, गाकर के गुणगान ॥१॥

ज्ञान-विज्ञान मिलाकर, मानव को दी चाह।
सत्यं, शिवं, सुंदर से, दिखाई नई राह ॥
सद्गुण का बीज बोकर, किया हृदय उद्यान।
गोकुल वंदना करता, गाकर के गुणगान ॥२॥

देवत्व की ज्योति जगे, जीवन हो उजियार।
धरती पर स्वर्ग उतरे, तेरी यही पुकार ॥
संस्कृति जागृत कर, किया है एहसान।
गोकुल वंदना करता, गाकर के गुणगान ॥३॥

नारी-शक्ति जागर का, तूने किया पुकार,
मनुज में देवत्व देख, किया हृदय उदार।
प्रेम, करुणा, मैत्री का दिया सभी को दान,
गोकुल वंदना करता, गाकर के गुणगान ॥४॥

शांति, समता, एकता का, गुँजा जग में स्वर।
युग-निर्माण का दीपक, जलाया सबके घर ॥
मानवता के हित लिखे, जीवन का उत्थान।
गोकुल वंदना करता, गाकर के गुणगान ॥५॥

हे आचार्य युगदृष्टा, वंदन बारंबार।
तेरी तपश्चर्या को, प्रणमित है संसार ॥
गुरुवर की वाणी से, जीवन हुआ महान।
गोकुल वंदना करता, गाकर के गुणगान ॥६॥

- ***इंजी. गोवर्धन बिसेन 'गोकुल'***

# लेखनी के युगऋषि

ध्यानमग्न ऋषि सम जो जिए, वो तप का तेज संजीव था।
हर साँस में गायत्री गूँजी, हर कर्म युग निर्माण का नींव था॥
जिनके जीवन के हर क्षण में, सेवा-सृजन का पंथ चला।
जागृति की वो ध्वनि बने, जो मानवता के हित सदा ढला॥१॥

लेखन बना तपस्वी की पूजा, कलम बनी जब साधना।
हर शब्द बना एक यज्ञ-ज्वाला, हर ग्रंथ बना आराधना॥
आत्मशोधन से राष्ट्र निर्माण तक, विचारों की झड़ी लगी।
जन-जन के अंतर्मन में, नव चेतना की थी ज्योत जगी॥२॥

तीन सहस्त्र से भी अधिक ग्रंथों में जो था ज्ञान समाया।
धर्म-विज्ञान,नीति-संयम से, विश्व मानवता को जगाया॥
बालक से वृद्ध, नारी से नर, हर पथिक को राह मिली।
शब्दों के उस अमृतपान से, साधक की सुध-बुध खिली॥३॥

वेद-उपनिषद, गीता-वाणी, पूज्यश्री ने अर्थ नया दिया।
गूढ़ रहस्य जनभाषा में, सरल, सुलभ कर व्यक्त किया॥
नया सेतु रच ऋषि परंपरा को वर्तमान से था जोड़ना।
संवादों में विज्ञान बसा था, व्यवहार में श्रम-साधना॥४॥

न कोई भाषा-विलास रहा, न शब्दों की दर्श माला थी।
हर पंक्ति एक प्रकाश किरण, हर पुस्तक एक ज्वाला थी॥
करुणा, तर्क अरु तप की त्रिवेणी, उनके हर लेख में बहती।
वो लेखनी नहीं, विचार थी—जो ज्वाला बनकर कहती॥५॥

"मनुष्य में देवत्व का उदय", यह स्वप्न था बहुत बड़ा।
साहित्य से स्वर्ग धरा पर, सचमुच उतरता दीख पड़ा॥
गुरुदेव की लेखनी अमर है, युगधर्म की वो ज्योति बनी।
'गोकुल' कहे वो युगऋषि थे, युग चेतना की रीति बनी॥६॥

- ***इंजी. गोवर्धन बिसेन 'गोकुल'***

# अनुक्रमणिका


| अ.क्र. | अध्याय | पृष्ठ क्रमांक |
|---|---|---|
| १. | कृतज्ञता ज्ञापन | ७ |
| २. | शोध परिचय | ९-१३ |
| | २.१. मानवता की व्याख्या | ९ |
| | २.२. अनुसंधान विषय की संक्षिप्त रूपरेखा | १० |
| | २.३. भाषा-शैली | १२ |
| ३. | अनुसंधान विषय वस्तु की भूत, भविष्य और वर्तमान परिप्रेक्ष्य में व्याख्या | १४ |
| ४. | पं. श्रीराम शर्मा आचार्य: उनका व्यक्तित्व एवं कार्य और मानवता पर अध्ययन की आवश्यकता | १८ |
| ५. | आचार्यजी के जीवन दर्शन में समाहित उनका व्यक्तित्व और मानवता का तार्किक विश्लेषण | २१-३४ |
| | ५.१. जन्म एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि | २१ |
| | ५.२. प्रारंभीक जीवन | २१ |
| | ५.३. प्रारंभिक शिक्षा, स्वदेशी चेतना और शस्त्रविद्या | २२ |
| | ५.४. करुणा, क्षमा और नि:स्वार्थ सेवा का अद्भुत उदाहरण | २३ |
| | ५.५. करुणा, संवेदना और पशुप्रेम का अद्भुत उदाहरण | २४ |
| | ५.६. गुरुदीक्षा एवं आध्यात्मिक साधना | २५ |
| | ५.७. स्वतंत्रता संग्राम में भागीदारी और स्वदेशी उद्योगों को बढ़ावा | २७ |
| | ५.८. हिमालय यात्रा, महापुरुषों से संपर्क और 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका का प्रकाशन | २८ |
| | ५.९. भगवती देवी का जीवन संगिनी के रूप में योगदान | २९ |
| | ५.१०. गायत्री महाविज्ञान ग्रंथ की रचना | ३० |
| | ५.११. गायत्री तपोभूमि की स्थापना | ३० |
| | ५.१२. गायत्री महायज्ञों का आयोजन | ३० |
| | ५.१३. अज्ञातवास और माता भगवती देवी जी को कार्यभार सौंपना | ३१ |
| | ५.१४. युग निर्माण विद्यालय की स्थापना (१९६७) | ३१ |
| | ५.१५. शांतिकुंज की स्थापना और विस्तार (१९७१-१९९०) | ३२ |
| | ५.१६. महाप्रयाण एवं विरासत | ३४ |

| | | |
|---|---|---|
| ६. | पं. श्रीराम शर्मा आचार्यजी के प्रमुख कार्य और मानवता का तार्किक विश्लेषण | ३५-१३३ |
| | ६.१. संघठन एवं मिशन | ३६-४४ |
| | ६.१.१. अखिल विश्व गायत्री परिवार की स्थापना | ३७ |
| | ६.१.२. युग निर्माण योजना | ४० |
| | ६.२. महत्त्वपूर्ण स्थापनाएँ | ४५-६२ |
| | ६.२.१. युगतीर्थ आँवलखेड़ा | ४६ |
| | ६.२.२. अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा | ४९ |
| | ६.२.३. गायत्री तपोभूमि, मथुरा | ५२ |
| | ६.२.४. शांतिकुंज, हरिद्वार | ५५ |
| | ६.२.५. ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान, हरिद्वार | ५७ |
| | ६.२.६. देवसंस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार | ५९ |
| | ६.२.७. देशभर में गायत्री शक्तिपीठ, प्रज्ञापीठ एवं चेतना केंद्र जैसी प्रज्ञा संस्थानों की स्थापना | ६१ |
| | ६.३. महत्त्वपूर्ण अभियान | ६३-७७ |
| | ६.३.१. विचार क्रांति अभियान | ६४ |
| | ६.३.२. नारी जागरण अभियान | ६७ |
| | ६.३.३. गायत्री परिवार का यज्ञ अभियान | ७१ |
| | ६.३.४. गायत्री परिवार का आपदा राहत अभियान | ७५ |
| | ६.४. इक्कीसवीं सदी का संविधान - युग निर्माण सत्संकल्प | ७८ |
| | ६.५. युग निर्माण का शत सूत्री कार्यक्रम | ७९ |
| | ६.६. सप्त सूत्री आंदोलन | १०९ |
| | ६.७. साहित्यिक योगदान | १२४ |
| ७. | स्वाभिमत (खुद का नजरिया) | १३४ |
| ८. | शोध का सार | १३९ |
| ९. | संदर्भ सूचि (Bibliography) | १४६ |
| १०. | शोधार्थी का परिचय | १४९ |

# १. कृतज्ञता ज्ञापन

मेरा अनुसंधान विषय है – "पं. श्रीराम शर्मा आचार्य : उनका व्यक्तित्व एवं कार्य और मानवता"

मानवता-केन्द्रित अनुसंधानों की दिशा में कार्यरत संस्था दिव्य प्रेरक कहानियाँ अनुसंधान केंद्र, ठेकमा, जनपद आज़मगढ़ (उत्तर प्रदेश) के बारे में मुझे सामाजिक माध्यमों के द्वारा जानकारी प्राप्त हुई। इस संस्था द्वारा लगभग १०८ विषयों पर अनुसंधान की सुविधा उपलब्ध है। उन्हीं में से एक विषय था – "दुनिया के कोई भी असाधारण व्यक्ति: उनके व्यक्तित्व और मानवता"।

चूँकि मेरा जीवन बचपन से ही अखिल विश्व गायत्री परिवार से सम्बद्ध रहा है, अतः मेरे हृदय में सहज ही यह विचार उदित हुआ कि क्या मैं इस पावन अवसर पर गायत्री परिवार के संस्थापक, परमपूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के व्यक्तित्व, उनके कार्य और उनकी मानवतामयी दृष्टि पर अनुसंधान कर सकता हूँ। इस संबंध में मैंने संस्था के मुख्य प्रबंध निदेशक डॉ. अभिषेक कुमार जी से संपर्क किया। उन्होंने सस्नेह अनुमोदन प्रदान करते हुए मुझे इस विषय पर पंजीकरण की अनुमति दी। तदनुसार आवश्यक दस्तावेज और शुल्क के साथ मैंने दिनांक २७.०७.२०२३ को पंजीकरण संपन्न किया।

मेरे स्वर्गीय पिताजी श्री आड़कुजी बिसेन और स्वर्गीय माताजी श्रीमती लक्ष्मीबाई बिसेन ने ही बचपन से मेरे जीवन में वे संस्कार रोपित किए, जिनकी प्रेरणा से मैं गायत्री परिवार से जुड़ सका और अंततः इस विषय पर अनुसंधान का संकल्प ले सका। मैं उनके चरणों में विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

अनुसंधान केंद्र द्वारा समय-समय पर आयोजित ऑनलाइन मार्गदर्शन कक्षाओं में सम्मिलित होकर मैंने अपने अध्ययन की दिशा को सुनिश्चित किया। इन्हीं माध्यमों से मेरा परिचय एस. व्ही. कॉलेज, अलीगढ़ (उ.प्र.) के प्राध्यापक, आदरणीय डॉ. अजित कुमार जैन जी से हुआ, जिन्हें इस अनुसंधान हेतु मेरा मार्गदर्शक नियुक्त किया गया। उनके स्नेहपूर्ण मार्गदर्शन एवं सतत प्रोत्साहन के बिना यह कार्य पूर्ण हो पाना असंभव था। मैं उनके प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। साथ में संस्थान के मुख्य प्रबंध निदेशक डॉ. अभिषेक कुमार जी का भी मैं सहृदय आभार व्यक्त करता हूँ, जिनकी समय-समय पर मिली प्रेरणा एवं सलाह ने मुझे इस शोध यात्रा में पथप्रदर्शन किया।

मेरे शोध कार्य में विशेष सहयोग पुणे (महाराष्ट्र) के ८४ वर्षीय आदरणीय इंजी. भास्कर माधव शुक्लाजी का रहा। वे गायत्री परिवार के कर्मठ कार्यकर्ता रहे और उन्होंने अकोला तथा बुलढाणा जिलों में गुरुदेव के विचारों को साहित्य के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाने का कार्य किया। उन्होंने ही मुझे इस अनुसंधान हेतु आवश्यक गुरुदेव से संबधित साहित्य की सूची उपलब्ध कराई। दुर्भाग्यवश दिनांक २२.०४.२०२५ को वे गुरुदेव की शरण में विलीन हो गए। मैं उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए इस शोध प्रबंध को उनकी पावन स्मृति को समर्पित करता हूँ।

इसी प्रकार गोंदिया (महाराष्ट्र) के इंजी. देबीलाल पटले जी ने अपने "विचार क्रांति वाचनालय" के माध्यम से मुझे अनुसंधान के लिए आवश्यक साहित्य उपलब्ध कराया। उनका सहयोग भी मेरे लिए अमूल्य रहा। इनका भी मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

शांतिकुंज हरिद्वार से प्राप्त प्रेरणादायी वीडियो तथा सामाजिक माध्यमों द्वारा आदरणीय डॉ. प्रणव पंड्या जी (प्रमुख, अखिल विश्व गायत्री परिवार), आदरणीय डॉ. चिन्मय पंड्या जी (प्रती-कुलपती, देवसंस्कृति विश्वविद्यालय) तथा वरिष्ठ साधक आदरणीय विरेश्वर उपाध्याय जी के विचार सुनने का अवसर मिला। इन महानुभावों के दिव्य विचारों ने अप्रत्यक्ष रूप से मेरे चिंतन को दिशा प्रदान की। उनके प्रति आभार व्यक्त करने की सामर्थ्य मुझमें नहीं है। मैं माँ गायत्री, परमपूज्य गुरुदेव तथा वंदनीय माताजी से प्रार्थना करता हूँ कि इन सभी के जीवन में दीर्घायु एवं उत्तम स्वास्थ्य का संचार होता रहे।

अंततः, इस शोध यात्रा के सफल संपादन में प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग देने वाले सभी मित्रों, साधकों, शुभचिंतकों तथा आत्मीयजनों का मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

यह शोध मेरे लिए केवल एक अकादमिक प्रयास नहीं, बल्कि ऋषि चेतना को समझने और उसे अभिव्यक्त करने का विनम्र प्रयास है। पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने जिस प्रकार मानवता को नवदृष्टि प्रदान की और जीवन के आदर्श मार्ग का उद्घाटन किया, उसका एक सूक्ष्म प्रतिबिंब इस अनुसंधान में प्रस्तुत करने का मेरा प्रयास है।

मेरी दृष्टि सीमित हो सकती है, मेरी भाषा अल्प हो सकती है, परंतु मेरी भावना और श्रद्धा असीम है। इस शोध ग्रंथ में यदि कोई अच्छाई दिखाई दे, तो उसे गुरुदेव का प्रसाद मानकर स्वीकार करें और जो भी त्रुटियाँ हों, उन्हें मेरी मानवीय सीमा मानकर कृपया मुझे अवगत कराएँ।

***— गोवर्धन आड़कुजी बिसेन***
***(शोधार्थी)***

# २. शोध परिचय

## २.१. मानवता की व्याख्या

मानवता एक व्यापक, गहन और जीवन-दायिनी अवधारणा है, जो मनुष्य की प्रकृति, उसके गुणों और उसके नैतिक, सामाजिक व आध्यात्मिक मूल्यों की पूर्ण अभिव्यक्ति है। यह केवल एक विचार या दर्शन नहीं, बल्कि एक ऐसा आचरण है जो व्यक्ति को आत्मकेन्द्रित जीवन से ऊपर उठाकर परोपकार, दया, प्रेम, करुणा और सह-अस्तित्व की दिशा में अग्रसर करता है। मानवता वह गुण है जो मनुष्य को 'मनुष्य' बनाता है—संवेदनशील, सहृदय और समाज के प्रति उत्तरदायी।

### २.१.१. मानवता का अर्थ

मानवता का अर्थ है—मनुष्यता, यानी वह स्वभाव और आचरण जो एक मनुष्य को श्रेष्ठ बनाता है। यह किसी जाति, धर्म, भाषा या भौगोलिक सीमाओं से परे, संपूर्ण विश्व में सभी मनुष्यों को एक सूत्र में जोड़ने वाली भावना है, जो समानता, भाईचारे, करुणा, अहिंसा और परोपकार को मूल में रखती है।

### २.१.२. मानवता के मुख्य तत्व

- **करुणा और दया** – दूसरों के दुख को समझना और उसकी सहायता करना।
- **सहानुभूति और संवेदनशीलता** – दूसरों की भावनाओं को महसूस करना।
- **समानता और भाईचारा** – बिना किसी भेदभाव के सभी को समान मानना।
- **अहिंसा और शांति** – किसी भी प्रकार की हिंसा और द्वेष से दूर रहना।
- **सेवा और परोपकार** – निःस्वार्थ भाव से समाज और मानवता की सेवा करना।

### २.१.३. दर्शन और मानवता

- भारतीय संस्कृति में मानवता को "वसुधैव कुटुंबकम्" (संपूर्ण विश्व एक परिवार है) के रूप में देखा गया है।
- पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने इसे "मनुष्य में देवत्व का उदय और धरतीपर स्वर्ग का अवतरण" की भावना से जोड़ा।

### २.१.४. मानवता की अवधारणा

'मानवता' शब्द के **म + आ + न + व + त + आ** इन अक्षरों में छिपे मानवीय मूल्यों का भावपूर्ण विश्लेषण इसकी गहराई को और स्पष्ट करता है:

- **म** – मैत्री, जो समाज में प्रेम और सौहार्द लाती है।
- **आ** – आत्मीयता, जो संबंधों में अपनापन भरती है।
- **न** – निस्वार्थता, जो सेवा को संकल्प में बदलती है।
- **व** – विनम्रता, जो अहंकार को समाप्त कर समता की भूमि तैयार करती है।
- **त** – त्याग, जो स्वार्थ से ऊपर उठकर लोकमंगल में रत करता है।
- **आ** – आदर्श, जो जीवन को नैतिकता और प्रेरणा से भर देता है।

इन मूल्यों के समावेश से ही मानवता की सच्ची स्थापना होती है। जब ये गुण विचार से व्यवहार तक उतरते हैं, तब एक समरस, संवेदनशील और समृद्ध समाज का निर्माण संभव होता है। इस प्रकार मानवता केवल एक सामाजिक अवधारणा नहीं, बल्कि जीवन को आलोकित करने वाली नैतिक और भावनात्मक प्रेरणा है, जो आत्मकल्याण के साथ-साथ लोककल्याण का भी मार्ग प्रशस्त करती है।

### २.१.५. पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा मानवता की व्याख्या

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य की दृष्टि में मानवता का अर्थ केवल करुणा या दया नहीं था। वे मानते थे कि सच्ची मानवता वह है, जिसमें मनुष्य अपने भीतर के देवत्व को जाग्रत करे — वह कर्तव्यपरायण, सच्चरित्र, समर्पित और सहिष्णु बने। आचार्यजी ने मानवता को जीवन का सर्वोच्च उद्देश्य और ईश्वरत्व की व्यावहारिक अभिव्यक्ति माना है। उनके अनुसार, मानवता केवल एक भावना नहीं, बल्कि एक जीवनशैली है, जिसमें सेवा, करुणा, त्याग, प्रेम और सह-अस्तित्व के मूल तत्व समाहित होते हैं। मानवता का अर्थ है— दूसरों की पीड़ा को समझना, अपने सुख-दुख से ऊपर उठकर समाज के हित के लिए कार्य करना, और हर प्राणी में परमात्मा के अंश को देखना।

वे कहते हैं कि यदि हम दूसरों के लिए नहीं जीते, तो हमारी पूजा, साधना, धर्म और ज्ञान सभी निरर्थक हैं। मानवता, उनके अनुसार, वसुधैव कुटुंबकम् की भावना को आत्मसात करना है—जहाँ समस्त विश्व को एक परिवार मानते हुए प्रेम, सहयोग और समानता के आधार पर जीया जाता है।

उन्होंने "युग निर्माण योजना" और "इक्कीसवीं सदी का संविधान" के माध्यम से मानवता आधारित समाज की स्थापना का आह्वान किया। उनके विचारों में सच्ची मानवता वही है, जो संकीर्णताओं से ऊपर उठकर परोपकार और लोकमंगल को ही अपना धर्म समझती है।

यही कारण है कि उनके आंदोलन केवल भावनात्मक नहीं, अत्यंत व्यवस्थित और व्यवहारिक रहे। 'विचार क्रांति अभियान', 'यज्ञ अभियान', 'नारी जागरण अभियान', 'युग निर्माण का शत सूत्री कार्यक्रम', 'सप्तसूत्रीय आंदोलन' जैसे उपक्रमों ने समाज के हर वर्ग को जोड़ने और जाग्रत करने का प्रयास किया। वे धर्म को कर्मकांड नहीं, आचरण मानते थे। उनका स्पष्ट मत था — *"धर्म का अर्थ है – संयम, सदाचार, सेवा और समर्पण।"* यह परिभाषा ही उन्हें अन्य धार्मिक गुरुओं से अलग करती है। उन्होंने जीवन को धर्म बना दिया और धर्म को जीवन की उपयोगिता में ढाल दिया।

इस प्रकार, पं. श्रीराम शर्मा आचार्य की दृष्टि में मानवता ही धर्म, साधना और समाज सुधार का मूल आधार है।

## २.२. अनुसंधान विषय की संक्षिप्त रूपरेखा

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिकता, समाज सुधार और मानवता के प्रति समर्पित एक युगांतरकारी व्यक्तित्व थे। उनका सम्पूर्ण जीवन वेदों, उपनिषदों, भगवद्गीता एवं भारतीय ऋषि परंपरा के आदर्शों पर आधारित था। उन्होंने न केवल इन सिद्धांतों को आत्मसात किया, बल्कि उन्हें अपने जीवन में चरितार्थ कर समाज के समक्ष एक प्रामाणिक उदाहरण प्रस्तुत किया। वे ऐसे युगद्रष्टा संत थे जिन्होंने आत्मविकास और समाजोत्थान को एक-दूसरे से जोड़कर साधना का एक नया व्यावहारिक दर्शन प्रस्तुत किया। "पं. श्रीराम शर्मा आचार्य: उनका व्यक्तित्व एवं कार्य और मानवता" इस शोध का मुख्य केंद्रबिंदु उनके

जीवन की उस विशेष धारा को उजागर करना है, जिसमें आध्यात्मिक प्रगति और मानवीय संवेदनाओं का सामंजस्य दिखाई देता है।

### २.२.१. आध्यात्मिक आधार पर जीवन की दिशा

पं. श्रीराम शर्मा आचार्यजी ने आत्मविकास और समाजोत्थान को एकरूप मानते हुए साधना का व्यावहारिक मार्ग प्रस्तुत किया। उन्होंने साधना, सेवा और स्वाध्याय को जीवन का मूल तत्व बनाया, और व्यक्तिगत मोक्ष की साधना को समाज कल्याण से जोड़ा। वे मानते थे कि सच्चा अध्यात्म वही है जो जीवन और समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाए।

### २.२.२.संस्थागत प्रयासों द्वारा मानवता की सेवा

पं. श्रीराम शर्मा आचार्यजी के द्वारा स्थापित अखिल विश्व गायत्री परिवार, युग निर्माण योजना, युगतीर्थ आँवलखेडा, अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा, गायत्री तपोभूमि मथुरा, शांतिकुंज हरिद्वार, ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान, देव संस्कृति विश्वविद्यालय और देशभर के गायत्री शक्तिपीठ, प्रज्ञापीठ एवं चेतना केंद्र जैसे संस्थानों ने व्यापक रूप से लोगों में आध्यात्मिक चेतना और सामाजिक उत्तरदायित्व का भाव विकसित किया। इन संस्थाओं के माध्यम से चरित्र निर्माण, नैतिक शिक्षा, सामाजिक समरसता और सेवा के कार्य निरंतर संचालित हो रहे हैं।

### २.२.३.साहित्यिक योगदान द्वारा विचार क्रांति

पं. श्रीराम शर्मा आचार्यजी ने ३२०० से अधिक ग्रंथों की रचना की, जिनमें व्यक्ति निर्माण, परिवार निर्माण, समाज और राष्ट्र निर्माण, आत्मचिंतन, स्वास्थ्य, योग-साधना, धर्म और विज्ञान का समन्वय, नैतिक मूल्यों का पुनरुत्थान, स्त्री जागरण, बाल निर्माण, युवाओं का चरित्र निर्माण और मानवता के उत्थान जैसे अनगिनत विषय समाहित हैं। उनका साहित्य केवल वैचारिक प्रेरणा नहीं, बल्कि जीवन को दिशा देने वाली व्यवहारिक साधना है।

### २.२.४. मानवता के प्रति व्यापक दृष्टिकोण

पं. श्रीराम शर्मा आचार्यजी करुणा, सेवा, समता, दया, संयम और सहानुभूति को मानव जीवन की आधारशिला मानते थे। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि जब तक समाज में नैतिकता और आत्मिक चेतना नहीं जागेगी, तब तक स्थायी सामाजिक परिवर्तन संभव नहीं है।

### २.२.५. युग निर्माण योजना द्वारा सामाजिक क्रांति

पं. श्रीराम शर्मा आचार्यजी ने नैतिक क्रांति, बौद्धिक क्रांति और सामाजिक क्रांति की त्रिसूत्रीय योजना द्वारा युग निर्माण का खाका प्रस्तुत किया। यह योजना व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र के समग्र उत्थान की दिशा में मार्गदर्शन करती है।

### २.२.६. शोध का उद्देश्य

इस शोध का प्रमुख उद्देश्य यह है कि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने अपने विचारों, आचरण, और संस्थागत प्रयासों के माध्यम से मानवता, नैतिक मूल्यों और सांस्कृतिक पुनर्जागरण में किस प्रकार योगदान दिया। यह अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि उनका जीवन अतीत की गौरवगाथा नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य का संजीवनी स्रोत है।

### २.२.७. निष्कर्षात्मक भाव

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा प्रतिपादित मूल्य आज भी समाज में प्रेम, समरसता, करुणा और विश्वबंधुत्व के भावों को पुनः जाग्रत करने में सहायक हैं। उनका जीवन एक जीवंत उदाहरण है कि कैसे एक व्यक्ति के विचार और कर्म, समस्त मानवता को दिशा देने का माध्यम बन सकते हैं। अतः यह अध्ययन न केवल अतीत की यात्रा है, बल्कि वर्तमान और भविष्य की प्रेरणा का स्रोत भी है।

## २.३. भाषा-शैली

### २.३.१. भूमिका

किसी भी शोध प्रबंध की सफलता इस बात पर भी निर्भर करती है कि उसमें प्रयुक्त भाषा और शैली कितनी स्पष्ट, प्रवाहपूर्ण तथा शोधोचित है। प्रस्तुत शोध कार्य में पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के व्यक्तित्व, कार्य और मानवता का विवेचन किया गया है। इसके लिए भाषा का चयन ऐसा किया गया है जो शोध विषय की गंभीरता, वैज्ञानिकता और साहित्यिक सौंदर्य तीनों का संतुलन बनाए रखे।

### २.३.२. भाषा की विशेषताएँ

- **सरल एवं सुबोध भाषा** – शोध प्रबंध में जटिल और अलंकारिक वाक्य विन्यास की अपेक्षा सरल, स्पष्ट और व्यावहारिक शैली अपनाई गई है, ताकि विषयवस्तु पाठकों तक सहजता से पहुँच सके।
- **शुद्ध साहित्यिक हिंदी** – पूरे शोध लेखन में हिंदी की मानक, व्याकरणसम्मत और संस्कृतनिष्ठ शब्दावली का प्रयोग किया गया है। साथ ही प्रसंगानुसार लोकभाषा एवं वैदिक वाङ्मय के उद्धरण भी दिए गए हैं।
- **वैज्ञानिक एवं तर्कपूर्ण भाषा** – चूँकि यह शोध कार्य व्यक्तित्व और कार्यों का विश्लेषण है, इसलिए तर्कसंगतता, तथ्यपरकता और प्रमाणिकता को ध्यान में रखते हुए भाषा को वैज्ञानिक रूप प्रदान किया गया है।
- **भावपूर्ण अभिव्यक्ति** – पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के जीवन और साहित्य का संबंध मानवता, अध्यात्म और भावनाओं से है। अतः भावात्मकता और संवेदनशीलता को ध्यान में रखते हुए भाषा में कोमलता और मधुरता बनाए रखी गई है।

### २.३.३. शैली की विशेषताएँ

- **वर्णनात्मक शैली** – आचार्यजी के व्यक्तित्व, कार्य एवं योगदान का विवेचन करते समय वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया गया है।
- **विश्लेषणात्मक शैली** – मानवता के संदर्भ में उनके विचारों, साहित्य और युग-संदेश का मूल्यांकन करते समय विश्लेषणात्मक पद्धति अपनाई गई है।
- **आलोचनात्मक शैली** – समाज-सुधार और अध्यात्म-विज्ञान से जुड़े उनके योगदान का वस्तुनिष्ठ परीक्षण करते समय आलोचनात्मक दृष्टिकोण अपनाया गया है।
- **प्रमाणिक एवं संदर्भपरक शैली** –तथ्य प्रस्तुत करते समय प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों का संदर्भ देकर शोध को प्रमाणिक बनाया गया है।
- **आध्यात्मिक-साहित्यिक शैली** – आचार्यजी की रचनाओं का विवेचन करते समय उनकी साहित्यिक गरिमा एवं आध्यात्मिकता को ध्यान में रखकर गंभीर, सौम्य एवं प्रेरणादायी शैली का प्रयोग किया गया है।

### २.३.४. भाषा-शैली का औचित्य

- शोध प्रबंध का विषय मानवता, आदर्श और अध्यात्म से जुड़ा हुआ है, इसलिए भाषा-शैली भी उसी अनुरूप चयनित की गई है।
- इसका उद्देश्य केवल तथ्य प्रस्तुत करना नहीं, बल्कि उन तथ्यों के माध्यम से पाठक में प्रेरणा जगाना और आचार्यजी के युगदर्शन को सजीव रूप में प्रस्तुत करना है।
- शोध की भाषा-शैली इस प्रकार गढ़ी गई है कि वह शोधार्थियों, विद्वानों, साहित्यकारों और सामान्य पाठकों सभी के लिए उपयोगी और ग्राह्य हो।

### २.३.५. उपसंहार

संक्षेप में कहा जा सकता है कि प्रस्तुत शोध प्रबंध की भाषा-शैली सरल, साहित्यिक, वैज्ञानिक, प्रमाणिक एवं प्रेरणादायी है। इसमें वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक और आलोचनात्मक तीनों शैलियों का संतुलित प्रयोग किया गया है। यह भाषा-शैली शोध विषय की गरिमा के अनुरूप है और पं. श्रीराम शर्मा आचार्य: उनका व्यक्तित्व, कार्य और मानवता जैसे गंभीर एवं प्रेरणास्रोत विषय की सार्थक अभिव्यक्ति करती है।

# ३. अनुसंधान विषय वस्तू की भूत, भविष्य और वर्तमान परिप्रेक्ष्य में व्याख्या

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य केवल एक व्यक्ति नहीं, बल्कि एक युग निर्माण योजना के प्रणेता, युगदृष्टा और महान ऋषि थे। उन्होंने न केवल आध्यात्मिक क्रांति का सूत्रपात किया, बल्कि सामाजिक, नैतिक और बौद्धिक पुनर्जागरण की भी नींव रखी। उनके कार्यों का प्रभाव न केवल उनके समय में रहा, बल्कि वर्तमान में भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है और भविष्य में भी उनकी विचारधारा विश्व कल्याण के लिए मार्गदर्शक सिद्ध होगी।

## ३.१. भूतकालीन परिप्रेक्ष्य: पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का व्यक्तित्व और कार्य

### ३.१.१. जीवन परिचय एवं व्यक्तित्व

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का जन्म २० सितंबर १९११ को उत्तर प्रदेश के आगरा जिले में हुआ था। बाल्यकाल से ही वे चिंतनशील, अध्यात्मिक और सेवा भावना से ओत-प्रोत थे। उनका जीवन साधना, तप, त्याग और कर्मठता का प्रत्यक्ष उदाहरण था।

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का व्यक्तित्व बहुआयामी  था। वे एक गायत्री के सिद्ध साधक, आध्यात्मिक गुरु, दूरदर्शी विचारक और युगदृष्टा,  समाज सुधारक और कर्मयोगी, सादा जीवन - उच्च विचार धारण करने वाले, दयालु और संवेदनशील स्वभाव के धनी,  साधना, तप और आत्मसंयम का जीवन जीने वाले, साहित्यिक और बौद्धिक व्यक्तित्व के धनी, अद्भुत संगठनकर्ता और नेतृत्व क्षमता वाले, विनम्रता और आत्मीयता से परिपूर्ण व्यक्तित्व धारण करने वाले, विज्ञान और अध्यात्म के समन्वयक, अनुशासनप्रियता और आत्मनिर्माण के प्रेरक, राष्ट्रवादी और समाजनिष्ठ विचारक, प्रेरक वक्ता, सृजनशील कार्यकर्ता, मार्गदर्शक और एक लोकसेवी आदी के रूप में उनकी भुमिका उनके व्यक्तित्व की विषेशताएँ थी।

### ३.१.२. युग निर्माण योजना और उनका कार्यक्षेत्र

- **गायत्री साधना एवं साधकों का निर्माण:** उन्होंने मात्र नौ वर्ष की आयु में पं. मदनमोहन मालवीय जी से दीक्षा लेकर गायत्री मंत्र की साधना प्रारंभ की । १५ वर्ष की आयु में उन्हे दादा गुरु स्वामी सर्वेश्वरानंद जी का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ, जिनके निर्देशानुसार उन्होने गायत्री मंत्र के चौबीस महापुरश्चरण की साधना संपन्न की। इस तपस्या के माध्यम से उन्होने गायत्री महाशक्ति को जन-जन तक पहुँचाने का संकल्प लिया और देशभर में असंख्य साधको का निर्माण कर एक व्यापक आंदोलन की नींव रखी।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार की स्थापना:** उन्होंने अखण्ड ज्योति के माध्यम से १९४० में इस आंदोलन की शुरुआत की और सन १९५३ की गायत्री जयंती पर मथुरा में *'गायत्री तपोभूमि'* की स्थापना करके चौबीस महापुरश्चरणों की पुर्णाहुति कर एक नये युग का प्रारंभ किया। संभवत: *'अखिल विश्व गायत्री परिवार'* का यह शुभारंभ था। जिसने लाखों लोगों को आत्मोत्थान और समाजोत्थान के मार्ग पर प्रेरित किया।
- **गायत्री मंत्र का पुनरुद्धार:** उन्होंने गायत्री मंत्र की वैज्ञानिकता को प्रमाणित किया और इसे जनसामान्य तक पहुँचाया।

- **युग निर्माण योजना:** १९६२ में प्रारंभ यह योजना नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक पुनर्जागरण का महान अभियान बनी।
- **यज्ञ और संस्कार पद्धति का प्रचार-प्रसार:** उन्होंने यज्ञ के साथ साथ श्राद्ध, उपनयन, विवाह आदि संस्कारों को वैज्ञानिक दृष्टि से समाज में पुनः स्थापित किया।
- **साहित्य सृजन:** उन्होंने ३२०० से अधिक ग्रंथों की रचना की, जिनमें सतयुग की वापसी, युग निर्माण योजना, गायत्री महाविज्ञान, साधना से सिद्धि जैसे अनेक ग्रंथ प्रेरणादायक हैं।
- **शांतिकुंज की स्थापना (हरिद्वार):** १९७१ में शांतिकुंज की स्थापना की, जो आज भी साधकों और समाजसेवियों का प्रेरणास्थल बना हुआ है।

## ३.२. वर्तमान परिप्रेक्ष्य: पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के विचारों की प्रासंगिकता

आज का युग भौतिक समृद्धि के चरम पर पहुँचकर भी आंतरिक अशांति, मूल्यों के क्षरण और सामाजिक विघटन से जूझ रहा है। वैज्ञानिक उपलब्धियाँ और तकनीकी विकास के बावजूद मानवीय संबंधों में विश्वास की कमी, जीवन में उद्देश्यहीनता और तनाव का साम्राज्य स्पष्ट दिखाई देता है। इस परिप्रेक्ष्य में पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा प्रतिपादित विचार और उनका जीवन-दर्शन एक प्रकाश स्तंभ की भाँति मार्गदर्शन करता है। उनके विचार आज के समय में न केवल प्रासंगिक हैं, बल्कि अनिवार्य प्रतीत होते हैं।

### ३.२.१. समाज में नैतिकता और मूल्यों की पुनर्स्थापना

आचार्य जी ने युग निर्माण योजना के अंतर्गत महत्त्वपूर्ण बिंदु प्रस्तुत किए, जिनका आधार नैतिकता, आत्मसंयम और समाजनिष्ठा है। आज के दौर में जब भ्रष्टाचार, स्वार्थपरता, भोगवाद और अपराध सामाजिक ढाँचे को खोखला कर रहे हैं, ऐसे में उनके द्वारा दिए गए "त्रिसूत्र" — स्वयं को बदलें, दूसरों को बदलें, समाज को बदलें — अत्यंत आवश्यक बन जाते हैं।

उनके विचारों के अनुरूप विद्यालयों, महाविद्यालयों और समाज के विभिन्न वर्गों में नैतिक शिक्षा, युवा निर्माण, व्यसन मुक्ति अभियान, नारी चेतना और आदर्श नागरिक निर्माण की आवश्यकता है। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि यदि व्यक्ति का चरित्र सुधरता है, तो समाज, राष्ट्र और मानवता स्वतः सुदृढ़ हो जाती है।

### ३.२.२. आध्यात्मिक जागरूकता और मानसिक स्वास्थ्य

मन की शांति आज दुर्लभ हो गई है। अनिद्रा, चिंता, डिप्रेशन जैसी मानसिक समस्याएँ दिन-ब-दिन बढ़ रही हैं। आचार्य जी ने गायत्री साधना, प्राणायाम, जप और ध्यान की वैज्ञानिक पद्धतियों के माध्यम से मानसिक संतुलन बनाए रखने का मार्ग प्रशस्त किया।

उन्होंने "मनःसंयोग" (Mind Culture) की संकल्पना दी, जिसमें आत्मनिरीक्षण, स्वाध्याय, जप और ध्यान के माध्यम से व्यक्ति अपने विचारों को परिष्कृत करता है। यह प्रक्रिया आज के तनावग्रस्त व्यक्ति के लिए संजीवनी बन सकती है। साथ ही, उनकी यज्ञ चिकित्सा पद्धति, वातावरणीय ऊर्जा और मानसिक शुद्धि का समन्वय करती है, जो आज के रोगग्रस्त और विक्षिप्त समाज के लिए वरदान है।

### ३.२.३. पारिवारिक और सामाजिक समरसता

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने परिवार को "संस्कारों की पाठशाला" कहा। आज जब परिवार बिखर रहे हैं, पीढ़ियों के बीच संवादहीनता बढ़ रही है और आत्महत्याओं का ग्राफ ऊँचा हो रहा है, तब उनके "संघबद्ध पारिवारिक जीवन" के सिद्धांत जीवन रक्षक बन सकते हैं।

उन्होंने साप्ताहिक सत्संग, पारिवारिक यज्ञ और सामूहिक प्रार्थना जैसी विधियाँ सुझाईं, जिनसे परिवारों में संवाद, सहयोग और संस्कार की भावना पुनः विकसित हो सकती है। यदि आचार्य जी के आदर्श को अपनाया जाए, तो पारिवारिक विघटन और सामाजिक एकाकीपन जैसी समस्याओं का समाधान संभव है।

### ३.२.४. पर्यावरण संरक्षण और यज्ञ विज्ञान

जब जल, वायु और भूमि प्रदूषण विकराल रूप ले रहे हैं, तब पं. आचार्य द्वारा प्रतिपादित यज्ञ विज्ञान और उसकी पर्यावरणीय उपयोगिता अत्यंत महत्वपूर्ण है।

उन्होंने स्पष्ट किया कि यज्ञ केवल धार्मिक कर्मकांड नहीं, बल्कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण से वायुमंडलीय शुद्धिकरण, कीटाणु नियंत्रण, ऑक्सीजन उत्पादन और सकारात्मक ऊर्जा के संचार का माध्यम है। उनका "यज्ञ से औषधि निर्माण", "गृहस्थों का दैनिक यज्ञ" और "यज्ञोपैथी चिकित्सा" के प्रयोग आज के पर्यावरण संकट में व्यवहारिक समाधान प्रदान कर सकते हैं।

### ३.२.५. वैश्विक मानवता और एकात्मवाद

"वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना के प्रचारक आचार्य जी ने मनुष्य में मनुष्य का भेद मिटाकर आत्मीयता की स्थापना की। जब विश्व विभिन्न धर्मों, नस्लों, जातियों और भाषाओं के कारण संघर्षरत है, तब उनका "समत्व दर्शन" और "अखिल विश्व गायत्री परिवार" का आंदोलन मानवता की एकता का मूर्त रूप है।

उन्होंने कहा — "जाति, पंथ, भाषा, रंग, राष्ट्र - यह सब गौण हैं; प्रधान है मनुष्यत्व।" इस भाव को यदि हम व्यवहार में लाएँ, तो आतंकवाद, सांप्रदायिकता और जातिवाद की जड़ें समाप्त हो सकती हैं।

## ३.३. भविष्य परिप्रेक्ष्य: पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के विचारों का विश्व पर प्रभाव

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के विचार न केवल भारत, बल्कि सम्पूर्ण विश्व के लिए कालजयी हैं। उनका चिंतन, उनके प्रयोग और उनका दृष्टिकोण मानवता के सार्वभौमिक कल्याण को समर्पित था। आने वाले समय में उनका कार्य वैश्विक सामाजिक, आध्यात्मिक और नैतिक पुनर्रचना का आधार बन सकता है। विश्व समुदाय यदि उनके सिद्धांतों को आत्मसात करे, तो वैश्विक संतुलन, शांति और सच्ची प्रगति सुनिश्चित हो सकती है।

### ३.३.१. 'युग परिवर्तन' और 'सतयुग की वापसी'

आचार्य जी ने स्पष्ट रूप से घोषणा की थी कि इक्कीसवीं सदी 'धर्मराज्य' की सदी होगी। वे मानते थे कि वर्तमान संकटों और अंधकार के पीछे ही नवयुग की प्रभा छिपी है। उनका "युग परिवर्तन" का संकल्प केवल कल्पना नहीं, बल्कि सामाजिक और मानसिक स्तर पर परिवर्तन का विज्ञान था। वे मानते थे कि जैसे पतझड़ के बाद वसंत आता है, वैसे ही नैतिक पतन के बाद मूल्यनिष्ठ सतयुग का उदय निश्चित है। यह विचार विश्व के हर देश, संस्कृति और विचारधारा में प्रासंगिक हो सकता है। विज्ञान और अध्यात्म का समन्वय करके मानवता एक नए युग में प्रवेश करेगी।

### ३.३.२. गायत्री मंत्र और विश्व संस्कृति

गायत्री मंत्र को आचार्य जी ने सार्वभौमिक चेतना का मंत्र बताया। उन्होंने इसे "वैश्विक प्रार्थना" की तरह प्रचारित किया जो धर्म, भाषा और नस्ल की सीमाओं से परे है। उन्होंने इसके उच्चारण, भावार्थ और मनोवैज्ञानिक प्रभावों पर भी वैज्ञानिक आधार प्रस्तुत किया। भविष्य में विभिन्न देशों में इसके वैज्ञानिक और

आध्यात्मिक प्रभावों पर अनुसंधान हो सकते हैं, जिससे यह एक वैश्विक ध्यान साधना बन सकती है। विश्व संस्कृति में यदि गायत्री का समावेश होता है, तो यह एकजुटता और चेतना का वैश्विक मंच तैयार कर सकता है।

### ३.३.३. आचार्य जी का साहित्य और आने वाली पीढ़ियाँ

श्रीराम शर्मा आचार्य का साहित्य केवल विचारों का संग्रह नहीं, बल्कि वह जीवन जीने की कला है। उन्होंने विज्ञान, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, धर्म और अध्यात्म के विविध विषयों पर सुलभ और व्यावहारिक भाषा में हजारों पुस्तकें लिखीं। आने वाली पीढ़ियाँ जब भटकाव और दिशाहीनता का अनुभव करेंगी, तब आचार्य जी का साहित्य उन्हें संबल और दिशा प्रदान करेगा। शिक्षण, प्रशासन, स्वास्थ्य, युवावस्था, पारिवारिक जीवन, और राष्ट्र निर्माण जैसे सभी क्षेत्रों के लिए उनके विचार मार्गदर्शक सिद्ध होंगे।

### ३.३.४. यज्ञ चिकित्सा और वैज्ञानिक शोध

आचार्य जी ने यज्ञ को वैज्ञानिक आधार पर पुनर्परिभाषित किया। उनके अनुसार यज्ञ में वातावरण शुद्ध करने, रोग निवारण, मानसिक शांति और आध्यात्मिक ऊर्जा प्रदान करने की शक्ति है। भविष्य में यज्ञ चिकित्सा पर गहन अनुसंधान करके इसे वैकल्पिक चिकित्सा के रूप में मान्यता दी जा सकती है। विश्व के पर्यावरणीय संकटों, मानसिक रोगों और ऊर्जा संकट के समाधान के रूप में भी यज्ञ एक प्रभावी उपाय बन सकता है। उनकी संकल्पना अनुसार 'साइंटिफिक स्पिरिचुअलिटी' का यह पहलू विश्व के चिकित्सा और पर्यावरण विज्ञान को नया मोड़ दे सकता है।

### ३.३.५. युवाओं के लिए मार्गदर्शन

आचार्य जी का मानना था कि युवा किसी भी समाज की दिशा और दशा के निर्माता होते हैं। उन्होंने युवाओं को 'चलती फिरती विद्यापीठें' कहा और उनके लिए विशेष 'युग निर्माणी युवा' कार्यक्रम आरंभ किए। उनका आग्रह था कि यदि युवाशक्ति को नैतिक मूल्यों, राष्ट्रीयता, आत्मबल और सेवा भावना से जोड़ा जाए, तो विश्व का रूपांतरण संभव है। भविष्य में उनकी युवा-नीति को अपनाकर शिक्षा व्यवस्था, रोजगार नीति और नेतृत्व विकास के नए आयाम खोले जा सकते हैं। यह विचार वैश्विक युवा आंदोलनों के लिए आदर्श मॉडल बन सकता है।

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का जीवन और कृतित्व मानवता के उत्थान के लिए समर्पित था। उनके विचार अतीत में प्रभावी रहे, वर्तमान में प्रासंगिक हैं और भविष्य में भी विश्व कल्याण के लिए उपयोगी सिद्ध होंगे। उनका सपना "**हम बदलेंगे - युग बदलेगा**" धीरे-धीरे साकार हो रहा है, और आने वाले युगों में भी उनके विचार और कार्य पथ-प्रदर्शक बने रहेंगे।

इस शोध प्रबंध में उनके व्यक्तित्व एवं कार्यों और मानवता पर उनके प्रभाव का भूत, वर्तमान और भविष्य की दृष्टि से विश्लेषण किया गया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि वे केवल एक संत नहीं, बल्कि युगदृष्टा और भविष्यद्रष्टा थे, जिनकी शिक्षाएँ युगों-युगों तक मानव समाज को दिशा प्रदान करती रहेंगी।

# ४. पं. श्रीराम शर्मा आचार्य: उनका व्यक्तित्व एवं कार्य और मानवता पर अध्ययन की आवश्यकता

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य केवल एक आध्यात्मिक गुरु या समाज सुधारक नहीं थे, बल्कि मानवता के सच्चे साधक और युगदृष्टा थे। उन्होंने अपने विचार, आचरण और सेवा कार्यों के माध्यम से संपूर्ण मानव समाज के उत्थान के लिए कार्य किया। उनके व्यक्तित्व और कार्यों का मूल आधार मानवता ही था। इसलिए, शोध प्रबंध में 'उनका व्यक्तित्व और मानवता' एवं 'कार्य और मानवता' इन दोनों पहलुओं का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है।

## ४.१. उनका व्यक्तित्व और मानवता पर अध्ययन क्यों आवश्यक है?

### ४.१.१. व्यक्तित्व की विशेषताएँ और उनका मानवता से संबंध

- पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी का जीवन प्रारंभ से ही असाधारण था। उनके बाल्यकाल, शिक्षा, गुरुदीक्षा, स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ाव, हिमालय यात्रा, साहित्यिक रचनाएँ, संस्थागत निर्माण और सामाजिक आंदोलन, मात्र १५ वर्ष की आयु में उन्होंने गायत्री मंत्र की दीक्षा लेकर जो २४ महापुरश्चरणों का संकल्प लिया, वह एक सामान्य व्यक्ति की सामर्थ्य से परे था। यह उनके भीतर उपस्थित आध्यात्मिक धैर्य, नैतिक दृढ़ता, और स्व-अनुशासन का प्रमाण है।
- पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का व्यक्तित्व बहुआयामी था। वे एक गायत्री के सिद्ध साधक, आध्यात्मिक गुरु, दूरदर्शी विचारक और युगदृष्टा, समाज सुधारक और कर्मयोगी, दयालु और संवेदनशील स्वभाव के धनी, साधना, तप और आत्मसंयम का जीवन जीने वाला व्यक्तित्व से भरा पडा था।
- वे साहित्यिक और बौद्धिक व्यक्तित्व के धनी, अद्भुत संगठनकर्ता और नेतृत्व क्षमता वाला व्यक्तित्व, विनम्रता और आत्मीयता से परिपूर्ण व्यक्तित्व के धनी थे।
- वे विज्ञान और अध्यात्म के समन्वयक, अनुशासनप्रियता और आत्मनिर्माण के प्रेरक, राष्ट्रवादी और समाजनिष्ठ विचारक, प्रेरक वक्ता, सृजनशील कार्यकर्ता, मार्गदर्शक और एक लोकसेवी आदी के रूप में उनकी भुमिका उनके व्यक्तित्व की विषेशताएँ थी।
- वे सहज, सरल, सादगीपूर्ण जीवन जीने वाले महापुरुष थे, जिनका प्रत्येक कर्म मानवता की सेवा के लिए समर्पित था।
- उनके सिद्धांत और व्यवहार में एकरूपता थी, जिससे वे एक प्रेरणादायक व्यक्तित्व बने।
- उनका जीवन इस बात का उदाहरण था कि सच्ची आध्यात्मिकता केवल आत्मकल्याण नहीं, बल्कि लोकमंगल के लिए होनी चाहिए।

### ४.१.२. मानवता के प्रति उनकी दृष्टि

- पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने मानवता को सर्वोपरि माना। उनके अनुसार, "वसुधैव कुटुंबकम्" केवल एक आदर्श नहीं, बल्कि जीवन जीने की वास्तविक पद्धति होनी चाहिए।

- उन्होंने जाति, धर्म, वर्ग, लिंग आदि के भेदभाव से ऊपर उठकर समाज को एक सूत्र में बांधने का कार्य किया।
- उन्होंने नारी जागरण, युवा सशक्तिकरण और नैतिक उत्थान को अपनी जीवन साधना का हिस्सा बनाया।
- उन्होंने सिखाया कि मानवता की सेवा ही सच्चा धर्म है।

### ४.१.३. व्यक्तित्व अध्ययन से समाज को लाभ

- आज की पीढ़ी को नैतिक मूल्यों और सेवा भावना की प्रेरणा मिल सकती है।
- उनका जीवन यह सिखाता है कि त्याग, तपस्या और सेवा से ही समाज में सकारात्मक परिवर्तन संभव है।
- यदि उनके व्यक्तित्व के गुणों को समाज में आत्मसात किया जाए, तो समाज में एक नैतिक और आध्यात्मिक क्रांति लाई जा सकती है।

## ४.२. उनका कार्य और मानवता पर अध्ययन क्यों आवश्यक है?

### ४.२.१. उनके कार्यों की प्रमुख विशेषताएँ

- पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के कार्य केवल धार्मिक या आध्यात्मिक नहीं थे, बल्कि उन्होंने समाज सुधार, शिक्षा, वैज्ञानिक अध्यात्मवाद, महिला सशक्तिकरण, पर्यावरण सुरक्षा और राष्ट्र उत्थान जैसे विविध क्षेत्रों में कार्य किया।
- गायत्री परिवार और शांतिकुंज की स्थापना – यह संगठन समाज में नैतिक और आध्यात्मिक पुनर्जागरण के लिए कार्य कर रहा है।
- युग निर्माण योजना – इस आंदोलन के माध्यम से उन्होंने समाज में नैतिक, बौद्धिक और सामाजिक क्रांति का मार्ग प्रशस्त किया।
- गायत्री साधना और यज्ञ विज्ञान – उन्होंने सिद्ध किया कि यज्ञ केवल कर्मकांड नहीं, बल्कि पर्यावरण और समाज के उत्थान का एक वैज्ञानिक माध्यम है।
- अखंड ज्योति पत्रिका और साहित्य सृजन – उनके लेखन ने समाज को आत्मनिर्माण और समाजोत्थान की दिशा में प्रेरित किया।

### ४.२.२. कार्यों का मानवता से संबंध

- उनके प्रत्येक कार्य का मूल उद्देश्य समाज और मानवता की सेवा था।
- उन्होंने नारी उत्थान के लिए स्त्री शिक्षा, स्वावलंबन और गरिमा वृद्धि पर बल दिया।
- युवाओं को चरित्र निर्माण, राष्ट्र सेवा और आत्मनिर्माण की प्रेरणा दी।
- उन्होंने समाज में सद्भाव, समानता और भाईचारे की भावना विकसित करने का कार्य किया।

### ४.२.३. कार्य अध्ययन से समाज को लाभ

- उनके कार्यों से यह सीख मिलती है कि सामाजिक समस्याओं का समाधान आध्यात्मिकता, नैतिकता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से संभव है।

- उनका युग निर्माण आंदोलन समाज में नैतिकता और सद्भावना को पुनर्जीवित कर सकता है।
- यदि उनके कार्यों को आज के परिप्रेक्ष्य में समझकर लागू किया जाए, तो विश्व में शांति, सद्भाव और संतुलन स्थापित किया जा सकता है।

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के व्यक्तित्व और कार्यों का अध्ययन केवल ऐतिहासिक महत्व का विषय नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए भी अत्यंत उपयोगी है। उनका व्यक्तित्व हमें यह सिखाता है कि एक सच्चे संत, विचारक और समाज सुधारक में कौन-कौन से गुण होने चाहिए। उनके कार्य यह दर्शाते हैं कि कैसे एक व्यक्ति अपने विचारों और प्रयासों से संपूर्ण समाज और मानवता के उत्थान में योगदान दे सकता है। इसलिए, उनके व्यक्तित्व और कार्यों का मानवता के दृष्टिकोण से अध्ययन करना न केवल शोध की दृष्टि से आवश्यक है, बल्कि मानव कल्याण और समाज उत्थान की दिशा में मार्गदर्शक भी है।

# ५. आचार्यजी के जीवन दर्शन में समाहित उनका व्यक्तित्व और मानवता का तार्किक विश्लेषण

पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य एक युगदृष्टा मनीषी, समाज सुधारक, आध्यात्मिक वैज्ञानिक, तथा भारत के सांस्कृतिक पुनर्जागरण के अग्रदूत थे। उन्होंने अखिल विश्व गायत्री परिवार की स्थापना की और आध्यात्मिक चेतना को जागृत करने के लिए एक व्यापक आंदोलन का नेतृत्व किया।

## ५.१. जन्म एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का जन्म विक्रमी संवत् १९६८ की आश्विन कृष्ण त्रयोदशी तिथि (२० सितंबर १९११) को उत्तर प्रदेश के आगरा जनपद स्थित आँवलखेड़ा ग्राम में हुआ था। वे एक संपन्न और प्रतिष्ठित ब्राह्मण परिवार में जन्मे थे। उनके पिता का नाम पं. रूपकिशोर शर्मा और माता का नाम दानकुंवरि देवी था। उनका परिवार धार्मिक प्रवृत्ति का था, जिससे उन्हें बचपन से ही आध्यात्मिक संस्कार मिले। उनके पिता एक विद्वान, राजपुरोहित एवं श्रीमदभागवद् के प्रसिद्ध पंडीत थे। माताजी एक सरल, निष्ठावान और श्रद्धालु महिला थीं, जिनका स्वभाव अत्यंत दयालु एवं परोपकारी था। उनकी उदारता के कारण ग्रामवासी सदैव उनसे सहायता प्राप्त करने आते रहते थे और वे अपनी यथाशक्ति उनकी सहायता करती थीं। परंतु आचार्यश्री का हृदय बचपन से ही समाज सेवा, आध्यात्मिक साधना और मानवता के कल्याण के प्रति सर्मर्पित था।

## ५.२. प्रारंभीक जीवन

### ५.२.१. बाल्यकाल की विशेताएँ:

श्रीराम शर्मा आचार्य के जन्म के कुछ माह बाद एक संन्यासी उनके घर के द्वार पर आए। उन्होंने बालक को देखकर कहा, "माई, यह बालक सिद्धात्मा है।" यह सुनकर उनकी ताई जी को बड़ा आश्चर्य हुआ। इस भविष्यवाणी के अनुरूप बालक श्रीराम का जीवन असाधारण सिद्ध हुआ।

उनका शरीर बाल्यकाल में दुर्बल अवश्य था, किंतु वे अत्यंत निर्भीक थे। हवेली में जहाँ साँप-बिच्छू निकलते रहते थे, वहाँ अन्य बच्चे भयभीत हो जाते थे, लेकिन श्रीराम बिना डरे उन्हें हटा देते थे। उनका स्वभाव आत्मीयता और निर्भयता से पूर्ण था। उन्हें वन्य जीवन में भी कोई भय नहीं लगता था। वे प्रायः बिना बताए वन में चले जाते और किसी वृक्ष के नीचे ध्यानस्थ होकर बैठ जाते थे।

बालक श्रीराम की सेवा भावना बचपन से ही प्रबल थी। वे अपनी कोई भी वस्तु जरूरतमंद को दे देने में संकोच नहीं करते थे। एक दिन उनकी माता ने देखा कि उन्होंने अपना छोटा दुपट्टा एक गरीब को दे दिया। जब माता ने पूछा, "बेटा! तुमने अपना कपड़ा उस भिखारी को क्यों दे दिया?" तो बालक ने उत्तर दिया, "ताई! वह काँप रहा था। उसे वस्त्र की आवश्यकता थी।" इसी प्रकार, जब माता को ज्ञात हुआ कि श्रीराम ने अपना पूरा भोजन भी गरीबों में बाँट दिया है, तो उन्होंने पूछा, "तुम्हारा सारा भोजन कहाँ है?" इस पर बालक ने उत्तर दिया, "मैंने बाँट दिया। व्रत करना सीख रहा हूँ।"

श्रीराम को दीन-दुखियों की सेवा करने में अत्यंत आनंद मिलता था। वे पशु-पक्षियों के प्रति भी गहरी संवेदना रखते थे। गायें स्वयं उनके पास आकर खड़ी हो जातीं, वे उन्हें चारा खिलाते और उनकी सेवा करते। उनके पास चिड़ियाँ और कबूतर भी बिना भय के चुगते रहते थे।

### ५.२.२. आध्यात्मिक झुकाव एवं हिमालय की प्रेरणा

एक दिन श्रीराम गाँव की सुनसान पगडंडी से कई मील दूर एक छोटे रेलवे स्टेशन तक पहुँच गए। पड़ोसियों ने उन्हें देखा और पूछा, "इधर कहाँ जा रहे हो, श्रीराम?" बालक ने उत्तर दिया, "हिमालय।" इस उत्तर को सुनकर पड़ोसी हँस पड़े और उन्हें वापस गाँव ले आए। यह घटना दर्शाती है कि बाल्यकाल से ही उनका मन आध्यात्मिकता की ओर प्रवृत्त था।

श्रीराम का कथा सुनाने का विशेष गुण भी था। गाँव के बालक उनके चारों ओर बैठ जाते और वे उन्हें कथाएँ सुनाते। उनकी कथाओं में रोचकता और गहराई होती थी, जिससे सभी बड़े ध्यान से उन्हें सुनते थे।

**निष्कर्ष:**

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का बाल्यकाल मानवीय संवेदनाओं का मूर्त रूप था। उनकी करुणा, सेवा भावना, निर्भयता और पशु-पक्षियों के प्रति आत्मीयता यह दर्शाती है कि मानवता उनके स्वभाव में स्वाभाविक रूप से विद्यमान थी। गरीबों को वस्त्र और भोजन देना, प्राणियों से प्रेम करना, और विपरीत परिस्थितियों में भी निडर बने रहना — ये सभी गुण व्यवहारिक मानवता की गहराई को प्रकट करते हैं। साथ ही उनका ध्यान और हिमालय के प्रति आकर्षण उनके आध्यात्मिक झुकाव को दर्शाता है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि वे मानवता को आध्यात्मिक चेतना से जोड़ने वाले व्यक्तित्व थे।

इस प्रकार उनका प्रारंभिक जीवन यह सिखाता है कि सेवा, संवेदना और आत्मबोध जैसे गुण यदि बचपन से ही विकसित हों, तो वे एक महान और युगप्रवर्तक जीवन का आधार बन सकते हैं।

## ५.३. प्रारंभिक शिक्षा, स्वदेशी चेतना और शस्त्रविद्या

### ५.३.१. शिक्षा के प्रति बालक श्रीराम की जिज्ञासा

बाल्यकाल से ही पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के भीतर शिक्षा के प्रति गहरी जिज्ञासा थी। उनके पिता पं. रूपकिशोर शर्मा के पास प्राचीन संस्कृत साहित्य के दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह था, जिनमें हस्तलिखित पांडुलिपियाँ तथा भोजपत्रों पर लिखे ग्रंथ भी थे। पिता जी जब इन ग्रंथों का अध्ययन करते, तो बालक श्रीराम कौतूहलवश उन्हें ध्यानपूर्वक देखते रहते। उन्हें यह जानने की तीव्र इच्छा थी कि कागज किस प्रकार बोल सकते हैं! जब उन्होंने अपनी माता से यह प्रश्न किया, तो माता ने उन्हें पढ़ने और बोलने की प्रक्रिया समझाई। इस रहस्य को जानकर श्रीराम अत्यंत प्रसन्न हुए और उन्होंने संकल्प लिया कि वे भी इस विद्या को अवश्य प्राप्त करेंगे।

पिता के श्रीमुख से धार्मिक कथाएँ और उपदेश सुनते-सुनते श्रीराम का मन सद्गुणों एवं आध्यात्मिकता की ओर प्रवृत्त होने लगा। पिता जी ने उनकी शिक्षा के लिए गाँव की पाठशाला में भेजा, जहाँ उनकी कुशाग्र बुद्धि देखकर शिक्षक अत्यंत प्रभावित हुए। वे शीघ्र ही अपनी शिक्षा में प्रगति करने लगे। उनकी इस उन्नति से उनके पिता भी प्रसन्न हुए और उन्होंने उनका उपनयन संस्कार (यज्ञोपवीत संस्कार) संपन्न कराने का निश्चय किया।

### ५.३.२. पश्चिमी शिक्षा से असहमति एवं स्वदेशी चेतना

बाल्यकाल से ही श्रीराम भारतीय संस्कृति और परंपराओं के प्रति गहरी निष्ठा रखते थे। जब उनके माता-पिता ने उन्हें अंग्रेजी शिक्षा ग्रहण करने के लिए आगरा भेजने का विचार किया, तो उन्होंने स्पष्ट रूप से मना कर दिया। उन्होंने कहा - "मैं अंग्रेजों की अच्छी बातें अवश्य सीखूँगा, लेकिन उनकी सभ्यता, रहन-सहन और वेशभूषा को नहीं अपनाऊँगा।" उनकी यह स्वदेशी चेतना और आत्मनिर्भरता की भावना उस समय के

स्वतंत्रता संग्राम के मूल्यों के अनुरूप थी। माता ने जब उनसे आगे के जीवन के बारे में पूछा, तो उन्होंने आत्मनिर्भरता पर जोर देते हुए कहा—

"मैं न तो नौकरी करूँगा और न ही घर-घर कथा कहूँगा। मैं स्वावलंबी बनूँगा और अन्य लोगों को भी स्वावलंबन सिखाऊँगा।"

इस विचारधारा ने आगे चलकर उनके जीवन को समाज सुधार और स्वावलंबन की दिशा में मोड़ दिया।

### ५.३.३. अस्त्र-शस्त्र प्रशिक्षण और स्वतंत्रता संग्राम में योगदान

श्रीराम केवल आध्यात्मिक और नैतिक शिक्षा तक ही सीमित नहीं रहे, बल्कि वे आत्मरक्षा के लिए शस्त्रविद्या को भी आवश्यक मानते थे। उन्होंने कहा -"आत्मरक्षा के लिए अस्त्र-शस्त्र सीखने में कोई बुराई नहीं है, लेकिन इसका दुरुपयोग अनुचित है।" उन्होंने गाँव के हरिया गुरु से लाठी, भाला और तलवार चलाने की विद्या सीखी। समाज की जातिगत रूढ़ियों के बावजूद, उन्होंने हरिया गुरु को अपना शिक्षक बनाया और अपने साथियों को भी शस्त्र प्रशिक्षण देना प्रारंभ किया।

इस प्रशिक्षण का प्रयोग उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में किया। एक दिन उन्होंने देखा कि एक अंग्रेज घुड़सवार ग्रामीण युवती का पीछा कर रहा है। लोग डर के मारे चुप थे, लेकिन श्रीराम से यह अन्याय सहन नहीं हुआ। उन्होंने गोरे के सिर पर एक ईंट मारकर उसे घायल कर दिया, जिससे वह युवती बच गई। इस प्रकार, उन्होंने अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध लड़ने की भावना को जीवंत कर दिया।

**निष्कर्ष:**

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य की प्रारंभिक शिक्षा, स्वदेशी चेतना और शस्त्रविद्या उनके निजी विकास तक सीमित नहीं थी, बल्कि मानवता के हित और रक्षण की दिशा में एक जागरूक पहल थी। बाल्यकाल से उनमें ज्ञान, नैतिकता और आत्मबोध के प्रति जिज्ञासा थी, जिसे उन्होंने जीवन-शैली में उतारा। उनकी पश्चिमी शिक्षा की अस्वीकृति सांस्कृतिक आत्मसम्मान और नैतिक स्वतंत्रता का प्रतीक थी। स्वदेशी दृष्टिकोण से उन्होंने यह बताया कि आत्मनिर्भरता ही मानवता की शक्ति है। शस्त्रविद्या को उन्होंने आत्मरक्षा और न्याय का साधन माना। एक युवती की रक्षा में उनके साहसिक हस्तक्षेप ने सिद्ध किया कि मानवता केवल करुणा नहीं, अन्याय के विरुद्ध खड़े होने का नाम भी है।

इस प्रकार उनके विचार और आचरण यह स्पष्ट करते हैं कि मानवता की रक्षा के लिएआध्यात्मिक ज्ञान, नैतिकता और साहस— तीनों का होना आवश्यक है, और श्रीराम आचार्य ने इन सभी को अपने जीवन में समान रूप से विकसित किया।

## ५.४. करुणा, क्षमा और नि:स्वार्थ सेवा का अद्भुत उदाहरण

### ५.४.१. छपको अम्मा की सेवा:

श्रीराम न केवल एक निर्भीक योद्धा थे, बल्कि करुणा और सेवा भाव के प्रतीक भी थे। गाँव में एक दलित महिला छपको गलित कोढ़ जैसी बीमारी से ग्रसित थी। सामाजिक विरोध के बावजूद, श्रीराम ने उसकी सेवा की और जब तक वह पूर्णतः स्वस्थ नहीं हो गई, तब तक उसकी देखभाल में लगे रहे। उनकी इस सेवा से प्रभावित होकर छपको अम्मा ने उन्हें आशीर्वाद दिया -"तू एक दिन बहुत बड़ा महात्मा बनेगा और अनेकों के हृदय का सम्राट होगा।"

छपको अम्मा की सेवा यानी जाती की दीवारों को लांघकर एक वृद्ध दलित महिला की देखभाल कर उन्होने यह सिद्ध किया कि *सेवा धर्म ही सच्चा मानव धर्म* है।

श्रीराम ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा गाँव के मदरसे से पूर्ण करने के बाद आगरा में शिक्षा प्राप्त की। यहाँ उन्होंने एक सेवा समिति बनाई, जिसका कार्य अपाहिजों की सेवा करना तथा निर्धनों को भोजन और वस्त्र वितरित करना था।

### ५.४.२. हुब्बालाल पटवारी की सेवा:

एक बार गाँव में हुब्बालाल नामक पटवारी था, जो अपने अत्याचारों के लिए कुख्यात था। सभी उससे भयभीत रहते थे और कोई उससे बातचीत तक नहीं करता था। एक समय वह गंभीर रूप से बीमार पड़ गया। जब श्रीराम गाँव लौटे, तो उन्होंने उसकी स्थिति देखी और सेवा में जुट गए। हुब्बालाल अपने कुकर्मों को याद कर पछताने लगा और बोला -"मैंने पाप किए हैं, उन्हीं का फल भोग रहा हूँ। मैंने लोगों को सताया है, इसलिए मैं आज इस स्थिति में हूँ।" श्रीराम ने घर के बाहर खड़ी भीड़ को संबोधित करते हुए कहा -"पाप से घृणा करो, पापी से नहीं। बीमार की सेवा करनी चाहिए।" उनके इन शब्दों ने उपस्थित जनसमूह को गहराई से प्रभावित किया और सामाजिक भेदभाव को समाप्त करने का एक नया संदेश दिया।

हुब्बालाल पटवारी की सेवा एक अत्याचारी व्यक्ति की गिरावट पर भी तिरस्कार नहीं, बल्कि सेवा का भाव दर्शाता है कि वे "पाप से घृणा, पापी से नहीं" के आदर्श को जीते थे। यह मानवीय उदारता का चरम रूप है।

### निष्कर्ष:

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के जीवन से यह स्पष्ट होता है कि वे सेवा को ही सच्चा धर्म मानते थे। जाति, लिंग, आचरण या सामाजिक प्रतिष्ठा जैसी किसी भी दीवार को उन्होंने सेवा कार्य में आड़े नहीं आने दिया। चाहे वह दलित छपको अम्मा की करुणा से भरी सेवा हो या अत्याचारी पटवारी हुब्बालाल जैसे व्यक्ति की निष्कपट देखभाल—श्रीराम ने हर बार यह सिद्ध किया कि मानवता का मूलमंत्र करुणा, क्षमा और निःस्वार्थ सेवा है।

उनका आचरण "पाप से घृणा करो, पापी से नहीं" इस महामंत्र को प्रत्यक्ष जीवन में उतारने का अनुपम उदाहरण है। उनके सेवा कार्य सामाजिक समरसता, करुणा, दया, और नैतिक पुनर्जागरण के प्रेरक स्रोत हैं, जो आज भी मानवता के आदर्श मूल्यों को पुष्ट करते हैं। उनके कर्म यह सिद्ध करते हैं कि सच्चा संत वह है जो समाज के अंतिम व्यक्ति की पीड़ा को अपना मानकर उसकी सेवा करता है — यही युग निर्माण का मूल है।

## ५.५. करुणा, संवेदना और पशुप्रेम का अद्भुत उदाहरण

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के व्यक्तित्व में करुणा, संवेदना और जीवमात्र के प्रति अपनत्व का जो भाव था, वह उनकी बाल्यावस्था और युवावस्था के इन दो प्रसंगों में स्पष्ट रूप से प्रकट होता है।

### ५.५.१. गाय की प्राण रक्षा

सन् १९२८ में जाड़े के दिन थे। एक लँगड़ाती गाय को बाँधे दो कसाई ले जा रहे थे। बालक श्रीराम ने गाय की हालत देखी और कसाइयों से बात की। कसाइयों ने गाय की कीमत माँगी। बालक श्रीराम ने किसी तरह वह कीमत जुटाई और गाय कसाइयों से छुड़ा ली।

एक अपाहिज गाय को कसाइयों से मुक्त कराना एक सामान्य बालक की नहीं, एक संवेदनशील ऋषिसंस्कारित आत्मा की पहचान है। उन्होंने न केवल पशु के प्रति दया दिखाई, अपितु अपनी सामर्थ्यानुसार संघर्ष करके उसे मृत्यु से बचाया। यह घटना केवल पशु प्रेम नहीं, वरन् करुणा के उस जीवंत स्वरूप को दर्शाती है जहाँ किसी प्राणी का जीवन बचाना सर्वोपरि बन जाता है।

## ५.५.२. कुत्ते की प्राण रक्षा

दूसरी घटना में, युवक पं. श्रीराम शर्मा आचार्य एक दिन कुछ युवकों के साथ यमुना की बाढ़ देखने गए। उन्होंने देखा कि एक कुत्ता तीन दिन से टापू जैसे एक छोटे से ज़मीन के टुकड़े पर फँसा हुआ है — भूखा, डरा और असहाय। सब लोग सहानुभूति तो जता रहे थे, पर बचाने को कोई तैयार नहीं था। गुरुदेव ने तीन रुपये में एक डोंगी वाले को तैयार किया। कई बार नाव उसके पास गई, लेकिन कुत्ता डर के कारण नहीं चढ़ा। अंत में श्रीरामजी खुद नाव से कूद पड़े, कुत्ते को उठाया और डोंगी पर वापस कूद आए। नाव डगमगाई, डोंगी वाला गुस्सा हुआ और गालियाँ दीं, पर आचार्यश्री शांत रहे। उन्होंने पाँच रुपये देकर उसका आभार भी जताया।

यमुना में आई बाढ़ के कारण एक कुत्ता टापू पर फँस गया था, तब युवक श्रीराम का अपने प्राण संकट में डालकर उसकी रक्षा करना, मानवता की चरम सीमा का उदाहरण है। जहाँ लोग केवल सहानुभूति प्रकट कर रहे थे, वहीं उन्होंने करुणा को क्रियान्वित किया। यह बताता है कि आचार्यश्री के लिए मानवता की परिभाषा केवल मनुष्यों तक सीमित नहीं थी, बल्कि समस्त सृष्टि के प्राणियों के प्रति करुणा उनकी मानवीय दृष्टि का मूलतत्त्व थी।

**निष्कर्ष:**

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा गाय और कुत्ते की प्राण रक्षा के प्रसंग उनके भीतर रची-बसी करुणा, संवेदना और जीवों के प्रति समदृष्टि का प्रमाण हैं। ये घटनाएँ दर्शाती हैं कि उनके लिए हर प्राणी में परमात्मा का अंश था। उन्होंने मानवता की सीमाओं को केवल मानव जाति तक सीमित नहीं रखा, बल्कि समस्त जीवमात्र के प्रति दया, प्रेम और सेवा को अपना धर्म माना। उनका जीवन हमें यह सिखाता है कि सच्ची मानवता वही है जो निर्बल, असहाय और मूक प्राणियों के प्रति भी सक्रिय करुणा प्रकट करे।

## ५.६. गुरुदीक्षा एवं आध्यात्मिक साधना

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के जीवन में आध्यात्मिकता का उदय बाल्यकाल से ही हो गया था। धार्मिक संस्कारों से समृद्ध परिवार में जन्म लेने के कारण उनकी रुचि बचपन से ही आध्यात्मिक साधना और वेद-पुराणों के अध्ययन में थी। लेकिन उनकी आध्यात्मिक यात्रा को नई दिशा देने वाली घटना थी—महामना पं. मदन मोहन मालवीय द्वारा प्रदत्त गायत्री मंत्र की दीक्षा और गुरुदीक्षा।

## ५.६.१. महामना मालवीय जी से गुरुदीक्षा

पं. श्रीराम शर्मा के उपनयन संस्कार (यज्ञोपवीत संस्कार) का आयोजन बड़ी धूमधाम से हुआ। इस अवसर पर भारतीय संस्कृति के महान पुरोधा, काशी हिंदू विश्वविद्यालय के संस्थापक महामना पं. मदन मोहन मालवीय स्वयं उपस्थित हुए। उन्होंने न केवल श्रीराम का उपनयन संस्कार संपन्न कराया, बल्कि उन्हें गायत्री मंत्र की दीक्षा भी दी। उन्होंने बालक श्रीराम से कहा - "गायत्री ब्राह्मण की कामधेनु है। गायत्री की उपासना किया करना।" यह वचन श्रीराम के मन-मस्तिष्क में गहरे अंकित हो गए। जब वे काशी से लौट रहे थे, तब उन्होंने अपने पिता से महामना मालवीय जी के इस कथन का अर्थ पूछा। पिता ने उत्तर दिया -"गायत्री मंत्र सब कामनाओं की पूर्ति करने वाला मंत्र है।" इस उत्तर ने श्रीराम के मन में गायत्री मंत्र के प्रति अगाध

श्रद्धा उत्पन्न कर दी। उन्होंने इसे अपने जीवन का केंद्रीय तत्व बना लिया और नियमित जाप तथा साधना प्रारंभ कर दी।

### ५.६.२. गायत्री मंत्र-साधना का प्रारंभ

गायत्री मंत्र की दीक्षा प्राप्त करने के बाद, बालक श्रीराम ने नियमित रूप से इस मंत्र की साधना प्रारंभ की। उन्होंने विधिवत् नियमों का पालन करते हुए जप, ध्यान और अनुशासन का पालन किया। उनकी निष्ठा और श्रद्धा इतनी गहरी थी कि वे दिन-रात गायत्री साधना में लीन रहने लगे।

### ५.६.३. रहस्योद्‌घाटन: पूर्व जन्मों का ज्ञान एवं दिव्य दर्शन

बालक श्रीराम जब १५ वर्ष की आयु के थे तब सन् १९२६ की वसंत पंचमी की भोर में उनकी साधना ने एक दिव्य अनुभव प्रदान किया। उस दिन, जब वे अपने साधना-कक्ष में ध्यानमग्न थे, तो अचानक वहाँ एक अनुपम सुगंध फैल गई। पूर्व दिशा में एक प्रकाशपुंज प्रकट हुआ और उसमें से एक ऋषि आकृति प्रकट हुई। उस दिव्य ऋषि ने श्रीराम से कहा -"डरो मत! मैं तुमसे कई जन्मों से परिचित हूँ।"

वह दिव्य ऋषि हिमालय वासी गुरुसत्ता स्वामी सर्वेश्वरानंदजी थे। इसके बाद उन्होंने बालक श्रीराम को उनके पिछले जन्मों की जानकारी दी -

- बहुत पहले वे कबीर थे - जिन्होंने समाज में भक्ति आंदोलन को जन्म दिया और ईश्वर प्राप्ति के सरल, सहज मार्ग का प्रतिपादन किया।
- फिर वे समर्थ गुरु रामदास हुए - जिन्होंने शिवाजी को राष्ट्रधर्म और हिन्दू स्वराज्य की प्रेरणा दी।
- इसके बाद वे रामकृष्ण परमहंस के रूप में जन्मे - जिन्होंने भारतीय आध्यात्मिकता और साधना को एक नई दिशा दी।

ऋषि ने कहा -"इस जन्म में तुम्हें बहुत कार्य करने हैं। तुम्हें गायत्री मंत्र के चौबीस महापुरश्चरण करने हैं।" इसके पश्चात् ऋषि ने उन्हें इन पुरश्चरणों की विधि विस्तार से समझाई और अंतर्धान हो गए। इस दिव्य अनुभव ने श्रीराम के जीवन की दिशा को और अधिक स्पष्ट कर दिया।

### ५.६.४. अखण्ड ज्योति का प्राकट्य और अनवरत साधना

उसी दिन से श्रीराम के साधना-कक्ष में जलने वाली अखण्ड ज्योति प्रज्वलित हुई, जो आगे चलकर उनके मिशन अखण्ड ज्योति पत्रिका और गायत्री परिवार की आधारशिला बनी। यह ज्योति केवल एक दीपक नहीं थी, बल्कि उनके जीवन-कार्य का प्रतीक बनी - एक ऐसी लौ, जो युगों-युगों तक समाज को आलोकित करती रहेगी। अब उनकी साधना और भी अधिक गहन हो गई। वे प्रतिदिन नियमपूर्वक गायत्री मंत्र का जप करने लगे और इसे अपने जीवन का अभिन्न अंग बना लिया। धीरे-धीरे उनकी चेतना इतनी विकसित हुई कि वे आध्यात्मिक रूप से देश और समाज के कल्याण के लिए तत्पर हो गए।

### निष्कर्ष:

गायत्री मंत्र की दीक्षा और आध्यात्मिक साधना ने पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के जीवन को गहरी दिशा प्रदान की। महामना मदन मोहन मालवीय जी द्वारा प्रदत्त गुरुदीक्षा उनके लिए एक प्रेरणास्त्रोत बनी। ऋषियों के निर्देशानुसार उन्होंने गायत्री मंत्र के चौबीस महापुरश्चरण संपन्न किए और इस साधना के माध्यम से आत्मशुद्धि, आत्मोत्थान तथा समाज-निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया। उनकी साधना केवल व्यक्तिगत मोक्ष तक सीमित नहीं थी, बल्कि वह समाज और राष्ट्र के कल्याण के लिए थी। उन्होंने अखण्ड ज्योति के रूप में आध्यात्मिक चेतना का दीप प्रज्वलित किया, जिसने आगे चलकर युग निर्माण योजना और गायत्री परिवार

जैसे विश्वव्यापी आंदोलनों को जन्म दिया। इस प्रकार, पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का जीवन यह सिद्ध करता है कि आध्यात्मिक साधना केवल आत्मकल्याण का मार्ग नहीं, बल्कि जनकल्याण और राष्ट्रोत्थान का भी सशक्त माध्यम बन सकती है।

## ५.७. स्वतंत्रता संग्राम में भागीदारी और स्वदेशी उद्योगों को बढ़ावा

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य केवल आध्यात्मिक विचारक और समाज सुधारक ही नहीं थे, बल्कि वे एक सच्चे देशभक्त भी थे। उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रूप से भाग लिया और अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ प्रत्यक्ष संघर्ष किया। उनका राष्ट्रप्रेम केवल शब्दों तक सीमित नहीं था, बल्कि उन्होंने अपनी युवावस्था में स्वतंत्रता संग्राम के दौरान जेल यात्राएँ भी कीं और अंग्रेजी सरकार के दमनचक्र का सामना किया। उनका जीवन इस बात का प्रमाण है कि आध्यात्मिकता और राष्ट्रसेवा का अद्भुत संगम कैसे संभव है।

### ५.७.१. आँवलखेड़ा और जारखी में अंग्रेजी सरकार का विरोध

बाल्यकाल से ही पं. श्रीराम शर्मा के मन में पराधीनता के प्रति असंतोष था। जैसे-जैसे उनका अध्ययन और बौद्धिक विकास हुआ, वे स्वतंत्रता संग्राम की गतिविधियों में शामिल होने लगे। आँवलखेड़ा और उसके आसपास स्वतंत्रता सेनानियों की गतिविधियाँ तेज हो रही थीं, और युवा श्रीराम ने इन गतिविधियों में बढ़-चढ़कर भाग लिया।

आँवलखेड़ा के पास जारखी में जब अंग्रेज सरकार के खिलाफ विरोध जुलूस निकाला गया, तो श्रीराम शर्मा ने इसका नेतृत्व किया। जब पुलिस ने इस जुलूस को रोकने की कोशिश की, तो उन्होंने वीरता और धैर्य का परिचय दिया। पुलिस की लाठियों और हमलों के बावजूद वे तिरंगा झंडा लिए खड़े रहे। जब पुलिस ने उन्हें गिरा दिया, तब भी उन्होंने झंडा अपने हाथ से नहीं छोड़ा, बल्कि दाँतों से पकड़कर अपनी जगह जमे रहे। पुलिस को उनका यह अदम्य साहस देखकर झंडा निकालने में भी कठिनाई हुई। यह घटना उनके राष्ट्रप्रेम और दृढ़ इच्छाशक्ति का प्रतीक बनी।

### ५.७.२. कलकत्ता कांग्रेस अधिवेशन और गिरफ्तारी

देश में स्वतंत्रता आंदोलन का प्रभाव तेजी से बढ़ रहा था। कलकत्ता में अखिल भारतीय कांग्रेस का अधिवेशन आयोजित किया गया, जिसमें भाग लेने के लिए श्रीराम शर्मा अपने कुछ साथियों के साथ निकले। लेकिन ब्रिटिश खुफिया एजेंसियाँ (C.I.D.) उनकी गतिविधियों पर नजर रख रही थीं। जब वे आसनसोल रेलवे स्टेशन पर पहुँचे, तो उन्हें वहाँ गिरफ्तार कर लिया गया।

### ५.७.३. आसनसोल जेल की यातनाएँ और आत्मनिर्भरता की सीख

गिरफ्तारी के बाद श्रीराम शर्मा को आसनसोल जेल में डाल दिया गया। जेल में उन्हें भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख नेताओं के साथ रहने का अवसर मिला। वहाँ उनकी भेंट महामना मदन मोहन मालवीय, माता स्वरूप रानी नेहरू, श्री रफी अहमद किदवई और श्री देवदास गांधी जैसे महान स्वतंत्रता सेनानियों से हुई। इस जेल यात्रा ने उनके विचारों को और भी अधिक राष्ट्रवादी और आत्मनिर्भरता की ओर प्रेरित किया।

आसनसोल जेल में रहते हुए भी उन्होंने अपने समय का सदुपयोग किया। उन्होंने अंग्रेजी लिखना-पढ़ना सीखा, वह भी साधारण पेंसिल-कॉपी से नहीं, बल्कि तसले (लोहे की थाली) पर कोयले से लिखकर। उनकी यह जिजीविषा यह दर्शाती है कि परिस्थितियाँ चाहे कितनी भी कठिन क्यों न हों, यदि व्यक्ति का संकल्प दृढ़ हो तो वह किसी भी बाधा को पार कर सकता है।

### ५.७.४. गाँव में रचनात्मक कार्यों की शुरुआत

आसनसोल जेल से बाहर आने के बाद श्रीराम शर्मा केवल राजनीतिक आंदोलनों तक सीमित नहीं रहे, बल्कि उन्होंने रचनात्मक कार्यों पर ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने गाँधीजी के स्वदेशी आंदोलन और ग्रामोद्योग की भावना को अपनाते हुए अपने गाँव आँवलखेड़ा में एक बड़ा केंद्र स्थापित किया, जिसका नाम रखा - '**बुनता घर**'। यह केंद्र ग्रामीणों को स्वरोजगार और आत्मनिर्भरता की ओर प्रेरित करने के लिए था। यहाँ कताई-बुनाई के साथ अन्य ग्रामोद्योगों को भी बढ़ावा दिया गया। इस पहल ने गाँव के लोगों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाया और उन्हें अंग्रेजी कंपनियों पर निर्भर रहने से मुक्त किया। आज भी आँवलखेड़ा के लोग इस '**बुनता घर**' के नाम और स्थान को जानते हैं और इसे स्वतंत्रता संग्राम के गौरवशाली स्मारक के रूप में देखते हैं।

### ५.७.५. अंग्रेज पुलिस की खुफिया रिपोर्ट

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के बढ़ते प्रभाव और उनकी क्रांतिकारी गतिविधियों को देखते हुए अंग्रेज सरकार की खुफिया एजेंसियाँ सतर्क हो गई थीं। आगरा जिले के एक अंग्रेज इंस्पेक्टर ने अपनी रिपोर्ट में लिखा -"अभी श्रीराम कांग्रेस में है। अगर यह क्रांतिकारियों के साथ मिल गया तो तबाही मचा सकता है।" इस रिपोर्ट से स्पष्ट होता है कि अंग्रेज सरकार श्रीराम शर्मा को एक संभावित क्रांतिकारी के रूप में देख रही थी। उनकी विचारधारा और कार्यशैली इतनी प्रभावशाली थी कि अंग्रेजों को डर था कि यदि वे पूरी तरह से क्रांतिकारी गतिविधियों में सक्रिय हो गए, तो वे एक बड़ा आंदोलन खड़ा कर सकते हैं।

**निष्कर्ष:**

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य की स्वतंत्रता संग्राम में भागीदारी केवल राजनीतिक आंदोलन तक सीमित नहीं थी, बल्कि उसमें सामाजिक जागरूकता और आत्मनिर्भरता का भी समावेश था। उन्होंने न केवल अंग्रेजी सरकार का विरोध किया, बल्कि गाँवों में स्वदेशी उद्योगों को बढ़ावा देकर राष्ट्रनिर्माण में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनकी जेल यात्रा, उनके संघर्ष, और अंग्रेजों के खिलाफ उनका अडिग साहस हमें यह सिखाता है कि सच्चे राष्ट्रभक्त केवल विरोध करने तक सीमित नहीं रहते, बल्कि वे समाज के पुनर्निर्माण का भी कार्य करते हैं। उनका जीवन एक आदर्श उदाहरण है कि आध्यात्मिकता और देशभक्ति का संगम कैसे व्यक्ति को केवल चिंतक ही नहीं, बल्कि एक महान समाज सुधारक और राष्ट्रनिर्माता भी बना सकता है।

## ५.८. हिमालय यात्रा, महापुरुषों से संपर्क और 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका का प्रकाशन

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का जीवन मात्र साधना और चिंतन तक सीमित नहीं था, बल्कि वे एक कर्मयोगी भी थे। जीवन के उद्देश्य को लेकर उनके मन में गहरे प्रश्न उठते थे—"इस शरीर का अंत निश्चित है, पर इसका वास्तविक उपयोग क्या है?" इसी आत्ममंथन के बीच उन्हें हिमालय से मार्गदर्शक गुरु सर्वेश्वरानंद जी का बुलावा आया।

### ५.८.१. हिमालय यात्रा और गुरुदीक्षा

संकल्प के धनी श्रीराम अकेले ही हिमालय की कठिन यात्रा पर निकल पड़े। वहाँ उन्होंने विभिन्न आश्रमों, साधु-संतों और उनकी साधनाओं का गहन अध्ययन किया। उन्होंने देखा कि बड़ी संख्या में साधु-संत समाज और राष्ट्र के लिए निष्क्रिय जीवन जी रहे थे। उन्होंने इस स्थिति को सुधारने का संकल्प लिया। गुरु सर्वेश्वरानंद जी से भेंट होने पर उन्हें जीवन-कार्य की स्पष्ट दिशा मिली।

### ५.८.२. महापुरुषों से संपर्क और राष्ट्रभक्ति

हिमालय से लौटने के बाद युवा श्रीराम ने ग्राम विकास की ओर ध्यान दिया। उन्होंने गाँव में पशुधन और कृषि सुधार के लिए छोटी-छोटी पुस्तकें लिखीं और प्रकाशित कराईं। इसी दौरान वे महात्मा गांधी से मिलने साबरमती आश्रम गए, जहाँ उन्होंने स्वावलंबन और ग्राम विकास की गांधीवादी कार्यपद्धति को समझा। उन्होंने शांति निकेतन में रवींद्रनाथ ठाकुर से भेंट की और फिर पांडिचेरी में महर्षि अरविंद से मिले। इन महापुरुषों से संवाद और उनके विचारों ने उनके राष्ट्रनिर्माण के संकल्प को और मजबूत किया।

महात्माओं से प्रेरणा पाकर उन्होंने देशभर की यात्राएँ कीं और जनसाधारण की स्थिति को निकट से देखा। गरीबी, निरक्षरता और असमानता जैसी समस्याओं से उबरने के लिए उन्होंने शिक्षा और जनजागरण को मुख्य उपाय माना।

### ५.८.३. 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका का प्रकाशन

जनजागरण के उद्देश्य से उन्होंने १९३७ में 'अखण्ड ज्योति' मासिक पत्रिका का प्रकाशन आगरा से प्रारंभ किया। पहले अंक की प्रति एक अज्ञात कन्या गौरी द्वारा स्वस्तिक चिह्न अंकित कर पूजन के बाद प्रकाशित हुई। पत्रिका में सरल भाषा में आध्यात्मिक, सामाजिक और नैतिक मूल्यों पर लेख प्रकाशित होते थे, जो किसी धर्म विशेष तक सीमित न होकर संपूर्ण मानवता के लिए उपयोगी थे।

कुछ समय बाद पत्रिका का कार्यालय मथुरा में स्थापित किया गया। घीयामंडी में लिए गए किराये के मकान में रहस्यमय घटनाएँ घटती थीं, लेकिन आचार्य जी के आत्मबल और आध्यात्मिक शक्ति के कारण ये समस्याएँ स्वतः समाप्त हो गईं।

### ५.८.४. सामाजिक चेतना और निष्काम सेवा

उनका उद्देश्य केवल लेखन तक सीमित नहीं था। वे हाट-बाजारों में पानी पिलाते, पशु-चिकित्सा संबंधी परचे बाँटते और लोगों को शिक्षित करने के प्रयास करते। उनके लेखों और प्रवचनों ने जात-पाँत और सामाजिक भेदभाव को मिटाने का कार्य किया। उन्होंने स्पष्ट कहा -"सभी मानव ईश्वर की संतान हैं। उनमें कोई ऊँच-नीच नहीं। जात-पाँत मानव निर्मित है, ईश्वर प्रदत्त नहीं।"

**निष्कर्ष:**

इस प्रकार, पं. श्रीराम शर्मा आचार्य की हिमालय यात्रा से प्राप्त आध्यात्मिक ऊर्जा, महापुरुषों से संपर्क द्वारा विकसित समाज-सुधार की प्रेरणा और 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका के माध्यम से जनचेतना का प्रसार - इन तीनों ने मिलकर उनके जीवन को एक महान मिशन में परिवर्तित कर दिया, जो मानवता का परिचायक है।

## ५.९. भगवती देवी का जीवन संगिनी के रूप में योगदान

सन् १९४३ में पं. श्रीराम शर्मा आचार्य की पहली पत्नी का निधन हो गया। मार्गदर्शक सत्ता द्वारा पहले ही संकेत दिया गया था कि उनके जीवन में एक महत्वपूर्ण सहयोगिनी पुनः आएँगी। यह पूर्वजन्म की सहचरी वंदनीया भगवती देवी शर्मा थीं, जिन्होंने न केवल गृहस्थ जीवन में उनका साथ निभाया, बल्कि उनके मिशन को आगे बढ़ाने में भी अहम भूमिका निभाई।

वंदनीया माता जी का जन्म एक संपन्न जमींदार परिवार में हुआ था, जहाँ उन्हें बचपन से ही धार्मिक और परोपकारी संस्कार मिले। विवाह के पश्चात उन्होंने पूर्ण समर्पण के साथ आचार्य जी के मिशन में योगदान दिया। वे गायों की सेवा करतीं, अतिथियों का सत्कार करतीं और आचार्य जी की साधना एवं

कार्यालयीन कार्यों की देखभाल करतीं। उनका निःस्वार्थ भाव ही उन्हें संपूर्ण गायत्री परिवार की श्रद्धास्पद माता बना गया।

**निष्कर्ष:**

वंदनीया भगवती देवी शर्मा ने पं. श्रीराम शर्मा आचार्य की सहयोगिनी बनकर न केवल गृहस्थ जीवन में उनका साथ निभाया, बल्कि उनके मिशन को आगे बढ़ाने में भी अहम भूमिका निभाई। सहयोगिनी का साथ पाकर ही निश्चिंत होकर आचार्य जी विविध माध्यमों द्वारा मानवता का कार्य कर सके।

## ५.१०.गायत्री महाविज्ञान ग्रंथ की रचना

गायत्री मंत्र की गूढ़ शक्ति और वैज्ञानिक आधार को सिद्ध करने के लिए आचार्य जी ने गहन शोध किया। इसके परिणामस्वरूप उन्होंने 'गायत्री महाविज्ञान' नामक तीन बृहद ग्रंथों की रचना की। इन ग्रंथों में गायत्री मंत्र की आध्यात्मिक, वैज्ञानिक और व्यावहारिक महत्ता को स्थापित किया गया। यह केवल एक धार्मिक ग्रंथ नहीं था, बल्कि गायत्री साधना का एक नवीन दर्शन था, जिसमें आत्मविकास और समाजोत्थान की आधारशिला रखी गई।

उनका मानना था कि गायत्री साधना केवल आत्मिक उन्नति तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि यह समाज परिवर्तन का भी माध्यम बन सकती है। इस दृष्टि से उन्होंने गायत्री मंत्र के प्रचार-प्रसार को व्यापक रूप दिया और इसे सभी जाति-वर्गों के लिए सुलभ बनाया।

## ५.११. गायत्री तपोभूमि की स्थापना

'अखण्ड ज्योति' पत्रिका के बढ़ते प्रभाव और गायत्री साधना के प्रचार-प्रसार के लिए एक स्थायी केंद्र की आवश्यकता थी। मथुरा के घीयामंडी स्थित संस्थान छोटा पड़ने लगा था, इसलिए यमुना के किनारे एक नई भूमि खोजी गई। इसके लिए पर्याप्त धन की जरूरत थी, तब माता भगवती देवी जी ने अपने सभी आभूषण दान कर दिए, जिससे इस कार्य में कोई बाधा न आए।

वैशाख पूर्णिमा १९५३ को मथुरा-वृंदावन मार्ग पर 'गायत्री तपोभूमि' की स्थापना की गई। इसका उद्घाटन एक २४ दिवसीय मौन और जल उपवास के साथ हुआ। इस दौरान एक हजार साधकों द्वारा २४ लाख गायत्री मंत्रों का हस्तलेखन करवाया गया।

सन् १९५४ से यहाँ जीवन-विद्या सत्रों और प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन शुरू हुआ, जिनमें आत्मनिर्माण और समाजोत्थान के लिए अनेक विधाओं का प्रशिक्षण दिया जाने लगा। यह केंद्र धीरे-धीरे गायत्री परिवार की गतिविधियों का मुख्य केंद्र बन गया।

## ५.१२. गायत्री महायज्ञों का आयोजन

### ५.१२.१. गायत्री नरमेध यज्ञ (१९५६)

सन् १९५६ में मथुरा में 'गायत्री नरमेध यज्ञ' का आयोजन हुआ, जिसने हजारों साधकों को एक आध्यात्मिक उद्देश्य से जोड़ा। इस यज्ञ का असली उद्देश्य समाज में त्याग और सेवा की भावना जागृत करना था। इस यज्ञ में कई लोगों ने अपने जीवन को गायत्री परिवार के कार्यों के लिए समर्पित किया।

### ५.१२.२. अखिल भारतीय गायत्री परिवार सम्मेलन (१९५७)

सन् १९५७ में अखिल भारतीय गायत्री परिवार सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें देशभर से आए साधकों को मिशन के आगामी कार्यक्रमों की जानकारी दी गई और उन्हें समाजोत्थान के कार्यों के लिए प्रेरित किया गया।

### ५.१२.३. सहस्रकुंडीय विराट गायत्री महायज्ञ (१९५८)

सन् १९५८ में गायत्री तपोभूमि में सहस्रकुंडीय विराट गायत्री महायज्ञ आयोजित किया गया, जिसमें लाखों श्रद्धालुओं और साधकों ने भाग लिया। इस यज्ञ ने समाज में एक क्रांतिकारी परिवर्तन लाया—

- इसमें सभी जातियों और वर्गों के लोगों को यज्ञ में भाग लेने का अवसर मिला, जिससे गायत्री साधना पर एकाधिकार का भ्रम समाप्त हुआ।
- महिलाओं को भी यज्ञ का अधिकारी बनाया गया, जिससे आध्यात्मिक स्वतंत्रता का संदेश दिया गया।
- इस यज्ञ में बिना किसी चंदे के लाखों श्रद्धालुओं ने अपनी श्रद्धा से भाग लिया।
- इस यज्ञ के दौरान दहेज रहित विवाह संपन्न हुए और कई साधकों ने अपने अवगुणों को त्यागने की प्रतिज्ञाएँ लीं।
- इस विराट यज्ञ में पूरे मथुरा-वृंदावन मार्ग पर श्रद्धालुओं के अस्थायी शिविर लग गए थे। श्रद्धालु विभिन्न साधनों से यहाँ पहुँचे—कुछ साइकिलों पर, कुछ घोड़ों पर और कुछ पैदल ही जयघोष करते हुए।

**निष्कर्ष: महायज्ञों के माध्यम से समाजोत्थान**

इन महायज्ञों ने केवल आध्यात्मिक जागरण ही नहीं किया, बल्कि सामाजिक क्रांति भी लाई। गायत्री मंत्र को सर्वजन सुलभ बनाकर आचार्य जी ने सामाजिक समरसता को बढ़ावा दिया। इन आयोजनों ने गायत्री परिवार के विस्तार को एक संगठित और प्रभावशाली रूप दिया।

## ५.१३. अज्ञातवास और माता भगवती देवी जी को कार्यभार सौंपना

सन् १९५८ में विराट गायत्री महायज्ञ के बाद आचार्य जी ने गायत्री तपोभूमि और 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका के संपादन का कार्य माता भगवती देवी शर्मा को सौंप दिया और स्वयं अज्ञातवास के लिए प्रस्थान कर गए। यह निर्णय दर्शाता है कि माता जी न केवल उनकी सहधर्मिणी थीं, बल्कि गायत्री परिवार की मुख्य आधारशिला भी थीं। उन्होंने इस कार्यभार को पूर्ण निष्ठा से संभाला और गायत्री परिवार के विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य और माता भगवती देवी शर्मा का जीवन केवल एक गृहस्थ जोड़े का नहीं था, बल्कि यह आध्यात्मिक क्रांति का युगल प्रयास था। गायत्री महाविज्ञान के निर्माण से लेकर गायत्री तपोभूमि की स्थापना और विराट यज्ञों के आयोजन तक, उन्होंने एक ऐसा आंदोलन खड़ा किया, जिसने आध्यात्मिकता को समाज सेवा से जोड़ा। उनके कार्यों ने केवल भारत में ही नहीं, बल्कि समस्त विश्व में गायत्री परिवार के रूप में एक विशाल आंदोलन को जन्म दिया, जो आज भी मानवता की सेवा में निरंतर सक्रिय है।

## ५.१४. युग निर्माण विद्यालय की स्थापना (१९६७)

शिक्षा को जीवन के हर क्षेत्र में सुधार का मूल आधार मानते हुए, पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने १९६७ में युग निर्माण विद्यालय की स्थापना की। इस विद्यालय की विशेषता पारंपरिक शिक्षा के साथ-साथ जीवनोपयोगी विषयों का शिक्षण भी था। यहाँ व्यक्तित्व निर्माण, आत्मविकास, सेवा भावना और सामाजिक जागरूकता पर विशेष ध्यान दिया जाता था। इस विद्यालय के माध्यम से हजारों युवाओं को जीवन को नई दिशा देने हेतु प्रशिक्षित किया गया।

युग निर्माण विद्यालय की स्थापना का उद्देश्य केवल किताबी ज्ञान देना नहीं था, बल्कि यह एक व्यावहारिक शिक्षा केंद्र था, जहाँ चरित्र निर्माण, नैतिकता और मानवीय मूल्यों को प्राथमिकता दी जाती थी। इस विद्यालय में जीवन प्रबंधन, सेवा कार्यों की योजना, समाज सुधार, आत्मनिर्भरता और नेतृत्व विकास जैसे विषयों पर विशेष बल दिया गया। इस शिक्षा प्रणाली का दूरगामी प्रभाव पड़ा और इससे प्रशिक्षित युवा समाज सुधार और राष्ट्र निर्माण के कार्यों में जुट गए।

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य की युग निर्माण विद्यालय की स्थापना, हिमालय यात्रा और शांतिकुंज की स्थापना तीनों घटनाएँ उनके महान लक्ष्य का हिस्सा थीं। उनके द्वारा स्थापित संस्थाएँ आज भी समाज में जागरूकता और आध्यात्मिकता का प्रकाश फैला रही हैं।

युग निर्माण विद्यालय ने हजारों युवाओं को राष्ट्र सेवा और समाज सुधार की दिशा दी।

## ५.१५. शांतिकुंज की स्थापना और विस्तार (१९७१-१९९०)

### ५.१५.१. शांतिकुंज की स्थापना

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का जीवन उनके मार्गदर्शक गुरुसत्ता के निर्देशों पर आधारित था। वे समय-समय पर गुरुसत्ता से प्राप्त दिव्य प्रेरणाओं के अनुसार कार्य करते थे। २० जून १९७१ को उन्होंने अपनी जीवन संगिनी वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा के साथ शांतिकुंज, हरिद्वार के लिए प्रस्थान किया। यह उनके जीवन का एक ऐतिहासिक मोड़ था। हजारों श्रद्धालुओं ने उन्हें भावनापूर्ण विदाई दी।

शांतिकुंज पहुँचने के बाद, कुछ समय के लिए वे वहाँ रुके और फिर गुरुसत्ता के निर्देशानुसार हिमालय की ओर प्रस्थान कर गए। उनकी यह यात्रा केवल बाह्य हिमालय यात्रा नहीं थी, बल्कि यह एक आध्यात्मिक साधना और दिव्य शक्तियों से मार्गदर्शन प्राप्त करने की यात्रा थी। हिमालय की इस यात्रा में उन्होंने गहन साधना की और अपने जीवन के आगामी कार्यों की स्पष्ट रूपरेखा प्राप्त की।

इसी दौरान वंदनीया माता जी ने शांतिकुंज में रहकर साधकों का मार्गदर्शन किया और कन्याओं के प्रशिक्षण का कार्य प्रारंभ किया। उन्होंने गायत्री पुरश्चरण की एक अनूठी साधना प्रारंभ करवाई, जिसमें लाखों बार गायत्री मंत्र का जप किया गया। यह भारत में नारी जागरण के प्रारंभिक चरणों में से एक महत्त्वपूर्ण घटना थी।

कुछ समय बाद आचार्य जी हिमालय से लौटे और शांतिकुंज में समाज सुधार और आध्यात्मिक जागरण के कार्यों को और अधिक संगठित किया।

जब आचार्य जी १९७१ में हरिद्वार आए, तब शांतिकुंज एक साधारण स्थान था। यहाँ घने वृक्षों और झाड़ियों के अतिरिक्त कोई विशेष निर्माण नहीं था। लेकिन आचार्य जी के मार्गदर्शन में यह स्थान धीरे-धीरे एक विशाल आध्यात्मिक और सामाजिक क्रांति का केंद्र बन गया।

शांतिकुंज का प्रमुख उद्देश्य आध्यात्मिक साधना, भारतीय संस्कृति का संरक्षण, समाज सुधार, नारी जागरण और युवा चेतना का विकास था। यहाँ अनेक प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए जाने लगे, जिनमें साधकों को आत्मविकास, समाज सेवा और राष्ट्र निर्माण के कार्यों में प्रशिक्षित किया जाता था।

### ५.१५.२. महिला जागरण अभियान

गुरुदेव को यह देखकर अत्यधिक पीड़ा होती थी कि नारी समाज विभिन्न प्रकार के दमन, शोषण, उत्पीड़न और अशिक्षा का शिकार है। इस स्थिति को सुधारने के लिए वंदनीया माता जी के संरक्षण में १९७१ से कन्या शिक्षण शिविर आयोजित किए जाने लगे। १९७५ से महिला जागरण अभियान नामक एक स्वतंत्र

पत्रिका निकाली गई। प्रशिक्षित देवकन्याओं ने १९७५ से १९७९ तक देशभर में नारी जागरण के कार्यक्रम चलाए।

### ५.१५.३. वैज्ञानिक अध्यात्मवाद की नींव

१९६८ में पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने विज्ञान और बुद्धिवाद की मान्यताओं को ध्यान में रखकर वैज्ञानिक अध्यात्मवाद की अवधारणा विकसित की। उन्होंने विज्ञान की विभिन्न शाखाओं के विशेषज्ञों से संपर्क कर अध्यात्म और विज्ञान के संबंध में २०,००० से अधिक पृष्ठों का साहित्य एकत्रित किया। इसके आधार पर १९७८-७९ में अनेक पुस्तकें प्रकाशित हुईं और वैज्ञानिक शोध कार्य आरंभ हुआ। १९७९ और १९८० में वैज्ञानिक अध्यात्मवाद पर चिंतन सत्र आयोजित किए गए।

शांतिकुंज का विस्तार केवल भौतिक दृष्टि से नहीं हुआ, बल्कि विचारधारा और क्रियाकलापों के स्तर पर भी हुआ। यहाँ से निकलने वाले साधक और कार्यकर्ता पूरे देश और विश्व में युग निर्माण आंदोलन को आगे बढ़ाने में जुट गए। शांतिकुंज आज भी एक आध्यात्मिक और सांस्कृतिक जागरण केंद्र के रूप में कार्य कर रहा है।

इन प्रयासों के माध्यम से उन्होंने भारतीय समाज को नई दिशा दी और आध्यात्मिक विज्ञान के क्षेत्र में अमूल्य योगदान दिया। उनका जीवन एक प्रेरणा स्रोत बना रहेगा, जो बताता है कि समर्पण, साधना और संगठन शक्ति के बल पर किसी भी लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है।

### ५.१५.४. ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान

मंत्र की प्रचंड शक्ति और यज्ञ की ऊर्जा के वैज्ञानिक प्रयोगों पर गुरुदेव का ध्यान गया और उन्होंने यज्ञाग्नि के धुएँ का रासायनिक विश्लेषण करवाने की व्यवस्था की तथा मंत्रों के प्रभावों को वनौषधियों पर जाँचने की व्यवस्था की। ब्रह्मवर्चस को वैज्ञानिक नवीनतम उपकरणों से सुसज्जित किया गया तथा इसमें वैज्ञानिक प्रयोगों के लिए एक सक्षम प्रयोगशाला स्थापित की। इसके साथ ही विभिन्न विषयों पर एक विशाल ग्रंथशाला स्थापित की। समाज के अगणित सुपात्र व्यक्तियों को शक्ति प्रदान कर उनको समाज के नवनिर्माण हेतु एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में तैयार करने के लिए अनेक प्रशिक्षण शिविर लगाए और उन्हें प्रशिक्षित किया। प्राण-प्रत्यावर्तन की यह प्रक्रिया स्थूल और सूक्ष्म, दोनों माध्यमों से चली। शारीरिक रोगों के साथ-साथ वर्तमान युग में मानसिक रोग भी दिन-प्रतिदिन बढ़ते जा रहे हैं। ऐसी स्थिति में गुरुदेव ने काफी गंभीरता से इनके निवारण हेतु विचार किया और शांतिकुंज में आसन, प्राणायाम और प्रज्ञायोग की उचित शिक्षा एवं प्रशिक्षण की व्यवस्था की, जिसका लाभआज लाखों लोग उठा रहे हैं।

### ५.१५.५. युग निर्माण योजना एवं मिशन

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने 'युग निर्माण योजना' के माध्यम से आध्यात्मिक पुनर्जागरण का कार्य किया। वे मानते थे कि समाज का सुधार व्यक्ति के सुधार से संभव है। इस उद्देश्य से उन्होंने "हम बदलेंगे, युग बदलेगा" और "हम सुधरेंगे, युग सुधरेगा" जैसे क्रांतिकारी विचारों को जन-जन तक पहुँचाया। उन्होंने नारी जागरण, नशा उन्मूलन, अंधविश्वास उन्मूलन, पर्यावरण संरक्षण और शिक्षा के क्षेत्र में अनेक सुधार कार्य किए।

### ५.१५.६. साहित्यिक योगदान

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने एक व्यापक साहित्यिक धरोहर की रचना की। उन्होंने भारतीय संस्कृति, अध्यात्म, योग और जीवन साधना से जुड़े विषयों पर करिबन ३२०० पुस्तकें लिखीं। उनके ग्रंथों में वेदों, उपनिषदों, दर्शनों, स्मृतियों और पुराणों के भाष्य विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। उन्होंने ४ वेद, १०८ उपनिषद,

६ दर्शन, २० स्मृतियाँ और १८ पुराणों का सरल भाषा में भाष्य प्रस्तुत किया, जिससे आम जनमानस के लिए इन ग्रंथों का ज्ञान सुगम हो सका।

## ५.१६. महाप्रयाण एवं विरासत

आचार्य जी की कुछ वर्षों से सूक्ष्मीकरण साधना चल रही थी। २ जून १९९० को पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने अपनी पूर्व घोषणा के अनुसार गायत्री जयंती के पावन दिन सूक्ष्म सत्ता में एकाकार होकर महाप्रयाण किया और अपनी आत्मा को माता गायत्री में लीन कर लिया। उनके महाप्रयाण पर लाखों अनुयायियों के शोक का पारावार न रहा। ७ से ८ जून, १९९० तक छः स्थानों पर देश में लक्षवेदी ब्रह्मदीप महायज्ञ आयोजित किए गए। जिसका महत्त्व और प्रभाव धीरे-धीरे समाज को विदित होता रहा।

उनकी स्मृति में भारत सरकार के डाक-तार विभाग द्वारा दि. २७ जून १९९१ तत्कालीन उपराष्ट्रपति शंकरदयाल शर्मा के हस्ते एक डाक टिकट विमोचन कर जारी किया। आज भी उनके द्वारा स्थापित शांतिकुंज, ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान और गायत्री परिवार उनके विचारों और आदर्शों को जन-जन तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

आचार्यश्री के महाप्रयाण के पश्चात् उनके दामाद डॉ. प्रणव पंड्या ने १९९४ में उनकी संस्थाओं की बागडोर संभाली। २००२ में डॉ. पंड्या ने शांतिकुंज में देव संस्कृति विश्वविद्यालय (देसंविवि) की स्थापना की, जहाँ प्राचीन भारतीय ज्ञान और आधुनिक विज्ञान का समन्वय किया जाता है।

## निष्कर्ष:

आचार्यश्री का जीवन सादगी, सेवा, तपस्या और परोपकार का अनुपम उदाहरण है। उन्होंने अपने जीवन को पूर्णतः मानवता की सेवा के लिए समर्पित कर दिया और एक ऐसे समाज की नींव रखी, जो आध्यात्मिक रूप से समृद्ध और नैतिक रूप से सशक्त हो। उनका जीवनदर्शन आज भी लाखों लोगों को प्रेरणा दे रहा है और भविष्य में भी समाज के उत्थान के लिए एक मार्गदर्शक बना रहेगा।

---

## साक्ष्य स्त्रोत:

उपरोक्त अध्याय ***"पं. श्रीराम शर्मा आचार्यजी के जीवन दर्शन में समाहित उनका व्यक्तित्व और मानवता का तार्किक विश्लेषण'*** का अध्ययन निम्न साक्ष्य स्त्रोतों के आधार पर कर तार्किक विश्लेषण किया है।


- *युग निर्माण योजना, आओ जाने युगऋषि को, युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट गायत्री तपोभूमि मथुरा, पुनरावृत्ति २०१८, पृष्ठ ३-७२.*
- *ब्रह्मवर्चस, पं. श्रीराम शर्मा आचार्य वाड्.मय-१: युगद्रष्टा का जीवनदर्शन, अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा, संशोधित संस्करण २०२१, पृष्ठ ४-८, ४२-६४.*
- *ब्रह्मवर्चस, ब्रह्म कमल, श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट, शान्तिकुंज, हरिद्वार, प्रथम खण्ड २०११, पृष्ठ १३-२१, २८-३०, १३०-१३१, १७३-१७५, २४७.*

# ६. पं. श्रीराम शर्मा आचार्यजी के प्रमुख कार्य और मानवता का तार्किक विश्लेषण

**भूमिका:**

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य एक युगद्रष्टा, समाज सुधारक, युगप्रवर्तक एवं आध्यात्मिक मार्गदर्शक थे, जिन्होंने मानवता की सेवा को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया। उनका संपूर्ण जीवन मानव मात्र के उत्कर्ष, समाज के नैतिक पुनर्निर्माण और विश्व शांति की स्थापना के लिए समर्पित रहा। बीसवीं सदी के संकटपूर्ण दौर में उन्होने साधना, सेवा और स्वाध्याय के त्रिसूत्रीय मार्ग से मानव चेतना को जाग्रत करने का मार्ग दिखाया।

उन्होंने अखिल विश्व गायत्री परिवार एवं युग निर्माण योजना की स्थापना की, जो आज विश्व के कोने-कोने में सामाजिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक जागरण के कार्यों में संलग्न हैं। उनके कार्य न केवल धार्मिक थे, बल्कि वैज्ञानिक, सामाजिक, नैतिक और शैक्षिक आयामों को भी समेटे हुए थे।

उन्होंने मथुरा में अखण्ड ज्योति संस्थान और गायत्री तपोभूमि, हरिद्वार में शांतिकुंज और ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान जैसी संस्थाओं की स्थापना करयुग परिवर्तन की दिशा में संघटित काग्र किया। इक्कीसवीं सदी का संविधान, विचार क्रांति अभियान, नारी जागरण, प्रज्ञा अभियान, शत सूत्री कार्यक्रम और सप्त सूत्री आंदोलन जैसे उनके कार्य विश्व मानवता के लिए प्रेरणास्त्रोत बन चुके हैं।

इस शोधप्रबंध के अंतर्गत पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा किए गए कार्यों ७ भागों में विभाजित किया है, जिसका अगले अध्यायों में तार्किक विश्लेषण कर यह समझने का प्रयास किया है कि कैसे उनके विचारों और प्रयासों ने समाज में व्याप्त अंधकार को दूर कर मानवता की लौ को पुनः प्रज्वलित किया।

६.१. संघठन एवं मिशन

६.२. महत्त्वपूर्ण स्थापनाएँ

६.३. महत्त्वपूर्ण अभियान

६.४. इक्कीसवीं सदी का संविधान – युग निर्माण सत्संकल्प

६.५. युग निर्माण का शत सूत्री कार्यक्रम

६.६. सप्त सूत्री आंदोलन

६.७. साहित्यिक योगदान

# ६.१. संघटन एवं मिशन

६.१.१. अखिल विश्व गायत्री परिवार की स्थापना

६.१.२. युग निर्माण योजना

# ६.१.१. अखिल विश्व गायत्री परिवार की स्थापना

मानवता जब दिशाहीन, संकटग्रस्त एवं मूल्यविहीन हो जाए, तब कोई युगद्रष्टा आगे बढ़कर समाज को दिशा देने के लिए अवतरित होता है। पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ऐसे ही एक युगप्रवर्तक संत, विचारक और क्रांतिकारी साधक थे, जिन्होंने बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में *"मनुष्य में देवत्व का उदय और धरती पर स्वर्ग का अवतरण"*— इस महान संकल्प के साथ "अखिल विश्व गायत्री परिवार" की स्थापना की। यह संगठन न केवल एक धार्मिक या आध्यात्मिक संस्था है, बल्कि यह *विश्व मानवता की चेतना* को जाग्रत करने वाला आंदोलन है।

## (क) संगठन की आवश्यकता – एक दृष्टिकोण

स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भूमिका निभाने के पश्चात पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने यह अनुभव किया कि समाज को केवल राजनीतिक स्वतंत्रता से नहीं, बल्कि *विचारों की स्वतंत्रता, आत्मबल और चारित्रिक शुद्धि* से भी मुक्त करना होगा। उन्होंने जब 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका के माध्यम से आत्म-चिंतन और विचार-विस्तार का माध्यम अपनाया, तब उनका लक्ष्य था— मानव मात्र को एक ऐसा मंच देना, जहाँ वह आत्मिक उन्नयन के साथ-साथ सामाजिक कल्याण के लिए संगठित होकर कार्य कर सके।

उन्होंने लिखा – "जितने भी बड़े-बड़े कार्य इस जगती पर संपन्न हुए हैं, वे संघशक्ति के बल पर ही हुए हैं।" यह कथन इस बात का स्पष्ट संकेत है कि वह संगठन को *एक साधन नहीं, बल्कि साधना* के रूप में देखते थे।

## (ख) गायत्री परिवार की विधिवत स्थापना का शुभारंभ

सन् १९५३ की *गायत्री जयंती* पर मथुरा में 'गायत्री तपोभूमि' की स्थापना करके उन्होंने चौबीस महापुरश्चरणों की तपश्चर्या की पूर्णाहुति कर एक नये युग का प्रारंभ किया। संभवत: अखिल विश्व गायत्री परिवार की विधिवत स्थापना का यह शुभारंभ था। अब उनकी साधना का अगला चरण था— *आत्मवत् सर्वभूतेषु* की भावना से प्रेरित सामाजिक संगठन का निर्माण। तपोभूमि को उन्होंने *संघ शक्ति के केन्द्र* के रूप में विकसित किया, जहाँ आत्मबल, साधना और सेवा के संस्कारों से युक्त परिजन तैयार किए जाते थे।

'अखण्ड ज्योति' की गायत्री चर्चा स्तंभ के माध्यम से उन्होंने गायत्री को जनसुलभ बनाया। वे चाहते थे कि साधना और सेवा दोनों का संतुलन हो। हर व्यक्ति अपने जीवन में *सद्विचार, सद्भावना और सदाचरण* का समावेश करे।

## (ग) महायज्ञों के माध्यम से जनजागरण

आचार्यश्री ने यज्ञ परंपरा को केवल वैदिक कर्मकांड की परिधि से बाहर निकालकर *जनचेतना और आत्मशुद्धि* का साधन बना दिया। शतकुंडीय, सहस्रकुंडीय यज्ञों के माध्यम से उन्होंने सामूहिक साधना और संगठन के बीज बोए।

१९५७ में आयोजित *१०८ कुंडीय नरमेध यज्ञ* इस श्रृंखला का एक ऐतिहासिक आयोजन था। उन्होंने इस यज्ञ के माध्यम से 'नरमेध' का भावार्थ समाज के लिए *अपना सर्वस्व समर्पित करने वाले व्यक्ति* के रूप में

पुनर्परिभाषित किया। इस यज्ञ के माध्यम से उन्होंने समाज के हर वर्ग से आह्वान किया कि वे अपने जीवन का उद्देश्य केवल स्वयं तक सीमित न रखें, बल्कि *समष्टि के कल्याण हेतु जीवनदान* करें।

## (घ) गायत्री परिवार — सेवा, साधना और स्वाध्याय का संगठन

"अखिल विश्व गायत्री परिवार" की औपचारिक स्थापना एक संगठन मात्र नहीं, बल्कि एक *वैचारिक आंदोलन* की शुरुआत थी। इसमें जाति, धर्म, भाषा, लिंग या देश की कोई सीमा नहीं थी। यह उन सभी के लिए था जो *मानवता, नैतिकता और आत्मिक उत्थान* में विश्वास रखते थे। सितंबर 1956 में प्रथम बार सदस्यता प्रारूप 'अखण्ड ज्योति' में प्रकाशित हुआ और शाखाएँ स्थापित की गईं।

१९५८ में आयोजित *१००८ कुंडीय विराट यज्ञ* द्वारा इस संगठन को राष्ट्रव्यापी रूप देने का कार्य हुआ। इस यज्ञ के माध्यम से लाखों व्यक्तियों को जोड़कर उन्हें आत्मोत्कर्ष व समाजोत्थान का एक सूत्र प्रदान किया गया। इस संगठन ने एक लाख साधकों के ब्रह्मास्त्र अनुष्ठान के द्वारा एक मानसिक क्रांति का संकल्प लिया, जिसका उद्देश्य *प्राकृतिक आपदाओं, युद्ध आशंकाओं और मानवीय पतन* से समाज को बचाना था।

## (ङ.) जनसाधारण में आत्मनिर्भरता और सामाजिक जिम्मेदारी का संचार

इस संगठन की विशेषता यह थी कि इसमें केवल साधना या प्रार्थना तक सीमित न रहकर व्यक्ति को *सामाजिक उत्तरदायित्व* की भावना से भी जोड़ा गया। गुरुदेव ने कहा था, "श्रद्धा केवल जप-माला में नहीं, सेवा में व्यक्त होती है।" उन्होंने कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित किया कि वे ग्राम-ग्राम जाकर शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता, व्यसनमुक्ति, और नारी जागरण के कार्य करें।

गायत्री परिवार का प्रत्येक सदस्य *"हम बदलेंगे, युग बदलेगा"* के आदर्श पर चलता था। यह संगठन न केवल लोगों को जोड़ता था, बल्कि उन्हें *सशक्त, शिक्षित और संवेदनशील नागरिक* के रूप में तैयार करता था।

## (च) आध्यात्मिकता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का समन्वय

यह संगठन केवल धर्म या संस्कृति की बात नहीं करता था, बल्कि *मानवीय मूल्यों को वैज्ञानिक तर्क और व्यावहारिकता* के साथ जोड़ता था। यज्ञ को वायुमंडलीय शुद्धिकरण, जप को मानसिक अनुशासन, और सेवा को सामाजिक विज्ञान के रूप में प्रस्तुत कर उन्होंने *आध्यात्मिकता को वैज्ञानिक धरातल* पर स्थापित किया।

## निष्कर्ष — संगठन नहीं, मानवता की यात्रा का प्रारंभ

"अखिल विश्व गायत्री परिवार" की स्थापना, पं. श्रीराम शर्मा आचार्य की *मानवता के प्रति पूर्ण समर्पण की मूर्त अभिव्यक्ति* है। यह संस्था एक उदाहरण है कि जब कोई संगठन *आत्मिक, सामाजिक और वैज्ञानिक* दृष्टि से मार्गदर्शन करता है, तो वह केवल संस्था नहीं रहता, *एक जनचेतना का केन्द्र* बन जाता है।

यह संगठन न केवल धर्म और आस्था का मंच है, बल्कि *संवेदना, सहयोग और समर्पण* का विद्यालय है। यह एक ऐसी मानव-चेतना है, जो जीवन को सेवा, साधना और त्याग की त्रिवेणी में स्नान कराती है।

अतः यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि "अखिल विश्व गायत्री परिवार" पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा स्थापित मानवता का एक जीवंत प्रतीक है, जहाँ करोड़ों व्यक्तियों के हृदयों में *करुणा, विवेक और समर्पण* का दीपक जलता है, और वे युगद्रष्टा के पथ पर चलकर एक श्रेष्ठ समाज, श्रेष्ठ राष्ट्र और श्रेष्ठ विश्व की रचना में योगदान दे रहे हैं।

---

## साक्ष्य स्रोत:

उपरोक्त अध्याय **"*अखिल विश्व गायत्री परिवार की स्थापना*"** का अध्ययन निम्न साक्ष्य स्रोतों के आधार पर कर तार्किक विश्लेषण किया है।

- *ब्रह्मवर्चस, पं. श्रीराम शर्मा आचार्य वाङ्.मय-१: युगद्रष्टा का जीवनदर्शन, अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा, संशोधित संस्करण २०२१, पृष्ठ ७२-७७.*
- *All World Gayatri Pariwar, Website, http://literature.awgp.org, अखण्ड ज्योति, अगस्त १९५३, पृष्ठ २९*

# ६.१.२. युग निर्माण योजना

पं. श्रीराम शर्मा आचार्यजी (१९११-१९९०) केवल एक आध्यात्मिक संत, विचारक और समाज सुधारक ही नहीं थे, बल्कि वे युग निर्माण योजना के प्रणेता के रूप में एक वैश्विक क्रांति के सूत्रधार भी थे। उन्होंने मानवता के समग्र उत्थान के लिए न केवल एक व्यापक चिंतनधारा प्रस्तुत की, बल्कि उसे व्यावहारिक रूप से कार्यान्वित करने हेतु 'युग निर्माण योजना' का सूत्रपात किया।

१९५८ में मथुरा में आयोजित सहस्त्रकुंडीय गायत्री महायज्ञ के अवसर पर उन्होंने इस महायोजना की संकल्पना की थी, जिसे १९६२ में विधिवत रूप से प्रारंभ किया गया। इस योजना का आधारभूत सिद्धांत था - "**हम बदलेंगे, युग बदलेगा**" तथा "**हम सुधरेंगे, युग सुधरेगा**"। यह योजना व्यक्ति, परिवार, समाज और सम्पूर्ण विश्व के नैतिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक पुनर्जागरण के लिए एक प्रभावी माध्यम बनी। युग-परिवर्तन का आधार व्यक्ति-परिवर्तन है। वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक जीवन में उत्कृष्टता लाने का प्रचंड पुरुषार्थ युग निर्माण योजना के '**शतसूत्री**' **कार्यक्रमों** द्वारा किया जा रहा है। इसकी संकल्पना '**मनुष्य में देवत्व का उदय**' एवं '**धरती पर स्वर्ग का अवतरण**' की थी, जिसे व्यावहारिक स्वरूप देने हेतु उन्होंने '**युग निर्माण सत्संकल्प**' प्रतिपादित किया।

## (क) युग निर्माण योजना का स्वरूप और मानवता पर प्रभाव

युग निर्माण योजना एक बहुआयामी आंदोलन है, जो व्यक्ति निर्माण, परिवार निर्माण और समाज निर्माण के सिद्धांतों पर आधारित है। यह आंदोलन केवल आध्यात्मिक जागरण तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इसने मानवता के हर पहलू को प्रभावित किया, चाहे वह नैतिकता हो, शिक्षा हो, स्वास्थ्य हो, पर्यावरण संरक्षण हो, नारी जागरण हो या सामाजिक सुधार हो।

### (१) व्यक्ति निर्माण — आत्मनिर्माण से समाज सुधार

आचार्यजी ने इस योजना का पहला लक्ष्य 'व्यक्ति निर्माण' को रखा, क्योंकि उनका मानना था कि यदि व्यक्ति में नैतिकता, ईमानदारी, कर्तव्यपरायणता और सेवा-भाव उत्पन्न कर दिया जाए तो समाज स्वतः ही स्वच्छ एवं सभ्य बन जाएगा।

- आत्मनिर्माण के लिए उन्होंने **साधना, स्वाध्याय, संयम और सेवा** के चार स्तंभ प्रस्तुत किए।
- आध्यात्मिक उत्थान के लिए **उपासना, साधना और आराधना** को अनिवार्य बताया।
- विचारशुद्धि के लिए शुद्ध चिंतन, सद्गुणों का विकास और आत्मनिरीक्षण को आवश्यक बताया।
- उन्होंने यह स्थापित किया कि "**मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता स्वयं है**" और **जो जैसा सोचता और करता है, वह वैसा ही बन जाता है**।

इस विचारधारा ने लाखों लोगों को आत्मोन्नति की दिशा में प्रवृत्त किया और उनके जीवन को सार्थक बनाया।

### (२) परिवार निर्माण — सशक्त समाज की नींव

आचार्यजी का मत था कि यदि परिवार में सुसंस्कारिता, परस्पर प्रेम, अनुशासन और त्याग की भावना विकसित हो जाए तो समाज में स्वतः नैतिक मूल्यों की स्थापना हो जाएगी।

- उन्होंने परिवार को '**संस्कारशाला**' बताया, जहाँ से मानवता की जड़ें पोषित होती हैं।

- **'परिवार में सामूहिक साधना'** और **'संयुक्त परिवार व्यवस्था'** को बल दिया।
- पारिवारिक सौहार्द्र बनाए रखने हेतु **त्याग, परोपकार, सेवा, सहिष्णुता** जैसे गुणों का विकास आवश्यक बताया।

इस दृष्टि से युग निर्माण योजना ने मानवता को एक समृद्ध और सशक्त समाज देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

**(३) समाज निर्माण — विचार क्रांति से नवजागरण**

आचार्यजी ने सामाजिक उत्थान के लिए अनेक सुधारात्मक एवं रचनात्मक कार्यक्रम चलाए। उन्होंने समाज में व्याप्त अंधविश्वास, जातिवाद, छुआछूत, बाल-विवाह, अशिक्षा, नारी उत्पीड़न, मद्यपान, नशाखोरी जैसी कुप्रथाओं को मिटाने के लिए जन-जागरण अभियान चलाया।

- सप्त आंदोलन (**साधना, स्वास्थ्य, शिक्षा, स्वावलंबन, पर्यावरण संरक्षण, नारी जागरण, व्यसन मुक्ति एवं कुप्रथा उन्मूलन**) के माध्यम से समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने का प्रयास किया गया।
- शराबबंदी, मांसाहार निषेध, गंगा सफाई अभियान, ग्रामीण विकास अभियान आदि कार्यक्रमों द्वारा जन-जागरण किया गया।
- उन्होंने **'नारी जागरण'** को विशेष रूप से महत्त्व दिया और महिलाओं को शिक्षित, आत्मनिर्भर एवं सशक्त बनाने के लिए अनेक प्रयास किए।

इन प्रयासों ने समाज में नैतिकता, स्वच्छता और बौद्धिकता का संचार किया, जिससे मानवता को एक उच्चस्तरीय जीवनशैली मिली।

## (ख) युग निर्माण योजना के प्रमुख आयाम और मानवता के प्रति योगदान

**(१) आध्यात्मिक पुनर्जागरण और लोकशिक्षण**

गायत्री उपासना, यज्ञ, संस्कार एवं पर्व-त्योहारों के माध्यम से धर्मतंत्र को लोकशिक्षण का माध्यम बनाया।

- अखण्ड ज्योति पत्रिका के माध्यम से करोड़ों लोगों तक जीवन निर्माण के सूत्र पहुँचाए।
- आत्म-विकास एवं समाजोत्थान हेतु आवलखेड़ा (आगरा), अखण्ड ज्योति संस्थान (मथुरा), गायत्री तपोभूमि (मथुरा), शांतिकुंज (हरिद्वार), ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान (हरिद्वार), देव संस्कृति विश्वविद्यालय (हरिद्वार) जैसे संस्थानों की स्थापना की।

इससे न केवल धार्मिकता का पुनर्जागरण हुआ, बल्कि वैज्ञानिक अध्यात्म को भी मान्यता मिली।

**(२) शिक्षा और ज्ञान-विस्तार**

आचार्यजी ने ज्ञान को ही सर्वोच्च शक्ति माना और इसलिए वेद, उपनिषद्, पुराणों सहित हजारों ग्रंथों का सरल हिंदी अनुवाद कर आमजन तक पहुँचाया।

- 'झोला पुस्तकालय', 'ज्ञानरथ', 'पुस्तक मेले' जैसे कार्यक्रमों से विद्या-विस्तार किया।
- 'देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार' की स्थापना की, जहाँ भारतीय संस्कृति और वैज्ञानिक अध्यात्म का समन्वय किया जाता है।

- शैक्षिक सुधारों के माध्यम से नैतिक मूल्यों को शिक्षा प्रणाली में पुनः स्थापित किया।

इससे मानवता को शिक्षित, संस्कारित और जागरूक बनाने की दिशा में अपूर्व योगदान मिला।

**(३) स्वास्थ्य और पर्यावरण संरक्षण**

- अखण्ड ज्योति पारमार्थिक औषधालय और नि:शुल्क चिकित्सा शिविरों द्वारा समाज को स्वास्थ्य लाभ प्रदान किया।
- जड़ी-बूटी विज्ञान को पुनर्जीवित कर आयुर्वेद को पुनर्स्थापित किया।
- वृक्षारोपण, जलसंरक्षण और जैविक खेती को प्रोत्साहित कर पर्यावरण संरक्षण की दिशा में योगदान दिया।

इन प्रयासों से मानवता को एक स्वस्थ जीवनशैली मिली और पर्यावरण संतुलन बनाए रखने में मदद मिली।

## (ग) युग निर्माण योजना के उद्देश्य और कार्यक्षेत्र

आचार्यजी के अनुसार, *ध्वंस की नहीं, सृजन की क्रांति* समय की मांग है। यह योजना उसी सृजनात्मक उद्देश्य को मूर्त रूप देती है। युग निर्माण योजना के मुख्य उद्देश्य निम्न है—

- मनुष्य में देवत्व का उदय, धरती पर स्वर्ग का अवतरण
- आत्मवत् सर्वभूतेषु, वसुधैव कुटुंबकम्
- एक राष्ट्र, एक भाषा, एक धर्म, एक शासन
- जनमानस का भावनात्मक परिष्कार
- स्वस्थ शरीर, स्वच्छ मन, सभ्य समाज

इस योजना का मुख्य उद्देश्य स्वस्थ शरीर, स्वच्छ मन और सभ्य समाज की स्थापना करना था। इसे प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित कार्यक्षेत्र निर्धारित किए गए—

**(१) नैतिक एवं बौद्धिक क्रांति:**

- विचार क्रांति अभियान के माध्यम से जनमानस को नैतिक और बौद्धिक रूप से परिष्कृत करना।
- चारों वेद, उपनिषद, स्मृति, पुराणों के सरल हिंदी अनुवाद द्वारा आध्यात्मिक चेतना का विकास।
- 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका और हजारों ग्रंथों के प्रकाशन के माध्यम से ज्ञान का प्रचार-प्रसार।

**(२) सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्रांति:**

- जाति, पंथ और संप्रदाय की संकीर्णता से ऊपर उठकर 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना का विकास।
- नारी जागरण, नारी शिक्षा और नारी सम्मान की पुनर्प्रतिष्ठा।
- समाज में व्याप्त अंधविश्वासों, कुरीतियों और कुप्रथाओं का उन्मूलन।

**(३) आध्यात्मिक पुनर्जागरण:**

- धर्म को कर्मकांड से निकालकर उसे लोकमंगल से जोड़ना।
- गायत्री उपासना और यज्ञ संस्कारों के माध्यम से सत्प्रवृत्तियों का संवर्धन।
- धर्मतंत्र को लोकशिक्षण का माध्यम बनाकर समाज में वैज्ञानिक आध्यात्मिकता का प्रसार।

(४) **आर्थिक एवं शैक्षिक सुधार:**

- स्वावलंबन और आत्मनिर्भरता को प्रोत्साहित करने हेतु कुटीर उद्योगों का संवर्धन।
- नैतिक शिक्षा और संस्कारपरक शिक्षण प्रणाली का विकास।
- विद्या विस्तार, झोला पुस्तकालय, ज्ञानरथ और पुस्तक मेलों के माध्यम से ज्ञानवर्धन।

## (घ) युग निर्माण योजना का उद्घोष :

- हम बदलेंगे युग बदलेगा, हम सुधरेंगे युग सुधरेगा

## (ङ) युग निर्माण योजना का प्रतीक :

युग निर्माण योजना का *प्रतीक लाल मशाल* है, जो *ज्ञान, ऊर्जा, उमंग और जनजागरण* का प्रतिनिधित्व करती है। इसके पाँच घटक हैं—

- ***जनसमुदाय*** — परिवर्तन के लिए समर्पित नर-नारी
- ***हाथ*** — संगठित शक्ति
- ***मशाल*** — परिवर्तन का संकल्प
- ***ज्वाला*** — ऊर्जा व क्षमता
- ***प्रभामंडल*** — दिव्यता और ईश्वरीय संरक्षण

## (च) युग निर्माण योजना का संविधान - युग निर्माण सत्संकल्प

युग निर्माण योजना का संविधान है— **"युग निर्माण सत्संकल्प"**। इसमें १८ सूत्र हैं जो जीवन के हर पक्ष का मार्गदर्शन करते हैं — आहार, विचार, व्यवहार, संस्कृति, चरित्र, शिक्षा, कर्तव्य, धर्म, परिवार, समाज, सेवा, संयम, स्वावलंबन, स्वच्छता, पर्यावरण आदि पर आधारित।

## (छ) युग निर्माण योजना की ध्रुव मान्यताएँ:

- मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है।
- जो जैसा सोचता और करता है, वह वैसा ही बन जाता है।

इन सिद्धांतों के माध्यम से व्यक्ति को *अपने परिवर्तन की जिम्मेदारी स्वयं लेने* की प्रेरणा दी गई।

## (ज) आत्मनिर्माण के दो सूत्र:

- उत्कृष्ट चिंतन
- आदर्श कर्तृत्व

इनके माध्यम से व्यक्ति अपनी आंतरिक शक्ति का जागरण कर सकता है और आदर्श जीवन की ओर बढ़ सकता है।

## (झ) जीवन निर्माण के चार स्तंभ:

- **साधना** — आत्मिक चेतना की जागृति
- **स्वाध्याय** — ज्ञानवर्धन व आत्मनिरीक्षण
- **संयम** — इंद्रिय, समय, धन और विचार पर नियंत्रण
- **सेवा** — समाज के प्रति उत्तरदायित्व का निर्वाह

### (ञ) **आध्यात्मिक जीवन के तीन आधार:**

- उपासना,
- साधना,
- आराधना

### (ट) **प्रगतिशील जीवन के चार चरण:**

- समझदारी,
- ईमानदारी,
- जिम्मेदारी,
- बहादुरी

### (ठ) **संयमशीलता के चार स्तंभ:**

- इंद्रियसंयम,
- समयसंयम,
- अर्थसंयम,
- विचारसंयम

## निष्कर्ष:

पं. श्रीराम शर्मा आचार्यजी द्वारा प्रवर्तित युग निर्माण योजना केवल एक आध्यात्मिक या धार्मिक आंदोलन नहीं है, बल्कि यह मानवता के समग्र उत्थान का एक वैज्ञानिक एवं व्यावहारिक कार्यक्रम है। इसके माध्यम से उन्होंने **'मनुष्य में देवत्व का उदय'** और **'धरती पर स्वर्ग का अवतरण'** की संकल्पना को साकार करने का प्रयास किया। इस योजना के तहत चलाए गए सामाजिक सुधार, शिक्षा, स्वास्थ्य, नारी जागरण, पर्यावरण संरक्षण, नैतिक उत्थान आदि कार्यक्रमों ने संपूर्ण विश्व को एक नयी दिशा दी।

उनकी यह योजना आज भी करोड़ों लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव ला रही है और मानवता को एक उच्चतर आयाम की ओर ले जा रही है। उनका यह महायज्ञ तब तक चलता रहेगा, जब तक समाज में देवत्व और आदर्श मानवता की स्थापना नहीं हो जाती।

---

## साक्ष्य स्रोत:

उपरोक्त अध्याय ***"युग निर्माण योजना"*** का अध्ययन निम्न साक्ष्य स्रोतों के आधार पर कर तार्किक विश्लेषण किया है।


- *युग निर्माण योजना, मथुरा, दुनिया बदलेगी इन विचारों से, युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट, मथुरा, २०१८, पृष्ठ १५-१७.*
- *युग निर्माण योजना, आओ जाने युगऋषि को, युग निर्माण विस्तार ट्रस्ट गायत्री तपोभूमि मथुरा, पुनरावृत्ति २०१८, पृ. ८३.*
- *ब्रह्मवर्चस, पं. श्रीराम शर्मा आचार्य वाङ्.मय-६६: युग निर्माण योजना – दर्शन, स्वरूप व कार्यक्रम, अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा, संशोधित संस्करण २०१२, पृष्ठ ९०-११५.*
- *All World Gayatri Pariwar, Website, http://literature.awgp.org, व्यक्तित्व निर्माण युवा शिविर-युग निर्माण योजना एक परिचय, पृष्ठ २६*

## ६.२. महत्वपूर्ण स्थापनाएँ

६.२.१. युगतीर्थ आँवलखेड़ा
६.२.२. अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा
६.२.३. गायत्री तपोभूमि, मथुरा
६.२.४. शांतिकुंज, हरिद्वार
६.२.५. ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान, हरिद्वार
६.२.६. देवसंस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार
६.२.७. देशभर में गायत्री शक्तिपीठ, प्रज्ञापीठ एवं चेतना केंद्र जैसी प्रज्ञा संस्थानों की स्थापना

# ६.२.१. युगतीर्थ आँवलखेड़ा

युगतीर्थ आँवलखेड़ा केवल पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी की जन्मभूमि ही नहीं, बल्कि मानवता की सेवा, नैतिक जागरण और आत्मनिर्भरता का जीवंत केंद्र है। यह स्थान उन उच्च आदर्शों और सामाजिक मूल्यों को साकार करता है, जिनके लिए आचार्य जी ने अपना जीवन समर्पित किया। शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वावलंबन, नारी सशक्तिकरण और आध्यात्मिकता के समन्वय से युगतीर्थ आँवलखेड़ा समाज के लिए एक प्रेरणास्रोत बना हुआ है।

## (क) **जन्मस्थली: आध्यात्मिक ऊर्जा और प्रेरणा का केंद्र**

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी का जन्म आँवलखेड़ा (आगरा) में आश्विन कृष्ण त्रयोदशी, संवत् १९६८ (२० सितंबर, १९११) को हुआ था। उनकी जन्मस्थली को एक पवित्र तीर्थ के रूप में विकसित किया गया है, जहाँ हर साधक को आत्मिक ऊर्जा और प्रेरणा प्राप्त होती है।

इस जन्मस्थली के एक भाग में भव्य कीर्तिस्तंभ स्मारक का निर्माण किया गया है, जो आचार्य जी के महान कार्यों और उनके युग निर्माण आंदोलन की स्मृति को जीवंत रखता है। इसके अतिरिक्त, यहाँ एक अध्यात्म साधना का भव्य सूर्य मंदिर भी स्थापित किया गया है, जो आगंतुकों को ध्यान और साधना के लिए प्रेरित करता है। यह स्थान न केवल आचार्य जी के व्यक्तित्व को दर्शाता है, बल्कि समाज सुधार, आत्मनिर्भरता और आध्यात्मिक उत्थान के प्रति उनके समर्पण का प्रतीक भी है।

## (ख) **शिक्षा और आत्मनिर्भरता: समाज के उत्थान का आधार**

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी का मानना था कि समाज का विकास शिक्षा और आत्मनिर्भरता के बिना अधूरा है। इसी दृष्टिकोण से उन्होंने ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों के लिए श्री दानकुँवरि इंटर कॉलेज की स्थापना की। इस विद्यालय के लिए उन्होंने अपनी पूरी कृषि भूमि दान कर दी, जिससे यह सिद्ध होता है कि वे केवल उपदेश देने वाले संत नहीं, बल्कि अपने विचारों को कर्म में ढालने वाले युगद्रष्टा थे।

इसी क्रम में, उन्होंने बालिका उच्चतर माध्यमिक विद्यालय एवं महिला महाविद्यालय की स्थापना कर नारी शिक्षा को प्रोत्साहित किया। यह संस्थाएँ केवल शिक्षा प्रदान नहीं कर रहीं, बल्कि लड़कियों को आत्मनिर्भर और जागरूक नागरिक बनाने में सहायक बन रही हैं।

## (ग) **नारी सशक्तिकरण: समाज सुधार की दिशा में क्रांतिकारी कदम**

गायत्री परिवार ने नारी सशक्तिकरण को सामाजिक परिवर्तन का केंद्र माना है। आँवलखेड़ा में स्थापित स्वावलंबन केंद्र इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यहाँ महिलाओं को घरेलू उत्पाद निर्माण, कुटीर उद्योग, सिलाई-कढ़ाई और हस्तशिल्प का प्रशिक्षण दिया जाता है। इससे वे आर्थिक रूप से स्वतंत्र होकर अपने परिवार और समाज में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं।

इस प्रयास से यह स्पष्ट होता है कि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी केवल आध्यात्मिक जागरण तक सीमित नहीं थे, बल्कि वे व्यावहारिक जीवन में महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के पक्षधर थे।

## (घ) स्वास्थ्य सेवा: गरीबों और जरूरतमंदों के लिए वरदान

युगतीर्थ आँवलखेड़ा में स्थापित माँ भगवती देवी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ग्रामीण जनता के लिए सुलभ और सस्ती चिकित्सा सुविधाएँ प्रदान करता है। इससे आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को भी उचित उपचार मिल रहा है।

इसके अतिरिक्त, यहाँ पंचगव्य आधारित औषधियों का निर्माण किया जाता है, जिससे लोगों को प्राकृतिक चिकित्सा और आयुर्वेदिक उपचार की सुविधा प्राप्त होती है। यह कार्य आधुनिक चिकित्सा पद्धति के साथ-साथ प्राकृतिक उपचार की वैज्ञानिकता को भी उजागर करता है।

## (ङ) आध्यात्मिक और नैतिक पुनर्जागरण: मानवता के उत्थान की दिशा में अग्रसर

गायत्री शक्तिपीठ केवल एक धार्मिक स्थल नहीं, बल्कि सामाजिक और नैतिक जागरण का केंद्र भी है। यहाँ प्रतिदिन यज्ञ, साधना और विभिन्न प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन होता है, जिनका उद्देश्य व्यक्ति को आध्यात्मिक रूप से सशक्त और नैतिक रूप से जागरूक बनाना है।

यहाँ आयोजित नौ दिवसीय, चालीस दिवसीय और चांद्रायण साधना शिविर हजारों लोगों को आध्यात्मिक उन्नति और मानसिक शुद्धि की दिशा में प्रेरित कर रहे हैं। इससे समाज में सद्भावना, नैतिकता और परस्पर सहयोग की भावना विकसित हो रही है।

## (च) पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास

गायत्री परिवार ने पर्यावरण संरक्षण को भी मानवता के कल्याण से जोड़ा है। आँवलखेड़ा में गोशाला, गोबर गैस प्लांट और जैविक खेती को बढ़ावा दिया गया है, जिससे पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी सशक्त किया जा रहा है।

यहाँ की फार्मेसी में गोमूत्र और गोबर से बने उत्पादों का निर्माण किया जाता है, जिससे प्राकृतिक संसाधनों का संतुलित उपयोग और स्वास्थ्य लाभ प्राप्त किया जा रहा है।

## (छ) ग्राम विकास: एक आदर्श समाज की ओर कदम

युगतीर्थ आँवलखेड़ा न केवल एक धार्मिक और आध्यात्मिक केंद्र है, बल्कि यह ग्राम विकास की आदर्श प्रयोगशाला भी है। यहाँ के संस्थानों ने गाँव के लोगों को शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वावलंबन और आत्मनिर्भरता की ओर प्रेरित किया है। इससे ग्रामीण समाज में एक नवचेतना का संचार हुआ है, जो संपूर्ण भारत के लिए एक प्रेरणा बन सकता है।

## निष्कर्ष

युगतीर्थ आँवलखेड़ा केवल एक स्थान नहीं, बल्कि एक विचारधारा, एक आंदोलन और एक युगधर्म है। यहाँ स्थापित संस्थाएँ शिक्षा, नारी सशक्तिकरण, स्वास्थ्य सेवा, स्वावलंबन और आध्यात्मिक जागरण के माध्यम से समाज के सभी वर्गों के उत्थान में योगदान दे रही हैं।

इस पवित्र भूमि पर जन्म लेने वाले पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने इसे केवल एक आध्यात्मिक स्थल नहीं, बल्कि एक युग निर्माण की प्रयोगशाला के रूप में विकसित किया। उनकी जन्मस्थली आज भी साधकों, समाजसेवियों और राष्ट्र निर्माताओं के लिए प्रेरणा का केंद्र बनी हुई है।

युगतीर्थ आँवलखेड़ा संपूर्ण मानवता के लिए प्रेरणा का स्रोत बना हुआ है, जहाँ से समाज को दिशा देने वाली नई पीढ़ी तैयार हो रही है।

---

**साक्ष्य स्रोत:**

उपरोक्त अध्याय "***युगतीर्थ आँवलखेड़ा***" का अध्ययन निम्न साक्ष्य स्रोतों के आधार पर कर तार्किक विश्लेषण किया है।


- *युग निर्माण योजना, मथुरा, दुनिया बदलेगी इन विचारों से, युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट, गायत्री तपोभूमि मथुरा, २०१८, पृष्ठ १८-१९.*
- *युग निर्माण योजना, युग निर्माण योजना- एक परिचय, युग निर्माण विस्तार ट्रस्ट गायत्री तपोभूमि मथुरा, पुनरावृत्ति २०१८, पृष्ठ १८-१९.*
- *ब्रह्मवर्चस, पं. श्रीराम शर्मा आचार्य वाङ्.मय-१: युगद्रष्टा का जीवनदर्शन, अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा, संशोधित संस्करण २०२१, पृष्ठ १०..*
- *युग निर्माण योजना, आओ जाने युगऋषि को, युग निर्माण विस्तार ट्रस्ट गायत्री तपोभूमि मथुरा, पुनरावृत्ति २०१८, पृष्ठ ७३.*

# ६.२.२. अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा

अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा केवल एक साधारण संस्थान नहीं, बल्कि विचार क्रांति, आत्मोत्थान और मानवीय सेवा की प्रयोगशाला है। परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने सन् १९४० में इस संस्थान की स्थापना अपने सीमित संसाधनों के साथ की, जो आगे चलकर गायत्री परिवार और युग निर्माण मिशन का आधार बना।

मथुरा स्थित यह संस्थान मानवता के उत्थान की दृष्टि से शिक्षा, अध्यात्म, स्वास्थ्य सेवा और सामाजिक चेतना जागरण का केंद्र रहा है। यहाँ से न केवल आध्यात्मिक साहित्य और अखण्ड ज्योति पत्रिका का प्रकाशन हुआ, बल्कि लाखों लोगों को दिशा, समाधान और प्रेरणा देने वाले पत्र-व्यवहार, विचार क्रांति अभियान और युग निर्माण आंदोलन की नींव भी यहीं रखी गई।

### (क) विचार क्रांति: समाज सुधार का आधार

गुरुदेव का मानना था कि समाज में किसी भी बड़े बदलाव के लिए पहले विचारों की क्रांति आवश्यक है। इसी उद्देश्य से उन्होंने 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया, जो आज भी लाखों पाठकों को प्रेरित कर रही है।

यह पत्रिका केवल एक आध्यात्मिक पत्रिका नहीं थी, बल्कि मानवीय चेतना, नैतिक उत्थान और समाज सुधार का सशक्त माध्यम बनी। इस पत्रिका के माध्यम से –

- आध्यात्मिक और नैतिक जागरूकता फैलाई गई।
- सामाजिक बुराइयों, अंधविश्वास और रूढ़ियों के विरुद्ध जनजागरण अभियान चलाया गया।
- आत्मनिर्भरता, परिश्रम और ईमानदारी की भावना को प्रोत्साहित किया गया।
- युग निर्माण योजना के अंतर्गत व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक सुधार के सूत्र दिए गए।

गुरुदेव ने स्वयं पत्रिकाएँ प्रकाशित करने का कार्य किया और अपने साधनों से इसे निरंतर आगे बढ़ाया। उनकी विचारधारा केवल पढ़ने तक सीमित नहीं रही, बल्कि लाखों लोगों ने इसे अपने जीवन में अपनाया और समाज में परिवर्तन लाने का कार्य किया।

### (ख) साधना और तपश्चर्या: आत्मोन्नति के माध्यम से समाजोत्थान

गुरुदेव ने घीयामंडी स्थित इस संस्थान में ३० वर्षों तक कठोर साधना और लेखन कार्य किया। यहाँ उन्होंने न केवल आत्मिक प्रगति की, बल्कि अनेक आध्यात्मिक ग्रंथों, युग निर्माणपरक साहित्य और वेदों-पुराणों के भाष्य की रचना भी की।

यह स्थान केवल एक निवास स्थान नहीं, बल्कि ऋषियुग्म द्वारा मानवता के उत्थान के लिए एक तपस्थली बना। यहाँ साधना के माध्यम से –

- सतयुगीय संस्कृति की पुनः स्थापना के बीज बोए गए।
- धर्म, अध्यात्म और विज्ञान के समन्वय द्वारा आधुनिक मानव को दिशा दी गई।

- आध्यात्मिकता को केवल पूजा-पाठ तक सीमित न रखकर इसे व्यवहारिक जीवन में उतारने की प्रेरणा दी गई।

गुरुदेव का यह दृष्टिकोण केवल व्यक्तिगत मुक्ति तक सीमित नहीं था, बल्कि उनका उद्देश्य था कि हर व्यक्ति आत्मोन्नति करते हुए समाजोत्थान में योगदान दे।

### (ग) **सेवा भाव: दुखी और तनावग्रस्त व्यक्तियों को नवजीवन प्रदान करना**

मथुरा स्थित अखण्ड ज्योति संस्थान में गुरुदेव ने अपने व्यक्तिगत संपर्क, पत्राचार और मार्गदर्शन के माध्यम से लाखों लोगों की समस्याओं का समाधान किया।

- जो व्यक्ति जीवन से निराश हो चुके थे, उन्हें नया आत्मविश्वास और जीने की दिशा मिली।
- अनेक लोग जिन्होंने यहाँ आकर गुरुदेव और माताजी के हाथों भोजन-प्रसाद ग्रहण किया, वे स्वयं को परिवार का हिस्सा मानने लगे।
- आध्यात्मिक चिकित्सा और मानसिक शांति के लिए लोग यहाँ आते थे और समाधान पाकर लौटते थे।

यहाँ से दी गई मानसिक एवं आध्यात्मिक सहायता समाज में सकारात्मक परिवर्तन का आधार बनी और लाखों लोग आत्मिक शांति एवं सद्गुणों को अपनाने के लिए प्रेरित हुए।

### (घ) **शिक्षा और साहित्य के माध्यम से समाज निर्माण**

गुरुदेव ने इस संस्थान से गायत्री महाविज्ञान के तीनों खंड, वेदों और उपनिषदों के सरल भाष्य, युग निर्माण साहित्य, स्वाध्याय सामग्री और सामाजिक सुधार के लिए आवश्यक पुस्तकें प्रकाशित कीं।

इनका मुख्य उद्देश्य था –

- आम जनता तक वेदों और शास्त्रों का ज्ञान सरल भाषा में पहुँचाना।
- व्यक्ति को आध्यात्मिक रूप से जागरूक करने के साथ-साथ समाज सेवा के लिए प्रेरित करना।
- युग परिवर्तन के लिए आवश्यक नैतिक मूल्यों को जन-जन तक पहुँचाना।

इस कार्य ने एक नए बौद्धिक और सांस्कृतिक जागरण की नींव रखी, जिससे समाज में सकारात्मक बदलाव की प्रक्रिया आरंभ हुई।

### (ङ) **स्वास्थ्य सेवा: मानवीय कल्याण के लिए एक और महत्वपूर्ण प्रयास**

अखण्ड ज्योति संस्थान में अखण्ड ज्योति पारमार्थिक औषधालय की स्थापना की गई, जहाँ –

- आयुर्वेदिक, होम्योपैथिक और एलोपैथिक चिकित्सा उपलब्ध कराई गई।
- नेत्र चिकित्सा, योग, प्राणायाम, फिजियोथेरेपी और एक्यूप्रेशर जैसी आधुनिक और पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों का समन्वय किया गया।
- गायत्री मंत्र चिकित्सा और मानसिक स्वास्थ्य के लिए विशेष परामर्श सेवाएँ प्रदान की गईं।

इससे स्पष्ट होता है कि गुरुदेव केवल आध्यात्मिक या बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं थे, बल्कि वे मानवता की संपूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कार्यरत थे।

(च) **युग निर्माण मिशन की आधारशिला: समाज सुधार का व्यापक अभियान**

यहीं से गुरुदेव ने युग निर्माण योजना, सहस्त्रकुंडीय यज्ञ, छोटे-बड़े जनसम्मेलन, १००८ कुंडीय विराट यज्ञ और शांतिकुंज हरिद्वार की स्थापना जैसी योजनाओं की रूपरेखा बनाई।

इस मिशन ने –

- व्यक्ति के अंतःकरण को जाग्रत करने का कार्य किया।
- समाज में नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना के लिए लाखों स्वयंसेवकों को प्रशिक्षित किया।
- विचार क्रांति अभियान द्वारा सामाजिक बुराइयों को दूर करने का बीड़ा उठाया।

यह संस्थान केवल एक स्थान नहीं, बल्कि मानवता के उज्ज्वल भविष्य के लिए तैयार की गई एक प्रयोगशाला थी, जहाँ गुरुदेव ने समाज सुधार की नींव रखी।

**निष्कर्ष**

अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा केवल एक साधारण संस्थान नहीं, बल्कि एक विचारधारा, एक आंदोलन और एक प्रेरणास्रोत है। यहाँ से जो कार्य आरंभ हुआ, उसने न केवल भारत, बल्कि विश्वभर में आध्यात्मिकता, सेवा और समाज सुधार का संदेश फैलाया।

गुरुदेव की यह स्थापना सिद्ध करती है कि मानवता के कल्याण के लिए यदि दृढ़ संकल्प और समर्पण हो, तो सीमित संसाधनों में भी असाधारण कार्य संभव हैं। अखण्ड ज्योति संस्थान आज भी अपने कण-कण में गुरुदेव और माताजी की दिव्य चेतना को समेटे हुए, मानवता की सेवा के लिए सतत कार्य कर रहा है।

यह संस्थान केवल इतिहास का एक अध्याय नहीं, बल्कि भविष्य के निर्माण की आधारशिला है।

---

**साक्ष्य स्रोत:**

उपरोक्त अध्याय "***अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा***" का अध्ययन निम्न साक्ष्य स्रोतों के आधार पर कर तार्किक विश्लेषण किया है।


- *युग निर्माण योजना, मथुरा, दुनिया बदलेगी इन विचारों से, युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट, गायत्री तपोभूमि मथुरा, २०१८, पृष्ठ २०-२१.*
- *युग निर्माण योजना, युग निर्माण योजना- एक परिचय, युग निर्माण विस्तार ट्रस्ट, गायत्री तपोभूमि मथुरा, पुनरावृत्ति २०१८, पृष्ठ १९-२०.*
- *ब्रह्मवर्चस, पं. श्रीराम शर्मा आचार्य वाङ्.मय-१: युगद्रष्टा का जीवनदर्शन, अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा, संशोधित संस्करण २०२१, पृष्ठ १०-११.*
- *युग निर्माण योजना, आओ जाने युगऋषि को, युग निर्माण विस्तार ट्रस्ट गायत्री तपोभूमि मथुरा, पुनरावृत्ति २०१८, पृष्ठ ७४.*

# ६.२.३. गायत्री तपोभूमि, मथुरा

परम पूज्य पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित गायत्री तपोभूमि, मथुरा (सन् १९५३) केवल एक आध्यात्मिक स्थल नहीं, बल्कि मानवता के उत्थान के लिए एक महान प्रयोगशाला है। यहाँ चौबीस सौ तीर्थों के जल व रज को संग्रहीत कर उनका पूजन किया गया। इसी वर्ष हिमालय के महान सिद्धयोगी की धूनी से ७५० वर्ष पुरानी अखंड अग्नि स्थापित की गई और गायत्री महाशक्ति का मंदिर विनिर्मित किया गया। इस तपस्थली पर गुरुदेव के चौबीस महापुरश्चरणों की पूर्णाहुति के रूप में चौबीस सौ करोड़ गायत्री मंत्रों का लेखन स्थापित किया गया। यह स्थान गुरुदेव की तपस्या, विचारक्रांति और युग निर्माण अभियान की आधारशिला बना, जिससे संपूर्ण समाज को नवजागरण की प्रेरणा मिली।

## (क) **तपोभूमि: मानवता की पुनर्रचना का केंद्र**

गायत्री तपोभूमि का आधार गुरुदेव के २४ महापुरश्चरणों की पूर्णाहुति पर रखा गया। उन्होंने अपने साधना काल में २४ वर्षों तक कठोर तप केवल गाय के गोबर से प्राप्त जौ की रोटी और छाछ खाकर महापुरश्चरण संपन्न किया, २४ दिन का उपवास मात्र गंगाजल लेकर किया तथा वेदमाता, देवमाता, विश्वमाता गायत्री की स्थापना एवं प्राण-प्रतिष्ठा गायत्री तपभूमि में गायत्री जयंती के पावन पर्व पर की और समाज के लिए एक आदर्श प्रस्तुत किया कि आत्मशुद्धि और तपस्या के माध्यम से एक सामान्य व्यक्ति भी महापुरुष बन सकता है। यह स्थान एक उदाहरण है कि कैसे व्यक्तिगत साधना का उद्देश्य केवल आत्मोन्नति न होकर समाज का उत्थान भी होना चाहिए।

गायत्री तपोभूमि को स्थापित करने से पूर्व, गुरुदेव ने २,४०० तीर्थों के जल एवं रज को संग्रहीत कर वहाँ उनका पूजन किया। यह प्रतीकात्मक रूप से यह दर्शाता है कि इस स्थान पर संपूर्ण भारत की आध्यात्मिक ऊर्जा का समावेश किया गया, जिससे यह भूमि मानवता के कल्याण के लिए एक ऊर्जा केंद्र बन गई।

## (ख) **आध्यात्मिक साधना और मानवीय चेतना का विकास**

गायत्री तपोभूमि में स्थापित १०८ कुंडीय यज्ञशाला केवल धार्मिक अनुष्ठान का स्थल नहीं, बल्कि मानवता की सेवा का प्रतीक है। १९५३ में हुए प्रथम गायत्री महायज्ञ के माध्यम से गुरुदेव ने लाखों लोगों को मंत्र दीक्षा दी और उन्हें आत्मोत्थान का मार्ग दिखाया। यह मानवता के लिए एक अनुपम योगदान था, क्योंकि इससे लोगों को उनकी आंतरिक शक्ति का बोध हुआ और वे समाज सेवा के लिए प्रेरित हुए।

यहाँ संपन्न हुए विभिन्न यज्ञों जैसे नरमेध यज्ञ (१९५६), विराट सहस्रकुंडीय यज्ञ (१९५८) आदि केवल कर्मकांड नहीं थे, बल्कि इनमें निहित उद्देश्य श्रेष्ठ व्यक्तियों का चयन और समाजोत्थान था। नरमेध यज्ञ का तात्पर्य केवल पशुबलि से मुक्त वैदिक परंपरा की पुनर्स्थापना नहीं था, बल्कि श्रेष्ठ व्यक्तियों का निर्माण करना था, जो समाज को नैतिक और आध्यात्मिक रूप से ऊँचा उठाएँ।

## (ग) **सेवा, समर्पण और संस्कारों का केंद्र**

गायत्री तपोभूमि केवल एक धार्मिक स्थल नहीं, बल्कि एक सामाजिक सुधार केंद्र भी है। यहाँ पर निःशुल्क संस्कारों की व्यवस्था, गरीबों एवं जरूरतमंदों के लिए पारमार्थिक चिकित्सालय, तथा निःशुल्क

भोजनालय (वंदनीया माताजी का भोजनालय) स्थापित किए गए हैं। ये सभी व्यवस्थाएँ गुरुदेव की "अध्यात्म और मानवता के समन्वय" की दृष्टि को साकार करती हैं।

संस्कारों की नि:शुल्क व्यवस्था विशेष रूप से उल्लेखनीय है। विवाह, जन्मदिवस, मुंडन, यज्ञोपवीत आदि संस्कारों को धार्मिक आडंबरों से मुक्त कराकर, इन्हें वैज्ञानिक और सामाजिक दृष्टि से उपयोगी बनाया गया। इसका मुख्य उद्देश्य समाज में नैतिक मूल्यों को पुनर्स्थापित करना था।

### (घ) **समाजोन्मुखी शिक्षा और आत्मनिर्भरता का संदेश**

गायत्री तपोभूमि केवल उपासना का स्थल नहीं, बल्कि स्वावलंबन और व्यावहारिक शिक्षा का केंद्र भी है। यहाँ स्थापित युग निर्माण विद्यालय १९६७ से संचालित है, जिसमें यज्ञ, कर्मकांड, संस्कार, संगीत, कंप्यूटर, प्रिंटिंग, इलेक्ट्रॉनिक्स, खाद्य संरक्षण, योग-प्राणायाम आदि का प्रशिक्षण दिया जाता है। यह गुरुदेव की "अर्थ एवं आध्यात्मिकता के समन्वय" की संकल्पना का उदाहरण है, जहाँ व्यक्ति आत्मनिर्भर बनकर समाज की सेवा कर सके।

गायत्री तपोभूमि का शिक्षा केंद्र केवल ज्ञान अर्जन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा का केंद्र भी है। यहाँ से प्रशिक्षित विद्यार्थी केवल रोजगार नहीं पाते, बल्कि वे एक नैतिक एवं आदर्श नागरिक के रूप में समाज में योगदान देते हैं।

### (ङ) **विचार क्रांति: मानवता की नई दिशा**

गायत्री तपोभूमि से केवल साधना का ही नहीं, बल्कि विचार क्रांति का भी शुभारंभ हुआ। गुरुदेव ने यहीं से "युग निर्माण योजना" की घोषणा की और समाज के पुनर्निर्माण के लिए शतसूत्री कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

इस योजना के तहत उन्होंने सात प्रमुख आंदोलनों को बढ़ावा दिया:

१. **साधना** – आत्मोन्नति द्वारा समाज सुधार

२. **शिक्षा** – नैतिक एवं व्यावहारिक शिक्षा

३. **स्वास्थ्य** – प्राकृतिक चिकित्सा एवं स्वास्थ्य संवर्द्धन

४. **स्वावलंबन** – आत्मनिर्भरता एवं कुटीर उद्योग

५. **पर्यावरण संरक्षण** – स्वच्छता एवं वृक्षारोपण अभियान

६. **नारी जागरण** – स्त्री शिक्षा एवं सशक्तिकरण

७. **व्यसन मुक्ति एवं कुरीति उन्मूलन** – सामाजिक बुराइयों का उन्मूलन

### (च) **प्रकाशन एवं युग निर्माण साहित्य: मानवता के लिए आध्यात्मिक ज्ञान का प्रसार**

गायत्री तपोभूमि केवल एक स्थल नहीं, बल्कि एक ज्ञान केंद्र भी है। यहाँ पर युग निर्माण योजना प्रेस द्वारा गुरुदेव के लिखे ३,२०० से अधिक ग्रंथों का प्रकाशन किया गया। इन ग्रंथों में वेद, उपनिषद, गीता, रामायण, महाभारत, पुराणों का सरल भाषा में व्याख्यान है, जिससे जनसाधारण आध्यात्मिक ज्ञान को आत्मसात कर सके।

यहाँ से प्रकाशित साहित्य केवल धर्मग्रंथों की व्याख्या तक सीमित नहीं, बल्कि वे आध्यात्मिकता और सामाजिक उत्थान के समन्वय का संदेश भी देते हैं। इस साहित्य के माध्यम से लाखों लोग अंधविश्वास, रूढ़ियों और सामाजिक बुराइयों से मुक्त होकर एक सशक्त समाज की ओर बढ़ने लगे।

## निष्कर्ष

गायत्री तपोभूमि, मथुरा केवल एक साधना स्थल नहीं, बल्कि मानवता के उत्थान का केंद्र है। यहाँ से व्यक्ति को आध्यात्मिक रूप से सशक्त बनाकर, उसे समाज के कल्याण में योगदान देने के लिए प्रेरित किया जाता है।

गुरुदेव की इस स्थापना ने धर्म, समाज और विज्ञान का समन्वय करके एक नए युग की नींव रखी। यहाँ से केवल साधकों और संतों का नहीं, बल्कि समाज के कर्णधारों, वैज्ञानिकों, शिक्षकों, चिकित्सकों, किसानों और युवाओं का निर्माण हुआ।

गायत्री तपोभूमि केवल पूजा-पाठ का स्थान नहीं, बल्कि एक क्रांतिकारी केंद्र है, जहाँ से मानवता के नव निर्माण की दिशा तय होती है। यह स्थान इस बात का प्रमाण है कि आध्यात्मिक साधना का अंतिम लक्ष्य केवल आत्मकल्याण नहीं, बल्कि लोकमंगल और विश्वकल्याण होना चाहिए।

---

## साक्ष्य स्रोत:

उपरोक्त अध्याय ***"गायत्री तपोभूमि, मथुरा"*** का अध्ययन निम्न साक्ष्य स्रोतों के आधार पर कर तार्किक विश्लेषण किया है।


- *युग निर्माण योजना, मथुरा, दुनिया बदलेगी इन विचारों से, युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट, गायत्री तपोभूमि मथुरा, २०१८, पृष्ठ २१-२७.*
- *युग निर्माण योजना, युग निर्माण योजना- एक परिचय, युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट, गायत्री तपोभूमि मथुरा, पुनरावृत्ति २०१८, पृष्ठ २१-२५.*
- *ब्रह्मवर्चस, पं. श्रीराम शर्मा आचार्य वाङ्.मय-१: युगद्रष्टा का जीवनदर्शन, अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा, संशोधित संस्करण २०२१, पृष्ठ ११.*
- *युग निर्माण योजना, आओ जाने युगऋषि को, युग निर्माण विस्तार ट्रस्ट, गायत्री तपोभूमि मथुरा, पुनरावृत्ति २०१८, पृष्ठ ७५.*

# ६.२.४. शांतिकुंज, हरिद्वार

शांतिकुंज, हरिद्वार केवल एक आध्यात्मिक स्थल ही नहीं, बल्कि एक जीवनदायिनी ऊर्जा केंद्र और मानवता के उत्थान का महान तीर्थ है। सन् १९७१ में वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा स्थापित यह केंद्र ऋषि परंपरा के पुनर्जागरण और समाज सुधार का अभिनव प्रयोग है। भारतीय संस्कृति को पुनर्जीवित करने और विश्व मानवता को जागृत करने के लिए इस केंद्र की स्थापना हुई। शांतिकुंज न केवल आध्यात्मिक साधना का स्थल है, बल्कि यह सामाजिक, बौद्धिक और नैतिक पुनरुत्थान का विद्यालय भी है, जो समाज के हर वर्ग के लिए प्रेरणास्रोत है।

### (क) **शिविरों के माध्यम से आत्म-विकास एवं व्यक्तित्व निर्माण**

शांतिकुंज में नियमित रूप से आयोजित होने वाले शिविरों के माध्यम से व्यक्ति के चिंतन, चरित्र एवं व्यवहार में उत्कृष्टता लाने का प्रयास किया जाता है। नौ दिवसीय संजीवनी साधना-सत्रों, एक मास के युगशिल्पी सत्रों एवं पाँच दिवसीय मौन साधना सत्रों के माध्यम से आत्म-विकास को बढ़ावा दिया जाता है। यह न केवल आध्यात्मिक जागरण का केंद्र है, बल्कि यह समाज के लिए उत्कृष्ट, चरित्रवान एवं निस्वार्थ भाव से सेवा करने वाले कार्यकर्ताओं का निर्माण करता है।

### (ख) **प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा: मानवता की ऊर्जा के प्रतीक**

प्रखर प्रज्ञा (गुरुदेव का स्मारक) और सजल श्रद्धा (माताजी का स्मारक) केवल भौतिक संरचनाएँ नहीं हैं, बल्कि वे उन उच्च आध्यात्मिक तरंगों का केंद्र हैं, जो साधकों को उनके जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने की प्रेरणा देती हैं। इन स्थलों की ऊर्जा को अनुभव करके साधक आत्मसाक्षात्कार और जीवन को नई दिशा देने की प्रेरणा प्राप्त करते हैं।

### (ग) **यज्ञशाला और संस्कार व्यवस्था: समाज सुधार का आधार**

शांतिकुंज में स्थित तीन यज्ञशालाएँ नित्य हजारों साधकों को आत्मशुद्धि का अवसर प्रदान करती हैं। यह केवल वैदिक अनुष्ठान का स्थल नहीं, बल्कि समाज में नैतिक और चारित्रिक पुनरुत्थान की प्रयोगशाला है। अन्नप्राशन, विद्यारंभ, यज्ञोपवीत, विवाह, वानप्रस्थ, तथा श्राद्धकर्म जैसे संस्कारों का निःशुल्क संपादन यहाँ मानव सेवा का एक उज्ज्वल उदाहरण है।

### (घ) **गायत्री मंदिर एवं सप्तऋषियों की प्रतिमा: आस्था और प्रेरणा का संगम**

गायत्री माता का भव्य मंदिर और सप्तऋषियों की प्रतिमाएँ भारतीय संस्कृति के आध्यात्मिक मूल्यों को जीवंत बनाए रखने का कार्य करती हैं। यह स्थल व्यक्ति को अपने ऋषि-संस्कारों से जोड़ता है, जिससे उसमें आत्मगौरव और समाज के प्रति उत्तरदायित्व की भावना उत्पन्न होती है। मंदिर के बाजू में स्थित भटका हुआ देवता मंदिर यह संदेश देता है कि, मनुष्य अपनी दिव्यता भूलकर भौतिकता में भटक गया है; उसे आत्मबोध और साधना द्वारा अपने ईश्वरीय स्वरूप को पुन: पहचानना चाहिए।

### (ङ) **अखंड दीप: सतत प्रेरणा का स्रोत**

१९२६ में परमपूज्य गुरुदेव द्वारा प्रज्वलित अखंड दीप केवल एक जलती हुई ज्योति नहीं, बल्कि पूरे गायत्री परिवार की ऊर्जा और शक्ति का केंद्र है। इसके समक्ष साधक न केवल अपनी साधना को केंद्रित करते हैं, बल्कि यहाँ से उन्हें समाज सुधार के लिए निस्वार्थ भाव से कार्य करने की प्रेरणा भी मिलती है।

### (च) देवात्मा हिमालय: आध्यात्मिकता और विज्ञान का संगम

हिमालय की प्रतिमा, मल्टीमीडिया प्रोजेक्शन और दिग्दर्शन केंद्र साधकों को भारतीय ऋषि परंपरा के गौरवमय इतिहास से परिचित कराते हैं। इस केंद्र में स्थापित सौर एवं पवन ऊर्जा उपकरणों के माध्यम से वैकल्पिक ऊर्जा के प्रति जन-जागरण का कार्य किया जाता है, जिससे पर्यावरण संरक्षण और आत्मनिर्भरता की दिशा में प्रेरणा मिलती है।

### (छ) दिव्य जड़ी-बूटी उद्यान: प्रकृति और मानव कल्याण

शांतिकुंज में विकसित दिव्य जड़ी-बूटी उद्यान मानव कल्याण की दिशा में एक अनूठा प्रयास है। यहाँ ३०० से अधिक दुर्लभ औषधीय वनस्पतियाँ उगाई जाती हैं, जिनका उपयोग आयुर्वेदिक चिकित्सा में किया जाता है। यह केंद्र न केवल आध्यात्मिक बल्कि शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को भी बढ़ावा देता है।

### (ज) शांतिकुंज: विश्व मानवता के लिए एक आदर्श केंद्र

शांतिकुंज केवल एक धार्मिक स्थल नहीं, बल्कि एक ऐसा केंद्र है, जो समाज में नैतिक, बौद्धिक और सामाजिक क्रांति लाने के लिए कार्यरत है। इसका उद्देश्य केवल व्यक्तिगत साधना तक सीमित नहीं, बल्कि एक विकसित, संतुलित और सशक्त समाज का निर्माण करना है। गुरुदेव द्वारा स्थापित यह केंद्र विश्व मानवता को एक नई दिशा देने में निरंतर प्रयासरत है।

## निष्कर्ष

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा स्थापित शांतिकुंज केवल एक आध्यात्मिक संस्थान नहीं, बल्कि यह एक ऐसे आंदोलन का केंद्र है, जो विश्व को नैतिकता, सद्भाव और आत्म-विकास की दिशा में प्रेरित कर रहा है। यहाँ से प्राप्त होने वाली ऊर्जा और प्रेरणा साधकों को न केवल आत्मकल्याण की ओर अग्रसर करती है, बल्कि वे समाज में सेवा और परिवर्तन लाने के लिए प्रेरित होते हैं। इस प्रकार, शांतिकुंज भारतीय संस्कृति और मानवता के उत्थान का एक जीता-जागता उदाहरण है।

---

## साक्ष्य स्रोत:

उपरोक्त अध्याय ***"शांतिकुंज, हरिद्वार"*** का अध्ययन निम्न साक्ष्य स्रोतों के आधार पर कर तार्किक विश्लेषण किया है।


- *युग निर्माण योजना, मथुरा, दुनिया बदलेगी इन विचारों से, युग निर्माण विस्तार ट्रस्ट, गायत्री तपोभूमि मथुरा, २०१८, पृष्ठ २८-३१.*
- *युग निर्माण योजना, युग निर्माण योजना- एक परिचय, युग निर्माण विस्तार ट्रस्ट, गायत्री तपोभूमि मथुरा, पुनरावृत्ति २०१८, पृष्ठ २७-२९.*
- *ब्रह्मवर्चस, पं. श्रीराम शर्मा आचार्य वाङ्.मय-१: युगद्रष्टा का जीवनदर्शन, अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा, संशोधित संस्करण २०२१, पृष्ठ ११-१२.*
- *युग निर्माण योजना, आओ जाने युगऋषि को, युग निर्माण विस्तार ट्रस्ट, गायत्री तपोभूमि मथुरा, पुनरावृत्ति २०१८, पृष्ठ ७६.*

# ६.२.५. ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान, हरिद्वार

ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान की स्थापना परमपूज्य पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा सन् १९७९ में की गई। यह संस्थान वैज्ञानिक अध्यात्मवाद को प्रमाणित करने के लिए समर्पित है। इसके निर्माण का उद्देश्य आध्यात्मिक साधनाओं और वैज्ञानिक अनुसंधान के माध्यम से मानवता के कल्याण के लिए एक सशक्त आधार तैयार करना था। यह संस्थान न केवल धर्म और विज्ञान के समन्वय का प्रतीक है, बल्कि यह मानव जीवन के आध्यात्मिक और भौतिक पक्षों को संतुलित करने में भी सहायक सिद्ध हुआ है।

(क) **संस्थान की तीन मंजिली संरचना एवं कार्यक्षेत्र**

**(१) यज्ञशाला एवं साधना केंद्र** : प्रथम तल पर एक अत्याधुनिक यज्ञशाला स्थित है, जो वैज्ञानिक उपकरणों से सुसज्जित है। यहाँ गायत्री महाशक्ति की चौबीस मूर्तियाँ स्थापित हैं, जो बीजमंत्रों व उनकी फलश्रुतियों सहित अंकित हैं। यह स्थान यज्ञ चिकित्सा, मंत्र ऊर्जा एवं साधना केंद्र के रूप में कार्य करता है, जिससे साधकों को मानसिक शांति और आध्यात्मिक ऊर्जा प्राप्त होती है।

**(२) वैज्ञानिक प्रयोगशाला** : द्वितीय तल पर स्थित प्रयोगशाला अत्याधुनिक उपकरणों से सुसज्जित है, जहाँ साधना एवं यज्ञादि के प्रभावों का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है। यहाँ विभिन्न परीक्षण किए जाते हैं, जिनमें साधकों के शरीर, मन एवं प्राण ऊर्जा पर पड़ने वाले प्रभावों का मापन किया जाता है। इस प्रयोगशाला में हिमालय की दुर्लभ वनौषधियों पर भी शोध होता है, जिससे प्राचीन भारतीय चिकित्सा पद्धतियों को आधुनिक वैज्ञानिक आधार मिलता है।

**(३) ग्रंथागार एवं शोध केंद्र** : तृतीय तल पर एक विशाल ग्रंथागार स्थित है, जहाँ ५०,००० से अधिक ग्रंथ और दुर्लभ पांडुलिपियाँ संगृहीत हैं। इसमें विभिन्न धर्मों, आयुर्वेद, योग, खगोलशास्त्र, भौतिक विज्ञान, चिकित्सा, दर्शन आदि विषयों का विस्तृत संग्रह है। यह शोध केंद्र वैज्ञानिक अध्यात्मवाद पर आधारित शोधकार्य को प्रोत्साहित करता है, जिससे समाज में तर्कसंगत आध्यात्मिकता को बढ़ावा मिले।

(ख) **मानवता के दृष्टिकोण से ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान का योगदान**

**(१) शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य का विकास** : संस्थान में ध्यान, योग, प्राणायाम, यज्ञ चिकित्सा आदि विधियों पर शोध किया जाता है, जिससे मानवता को तनावमुक्त जीवन प्रदान करने में सहायता मिलती है। मानसिक एवं शारीरिक रोगों के उपचार हेतु वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित विधियाँ विकसित की जाती हैं।

**(२) यज्ञ चिकित्सा द्वारा स्वास्थ्य संवर्धन** : अग्निहोत्र (यज्ञ) के वैज्ञानिक प्रभावों का अध्ययन यहाँ किया जाता है। विभिन्न जड़ी-बूटियों के वाष्पीकरण से वातावरण शुद्ध होता है और इससे शारीरिक एवं मानसिक रोगों का निवारण संभव होता है। यह चिकित्सा पद्धति पारंपरिक भारतीय चिकित्सा ज्ञान को वैज्ञानिक आधार प्रदान कर आधुनिक चिकित्सा जगत को एक नया दृष्टिकोण देती है।

**(३) संतुलित एवं सात्त्विक जीवनशैली का प्रचार-प्रसार** : संस्थान में सात्त्विक, राजसिक एवं तामसिक आहार के प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। यह शोध सिद्ध करता है कि संतुलित आहार न केवल शरीर बल्कि मन की शुद्धता के लिए भी आवश्यक है।

(४) **धर्म और विज्ञान का समन्वय :** ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान धर्म और विज्ञान को एक ही सत्य के दो पक्ष मानते हुए इन दोनों का समन्वय स्थापित करता है। यह वैज्ञानिक उपकरणों और शोध के माध्यम से सिद्ध करता है कि आध्यात्मिक साधनाओं का वैज्ञानिक आधार है, जिससे समाज में अंधविश्वास समाप्त हो और तर्कसंगत आध्यात्मिकता को बढ़ावा मिले।

(५) **सार्वभौमिक ज्ञान का संरक्षण एवं प्रसार :** संस्थान के विशाल ग्रंथागार में विभिन्न धर्मों, चिकित्सा, खगोलशास्त्र, रसायन विज्ञान, योग, आयुर्वेद आदि विषयों पर अमूल्य ग्रंथों और दुर्लभ पांडुलिपियों का संग्रह है। यह शोधकर्ताओं एवं अध्यात्म प्रेमियों के लिए अमूल्य धरोहर है।

(६) **वैकल्पिक ऊर्जा स्त्रोतों पर शोध :** पर्यावरण संरक्षण के दृष्टिकोण से संस्थान में वैकल्पिक ऊर्जा स्त्रोतों पर भी शोध किए जा रहे हैं, जिससे मानवता को ऊर्जा संकट से उबारने के लिए नई दिशा मिल सके।

## निष्कर्ष

ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान केवल एक आध्यात्मिक केंद्र नहीं है, बल्कि यह एक वैज्ञानिक प्रयोगशाला है, जहाँ आध्यात्म और विज्ञान का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है। यह संस्थान मानवता के कल्याण के लिए निरंतर प्रयासरत है और विश्वभर में अध्यात्म, योग, प्राणायाम, ध्यान एवं यज्ञ चिकित्सा के वैज्ञानिक प्रमाण प्रस्तुत कर एक नई जागरूकता उत्पन्न कर रहा है। पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी की यह स्थापना समाज को अंधविश्वास से निकालकर तर्कसंगत, वैज्ञानिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण प्रदान करने में सहायक सिद्ध हो रही है।

---

## साक्ष्य स्त्रोत:

उपरोक्त अध्याय ***"ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान, हरिद्वार"*** का अध्ययन निम्न साक्ष्य स्त्रोतों के आधार पर कर तार्किक विश्लेषण किया है।


- *युग निर्माण योजना, मथुरा, दुनिया बदलेगी इन विचारों से, युग निर्माण विस्तार ट्रस्ट, गायत्री तपोभूमि मथुरा, २०१८, पृष्ठ ३१-३२.*
- *युग निर्माण योजना, युग निर्माण योजना- एक परिचय, युग निर्माण विस्तार ट्रस्ट गायत्री तपोभूमि मथुरा, पुनरावृत्ति २०१८, पृष्ठ ३०.*
- *ब्रह्मवर्चस, पं. श्रीराम शर्मा आचार्य वाड्.मय-१: युगद्रष्टा का जीवनदर्शन, अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा, संशोधित संस्करण २०२१, पृष्ठ १२.*
- *युग निर्माण योजना, आओ जाने युगऋषि को, युग निर्माण विस्तार ट्रस्ट, गायत्री तपोभूमि मथुरा, पुनरावृत्ति २०१८, पृष्ठ ७७.*

# ६.२.६. देवसंस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार

देवसंस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार, प्राचीन गुरुकुल परंपरा पर आधारित एक ऐसी अद्वितीय शैक्षिक संस्था है, जिसका उद्देश्य मानवता के उत्थान और आध्यात्मिक पुनर्जागरण में योगदान देना है। यह संस्थान केवल एक विश्वविद्यालय नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक और नैतिक पुनरुत्थान केंद्र भी है, जहाँ शिक्षा को जीवन की उत्कृष्टता और समाज कल्याण के साथ जोड़ा जाता है। हरिद्वार से सात किलोमीटर दूर, ऋषिकेश मार्ग पर, शांतिकुंज से मात्र आधा किलोमीटर दूर स्थित यह विश्वविद्यालय प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर, प्राचीन सप्तऋषियों की तपस्थली में स्थापित है।

अखण्ड ज्योति, मार्च, १९६४ में परमपूज्य गुरुदेव ने लिखा है-"एक ऐसा विश्वविद्यालय देश में होना ही चाहिए, जो सच्चे मनुष्य, बड़े मनुष्य, महान मनुष्य, सर्वांगपूर्ण मनुष्य बनाने की आवश्यकता पूर्ण कर सके।" पूज्य गुरुदेव की इसी आकांक्षा की पूर्ति हेतु देव संस्कृति विश्वविद्यालय की स्थापना राष्ट्र के युवाओं को निखार सँभालकर उन्हें श्रेष्ठतम नागरिक, सर्मपित स्वयंसेवक, प्रखर राष्ट्रभक्त एवं विषय विशेषज्ञ बनाने के साथ-साथ महामानव और देवमानव बनाने के पावन उद्देश्य से की गई है।

### (क) **व्यक्तित्व निर्माण और नैतिक शिक्षा**

इस विश्वविद्यालय की स्थापना केवल शैक्षणिक डिग्रियों के वितरण के लिए नहीं, बल्कि महामानवों और देवमानवों के निर्माण के लिए की गई है। इसका उद्देश्य छात्रों को केवल विद्वान बनाना नहीं, बल्कि उन्हें नैतिक, आध्यात्मिक और सेवा भाव से ओत-प्रोत नागरिक बनाना है, जो समाज को दिशा दे सकें। यह संस्थान उन युवा मस्तिष्कों को तैयार करता है जो न केवल अपनी आजीविका अर्जित करने में सक्षम हों, बल्कि समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को भी समझें।

### (ख) **आध्यात्मिक और वैज्ञानिक शिक्षा का समन्वय**

विश्वविद्यालय में धर्म, दर्शन, संस्कृति, योग, आयुर्वेद, मनोविज्ञान, गणित, ज्योतिष, मंत्र विज्ञान आदि विषयों का अध्ययन किया जाता है। ये सभी विषय केवल शैक्षणिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि मानवता के कल्याण के लिए भी आवश्यक हैं। यह शिक्षा प्रणाली आधुनिक विज्ञान और प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा का अद्भुत समन्वय प्रस्तुत करती है, जिससे विद्यार्थी अपने जीवन में संतुलन बना सकें।

### (ग) **समाजोपयोगी शिक्षा और शोध कार्य**

गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के विचारों के अनुरूप, इस विश्वविद्यालय में रोजगारपरक पाठ्यक्रमों पर विशेष ध्यान दिया जाता है। आपदा प्रबंधन, ग्रामीण प्रबंधन, विद्यालयी प्रबंधन आदि विषयों पर शोध और अध्ययन किए जाते हैं, जिससे विद्यार्थी न केवल आत्मनिर्भर बनें, बल्कि वे समाज की सेवा भी कर सकें। इस विश्वविद्यालय का उद्देश्य है कि कोई भी छात्र केवल नौकरी की तलाश में न भटके, बल्कि समाज के लिए कुछ करने योग्य बने।

### (घ) **स्वास्थ्य और पर्यावरण संरक्षण**

विश्वविद्यालय में योग, प्राणायाम, यज्ञ चिकित्सा और प्राकृतिक चिकित्सा पर विशेष शोध किए जाते हैं, जिससे मानवता को स्वस्थ जीवनशैली अपनाने की प्रेरणा मिले। पर्यावरण संरक्षण की दिशा में भी यह संस्थान अग्रणी भूमिका निभा रहा है।

## (ङ) वैश्विक दृष्टिकोण और सांस्कृतिक पुनर्जागरण

देवसंस्कृति विश्वविद्यालय केवल भारत तक सीमित नहीं, बल्कि इसका प्रभाव विश्वव्यापी है। यहाँ विश्वभर से विद्यार्थी आते हैं और भारतीय संस्कृति, योग, ध्यान और वेदांत का गहन अध्ययन करते हैं। यह विश्वविद्यालय केवल शैक्षणिक उत्कृष्टता का केंद्र नहीं, बल्कि एक वैश्विक आध्यात्मिक क्रांति का आधार है।

## निष्कर्ष

देवसंस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार, मानवता की सेवा के लिए एक अनूठी पहल है। यह केवल शिक्षण संस्थान नहीं, बल्कि जीवन निर्माण का केंद्र है, जहाँ विद्या, साधना, स्वावलंबन और सेवा का अद्भुत संगम देखने को मिलता है। गुरुदेव के दिव्य स्वप्न को साकार करते हुए, यह विश्वविद्यालय आने वाली पीढ़ियों को एक ऐसी शिक्षा प्रदान कर रहा है, जो केवल उनके व्यक्तिगत विकास तक सीमित न रहकर सम्पूर्ण समाज के उत्थान में सहायक हो।

---

## साक्ष्य स्रोत:

उपरोक्त अध्याय ***"देवसंस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार"*** का अध्ययन निम्न साक्ष्य स्रोतों के आधार पर कर तार्किक विश्लेषण किया है।


- *युग निर्माण योजना, मथुरा, दुनिया बदलेगी इन विचारों से, युग निर्माण विस्तार ट्रस्ट, गायत्री तपोभूमि मथुरा, २०१८, पृष्ठ ३३-३४.*
- *युग निर्माण योजना, युग निर्माण योजना- एक परिचय, युग निर्माण विस्तार ट्रस्ट गायत्री तपोभूमि मथुरा, पुनरावृत्ति २०१८, पृष्ठ ३१.*
- *ब्रह्मवर्चस, पं. श्रीराम शर्मा आचार्य वाड्.मय-१: युगद्रष्टा का जीवनदर्शन, अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा, संशोधित संस्करण २०२१, पृष्ठ १२.*
- *युग निर्माण योजना, आओ जाने युगऋषि को, युग निर्माण विस्तार ट्रस्ट, गायत्री तपोभूमि मथुरा, पुनरावृत्ति २०१८, पृष्ठ ७७.*

# ६.२.७. देशभर में गायत्री शक्तीपीठ, प्रज्ञापीठ एवं चेतना केंद्र जैसी प्रज्ञा संस्थानों की स्थापना

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने जीवनभर मानवता की सेवा और समाज को दिशा देने के लिए अनेक क्रांतिकारी कदम उठाए। उनके द्वारा स्थापित प्रज्ञा संस्थान इसी सेवा और मार्गदर्शन का महत्वपूर्ण केंद्र बने। इन संस्थानों की स्थापना मात्र भव्य इमारतों तक सीमित नहीं थी, बल्कि ये आत्मविकास, समाज निर्माण और राष्ट्र निर्माण के लिए विचार क्रांति के प्रेरणास्त्रोत भी बने।

## (क) **प्रज्ञा संस्थानों की स्थापना की पृष्ठभूमि**

सन् १९७९ में पूज्य गुरुदेव ने वसंत पंचमी के पावन अवसर पर संकल्प लिया कि पूरे देश में गायत्री शक्तिपीठ, गायत्री प्रज्ञापीठ एवं गायत्री चेतना केंद्र जैसी प्रज्ञा संस्थानों का जाल बिछाया जाएगा। यह केवल एक साधारण संकल्प नहीं था, बल्कि भारतीय समाज की आध्यात्मिक और नैतिक पुनर्रचना का आधार था। यह निर्णय उसी वर्ष लिया गया जब ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान की स्थापना हुई और युग निर्माण योजना के २५ वर्ष पूरे हो चुके थे। यह गुरुदेव की दूरदृष्टि का परिचायक था कि उन्होंने समय के अनुसार धर्म को सामाजिक सुधार और व्यावहारिक जीवन का आधार बनाने की योजना बनाई।

पूज्य गुरुदेव ने स्वयं देशभर में कइयों गायत्री शक्तिपीठ का शिलान्यास व उद्‌घाटन भी किया। सन १९८१-८२ में यही क्रम चला। साथ ही वे सब शक्तिपीठ संचालकों को सचेत भी करते चले गए कि शक्तिपीठ निर्माण तब तक प्राणहीन है, जब तक वहाँ क्रिया-कलाप नही चलते। वे लोक-भर्त्सना व निंदा के पात्र बनेंगे, यदि वे सफेद हाथी  मात्र बनकर रह गए। उन्होने कहा की, हमने ब्रह्मविद्यालय की स्थापना की है, मंदिरों की नही। नियुक्त परिव्राजक इसके उपाध्याय है, अध्यापक है।

## (ख) **प्रज्ञा संस्थानों का उद्देश्य**

देशभर में गायत्री शक्तिपीठ, गायत्री प्रज्ञापीठ एवं गायत्री चेतना केंद्र जैसी प्रज्ञा संस्थानों की स्थापना का उद्देश्य केवल धार्मिक शिक्षाओं का प्रचार नहीं था, बल्कि समाज में नैतिक और चारित्रिक उत्थान लाना था। इन संस्थानों के माध्यम से लोकशिक्षण, समाज सुधार, नैतिक जागरण और आध्यात्मिक उन्नति के कार्यक्रम संचालित किए गए। यह कार्य अत्यंत वैज्ञानिक ढंग से किया गया, ताकि हर वर्ग और क्षेत्र का व्यक्ति इसका लाभ उठा सके।

## (ग) **मानवता के दृष्टिकोण से प्रज्ञा संस्थानों का महत्व**

(१) **व्यक्तिगत विकास एवं आत्मनिर्माण:** प्रज्ञा संस्थानों में साधना, उपासना, ध्यान और स्वाध्याय को बढ़ावा दिया गया, जिससे व्यक्ति अपने भीतर छिपे दिव्य गुणों को जागृत कर सके। यह आत्मनिर्माण की प्रक्रिया केवल आत्मकल्याण तक सीमित नहीं थी, बल्कि इसका व्यापक उद्देश्य समाजोत्थान था।

(२) **समाज सुधार की दिशा में कदम:** गुरुदेव ने स्पष्ट किया कि केवल मंदिरों का निर्माण करना पर्याप्त नहीं है, बल्कि समाज में नैतिकता और सद्भावना का संचार करना आवश्यक है। इसलिए, प्रज्ञा संस्थान केवल पूजा-स्थल नहीं थे, बल्कि वे समाज को शिक्षित और जागरूक करने के केंद्र बने।

(३) **शिक्षा और लोकशिक्षण:** इन संस्थानों के माध्यम से नियमित रूप से प्रवचन, संगोष्ठियाँ और अध्ययन सत्र आयोजित किए जाते थे। 'युग निर्माण योजना', 'अखण्ड ज्योति' और 'युग शक्ति गायत्री' पत्रिकाओं के माध्यम से लोकशिक्षण को व्यापक बनाया गया।

(४) **राष्ट्र निर्माण और सामाजिक एकता:** गुरुदेव ने इन संस्थानों के माध्यम से राष्ट्रीय एकता और सांप्रदायिक सद्भाव को मजबूत किया। १९८६-८७ में विशाल राष्ट्रीय एकता सम्मेलनों और महायज्ञों का आयोजन किया गया, जिससे लाखों लोग इस आंदोलन से जुड़े।

(५) **दीपयज्ञ आंदोलन द्वारा मानसिक और सामाजिक क्रांति:** १९८८ में गुरुदेव ने यज्ञकुंडों की जगह ज्ञान के दीप प्रज्वलित करने का आह्वान किया। इन दीपयज्ञों ने समाज में नई चेतना उत्पन्न की और इसे हर शुभ कार्य का अभिन्न अंग बना दिया गया।

## (घ) **प्रज्ञा संस्थानों की वैश्विक उपस्थिति**

प्रज्ञा संस्थानों का विस्तार न केवल भारत में, बल्कि विश्वभर में हुआ। हजारों की संख्या में स्थापित ये केंद्र विभिन्न सामाजिक और आध्यात्मिक गतिविधियों के संचालन का केंद्र बने। इन संस्थानों ने भारतीय संस्कृति और मूल्यों का प्रचार-प्रसार करने के साथ-साथ विश्व बंधुत्व और शांति के संदेश को भी पहुँचाया।

## निष्कर्ष

गुरुदेव द्वारा स्थापित प्रज्ञा संस्थान केवल धार्मिक केंद्र नहीं थे, बल्कि वे सामाजिक सुधार, मानसिक उन्नति और राष्ट्र निर्माण के सशक्त माध्यम बने। इन संस्थानों ने व्यक्ति को आत्मोत्थान और समाजोत्थान के लिए प्रेरित किया और विश्वभर में नैतिकता, सद्भाव और मानवता की ज्योति प्रज्वलित की। पूज्य गुरुदेव की यह स्थापना उनकी दूरदृष्टि, समाज के प्रति समर्पण और मानवता के प्रति उनके अमिट प्रेम का प्रतीक है।

---

## साक्ष्य स्रोत:

उपरोक्त अध्याय ***"देशभर में प्रज्ञा संस्थानों की स्थापना"*** का अध्ययन निम्न साक्ष्य स्रोतों के आधार पर कर तार्किक विश्लेषण किया है।


- *ब्रह्मवर्चस, पं. श्रीराम शर्मा आचार्य वाड्.मय-१: युगद्रष्टा का जीवनदर्शन, अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा, संशोधित संस्करण २०२१, पृष्ठ ९२-९५.*
- *ब्रह्मवर्चस, शक्तिपीठ संदर्शिका, श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट शांतिकुंज, हरिद्वार, तृतिय संस्करण २०१२, पृष्ठ ११-३५*
- *Vicharkranti Pustakalaya, Website – https://vicharkrantibooks.org शक्तिपीठ संदर्शिका.*

# ६.३. महत्त्वपूर्ण अभियान

६.३.१. विचार क्रांति अभियान
६.३.२. नारी जागरण अभियान
६.३.३. गायत्री परिवार का यज्ञ अभियान
६.३.४. गायत्री परिवार का आपदा राहत अभियान

# ६.३.१. विचार क्रांति अभियान

## (क) प्रस्तावना

मानवता का आधार केवल शरीर और बुद्धि नहीं, बल्कि विचार और चेतना है। जब-जब मानवता ने अधःपतन का मार्ग अपनाया, तब-तब किसी विचारशील आत्मा ने विचारों की लौ जलाकर नई दिशा दी। बीसवीं सदी के महान ऋषितुल्य समाज-संस्कारक पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने विचार क्रांति के माध्यम से न केवल चेतना का जागरण किया, बल्कि मानवता को उसकी वास्तविक गरिमा का स्मरण कराया। उनके लिए विचार कोई सूक्ष्म अवधारणा नहीं, बल्कि मानव जीवन का आधार, समाज का प्रतिबिंब और युग निर्माण का औजार था।

## (ख) विचारों का विज्ञान और युग निर्माण का मार्ग

आचार्य श्री ने विचारों को मनुष्य के जीवन का बीजारोपण केंद्र माना। उन्होंने अनुभव किया कि मनुष्य जैसा सोचता है, वैसा बनता है। इसीलिए विचारों की दिशा और गुणवत्ता तय करती है कि कोई व्यक्ति सेवा करेगा या हिंसा, सहानुभूति देगा या तिरस्कार। उनके अनुसार, विचार केवल मानसिक गतिविधियाँ नहीं, बल्कि सृजन की वह ऊर्जा हैं जो मनुष्य को देवत्व या पशुत्व की ओर ले जा सकती हैं।

विचारों का यह विज्ञान मानवता के लिए अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि आज की समस्याएँ — युद्ध, असहिष्णुता, अन्याय, विषमता — सबकी जड़ विकृत चिंतन में है। आचार्य श्री के विचार क्रांति अभियान ने इसी मूल समस्या को संबोधित किया।

## (ग) गायत्री परिवार और विचार क्रांति अभियान

गायत्री परिवार, आचार्य श्री द्वारा स्थापित एक आध्यात्मिक-सामाजिक संगठन है, जिसने विचार क्रांति को मिशन के रूप में अपनाया। उन्होंने इसे मानवता की सेवा के तीन स्तरों से जोड़ा — व्यक्ति निर्माण, परिवार निर्माण और समाज निर्माण।

उनकी दृष्टि में मानवता तभी पुष्पित होगी, जब प्रत्येक व्यक्ति अपने दिव्य स्वरूप को पहचानकर सृजनात्मक, सकारात्मक और सेवा-प्रधान जीवन अपनाएगा। इसीलिए उन्होंने कहा — "हम बदलेंगे, युग बदलेगा।" यह एक साधारण नारा नहीं, बल्कि संपूर्ण मानवता के नव निर्माण का दर्शन है।

## (घ) विचारों की तरंगें और प्राणशक्ति की भूमिका

विचार केवल आत्मसंतोष या ज्ञानार्जन के साधन नहीं हैं, वे ऊर्जस्वी तरंगें हैं जो वातावरण में प्रवाहित होती हैं। आचार्य श्री ने बताया कि उच्च विचारों में प्राणशक्ति निहित होती है, जो न केवल स्वयं को, बल्कि संपर्क में आने वाले व्यक्तियों को भी प्रभावित करती है।

इसका गहरा मानवीय संदेश यह है कि यदि हम करुणा, शांति और सेवा जैसे विचारों को जीएँ, तो हमारी उपस्थिति भी दूसरों के जीवन को उन्नत बना सकती है। इस प्रकार विचार क्रांति, केवल भाषण नहीं, बल्कि जीवन से जीवन को छूने की प्रक्रिया है — और यही मानवता की आत्मा है।

### (ङ) विचारों की आभा और उसका प्रभाव

प्रत्येक व्यक्ति के विचार उसके आभामंडल का निर्माण करते हैं। वैज्ञानिक अनुसंधान, जैसे किरलियन फोटोग्राफी, यह दर्शाते हैं कि प्रेम, त्याग, सादगी जैसे विचार उज्ज्वल आभा उत्पन्न करते हैं, जबकि लोभ, हिंसा, वासना जैसे विचार धूमिल और नकारात्मक ऊर्जा पैदा करते हैं।

इसका मानवता पर प्रभाव यह होता है कि सामूहिक रूप से यदि समाज में सकारात्मक विचार फैलें, तो सामाजिक वातावरण अधिक शांतिपूर्ण, सहयोगी और संवेदनशील बन सकता है। यही विचार क्रांति की सामाजिक उपयोगिता है — एक सुंदर और करुणाशील समाज का निर्माण।

### (च) गायत्री साधना और व्यक्तित्व निर्माण की प्रक्रिया

गायत्री साधना के माध्यम से आचार्य श्री ने व्यक्ति के भीतर चेतना का जागरण, भावनाओं का परिष्कार और कर्तव्यों की स्पष्टता का मार्ग दिखाया। गायत्री मंत्र, प्राणायाम, ध्यान, यज्ञ आदि के प्रयोग केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि मानवीय चेतना को संस्कारित करने के वैज्ञानिक उपाय हैं।

इन साधनों से मानव के भीतर दयाभाव, सेवा वृत्ति, सहिष्णुता, अनुशासन आदि मानवीय गुण विकसित होते हैं, जो उसे अहंकार और स्वार्थ के बंधनों से मुक्त कर, सच्चे अर्थों में मानव बनाते हैं। यह प्रक्रिया अंततः पूरे समाज में एक करुणामयी संस्कृति को जन्म देती है।

### (छ) विचारों का विज्ञान और सामाजिक परिवर्तन

मानवता का सच्चा कल्याण तब होता है, जब समाज में सकारात्मक विचारों की धारा प्रवाहित होती है। आचार्य श्री ने इस उद्देश्य से युग निर्माण योजना की १८ सूत्रीय रूपरेखा बनाई, जिसमें नशा मुक्ति, नारी जागरण, श्रम साधना, शिक्षा सुधार, सामाजिक समरसता आदि मानवीय आवश्यकताओं को प्राथमिकता दी गई।

उन्होंने यह समझाया कि यथार्थ सामाजिक परिवर्तन बाहर से नहीं, भीतर से आता है। इसीलिए उन्होंने विचारों को परिवर्तन का बीज और मानवता को उसकी भूमि माना।

### (ज) विचार क्रांति अभियान के साधन और व्यापकता

गायत्री परिवार का यह अभियान आज दुनिया के १०० से अधिक देशों में सक्रिय है। युग साहित्य, प्रवचन, बाल संस्कार शालाएँ, युवा प्रशिक्षण, शिविर, जनजागरण रैलियाँ — ये सभी माध्यम समाज के अंतिम व्यक्ति तक मानवता का संदेश पहुँचाने के लिए प्रयुक्त हो रहे हैं।

इन गतिविधियों का उद्देश्य केवल धर्म प्रचार नहीं, बल्कि मानवीय मूल्यों की पुनः स्थापना है। यह आंदोलन व्यक्ति को सोचने, बदलने, जुड़ने और दूसरों को जोड़ने की प्रेरणा देता है। यही है विचार क्रांति का वैश्विक और मानवीय प्रभाव।

## निष्कर्ष:

विचार क्रांति अभियान, पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा आरंभ किया गया ऐसा मानवतावादी आंदोलन है, जो विचारों की शुद्धि से चरित्र, चरित्र से समाज और समाज से युग को बदलने की प्रक्रिया है। यह आंदोलन न केवल भारत, बल्कि विश्व मानवता के लिए आशा की किरण है।

आज जब मानवता युद्ध, विषमता, पर्यावरण संकट और मानसिक तनावों से जूझ रही है, तब आचार्य श्री का यह आंदोलन एक शांत, संतुलित और करुणामयी विश्व की आधारशिला बन सकता है।

आइए, हम भी इस विचारक्रांति के चेतना यज्ञ में सहभागी बनें — अपने विचारों को दिव्य बनाकर मानवता को नव जीवन दें।

---

## साक्ष्य स्रोत:

उपरोक्त अध्याय "***विचार क्रांति अभियान***" का अध्ययन निम्न साक्ष्य स्रोतों के आधार पर कर तार्किक विश्लेषण किया है।


- *पं. श्रीराम शर्मा आचार्य, मातृ सत्ता श्रद्धांजलि पुस्तकमाला-७७ - विचार क्रांति अभियान, युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि, मथुरा, प्रथम संस्करण - १९९५, पृष्ठ ३-८०.*
- *All World Gayatri Pariwar, Website, https://www.awgp.org, विचार क्रांति अभियान.*
- *Vicharkranti Pustakalaya, Website – https://vicharkrantibooks.org, विचार क्रांति अभियान.*

# ६.३.२. नारी जागरण अभियान

महिलाओं की जागरूकता और उत्थान किसी भी समाज की प्रगति का द्योतक है। भारतीय संस्कृति में नारी को "**शक्ति**" और "**मातृत्त्व**" का प्रतीक माना गया है, परंतु विडंबना यह रही कि कालांतर में उसे सामाजिक बंधनों और संकीर्ण विचारधाराओं में जकड़ दिया गया। ऐसे समय में जब नारी की स्थिति दयनीय बनी हुई थी, पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने 'नारी जागरण अभियान' के माध्यम से स्त्रियों के पुनरुत्थान का एक व्यापक आंदोलन चलाया।

## (क) पं. श्रीराम शर्मा आचार्य की दृष्टि में नारी

नारी जागरण अभियान पूज्य पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा संचालित एक महान सामाजिक एवं आध्यात्मिक क्रांति थी, जिसने नारी जाति को अपनी गरिमा एवं अधिकारों के प्रति जागरूक किया। आचार्यश्री ने नारी को केवल गृहलक्ष्मी या संतान जन्म देने का साधन मानने वाली संकीर्ण मानसिकता का विरोध किया और उन्हें समाज की आधी शक्ति मानते हुए उसके अधिकारों और गरिमा को पुनर्स्थापित करने का कार्य किया। वे मानते थे कि नारी मात्र भोग्या नहीं, बल्कि पुरुष की समान सहभागी, सहधर्मचारिणी और समाज की रीढ़ है। उन्होंने लिखा—

*"केवल नारी नहीं, सुनो हम साथी हैं, भगिनी, माँ हैं।*
*नाहीं वासना का साधन हैं, हम ममता हैं, गरिमा हैं॥"*

यह स्पष्ट करता है कि उन्होंने नारी को सम्मानजनक स्थान देने और उसे सशक्त करने की दिशा में ठोस प्रयास किए।

## (ख) नारी जागरण की पृष्ठभूमि

पं. श्रीराम शर्मा आचार्यजी ने 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका के माध्यम से १९३८ से ही नारी सशक्तिकरण की अलख जगानी शुरू कर दी थी। वे मानते थे कि जब तक समाज की आधी जनसंख्या—नारी—पिछड़ी रहेगी, तब तक समाज उन्नति नहीं कर सकता। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में लिखा कि स्त्रियों को पुरुषों के बराबर अधिकार और अवसर मिलने चाहिए, ताकि वे अपने जीवन को गरिमा के साथ जी सकें और राष्ट्र के उत्थान में भागीदारी निभा सकें। आचार्यजी का मानना था कि जब तक समाज नारी को समान अधिकार और अवसर नहीं देगा, तब तक उसका वास्तविक उत्थान संभव नहीं। वेदकालीन समाज का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि उस समय नारियाँ विदूषी, शिक्षिका, ऋषिका, ब्रह्मवादिनी और समाज-संचालिका के रूप में प्रतिष्ठित थीं। उन्होंने अथर्ववेद का उल्लेख करते हुए लिखा – *"ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्" (अथर्व ११/७/१८),* अर्थात कन्या ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए अपने लिए उपयुक्त वर का चयन स्वयं करती थी। वेदों और प्राचीन ग्रंथों के आधार पर उन्होंने यह सिद्ध किया कि वैदिक काल में महिलाएँ समाज की विभिन्न गतिविधियों का संचालन करती थीं। ब्रह्मवादिनी स्त्रियाँ वेदों की ऋचाओं की रचनाकार थीं और समाज निर्माण में पुरुषों के समान भूमिका निभाती थीं। आचार्यश्री ने इन गौरवशाली परंपराओं को पुनर्जीवित करने के लिए नारी शिक्षा, सामाजिक सुधार, दांपत्य जीवन की मर्यादा, और महिलाओं की आत्मनिर्भरता को बल दिया।

### (ग) **'अखण्ड ज्योति' के माध्यम से नारी जागरण**

आचार्यश्री ने **'अखण्ड ज्योति'** पत्रिका के माध्यम से नारी सशक्तिकरण की दिशा में जनजागरण अभियान चलाया। उन्होंने **'गृहस्थ-एक तपोवन'** और **'दांपत्य जीवन की निर्मलता'** जैसे विषयों पर लेख लिखकर समाज को यह संदेश दिया कि नारी मात्र संतानोत्पत्ति का माध्यम नहीं, बल्कि वह समाज और संस्कृति की संरक्षक भी है।

मार्च १९५८ के 'अखण्ड ज्योति' अंक में उन्होंने लिखा—

*"नारी जाति के बौद्धिक एवं भावनात्मक उत्कर्ष का महत्त्व समझते हुए यह विचार उठता है कि हमारी धर्मपत्नी की शक्ति, योग्यता और भावना का उपयोग इस कार्य में किया जाए।"*

इसके बाद वंदनीया माताजी (भगवती देवी शर्मा) को नारी जागरण अभियान की मुख्यधारा में लाने का कार्य प्रारंभ हुआ।

### (घ) **नारी जागरण की शुरुआत**

१९५३ में गायत्री तपोभूमि की स्थापना के साथ ही नारी सशक्तिकरण का आंदोलन व्यवस्थित रूप से प्रारंभ हुआ। पूज्य आचार्यश्री एवं वंदनीया माताजी ने महिलाओं को न केवल धार्मिक शिक्षा दी, बल्कि उनके आत्मनिर्भर बनने पर भी जोर दिया। यज्ञ, संस्कार, स्वावलंबन, नैतिकता एवं पारिवारिक आदर्शों को लेकर महिलाओं को प्रशिक्षित किया जाने लगा।

शांतिकुंज, हरिद्वार में स्थापित नारी जागरण सत्रों के माध्यम से हजारों महिलाएँ प्रशिक्षित हुईं। इन सत्रों में उन्हें आत्मरक्षा, योग, स्वास्थ्य, शिशु पालन, स्वच्छता, संगीत, संस्कार कर्मकांड, नेतृत्व कौशल और समाज सेवा की शिक्षा दी जाती थी। महिलाओं को इस योग्य बनाया गया कि वे अपने परिवार, समाज और राष्ट्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकें।

१९७१ में जब पं. श्रीराम शर्मा आचार्य हिमालय तपस्या हेतु गए, तब उन्होंने संपूर्ण मिशन का उत्तरदायित्व वंदनीया माताजी को सौंप दिया। माताजी के संरक्षण में १२ कन्याओं ने अखंड घृतदीप के समक्ष २४ लाख जप अनुष्ठान आरंभ किया, जो चार वर्षों में पूर्ण हुआ। इसी आधार पर नारी जागरण सत्रों की शुरुआत हुई।

### (ङ) **'महिला जागरण अभियान' पत्रिका का प्रकाशन**

जुलाई १९७५ में **'महिला जागरण अभियान'** नामक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ, जिसमें नारी उत्थान, परिवार-निर्माण, स्वावलंबन और सामाजिक जागरूकता संबंधी विषयों पर मार्गदर्शन दिया जाता था। यह पत्रिका महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने, कुरीतियों से संघर्ष करने और समाज में अपनी भूमिका को समझने की प्रेरणा देती थी। इसकी लोकप्रियता इतनी बढ़ी कि कुछ ही वर्षों में इसकी पाठक संख्या २०,००० तक पहुँच गई, जिससे स्पष्ट हुआ कि नारी जागरण का यह अभियान समाज में व्यापक रूप से प्रभाव डाल रहा था।

## (च) **महिला जागरण सम्मेलन एवं देवकन्याओं की टोली**

इसी वर्ष पूज्य गुरुदेव ने 'देवकन्या' अभियान की शुरुआत की, जिसमें प्रशिक्षित कन्याओं को महिला जागरण हेतू गाँव-गाँव भेजा गया, ताकि वे महिलाओं में जागरूकता फैला सकें। इन देवकन्याओं के प्रवचनों और व्याख्यानों ने समाज को झकझोर दिया। जहाँ बड़े-बड़े पुरुष वक्ता भीड़ को नियंत्रित नहीं कर पाते थे, वहाँ ये युवा कन्याएँ समाज में परिवर्तन की लहर पैदा कर रही थीं। इस कार्यक्रम का प्रभाव पूरे देश में दिखाई देने लगा और लाखों महिलाओं ने स्वयं को इस अभियान से जोड़ा।

## (छ) **शक्तिपीठों के माध्यम से नारी जागरण**

१९७९ में जब आचार्यश्री ने शक्तिपीठों की स्थापना की योजना बनाई, तब उन्होंने इसमें महिलाओं को विशेष रूप से शामिल किया। उन्होंने कहा कि—

*"जब तक नारी के नयनों से बहता है जल खारा,*
*तब तक नवयुग का न पूर्ण होगा मृदुस्वप्न तुम्हारा।"*

इस दृष्टिकोण के तहत देशभर में २५,००० से अधिक महिला संगठन गठित किए गए, जिनके से नारी जागरण अभियान को गति मिली।

## (ज) **'इक्कीसवीं सदी—नारी सदी' की घोषणा**

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने १९८० के दशक में घोषणा की थी कि इक्कीसवीं सदी नारी सदी होगी। उनके महाप्रयाण के बाद वंदनीया माताजी ने इस भविष्यवाणी को साकार किया और मिशन के संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

## (झ) **नारी जागरण का आध्यात्मिक पक्ष**

पूज्य आचार्यश्री ने नारी जागरण को केवल सामाजिक सुधार तक सीमित नहीं रखा, बल्कि इसे आध्यात्मिक जागरण से भी जोड़ा। उन्होंने बताया कि स्त्रियाँ केवल कोमलता और ममता की मूर्ति ही नहीं हैं, बल्कि वे शक्ति और चेतना की स्रोत भी हैं। 'आध्यात्मिक काम विज्ञान' के माध्यम से उन्होंने यह प्रतिपादित किया कि दांपत्य जीवन की पवित्रता और मर्यादा ही समाज की आधारशिला है। यदि नर और नारी अपने संबंधों को मर्यादित और उच्च आदर्शों पर आधारित रखें, तो समाज में संतुलन और समृद्धि आएगी।

**निष्कर्ष:**

पूज्य पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा चलाया गया नारी जागरण अभियान न केवल नारी सशक्तिकरण की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम था, बल्कि यह सम्पूर्ण मानवता के उत्थान का भी अभियान था। उन्होंने नारी को केवल परिवार तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे समाज और राष्ट्र के निर्माण की धुरी बनाया।

आज जब हम २१वीं सदी को **'नारी सदी'** के रूप में देख रहे हैं, तो यह भविष्यवाणी पूज्य गुरुदेव ने दशकों पहले कर दी थी। उन्होंने कहा था—

*"अब नारी का वर्चस्व प्रमुख होगा तथा वही नवसृजन की प्रमुख भूमिका निभाएगी।"*

उनका यह कथन केवल एक भविष्यवाणी नहीं थी, बल्कि उनके सतत पुरुषार्थ और महान विचारों का परिणाम था।

यह नारी जागरण अभियान हमें यह सिखाता है कि समाज का वास्तविक उत्थान तभी संभव है जब नारी को उसका सम्मान, अधिकार और गरिमा मिले। यह आंदोलन केवल नारी उत्थान का नहीं, बल्कि सम्पूर्ण मानवता के कल्याण का अभियान था। आज भी जब हम महिलाओं के अधिकारों की बात करते हैं, तो हमें पूज्य गुरुदेव के इस ऐतिहासिक पुरुषार्थ को नहीं भूलना चाहिए। उनकी शिक्षाएँ हमें सदैव प्रेरित करती रहेंगी और समाज में समता, न्याय और सम्मान की स्थापना के लिए मार्गदर्शक बनी रहेंगी।

---

## साक्ष्य स्रोत:

उपरोक्त अध्याय "***नारी जागरण अभियान***" का अध्ययन निम्न साक्ष्य स्रोतों के आधार पर कर तार्किक विश्लेषण किया है।


- *ब्रह्मवर्चस, पं. श्रीराम शर्मा आचार्य वाङ्.मय-१: युगद्रष्टा का जीवनदर्शन, अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा, संशोधित संस्करण २०२१, पृष्ठ ८६-८८.*
- *युग निर्माण योजना, आओ जाने युगऋषि को, युग निर्माण विस्तार ट्रस्ट, गायत्री तपोभूमि मथुरा, पुनरावृत्ति २०१८, पृष्ठ ५८-६१.*
- *ब्रह्मवर्चस, ब्रह्म कमल, श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट, शान्तिकुंज, हरिद्वार, प्रथम खण्ड २०११, पृष्ठ २०५-२०७, २०९-२१४.*
- *पं. श्रीराम शर्मा आचार्य, अखण्ड ज्योति (मासिक), अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा,* मार्च १९५८ *एवं अप्रैल* १९६३.

# ६.३.३. गायत्री परिवार का यज्ञ अभियान

अखिल विश्व गायत्री परिवार द्वारा संचालित यज्ञ अभियान, पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा प्रारंभ की गई एक ऐसी सामाजिक-आध्यात्मिक क्रांति है, जिसका मूल उद्देश्य मानव जीवन के विभिन्न स्तरों - व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय — पर मूल्य आधारित परिवर्तन लाना रहा है। इस अभियान का मूल आधार "सूक्ष्म वातावरण का आध्यात्मिक परिष्कार" रहा है, जिसे आचार्य जी ने मानवता की समस्याओं का मूल समाधान माना।

इस ऐतिहासिक आंदोलन की शुरुआत आचार्य जी की कठोर तप-साधना और युगदृष्टि से हुई, जिसने गायत्री की लुप्त होती महाविद्या को न केवल पुनर्जीवित किया, बल्कि उसे जीवन निर्माण, समाज निर्माण एवं युग निर्माण के लिए एक सशक्त साधन बनाया। उन्होंने वैदिक यज्ञ परंपरा को केवल कर्मकांड न मानकर उसे वैज्ञानिक, आध्यात्मिक और मानवीय चेतना जाग्रत करने वाला माध्यम घोषित किया।

गायत्री साधना और यज्ञ के माध्यम से आचार्य जी ने जनमानस में आत्मशुद्धि, कर्तव्यनिष्ठा, सेवा भावना और नैतिक अनुशासन की भावना को विकसित किया। यज्ञों में दी जाने वाली आहुतियाँ आत्मदाह, त्याग, अनुशासन और लोकमंगल की प्रतीक बनीं। यज्ञ के द्वारा वातावरण को शुद्ध करने की प्रक्रिया को उन्होंने वैज्ञानिक पद्धति के रूप में प्रस्तुत किया और बताया कि जैसे गंदे जल में औषधि डालने से वह निर्मल हो जाता है, वैसे ही यज्ञ के माध्यम से मानसिक और सामाजिक प्रदूषण को भी शुद्ध किया जा सकता है।

आचार्य जी के नेतृत्व में अब तक सैकड़ों छोटे-बड़े यज्ञ संपन्न हुए हैं, जो केवल धार्मिक अनुष्ठान न होकर समाज के नैतिक पुनरुद्धार और आत्मिक उत्थान के साधन बने।

## क) सामूहिक यज्ञ: जनजागरण और नैतिक क्रांति

- **सहस्त्रांशु ब्रह्म यज्ञ:** पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के युग निर्माण अभियान के साथ अब तक अनेक छोटे-बड़े यज्ञ सम्पन्न हुए हैं। गायत्री जयंती १९५३ को सम्पन्न सहस्त्रांशु ब्रह्म यज्ञ समाज के सभी वर्गों की सहभागिता वाला प्रथम आध्यात्मिक प्रयोग था, जो आचार्य जी के २४ महापुरश्चरणों की पूर्णाहुति का स्मरणोत्सव भी था। इसी यज्ञ को गायत्री परिवार की स्थापना का आधार माना जाता है।
- **वैदिक यज्ञ:** १९५५ में वैदिक परंपरा के अंतर्गत महामृत्युंजय, रुद्र, विष्णु, इन्द्र, नवग्रह, गणपति, सरस्वती, ज्योतिओम, अग्निओम तथा चारों वेदों के गायत्री यज्ञ का आयोजन हुआ।
- **नरमेध यज्ञ मथुरा:** १९५६ में १०८ कुण्डीय यज्ञ और विशाल नरमेध यज्ञ मथुरा की तपोभूमि में आयोजित हुए, जिनमें २०,००० से अधिक लोगों ने भाग लिया। उसी समय देशभर में १०८ गायत्री यज्ञों के आयोजन का संकल्प लिया गया जो एक वर्ष में बढ़कर १००८ यज्ञों तक पहुँचा।
- **लक्षवेदी ब्रह्मदीप महायज्ञ:** आचार्य जी के महाप्रयाण के बाद ७ से ८ जून १९९० तक देश के ६ स्थानों पर लक्षवेदी ब्रह्मदीप महायज्ञ आयोजित किए गए।
- **श्रद्धांजलि समारोह:** परम वंदनीया माता जी के निर्देशन में १००८ कुंडीय गायत्री महायज्ञ के साथ हरिद्वार में दि. १ से ४ अक्टूबर १९९० को श्रद्धांजलि समारोह आयोजित हुआ।
- **देव संस्कृति दिग्विजय अभियान:** परमपूज्य गुरुदेव के देव संस्कृति को घर घर पहुँचाने के लिए वंदनीया माताजी के संरक्षण में दि. ८ से १० जून १९९२ को हरिद्वार में ऐतिहासिक शपथ समारोह हुआ। राष्ट्र के सोए पराक्रम को जगाने के लिए तथा उसे सुसंगठित करने के निमित्त देव संस्कृति

दिग्विजय अभियान हेतू देश-विदेश में १००८ कुंडीय १०८ विराट अश्वमेध महायज्ञों की घोषणा हुई, जिसकी शुरुआत नवंबर १९९२ में जयपुर से हुई। इसका ४८वां आयोजन फरवरी २०२४ को मुंबई में सम्पन्न हुआ।

- **युगसंधि महापुरश्चरण:** गुरुदेव के रहते १९८८ में युगसंधि महापुरश्चरण प्रारंभ हुआ, जिसकी अर्धपूर्णाहूति १९९५ में आँवलखेड़ा तथा पूर्णाहूति २००० में हरिद्वार में १००८ कुंडीय गायत्री महायज्ञ के साथ सम्पन्न हुई।
- **जन्म शताब्दी समारोह:** २०११ में हरिद्वार में पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी का जन्म शताब्दी समारोह मनाया गया, जिसमें भी १००८ कुंडीय यज्ञ का आयोजन हुआ।
- **गृहे गृहे गायत्री यज्ञ अभियान:** अखिल विश्व गायत्री परिवार द्वारा गृहे गृहे गायत्री यज्ञ अभियान की शुरुआत सन २०१९ के बुध्द पुर्णिमा के अवसर पर हुई। इसका उद्देश्य विश्वव्यापी स्तर पर शांति स्थापित करना और २,४०,००० घरों में एक ही समय यज्ञ करना था। २०२५ के १२ मई को यह ७वा प्रयोग था।

१९५३ के सहस्त्रांशु ब्रह्मयज्ञ से लेकर २०२४ में सम्पन्न ४८वें अश्वमेध महायज्ञ और २०२५ के गृहे गृहे गायत्री यज्ञ अभियान तक, गायत्री परिवार ने यज्ञ को जनजागरण, नैतिक पुनर्निर्माण और युग परिवर्तन का उपकरण बनाया।

हर यज्ञ में एक सामान्य व्यक्ति को प्रेरित किया जाता है कि वह स्वयं के साथ-साथ समाज के कल्याण हेतु जिम्मेदारी ले — यही मानवता का सार है। यह मिशन व्यक्ति को साधक और स्वयंसेवक दोनों रूपों में विकसित करता है।

## ख)सामूहिक सहभागिता से सामाजिक समरसता

गायत्री परिवार द्वारा आयोजित ५, ९, २४, १०८ से लेकर १००८ कुंडीय यज्ञों की श्रृंखला, जिसमें लाखों लोगों की सक्रिय भागीदारी रही, यह प्रमाणित करती है कि यह अभियान व्यक्ति को अकेले नहीं, सामूहिक रूप से चेतना में जागरूक बनाता है।

यज्ञ के माध्यम से जाति-पांति, लिंग, भाषा या वर्गभेद से ऊपर उठकर व्यक्ति स्वयं को मानव के रूप में अनुभव करता है। यह सामाजिक समरसता और सार्वभौमिक भाईचारे की दिशा में एक ठोस प्रयास है।

## ग) शुद्ध वातावरण - स्वस्थ जीवन

आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी हवन द्वारा उत्पन्न वायुवीय तत्व वातावरण को शुद्ध करने में सहायक होते हैं। पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने इस वैज्ञानिक पहलू को आध्यात्मिक प्रयोग से जोड़ा।

गायत्री यज्ञ को उन्होंने केवल वातावरण शुद्धि के भौतिक उपाय के रूप में नहीं, बल्कि विचारों की शुद्धि और मन की निर्मलता का माध्यम बताया। यह मानसिक स्वास्थ्य, आचारशुद्धि और सकारात्मक ऊर्जा के संचार की दृष्टि से अत्यंत उपयोगी प्रक्रिया है।

## घ) स्त्री-पुरुष समता और बालिका सशक्तिकरण की प्रेरणा

गायत्री यज्ञों के माध्यम से पर्दाप्रथा, कन्या भेदभाव और स्त्री-दमन जैसी कुप्रथाओं के त्याग का आवाहन किया गया है। ये प्रयास मानवीय गरिमा, लिंग-समता और न्याय के मूलभूत सिद्धांतों से जुड़ते हैं, जो आधुनिक मानव अधिकारों के भी आधार स्तंभ हैं।

### ङ) गायत्री यज्ञ की विधि:

- यज्ञ की विधि में पवित्रीकरण सहित षट्कर्म, संकल्प, कलश पूजन, दीप पूजन, देव पूजन, रक्षाविधान, अग्नि स्थापना आदि क्रियाएं शामिल हैं।
- गायत्री यज्ञ में गायत्री मंत्र का जाप करते हुए हवन सामग्री को अग्नि में अर्पित किया जाता है।
- यह यज्ञ विभिन्न प्रकार के होते हैं, जैसे कि दीप यज्ञ, गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ, सामुहिक में पंच कुंडीय यज्ञ, नव कुंडीय यज्ञ, २४ कुंडीय यज्ञ, ५१ कुंडीय यज्ञ, १०८ कुंडीय यज्ञ, १००८ कुंडीय यज्ञ आदि।
- गायत्री यज्ञ के अंत में देव-दक्षिणा-पूर्णाहुति, आरती और विसर्जन भी किया जाता है।

### च) देव-दक्षिणा: त्याग एवं अंगीकार के माध्यम से नैतिकता की स्थापना

गायत्री यज्ञ के अंत में की जाने वाली देव-दक्षिणा की परंपरा — जिसमें प्रत्येक सहभागी एक बुराई छोड़ने और एक अच्छाई ग्रहण करने का संकल्प करता है — एक अत्यंत मानवीय और नैतिक प्रयोग है। यह परंपरा व्यक्ति को कर्म, व्यवहार और आदतों के स्तर पर परिवर्तित करने का अभ्यास कराती है।

**उदाहरणस्वरूप:**

- **त्यागने योग्य दुष्प्रवृत्तियाँ:** चोरी, बेईमानी, मुनाफाखेरी, खर्चिली शादी, दहेज-प्रथा, जातिगत भेदभाव, जूठन छोड़ने की आदत, पशुबलि, मांसाहार, नशा, फैशनपरस्ती, पर्दाप्रथा जैसी दुष्प्रवृत्तियों के त्याग का आह्वान.
- **अपनाने योग्य सत्प्रवृत्तियाँ:** गायत्री उपासना, बडों का अभिवादन करना एवं छोटों के सम्मान का ध्यान रखना, अपने कर्त्तव्यों के प्रति जागरूक रहना, सादगी, परिश्रम, सत्साहित्य पठन, सामूहिक उपासना जैसे सत्कर्मों का अंगीकार करना.

यह सब केवल धार्मिक सुधार नहीं, बल्कि मानवीय चेतना के विकास की दिशा में उठाए गए ठोस कदम हैं।

### छ) आध्यात्मिकता का लोकमंगल से जुड़ाव

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने अध्यात्म को केवल साधना-कक्ष या जंगलों की विरक्ति तक सीमित नहीं रखा। उन्होंने यज्ञ को नगर-नगर, घर-घर पहुँचाकर जनसाधारण को आध्यात्मिक अनुभव का हिस्सा बनाया और उसे समाज निर्माण का साधन भी।

उनकी दृष्टि में गायत्री यज्ञ का उद्देश्य आत्मोत्कर्ष के साथ-साथ समाजोत्थान भी है। यह आध्यात्मिकता को मानवता की सेवा से जोड़ने का अनुपम उदाहरण है।

### ज) विचारशीलता और विवेक निर्माण

यज्ञ केवल धूप-ध्यान का कर्म नहीं है, बल्कि विचार-परिष्कार का क्रांतिकारी मंच है। ज्ञानयज्ञ का विचार — जिसमें प्रत्येक साधक से प्रतिदिन एक रुपया और एक घंटा समय सत्साहित्य, सेवा या सद्विचार प्रसार के लिए माँगा जाता है — यह सामाजिक भागीदारी और विचारशील नागरिक निर्माण की प्रेरणा देता है।

यह मानसिक क्रांति का सूत्र है जो नागरिक कर्तव्यों, विवेक, संयम, सेवा और सच्चाई जैसे मूल्यों को आत्मसात कराती है।

**निष्कर्ष:**

"गायत्री परिवार का यज्ञ अभियान" न केवल एक आध्यात्मिक अनुष्ठान है, बल्कि एक व्यापक मानवतावादी क्रांति है। यह व्यक्ति को भीतर से शुद्ध करने, समाज में नैतिकता, करुणा, सहअस्तित्व और सहयोग की भावना उत्पन्न करने का अनूठा प्रयास है।

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का यह अभियान "मनुष्य में देवत्व का उदय और धरती पर स्वर्ग का अवतरण" की अवधारणा का प्रत्यक्ष प्रयोग है, जिसमें हर व्यक्ति एक यज्ञिय साधक है और हर यज्ञ एक मानवीय, नैतिक और आध्यात्मिक आंदोलन।

इस अभियान में यज्ञ एक प्रतीक मात्र नहीं, बल्कि मानवता की दिशा में एक व्यावहारिक, समन्वित और शक्तिशाली साधन बनकर उभरा है। इसीलिए यह युग धर्म और युग चेतना का पुनर्जागरण कहलाने योग्य है।

---

**साक्ष्य स्त्रोत:**

उपरोक्त अध्याय ***"गायत्री परिवार का यज्ञ अभियान"*** का अध्ययन निम्न साक्ष्य स्त्रोतों के आधार पर कर तार्किक विश्लेषण किया है।


- *All World Gayatri Pariwar, Website, https://www.awgp.org, गायत्री परिवार का यज्ञ अभियान*
- *युग निर्माण योजना, आओ जाने युगऋषि को, युग निर्माण विस्तार ट्रस्ट, गायत्री तपोभूमि मथुरा, पुनरावृत्ति २०१८, पृष्ठ ४६-५२,६६-७०.*
- *ब्रह्मवर्चस, पं. श्रीराम शर्मा आचार्य वाङ्.मय-१: युगद्रष्टा का जीवनदर्शन, अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा, संशोधित संस्करण २०२१, पृष्ठ ७२-७७, ८६-८८.*
- *पं. श्रीराम शर्मा आचार्य, कर्मकाण्ड भाष्कर, युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि, मथुरा, संशोधित संस्करण – २००८, पृष्ठ २५-७६*

# ६.३.४.गायत्री परिवार का आपदा राहत अभियान

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का जीवन केवल अध्यात्म और साधना तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उसमें सेवा, करुणा और मानवता का एक सजीव समन्वय दिखाई देता है। उनका मानना था कि अध्यात्म तभी सार्थक है, जब वह व्यवहार में सेवा और सहयोग का रूप धारण करे। इसी दृष्टिकोण के आधार पर उन्होंने अखिल विश्व गायत्री परिवार की स्थापना की, जिसका केंद्र हरिद्वार स्थित शांतिकुंज न केवल साधना और युगनिर्माण का तीर्थ है, बल्कि आपदा की घड़ी में सेवा का सशक्त प्रतीक भी है। यहाँ से यह संदेश प्रसारित होता है कि पीड़ित मानवता की सहायता करना ही ईश्वर-सेवा का वास्तविक स्वरूप है।

### क) **सेवा संकल्प का आध्यात्मिक आधार**

शांतिकुंज की स्थापना पं. श्रीराम शर्मा आचार्य और वंदनीया माताजी भगवती देवी शर्मा ने इस भाव के साथ की थी कि “हम सुधरेंगे – युग सुधरेगा।” यह सूत्र केवल आत्म-शुद्धि का आह्वान नहीं है, बल्कि सामूहिक उत्थान और मानवीय एकता का आधार है। आचार्यश्री का दृष्टिकोण था कि यदि अध्यात्म केवल पूजा-पाठ तक सीमित हो जाए और समाज के दुख-दर्द को अनदेखा करे, तो वह अधूरा है। इसलिए शांतिकुंज में सेवा और साधना को एक-दूसरे का पूरक माना गया।

इस विचारधारा के प्रत्यक्ष रूप में जब भी कोई आपदा आती है, गायत्री परिवार के स्वयंसेवक धर्म, जाति, क्षेत्र या भाषा का भेद किए बिना तुरंत राहत कार्यों में जुट जाते हैं। यह दृष्टिकोण दर्शाता है कि सेवा, अध्यात्म का ही व्यावहारिक रूप है और मानवता की सेवा ही ईश्वर की सच्ची आराधना है।

### ख) **राष्ट्रीय आपदाओं में सक्रिय योगदान**

गायत्री परिवार ने पिछले कई दशकों में असंख्य राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय आपदाओं में राहत और पुनर्वास कार्यों द्वारा अपनी सेवा-संवेदना को प्रमाणित किया है।

- गुजरात भूकंप (२००१), ओडिशा चक्रवात (१९९९), हरिद्वार-लक्सर बाढ़, और लालढांग व कनखल अग्निकांड में शांतिकुंज के दल सबसे पहले राहत सामग्री और चिकित्सा सहायता लेकर पहुँचे।
- केदारनाथ आपदा (२०१३) में प्रतिदिन हजारों प्रभावितों को भोजन, वस्त्र और दवाइयाँ उपलब्ध कराई गईं। पीड़ितों को केवल राहत ही नहीं, बल्कि मानसिक संबल भी दिया गया।
- नेपाल भूकंप (२०१५) और पिथौरागढ़ आपदा जैसी घटनाओं में गायत्री परिवार के स्वयंसेवकों ने महीनों तक राहत और पुनर्वास कार्यों में योगदान दिया।
- केरल बाढ़ (२०१८) के समय, प्रधानमंत्री राहत कोश में ₹१ करोड़ २५ लाख का सहयोग दिया गया। इसके अतिरिक्त स्वयंसेवकों ने स्थानीय स्तर पर कीटाणुनाशक छिड़काव, सफाई अभियान, मलबा हटाने और पुनर्निर्माण कार्यों में सक्रिय भूमिका निभाई।

इन प्रयासों से स्पष्ट होता है कि गायत्री परिवार का दृष्टिकोण केवल धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित नहीं, बल्कि मानव धर्म के रूप में साकार होता है।

### ग) **उत्तरकाशी आपदा (२०२५) — सेवा का जीवंत उदाहरण**

५ अगस्त २०२५ को उत्तरकाशी के धराली गाँव में बादल फटने से भीषण तबाही हुई। इस संकट की घड़ी में शांतिकुंज का आपदा प्रबंधन दल सबसे पहले राहत स्थल पर पहुँचा और सेवा का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया।

- श्री इंद्रजीत सिंह और दिनेश मैखुरी के नेतृत्व में ८ सदस्यीय दल ने दवाइयाँ, सूखा राशन, कंबल और राहत उपकरण तुरंत पहुँचाए।
- शांतिकुंज के व्यवस्थापक श्री योगेंद्र गिरी ने स्थानीय प्रशासन, सेना और एनडीआरएफ के साथ तालमेल बिठाकर राहत कार्य को व्यवस्थित और तेज़ गति प्रदान की।
- श्रद्धेया शैलदीदी ने शांतिकुंज में विशेष बैठक बुलाकर पीड़ितों के लिए संवेदना और सहयोग का संदेश दिया। उन्होंने प्रार्थना के साथ यह भी स्पष्ट किया कि इस संकट की घड़ी में पूरा गायत्री परिवार उत्तरकाशी के लोगों के साथ खड़ा है।

यहाँ केवल सामग्री ही नहीं, बल्कि सहानुभूति, करुणा और आत्मीयता भी पीड़ितों तक पहुँचाई गई। इस प्रकार यह अभियान, सेवा के साथ-साथ मानवीय संवेदना का भी जीवंत उदाहरण बना।

### घ) **संगठित आपदा प्रबंधन नेटवर्क**

आज शांतिकुंज राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त आपदा प्रबंधन केंद्र है। इसकी संरचना और संगठनात्मक क्षमता ने इसे देश के सबसे विश्वसनीय गैर-सरकारी आपदा प्रबंधन संगठनों में शामिल कर दिया है।

- देशभर में हजारों आपदा प्रबंधन इकाइयाँ स्थापित की गई हैं, जिनमें प्रशिक्षित स्वयंसेवक कार्यरत हैं।
- इन दलों को प्राथमिक उपचार, राहत वितरण, बचाव तकनीक, पुनर्वास कार्य और आपातकालीन निर्णय लेने का प्रशिक्षण दिया जाता है।
- शांतिकुंज की विशेषता यह है कि यहाँ आपदा प्रबंधन केवल आकस्मिक आपदाओं तक सीमित नहीं, बल्कि स्वच्छता अभियान, खुले में शौच मुक्त अभियान, वृक्षारोपण, ग्रामीण स्वास्थ्य और जनजागरण जैसी गतिविधियों तक विस्तृत है।

यह संगठित दृष्टिकोण दर्शाता है कि गायत्री परिवार ने आपदा प्रबंधन को एक दीर्घकालिक सामाजिक जिम्मेदारी के रूप में आत्मसात किया है।

### ङ) **अध्यात्म और सेवा का समन्वय**

गायत्री परिवार का सबसे बड़ा योगदान यह है कि उसने अध्यात्म और सेवा को एक-दूसरे से जोड़ा। यहाँ साधना केवल व्यक्तिगत मोक्ष या आत्मकल्याण के लिए नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र के उत्थान के लिए भी मानी जाती है।

- श्रद्धेया शैल बाला पंड्या, डॉ. प्रणव पंड्या और डॉ. चिन्मय पंड्या के नेतृत्व में सेवा और साधना का अद्भुत संतुलन स्थापित हुआ है।
- हर वर्ष सर्दियों में कंबल वितरण, वस्त्र दान, भिक्षुकों, साधुओं और तीर्थयात्रियों की सहायता जैसे कार्य नियमित रूप से किए जाते हैं।

- यहाँ दान को केवल वस्तुओं तक सीमित नहीं माना जाता, बल्कि समय, श्रम, ज्ञान और करुणा का दान भी उतना ही आवश्यक माना जाता है।

  इस प्रकार शांतिकुंज ने यह सिद्ध किया है कि अध्यात्म का चरम उद्देश्य मानवता की सेवा है।

## निष्कर्ष : मानवता का जीवंत संदेश

आपदा राहत अभियान केवल आकस्मिक सहयोग नहीं है, बल्कि यह मानवता की चेतना को जागृत करने का एक आंदोलन है। गायत्री परिवार यह स्पष्ट करता है कि जब समाज संकट में होता है, तब अध्यात्म का सच्चा स्वरूप सेवा, करुणा और सहयोग के रूप में प्रकट होना चाहिए।

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का दृष्टिकोण भी यही था— "मनुष्य तभी ईश्वर के निकट है, जब वह पीड़ित मानवता की सेवा करता है।"

इस दृष्टि से, शांतिकुंज और गायत्री परिवार के आपदा राहत अभियान केवल भौतिक सहायता तक सीमित नहीं हैं, बल्कि ये करुणा, सहअस्तित्व और आत्मीयता की उस भावना को पुष्ट करते हैं, जो मानवता की आत्मा है।

यह आंदोलन हमें यह सिखाता है कि जब हर व्यक्ति अपने भीतर करुणा और सेवा की भावना को जाग्रत करता है, तभी समाज और युग में सच्चा परिवर्तन सम्भव होता है। इस प्रकार, गायत्री परिवार का आपदा राहत अभियान मानवता की करुणा, सेवा और सहयोग की अनूठी मिसाल है और यह सिद्ध करता है कि मानवता की रक्षा ही अध्यात्म का परम उद्देश्य है।

---

## साक्ष्य स्रोत:

उपरोक्त अध्याय "***गायत्री परिवार का आपदा राहत अभियान***" का अध्ययन निम्न साक्ष्य स्रोतों के आधार पर कर तार्किक विश्लेषण किया है।


- *Jan Expresslive, Website, https://janexpresslive.com, हरिद्वार शांतिकुंज: आपदा की घड़ी में सेवा का सशक्त प्रतीक - दि. ७ अगस्त २०२५.*
- *All World Gayatri Pariwar, Website, https://www.awgp.org, देशभर में चलाये जा रहे रचनात्मक आन्दोलन.*
- *All World Gayatri Pariwar, Website, https://www.awgp.org, शांतिकुंज से उत्तरकाशी आपदा राहत दल रवाना, दि. ८ अगस्त २०२५.*
- *Navbharat Times, Website, https://www.navbharattimes.indiatimes.com दि. २७ अप्रैल २०२२.*

# ६.४.इक्कीसवीं सदी का संविधान - युग निर्माण सत्संकल्प

"इक्कीसवीं सदी का संविधान — युग निर्माण सत्संकल्प" मानवीय चेतना के उच्चतम स्तर पर पहुँचने का आह्वान है। यह केवल एक धार्मिक घोषणापत्र नहीं, बल्कि मानवता के नैतिक पुनर्जागरण की योजना है, जो प्रत्येक व्यक्ति को आत्मनिर्माण के माध्यम से समाज एवं युग के निर्माण की प्रेरणा देता है। इस सत्संकल्प का मूल उद्देश्य है— व्यक्ति को सत्कर्म, सद्विचार, संयम, समर्पण और सामाजिक उत्तरदायित्वों की दिशा में प्रेरित करना। मानवता की दृष्टि से यह सत्संकल्प एक ऐसी आधारशिला है, जो व्यक्तिगत सुधार के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन की आधारभूमि तैयार करता है।

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का यह विश्वास था कि जब तक मनुष्य स्वयं में परिवर्तन नहीं लाएगा, तब तक समाज और युग में स्थायी परिवर्तन सम्भव नहीं है। इस दृष्टि से सत्संकल्प के प्रत्येक सूत्र में एक साधारण मानव को 'देवमानव' बनाने की दिशा में मार्गदर्शन है— जैसे कि सत्यनिष्ठा, न्यायप्रियता, समता, परोपकार और समर्पण की भावना। यह संकल्प आचार्यश्री की उस मानवतावादी सोच का प्रतिफल है, जिसमें हर मनुष्य को ब्रह्मतत्व की संभावना मानकर, उसके भीतर अंतर्निहित दिव्यता को जाग्रत करने का प्रयास किया गया है।

इस प्रकार, युग निर्माण सत्संकल्प न केवल आत्मिक उत्थान का मार्गदर्शक है, अपितु यह समूची मानवता के लिए एक नैतिक दिशा-सूचक प्रकाशस्तम्भ के रूप में खड़ा है।

## ६.४.१. हम ईश्वर को सर्वव्यापी, न्यायकारी मानकर उसके अनुशासन को अपने जीवन में उतारेंगे।

मानवता की दृष्टि से यह सत्संकल्प एक नैतिक क्रांति की नींव है, जो व्यक्ति को भीतर से उज्ज्वल बनाकर समाज में समरसता, उत्तरदायित्व और करुणा का विस्तार करता है। जब मनुष्य यह अनुभव करता है कि ईश्वर सर्वत्र विद्यमान है, वह न्यायकारी है और प्रत्येक कर्म का फल सुनिश्चित है, तब वह पाप से डरता है और पुण्य से प्रेम करता है।

यह आस्तिकता केवल धार्मिक कर्मकांड नहीं, बल्कि जीवन की उत्कृष्टता का आधार है। हर जीव में परमात्मा का अंश मानने से प्रत्येक व्यक्ति के प्रति समानता, करुणा और सहयोग की भावना विकसित होती है। यही भाव मानवता की सच्ची सेवा और सम्मान का मूल है। यदि हम ईश्वर को सर्वव्यापी मानते हैं तो किसी भी अन्याय, शोषण या हिंसा को हम न स्वयं करेंगे, न सहन करेंगे।

इस सत्संकल्प में छिपा नैतिक अनुशासन व्यक्ति को आत्मानुशासित बनाता है। उसका जीवन सत्य, अहिंसा, संयम और दया की ओर अग्रसर होता है। इससे समाज में पारस्परिक विश्वास, सद्भाव और न्याय का वातावरण बनता है, जो मानवता की स्थायी शांति और विकास का आधार है।

अतः यह सत्संकल्प मानव मात्र को एक उत्तरदायी, नैतिक और दिव्य जीवन जीने की प्रेरणा देकर समूची मानवता के लिए आदर्श व्यवस्था की ओर मार्गदर्शन करता है।

## ६.४.२. शरीर को भगवान का मन्दिर समझकर आत्मसंयम और नियमितता द्वारा आरोग्य की रक्षा करेंगे।

यह संकल्प मानव जीवन में शरीर की महत्ता को रेखांकित करता है। आत्मा का यह वाहन जब तक स्वस्थ, संयमित एवं सक्रिय रहता है, तभी तक मनुष्य अपनी निजी, पारिवारिक एवं सामाजिक जिम्मेदारियों

का निर्वहन कर सकता है। इस संकल्प में शरीर को *भगवान का मंदिर* मानकर उसकी *साफ-सफाई, सुरक्षा और साधना* की बात की गई है।

मनुष्य का शरीर उसकी सबसे निकटवर्ती संपत्ति है। यह सेवक की तरह दिन-रात कार्य करता है, परंतु जब इसका ध्यान नहीं रखा जाता, तब यह दुर्बल होकर रुग्णता और निर्बलता का कारण बनता है। यह संकल्प आत्मसंयम, आहार-विहार में मर्यादा, नियमित दिनचर्या, परिश्रम, विश्राम एवं ब्रह्मचर्य जैसे उच्च आदर्शों का प्रतिपादन करता है।

मानवता के दृष्टिकोण से यह संकल्प विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि जो व्यक्ति स्वयं स्वस्थ नहीं है, वह न समाज के लिए उपयोगी बन सकता है और न ही कर्तव्यपालन में समर्थ हो सकता है। स्वस्थ व्यक्ति ही श्रम कर सकता है, सेवा दे सकता है, और दूसरों पर भार बने बिना जीवन जी सकता है। इस संकल्प के माध्यम से 'स्वस्थ शरीर — समर्थ समाज' की अवधारणा को पुष्ट किया गया है। व्यक्तिगत अनुशासन से सामूहिक चेतना के उत्कर्ष का यह आधार बनता है।

अतः यह संकल्प आत्म-कल्याण के साथ-साथ समष्टि-कल्याण का पथ प्रशस्त करता है, जो युग निर्माण की मूल चेतना के अनुरूप है।

### ६.४.३. मन को कुविचारों और दुर्भावनाओं से बचाए रखने के लिए स्वाध्याय एवं सत्संग की व्यवस्था रखे रहेंगे।

मनुष्य का चरित्र, व्यवहार और उसकी सोच— इन सबका मूल आधार उसका मन है। यदि मन शुद्ध, सकारात्मक और विवेकशील हो, तो व्यक्ति का आचरण भी सुसंस्कृत और मानवोचित होता है। इसी भाव को ध्यान में रखते हुए पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा प्रस्तुत सत्संकल्प में कहा गया है— *"मन को कुविचारों और दुर्भावनाओं से बचाए रखने के लिए स्वाध्याय एवं सत्संग की व्यवस्था रखेंगे।"* यह संकल्प आत्मनिर्माण की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है, जो अंततः सम्पूर्ण मानव समाज की दिशा और दशा बदलने में सहायक बनता है।

मन की दुर्बलता, विकृति और नकारात्मकता मानवता के लिए घातक है। क्रोध, द्वेष, स्वार्थ, हिंसा जैसे कुविचार ही सामाजिक संघर्षों, अपराधों और युद्धों की जड़ हैं। इन्हें निर्मूल करने के लिए मन को सुसंस्कारित और प्रेरणाप्रद वातावरण देना आवश्यक है। स्वाध्याय और सत्संग इस कार्य के श्रेष्ठ माध्यम हैं। सत्साहित्य और सद्विचारों का अनुशीलन व्यक्ति को आत्मचिंतन, आत्मनियंत्रण और आत्मबोध की दिशा में प्रेरित करता है। यह आंतरिक शुद्धि की प्रक्रिया ही मनुष्य को सच्चा मानव बनाती है, जिसमें करुणा, सेवा, सहिष्णुता और परोपकार जैसे मानवीय गुण स्वतः विकसित होते हैं।

मानवता की स्थापना तब संभव है जब प्रत्येक व्यक्ति का मन निर्मल, निःस्वार्थ और सद्भावनाओं से ओतप्रोत हो। यही इस सत्संकल्प का उद्देश्य है— व्यक्ति के आंतरिक परिवर्तन के माध्यम से समाज में यथार्थ मानवता की पुनर्स्थापना।

### ६.४.४. हम इंद्रिय संयम, अर्थ संयम, समय संयम और विचार संयम का सतत अभ्यास करेंगे।

मनुष्य का जीवन एक सतत संघर्षभूमि है, जिसमें उसे अपने भीतर की पुरानी कुसंस्कारित प्रवृत्तियों से जूझते हुए संयम की साधना करनी होती है। संयम केवल इंद्रियों को रोकना नहीं, बल्कि अपने जीवन में

सत्प्रयोजनों को स्थान देना है। जैसे अर्जुन ने अपने कर्तव्य पथ पर विचलित न होकर युद्ध किया, वैसे ही प्रत्येक साधक को अपने अंदर के अवांछनीय विचारों व प्रवृत्तियों से जूझना पड़ता है।

- **जीवन की चार मूलभूत संपदाएँ** — इंद्रिय शक्ति, समय शक्ति, विचार शक्ति और अर्थ शक्ति — हैं। इनमें पहली तीन ईश्वर प्रदत्त हैं, जबकि चौथी अर्थात् धन, इनका सदुपयोग करके अर्जित की जाती है। इनका संयमपूर्वक उपयोग ही जीवन को सार्थक बनाता है।
- **इंद्रिय संयम** में जिह्वा और जननेन्द्रिय विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण हैं। जिह्वा संयम से शारीरिक स्वास्थ्य और जननेन्द्रिय संयम से मानसिक स्वास्थ्य सुरक्षित रहता है। स्वाद के पीछे भागने से स्वास्थ्य नष्ट होता है। संयम से ही शक्ति, स्वास्थ्य और संतुलन सम्भव है।
- **समय संयम** का अर्थ है—आलस्य और प्रमाद से बचकर श्रमशील और अनुशासित जीवन जीना। समय का अपव्यय जीवन का अपव्यय है। समय के सदुपयोग से ही जीवन में उपलब्धियाँ सम्भव हैं।
- **विचार संयम** का अर्थ है—अपने विचारों को मर्यादित, सकारात्मक और सृजनशील बनाना। बिखरे और अव्यवस्थित विचार जीवन को दिशाहीन बनाते हैं। जैसे चिड़ियाघर में पशु-पक्षियों को घूमा-फिराया जाता है पर बाहर नहीं निकलने दिया जाता, वैसे ही विचारों को नियंत्रण में रखकर लक्ष्य की ओर मोड़ना आवश्यक है।
- **अर्थ संयम** का आशय है—धन का उपार्जन ईमानदारी से और व्यय विवेकपूर्ण ढंग से करना। धन को आडंबर, प्रदर्शन या विलासिता में न खर्च कर उसे समाजोपयोगी कार्यों में लगाना चाहिए। जो व्यक्ति धन को संयमपूर्वक खर्च करता है, वही वास्तविक रूप से लक्ष्मी का अधिकारी होता है।

संयम का सही स्वरूप समझे बिना व्यक्ति गलत राह पर चल पड़ता है। संयम का अर्थ केवल रोकना नहीं, वरन् जीवन की शक्तियों का सत्प्रयोजन में नियोजन करना है। इसका अभ्यास करते रहने से व्यक्ति आत्मिक और सामाजिक रूप से समर्थ बनता है।

### ६.४.५. अपने आपको समाज का एक अभिन्न अंग मानेंगे और सबके हित में अपना हित समझेंगे।

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा प्रतिपादित यह सत्संकल्प व्यक्ति और समाज के परस्पर संबंधों की समरसता को दर्शाता है। यह हमें केवल 'स्व' तक सीमित न रहकर 'समष्टि' के हित में जीवन जीने की प्रेरणा देता है। मानवता का मूल आधार सामाजिक न्याय, समता और सह-अस्तित्व है। यदि समाज के किसी वर्ग के साथ अन्याय होता है, तो संपूर्ण समाज की स्थिरता डगमगाने लगती है। अतः प्रत्येक व्यक्ति का यह नैतिक कर्तव्य है कि वह अपने संसाधनों, सुविधाओं और उपलब्धियों को केवल अपने उपभोग तक सीमित न रखे, अपितु उन्हें समाज के वंचित वर्गों तक पहुँचाए।

यह सत्संकल्प संग्रहवृत्ति, जाति-पांति, लिंगभेद, ऊँच-नीच जैसी सामाजिक विकृतियों पर प्रहार करता है और प्रत्येक व्यक्ति को समता, करुणा व उदारता की राह पर चलने को प्रेरित करता है। यह भावना कि "हम सब एक ही नाव में सवार हैं सामाजिक सौहार्द और मानवीय संवेदना का मूल मंत्र है।

आचार्यश्री ने परमार्थ को ही सच्ची साधना बताया है— *जो मिला है उसे बाँटकर खाना चाहिए।"* यह युग धर्म है, जिससे व्यक्ति महान बनता है और मानवता का उत्कर्ष संभव होता है। सुप्रिया की कथा हमें बताती है कि देने के लिए साधन नहीं, भावना चाहिए। यही भावना मनुष्य को पशु से देवत्व की ओर ले जाती है।

इस प्रकार यह सत्संकल्प केवल सामाजिक दायित्व नहीं, वरन् मानवीय जागरण की चाबी है।

## ६.४.६. मर्यादाओं को पालेंगे, वर्जनाओं से बचेंगे, नागरिक कर्तव्यों का पालन करेंगे और समाजनिष्ठ बने रहेंगे।

मनुष्य अन्य प्राणियों से श्रेष्ठ इसीलिए है क्योंकि उसके पास विवेक, बुद्धि और निर्णय की शक्ति है। यह शक्ति अगर मर्यादा और संयम के साथ उपयोग की जाए तो सृजन होता है, नहीं तो विनाश। जैसे रेल इंजन को पटरियों पर चलने की मर्यादा बाँधती है, बिजली को तारों में सीमित कर उपयोगी बनाया जाता है, वैसे ही मनुष्य के जीवन को भी मर्यादा, नियम और कर्तव्यों का अनुशासन सुरक्षित और सार्थक बनाता है।

जो मर्यादा और सामाजिक अनुशासन तोड़ते हैं, वे स्वयं के साथ-साथ समाज के लिए भी संकट बन जाते हैं। इतिहास गवाह है कि जब-जब मनुष्य ने अपने उत्तरदायित्वों को भुलाकर स्वेच्छाचार अपनाया, तब-तब असुरता, अन्याय और अत्याचार ने जन्म लिया। इसलिए आवश्यक है कि हम स्वयं पर नियंत्रण रखें, आत्म-संयम अपनाएँ और कर्तव्यों का पालन करें।

नागरिक जीवन में मर्यादा का विशेष स्थान है — दूसरों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए अपनी स्वतंत्रता को सीमित करना ही सच्ची नागरिकता है। सार्वजनिक स्थानों की स्वच्छता, समय की पाबंदी, दूसरों की नींद, स्वास्थ्य और शांति का ध्यान — ये सभी नागरिक कर्तव्यों की श्रेणी में आते हैं। स्वार्थ या सुविधा के लिए नियमों को तोड़ना केवल सामाजिक व्यवस्था को नहीं बिगाड़ता, अपितु आत्मा को भी दोषग्रस्त करता है, जिससे आत्म-ग्लानि जन्म लेती है। यही आत्म-प्रताड़ना मानसिक असंतुलन और व्याधियों का कारण बनती है।

इसलिए आवश्यक है कि हम ईमानदारी, समयपालन, वचनबद्धता और सामाजिक उत्तरदायित्वों को अपने जीवन का अंग बनाएँ। धर्म और नीति की राह पर चलना सरल नहीं, परंतु यही राह दीर्घकालीन सुख और संतोष की ओर ले जाती है। समाज में सुधार के लिए दूसरों की प्रतीक्षा न करें, हम स्वयं पहल करें — मर्यादा पालन से ही समाज सुसंस्कृत बनता है, और राष्ट्र का भविष्य उज्ज्वल होता है।

## ६.४.७. हम समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी को जीवन का अविच्छिन्न अंग बनाएँगे।

मनुष्य के चरित्र निर्माण में जिन चार मूलभूत गुणों को सुसंस्कारिता के स्तंभ कहा गया है, वे हैं — **समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी।** जैसे शरीर के लिए भोजन, जल, वस्त्र और निवास अनिवार्य हैं, वैसे ही आत्मिक और सामाजिक विकास के लिए इन चार गुणों को भी जीवन का आवश्यक अंग बनाना होता है।

**समझदारी** का अर्थ है दूरदर्शिता और विवेकशीलता। तात्कालिक लाभ की ललक में यदि मनुष्य अनुचित मार्ग अपना ले, तो भविष्य अंधकारमय हो जाता है। मूर्खता में की गई चटोरेपन की आदतें, नशाखोरी, कामुकता या आलस्य— सब जीवन की ऊर्जा को नष्ट कर देते हैं। समझदारी का तात्पर्य है — किसान की तरह वर्तमान में श्रम करना और भविष्य में श्रेष्ठ परिणाम की प्रतीक्षा करना। संयम, सत्कर्म, त्याग और परमार्थ— इन्हीं से व्यक्तित्व खिलता है और समाज का कल्याण होता है।

**ईमानदारी** वह आधार है, जिस पर विश्वास, सहयोग और सद्भाव की नींव टिकी होती है। कथनी और करनी में समरूपता, लेन-देन में निष्ठा, और अपने कार्य में सत्यनिष्ठा— यही जीवन को उज्ज्वल बनाती है। ईमानदार व्यक्ति भले ही आर्थिक रूप से सीमित हो, पर उसकी नैतिक समृद्धि अमूल्य होती है। ऐसे लोग समाज के लिए प्रेरणा होते हैं।

**जिम्मेदारी** का भाव जीवन के हर क्षेत्र में आवश्यक है — अपने स्वास्थ्य, परिवार, समाज, संस्कृति, राष्ट्र और संपूर्ण सृष्टि के प्रति। जिम्मेदार व्यक्ति हर कार्य सोच-समझ कर करता है। वह केवल पेट और प्रजनन तक सीमित नहीं रहता, बल्कि अपनी भूमिका को व्यापक स्तर पर समझता है। उसे अपने निर्णयों और कर्मों के दूरगामी प्रभाव का भान होता है। लोकमंगल के कार्यों के लिए जब तक यह भाव न जागे, तब तक जीवन दिशाहीन बना रहता है।

**बहादुरी** केवल युद्धक्षेत्र की बात नहीं, बल्कि यह दैनिक जीवन की चुनौतियों, सामाजिक कुरीतियों, और आत्मिक संघर्षों से जूझने की शक्ति है। अपने अंदर के दोषों से लड़ना, समाज के अंधविश्वासों और अन्याय के विरुद्ध खड़े होना, सज्जनों को संगठित करना— ये सब बहादुरी के ही रूप हैं। यह गुण आत्मोत्थान और समाजोत्थान दोनों का साधन है।

इन चार गुणों को अपनाना ही सच्ची सुसंस्कारिता है। ये केवल उपदेश नहीं, बल्कि आचरण में लाने योग्य जीवन मूल्य हैं। श्री चिमनलाल शीतलवाड़ जैसे व्यक्तियों का जीवन इसका प्रमाण है, जिन्होंने एक लाख की रिश्वत को ठुकराकर बताया कि समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी कोई खोखले आदर्श नहीं, बल्कि उन्हें जीकर दिखाया जा सकता है।

### ६.४.८. चारों ओर मधुरता, स्वच्छता, सादगी और सज्जनता का वातावरण उत्पन्न करेंगे।

यह सत्संकल्प मानवीय समाज में एक ऐसे सांस्कृतिक और नैतिक वातावरण के निर्माण की बात करता है, जिसमें *मधुरता, स्वच्छता, सादगी* और *सज्जनता* जैसे गुण प्रधान हों।

- **मधुरता** सामाजिक संबंधों में सौहार्द, करुणा और संवादशीलता को बढ़ावा देती है, जिससे द्वेष, हिंसा और वैमनस्य समाप्त होते हैं। यह भावनात्मक स्वास्थ्य और सहयोगी वातावरण के लिए अत्यंत आवश्यक है।
- **स्वच्छता** न केवल बाह्य स्वच्छता की प्रेरणा देती है, बल्कि मानसिक और सामाजिक शुद्धता की दिशा में भी एक कदम है। यह सार्वजनिक स्वास्थ्य और नैतिक वातावरण दोनों की रक्षा करती है।
- **सादगी** उपभोक्तावाद और आडंबर से हटकर एक संतुलित, सहजीवी जीवनशैली को बढ़ावा देती है। इससे संसाधनों का न्यायपूर्ण वितरण संभव होता है, जो मानवीय समानता के लिए आवश्यक है।
- **सज्जनता** अर्थात व्यवहार में विनम्रता, सहिष्णुता और सेवा का भाव — यह समाज में विश्वास, सौहार्द और परस्पर सम्मान का आधार बनती है।

इस सूत्र का उद्देश्य है कि हम अपने आचरण और परिवेश में ऐसे गुणों का समावेश करें जो समस्त मानवता के लिए अनुकूल, शांतिपूर्ण और उन्नतिपरक वातावरण निर्मित करें।

### ६.४.९. अनीति से प्राप्त सफलता की अपेक्षा नीति पर चलते हुए असफलता को शिरोधार्य करेंगे।

यह सत्संकल्प मानवता की नैतिक चेतना को सर्वोच्च स्थान देता है। यह सिद्धांत प्रतिपादित करता है कि मनुष्य का वास्तविक मूल्य उसकी नीति, चरित्र और सिद्धांतों में निहित होता है, न कि उसकी क्षणिक सफलता में। मानवता के आदर्शों में *सत्य, धर्म, साहस, और लोकहित* की प्रतिष्ठा सर्वोपरि मानी जाती है।

इस सत्संकल्प के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि अनीति द्वारा अर्जित सफलता, चाहे वह धन, पद, प्रतिष्ठा या अधिकार के रूप में क्यों न हो, वह अंततः मानव मूल्यों का हनन करती है। इसके विपरीत, नीति और धर्म के मार्ग पर चलते हुए यदि किसी को असफलता भी मिले, तो वह मनुष्यत्व की विजय मानी जाती है। यह विचार गांधी, सुभाषचंद्र बोस, ईसा मसीह, और राणा प्रताप जैसे महान आत्माओं के जीवन में परिलक्षित होता है, जिन्होंने नीति और आदर्शों के लिए संघर्ष का मार्ग अपनाया।

यह सत्संकल्प सामाजिक कायरता और अनीति के प्रति मौन समर्थन को भी मानवता के लिए कलंक मानता है। अन्याय के विरुद्ध साहसपूर्वक खड़े होना, अत्याचार का प्रतिरोध करना और सत्य के पक्ष में *असहमति, असहयोग और संघर्ष* करना — यही वास्तविक मानवता की पहचान है। व्यक्तिगत हानि सहकर भी यदि कोई अन्याय के विरुद्ध खड़ा होता है, तो वह न केवल स्वयं को, बल्कि समाज को भी आत्म-सम्मान प्रदान करता है।

इस प्रकार, यह सत्संकल्प समस्त मानव समाज को आदर्श नीतिमूल्य, सत्याग्रह, साहस और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना के साथ जीने की प्रेरणा देता है, जो *इक्कीसवीं सदी के मानव-समाज के नव निर्माण* के लिए अत्यावश्यक है।

## ६.४.१०. मनुष्य के मूल्यांकन की कसौटी, उसकी सफलताओं, योग्यताओं एवं विभूतियों को नहीं, उसके सद्विचारों और सत्कर्मों को मानेंगे।

यह सत्संकल्प मानवता को नई दृष्टि प्रदान करता है कि व्यक्ति की वास्तविक श्रेष्ठता उसके विचारों की पवित्रता और कर्मों की सदाचारिता में होती है, न कि बाहरी उपलब्धियों और वैभव में। पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने स्पष्ट किया है कि सफलता यदि अनैतिक साधनों से प्राप्त की गई हो, तो वह अनुकरणीय नहीं हो सकती, भले ही वह कितनी ही आकर्षक क्यों न हो।

आज समाज में धन, पद और प्रतिष्ठा को ही सम्मान का आधार मान लिया गया है, जिससे अधर्म और अपराध की प्रवृत्तियाँ बढ़ रही हैं। यदि समाज नीति और सेवा के मार्ग पर चलने वालों को प्रतिष्ठा देगा, तो यह सच्ची मानवता की पुनर्स्थापना का कार्य होगा।

यह सत्संकल्प बताता है कि हमारी प्रशंसा और तिरस्कार की दृष्टि में विवेक हो, ताकि हम अनैतिकता को प्रोत्साहित करने के बजाय आदर्शवाद को प्रेरणा दे सकें। जैसे थोड़े से वोट किसी को सत्ता तक पहुँचा सकते हैं, वैसे ही समाज की आदर दृष्टि किसी आदर्श व्यक्ति को प्रेरणास्रोत बना सकती है।

इस प्रकार यह सत्संकल्प मानवता के लिए यह संदेश देता है कि जीवन का मूल्यांकन बाह्य सफलता से नहीं, बल्कि अंतःकरण की शुद्धता और समाज हितैषी आचरण से होना चाहिए। यही दृष्टिकोण एक नैतिक, आदर्श और समतामूलक समाज की स्थापना में सहायक बन सकता है।

## ६.४.११. दूसरों के साथ वह व्यवहार नहीं करेंगे, जो हमें अपने लिए पसन्द नहीं।

यह सत्संकल्प मानवता की मूलभूत भावना — *परस्पर सहअस्तित्व और समता* — को व्यवहारिक धरातल पर प्रतिष्ठित करता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने लिए सद्व्यवहार, सहानुभूति, सहायता, मधुरता और मर्यादा की अपेक्षा करता है, किन्तु वही व्यक्ति जब दूसरों के साथ व्यवहार करता है, तो स्वार्थ, कठोरता और उपेक्षा का प्रदर्शन करता है। यह दुहरी नीति ही मानव संबंधों के विघटन का मूल कारण है।

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने जीवन के विविध प्रसंगों — जैसे यात्रा में स्थान न देना, दहेज में दोहरा मापदंड, लेन-देन में बेईमानी, पारिवारिक रिश्तों में उपेक्षा और सामाजिक आचरण में अशिष्टता — के

माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि जब तक हम *"स्वयं जैसा व्यवहार अपने लिए चाहते हैं, वैसा ही दूसरों के साथ भी न करें"*, तब तक न तो मानवता फल-फूल सकती है, न ही समाज में शांति और सहयोग की भावना विकसित हो सकती है।

यह सत्संकल्प केवल नीतिशास्त्र नहीं, बल्कि मानवतावादी आचरण की आधारशिला है। इसमें समाविष्ट है करुणा, समानता, कृतज्ञता और आत्मनिरीक्षण की प्रेरणा। यदि हर व्यक्ति इस भावना को अपने आचरण में उतारे, तो समाज से अन्याय, शोषण, तिरस्कार और दुराचार जैसी समस्याएँ स्वतः लुप्त हो सकती हैं।

मानवता की दृष्टि से यह सत्संकल्प हमें सिखाता है कि सच्ची सज्जनता वही है, जो अपने व्यवहार से दूसरों को सुख, सुरक्षा और सम्मान का अनुभव कराए — ठीक उसी प्रकार जैसे हम अपने लिए चाहते हैं। यही भाव विश्वबंधुत्व का बीज है, जो एक आदर्श, सहिष्णु और सहृदय समाज की रचना में सहायक बन सकता है।

## ६.४.१२. नर-नारी परस्पर पवित्र दृष्टि रखेंगे।

नर और नारी समाज के दो समान, पूरक और आवश्यक स्तम्भ हैं। जब वे एक-दूसरे को पवित्र, आत्मीय और सम्मानजनक दृष्टि से देखते हैं, तभी समाज में शांति, संतुलन और सद्भाव बना रहता है। यह सत्संकल्प प्रेरणा देता है कि स्त्री को मात्र आकर्षण या भोग की वस्तु न मानकर, माँ, बहन, पुत्री या पत्नी के रूप में देखा जाए और उसकी महानता, त्याग और सृजनशीलता का सम्मान किया जाए।

स्त्री और पुरुष दोनों में आत्मिक श्रेष्ठता और मानवीय गरिमा होती है। उन्हें एक-दूसरे के प्रति *स्नेह, कर्तव्य और सात्विक प्रेम* की भावना से जुड़ना चाहिए, न कि वासना और आकर्षण की दृष्टि से। यह दृष्टिकोण न केवल व्यक्तिगत चरित्रबल को विकसित करता है, बल्कि समाज में भी विश्वास और मर्यादा का वातावरण निर्मित करता है।

दाम्पत्य संबंध भी आत्मिक सहभागिता और जीवन साधना का पवित्र संयोग है। इसका उद्देश्य केवल इन्द्रिय सुख नहीं, अपितु जीवन के उत्तरदायित्वों को मिलकर निभाना है। इसीलिए यह सत्संकल्प व्यक्ति को संयम, मर्यादा और विवेकपूर्ण व्यवहार की प्रेरणा देता है।

इस प्रकार यह सूत्र नर-नारी संबंधों को पवित्र भावभूमि पर स्थापित कर एक आत्मीय, सुसंस्कृत और सद्भावनापूर्ण समाज की रचना की दिशा में मार्गदर्शक बनता है।

## ६.४.१३. संसार में सत्प्रवृत्तियों के पुण्य-प्रसार के लिए, अपने समय, प्रभाव, ज्ञान, पुरुषार्थ एवं धन का एक अंश नियमित रूप से लगाते रहेंगे।

मानवता के उत्कर्ष हेतु सत्प्रवृत्तियों का प्रसार परम आवश्यक है, क्योंकि यही समाज में सद्भाव, नैतिकता और आध्यात्मिक चेतना की आधारशिला हैं। अच्छे विचार ही अच्छे कर्मों को जन्म देते हैं और व्यक्ति एवं समाज का निर्माण करते हैं। अतः प्रत्येक व्यक्ति को अपने समय, प्रभाव, ज्ञान, पुरुषार्थ और धन का एक निश्चित भाग इस कार्य के लिए समर्पित करना चाहिए।

यह सत्संकल्प हमें स्मरण कराता है कि भौतिक संसाधनों से अधिक मूल्यवान है—सद्भावना और सद्विचार। यदि हम इन सत्प्रवृत्तियों को समाज में सींचें, तो बुराइयों के स्थान पर अच्छाइयों की फसल लहलहा सकती है। युग निर्माण अभियान इसी भावना को जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास है।

हर व्यक्ति अपने सामर्थ्यानुसार—झोला पुस्तकालय, ज्ञानदान, प्रेरणात्मक कार्य या सेवा-संस्थाओं के माध्यम से—इस पुण्य प्रयोजन में सहभागी बन सकता है। मानवता की सेवा का सबसे श्रेष्ठ रूप यही है कि हम अपने जीवन का एक भाग स्थायी रूप से इस कार्य के लिए समर्पित करें। यह न केवल सामाजिक कल्याण का मार्ग है, बल्कि आत्मकल्याण का भी सुनिश्चित पथ है।

## ६.४.१४. परम्पराओं की तुलना में विवेक को महत्त्व देंगे।

मानवता के विकास के लिए यह अनिवार्य है कि व्यक्ति परम्पराओं के अन्धानुकरण की बजाय विवेक और तर्क को प्राथमिकता दे। अनेक सामाजिक कुरीतियाँ—जैसे नशा, दहेज, मृत्युभोज, अनावश्यक तामझाम—समाज को भीतर से खोखला कर रही हैं। व्यक्ति जानता है कि ये गलत हैं, फिर भी केवल परम्परा और सामाजिक दबाव के कारण उन्हें निभाता रहता है।

यह सत्संकल्प हमें आह्वान करता है कि जैसे हम दैनिक निर्णयों में विवेक का प्रयोग करते हैं, वैसे ही जीवन के गम्भीर निर्णयों में भी साहसपूर्वक उसे लागू करें। विवेक का जागरण ही सच्ची शिक्षा और मानवता का प्रतीक है।

यदि कुछ विवेकशील लोग संगठित होकर इन कुरीतियों का प्रतिकार करें, तो ये कागज़ के रावण की तरह भरभराकर गिर सकती हैं। यह विवेकशीलता ही विचार-क्रांति का मूल है, जिससे एक नए, नैतिक और समतामूलक समाज की रचना सम्भव है। यह मानवता के लिए एक उज्ज्वल भविष्य की नींव है।

## ६.४.१५.सज्जनों को संगठित करने, अनीति से लोहा लेने और नवसृजन की गतिविधियों में पूरी रुचि लेंगे।

यह सत्संकल्प मानवता की रक्षा, उन्नति और आदर्श समाज की स्थापना हेतु सक्रिय नागरिक सहभागिता का घोष है। जब समाज में नैतिक पतन, भ्रष्टाचार, असत्य, कुरीतियाँ और अनीतियाँ व्याप्त हो जाती हैं, तब केवल व्यक्तिगत सुधार पर्याप्त नहीं होता—सामूहिक सज्जन शक्ति का जागरण और संगठन भी अनिवार्य होता है। यह सत्संकल्प उसी संगठनात्मक पुरुषार्थ की ओर संकेत करता है, जहाँ सज्जन शक्तियाँ केवल उपदेश नहीं देतीं, अपितु अन्याय और अनाचार के विरुद्ध मोर्चा भी खोलती हैं।

मानवता की रक्षा हेतु यह आवश्यक है कि सज्जनों को संगठित किया जाए, क्योंकि बिखरी हुई सज्जनता प्रभावहीन हो जाती है। संगठित सज्जन शक्ति ही अनीति, असामाजिकता और अमानवीयता से संघर्ष कर सकती है। विवाहोन्माद, मृतक भोज, नारी अपमान, जातिवादी अहंकार, भ्रष्टाचार, ढोंग और पाखंड जैसी कुप्रथाएँ समाज को भीतर से खोखला कर रही हैं। इनका उन्मूलन केवल कानून से नहीं, वरन् जागरूक नागरिकों की नैतिक शक्ति और संगठित जनमत से ही सम्भव है।

यह सत्संकल्प मानवता की उस चेतना का आह्वान है जो न केवल आत्मनिर्माण की साधना करती है, बल्कि समाज में सकारात्मक परिवर्तन के लिए जोखिम उठाने को भी तत्पर रहती है। यह संघर्ष अहिंसक, सांस्कृतिक और नैतिक होगा—जिसका उद्देश्य केवल विरोध नहीं, वरन् नवसृजन है। यही नवसृजन मानवता को नई दिशा देगा, जहाँ भय, शोषण और पतन के स्थान पर विश्वास, सहयोग और आदर्श स्थापित होंगे।

इस प्रकार, यह सत्संकल्प समग्र मानवता के कल्याण के लिए एक सजग, संगठित और सक्रिय संघर्ष की प्रेरणा देता है, जो "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना को चरितार्थ करने की ओर अग्रसर है।

## ६.४.१६. राष्ट्रीय एकता एवं समता के प्रति निष्ठावान् रहेंगे। जाति, लिंग, भाषा, प्रांत, सम्प्रदाय आदि के कारण परस्पर कोई भेदभाव न बरतेंगे।

युग निर्माण सत्संकल्प का यह बिंदु समता, सहिष्णुता और एकता के माध्यम से मानवता को जोड़ने का संकल्प है। आज का विश्व जाति, धर्म, भाषा, क्षेत्र और लिंग जैसे कृत्रिम विभाजनों से ग्रस्त है, जिससे सामाजिक ताने-बाने में विघटन उत्पन्न हुआ है। इस संकल्प के माध्यम से आचार्य श्रीराम शर्मा हमें यह बोध कराते हैं कि सच्ची मानवता का आधार है—समानता का व्यवहार और एकत्व की चेतना।

मानवता की दृष्टि से यह संकल्प एक सार्वभौमिक मूल्य को स्थापित करता है, जो वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को साकार करता है। भिन्नताएँ प्रकृति की सौंदर्याभिव्यक्ति हैं, न कि श्रेष्ठता या हीनता का आधार। जब व्यक्ति जाति, भाषा या धर्म के आधार पर भेदभाव करता है, तो वह मानव मात्र की एकता को नकारता है। इस सत्संकल्प का मर्म यही है कि हम सब एक ही चेतना के अंश हैं—*आत्मवत् सर्वभूतेषु।*

इतिहास साक्षी है कि विभाजन की भावना ने समाजों को दुर्बल किया है। चाहे तैमूर का आक्रमण हो या आधुनिक सांप्रदायिक संघर्ष, विभेद की प्रवृत्ति सदैव विनाशकारी रही है। इसके विपरीत, जब समाज में समता की भावना प्रबल होती है, तब विकास, शांति और सहयोग के द्वार खुलते हैं।

यह सत्संकल्प केवल भारत की सीमा तक सीमित नहीं, बल्कि एक वैश्विक नैतिक आह्वान है। यह मानव मात्र को जोड़ने की पुकार है—जातीय, धार्मिक और भाषिक विविधता में एकता का उत्सव। यही सच्चे अर्थों में युग धर्म है, और यही इक्कीसवीं सदी के नवयुग का आधार।

## ६.४.१७. मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है — इस विश्वास के आधार पर हमारी मान्यता है कि हम उत्कृष्ट बनेंगे और दूसरों को श्रेष्ठ बनाएँगे, तो युग अवश्य बदलेगा।

"मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है," यह मूल सत्संकल्प मानव गरिमा, आत्मबल और आत्मनिर्भरता की उद्घोषणा है। यह विश्वास न केवल आत्म-प्रेरणा का स्रोत है, बल्कि सम्पूर्ण मानवता को आत्मोत्थान की राह दिखाने वाला मार्गदर्शक सिद्धांत भी है। मानव समाज में व्याप्त विषमता, दुर्दशा और अवसाद के मूल में भाग्यवाद की निष्क्रिय मानसिकता गहराई तक जमी हुई है, जो व्यक्ति को परिस्थितियों का दास बना देती है। किन्तु यह सत्संकल्प मानव को चेताता है कि परिस्थितियाँ चाहे जैसी भी हों, यदि आत्मबल जागृत हो जाए, तो वही व्यक्ति परिस्थिति-परिवर्तक बन सकता है।

यह सत्संकल्प एक अत्यन्त व्यावहारिक दर्शन प्रस्तुत करता है—जो यह मानता है कि अपवादस्वरूप घटनाओं को छोड़ दिया जाए, तो सामान्यतः हमारा भविष्य हमारे आज के कर्मों का ही परिणाम होता है। यह सिद्धांत मानवता को निष्क्रियता की दलदल से निकालकर पुरुषार्थ के पथ पर अग्रसर करता है। आत्म-विकास, सद्विचार, उत्कृष्ट भावनाएँ और मर्यादित आचरण, यही वे नवदुर्गाएँ हैं, जिनकी साधना करके मानव आत्म-निर्माण की प्रक्रिया में प्रवृत्त होता है।

इस सत्संकल्प की विशेषता यह है कि यह केवल व्यक्ति के उत्थान तक सीमित नहीं है, बल्कि समाज को भी प्रभावित करता है। यदि हम स्वयं उत्कृष्ट बनें, तो हमारे संपर्क में आने वाले अन्य लोग भी स्वतः श्रेष्ठ बनने लगते हैं। एक सजग, सशक्त और आदर्श नागरिक जब खड़ा होता है, तो उसके विचार, व्यवहार और कर्म दूसरों के लिए प्रेरणा बन जाते हैं। यही प्रक्रिया युग परिवर्तन की नींव रखती है।

इस दृष्टिकोण से यह सत्संकल्प मानवता के लिए आशा, आत्मनिर्भरता और उज्ज्वल भविष्य का संदेश है। यह युग निर्माण की आधारशिला है, जो दर्शाता है कि यदि हम बदलेंगे, तो युग बदलेगा—और यही मानवता का सच्चा भविष्य है।

## ६.४.१८. "हम बदलेंगे—युग बदलेगा", "हम सुधरेंगे—युग सुधरेगा" इस तत्थ्य पर हमारा परिपूर्ण विश्वास है।

यह सत्संकल्प एक क्रांतिकारी घोषणापत्र है, जिसमें व्यक्तित्व के परिष्कार को युग परिवर्तन का आधार माना गया है। यह विश्वास प्रकट किया गया है कि संसार की नारकीय स्थिति को स्वर्गीय वातावरण में परिवर्तित किया जा सकता है, बशर्ते हम अपने विचार और व्यवहार को बदलने का साहस जुटाएँ। यह सत्संकल्प मानता है कि चिन्तन ही वह मूल आधार है, जिससे व्यक्ति की दिशा, दशा और दशा दोनों निर्धारित होती है। जब तक हम दुर्बुद्धि, स्वार्थ, और कायरता से जकड़े रहेंगे, तब तक कोई भी क्रांतिकारी बदलाव सम्भव नहीं।

मानवता की दृष्टि से यह सत्संकल्प अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि यह समाज को सुधारने की प्रक्रिया को बाह्य नहीं, आत्मिक एवं मानसिक परिवर्तन से जोड़ता है। इसमें कहा गया है कि हम यदि संसार की दिशा बदलना चाहते हैं, तो उसका शुभारम्भ स्वयं से करना होगा। समाज व्यक्ति का विस्तार है, अतः जब व्यक्ति सुधरेगा, तभी समाज और राष्ट्र का निर्माण सम्भव होगा।

यह सत्संकल्प आदर्शवादिता को व्यवहारिक जीवन में उतारने का आह्वान करता है। यह केवल उपदेश देने की बात नहीं करता, बल्कि अपने आचरण से प्रेरणा देने का आग्रह करता है। युग निर्माण के अग्रदूत वही बन सकते हैं जो अपने दुर्बलताओं से लड़ने का साहस करें, अवांछनीय प्रवृत्तियों को त्यागें और विवेक को प्रतिष्ठित करें।

आज की मानवता जिन संकटों से जूझ रही है, उनका समाधान बाह्य संसाधनों से नहीं, अपितु आत्मपरिष्कार से ही सम्भव है। यह सत्संकल्प हमें चेताता है कि यदि हमने आज आदर्श प्रस्तुत नहीं किए, तो आने वाली पीढ़ियाँ दिशा हीनता में भटकती रहेंगी। इसलिए यह आवाहन करता है कि हम अपने जीवन में आदर्शों को उतारकर समाज को आलोकित करें। यही युग परिवर्तन का प्रथम और अनिवार्य चरण है।

**निष्कर्ष:**

युग निर्माण योजना के अठारह सत्संकल्प एक ऐसी नैतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक रूपांतरण की आधारशिला हैं, जो सम्पूर्ण मानवता को आत्मोत्थान की ओर ले जाने का आह्वान करते हैं। ये सत्संकल्प न केवल व्यक्तिगत आचरण को शुद्ध और सशक्त करने का आग्रह करते हैं, बल्कि समाज और राष्ट्र के समग्र उत्थान की दिशा भी निर्धारित करते हैं।

इन सत्संकल्पों में जहाँ आत्म-निरीक्षण, आत्म-संयम और सेवा जैसे गुणों को प्रमुखता दी गई है, वहीं अंधविश्वास, व्यसन, दिखावा, जातीय द्वेष और सामाजिक असमानताओं के विरुद्ध खड़े होने का साहस भी मांगा गया है। "हम बदलेंगे—युग बदलेगा" और "हम सुधरेंगे—युग सुधरेगा" जैसे घोष वाक्य सम्पूर्ण मानवीय चेतना को आत्मनिर्भर, विवेकशील और करुणामयी बनाने के लिए प्रेरित करते हैं।

मानवता की दृष्टि से ये सत्संकल्प एक वैश्विक आध्यात्मिक क्रांति की आवश्यकता पर बल देते हैं, जिसमें व्यक्ति अपनी संकीर्णताओं से ऊपर उठकर सम्पूर्ण समाज के कल्याण के लिए जीवन जिए। जब हर

व्यक्ति अपने विचार, व्यवहार और उद्देश्य को शुद्ध करता है, तभी एक सशक्त, नैतिक और समरस समाज की स्थापना सम्भव होती है।

इसलिए युग निर्माण के ये अठारह सत्संकल्प केवल विचार नहीं, बल्कि मानवता के नव-जागरण की वह प्रक्रिया हैं, जो विश्व को एक नए उज्ज्वल युग की ओर ले जाने की सामर्थ्य रखते हैं।

---

## साक्ष्य स्रोत:

उपरोक्त अध्याय ***"इक्कीसवीं सदी का संविधान - युग निर्माण सत्संकल्प'*** का अध्ययन निम्न साक्ष्य स्रोतों के आधार पर कर तार्किक विश्लेषण किया है।


- *पं.श्रीराम शर्मा आचार्य, इक्कीसवी सदी का संविधान, युग निर्माण विस्तार ट्रस्ट, गायत्री तपोभूमि मथुरा, २०१०, पृष्ठ –संपूर्ण.*
- *ब्रह्मवर्चस, पं. श्रीराम शर्मा आचार्य वाड्.मय-६६: युग निर्माण योजना – दर्शन, स्वरूप व कार्यक्रम, अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा, संशोधित संस्करण २०१२, पृष्ठ २९०-३१२.*
- *युग निर्माण योजना, आओ जाने युगऋषि को, युग निर्माण विस्तार ट्रस्ट, गायत्री तपोभूमि मथुरा, पुनरावृत्ति २०१८, पृ. ८२.*
- *डॉ. प्रणव पण्ड्या, अखण्ड ज्योति (मासिक), अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा, जुलाई २०२५, पृष्ठ ६०-६५.*
- *All World Gayatri Pariwar, Website, [www.awgp.org](http://www.awgp.org), युग निर्माण मिशन का घोषणा-पत्र - इक्कीसवी सदी का संविधान, पृष्ठ संपूर्ण.*

# ६.५. शत सूत्री कार्यक्रम

## पृष्ठभूमि

**युग निर्माण योजना** का उद्देश्य आत्म-निर्माण, परिवार-निर्माण और समाज-निर्माण के माध्यम से स्वस्थ शरीर, स्वच्छ मन और सभ्य समाज की रचना करना है। यह अभियान १९६३ से अखण्ड ज्योति परिवार द्वारा आरंभ किया गया और तेजी से प्रगति कर रहा है।

आज का समाज बाहरी चमक-दमक में उलझा हुआ है, लेकिन आंतरिक रूप से कमजोर और अशांत है। नैतिक मूल्यों का ह्रास, अविश्वास, आर्थिक असमानता, स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ और पारिवारिक विघटन तेजी से बढ़ रहे हैं। इससे उबरने के लिए आत्मिक और नैतिक जागरण आवश्यक है।

**शत-सूत्री कार्यक्रम** का लक्ष्य व्यक्ति, परिवार और समाज में नैतिक, आध्यात्मिक और व्यावहारिक सुधार लाना है। इसके लिए आर्थिक विकास से अधिक नैतिक उत्थान को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। यह योजना व्यक्ति-परिवर्तन के माध्यम से समाज और युग-परिवर्तन की दिशा में कार्य करती है।

अखण्ड ज्योति परिवार के सदस्य इसे एक आध्यात्मिक साधना मानकर अपने जीवन में अपनाते हैं। इसके अंतर्गत लाखो सदस्य सक्रिय रूप से इस अभियान में भाग ले चुके हैं, और यह संख्या निरंतर बढ़ रही है। यह आंदोलन एक सशक्त सामाजिक क्रांति का आधार बनने की क्षमता रखता है। यह योजना आत्म-परिष्कार और समाजोत्थान का मार्ग प्रशस्त करती है, जिससे व्यक्ति और समाज दोनों का उत्थान सुनिश्चित हो सकता है।

## ६.५.१. स्वास्थ्य सुरक्षा के लिए आहार-विहार की सुव्यवस्था (१ से १० सूत्र):

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा प्रतिपादित **शतसूत्री कार्यक्रम** का १ से १० सूत्रों वाला प्रथम भाग **स्वास्थ्य सुरक्षा के लिए आहार-विहार की सुव्यवस्था** पर केंद्रित है। इसमें मानव जीवन की शारीरिक और मानसिक शुद्धि को सर्वोपरि मानते हुए ऐसे आहार-विहार की व्यवस्था बताई गई है, जो न केवल व्यक्ति के स्वास्थ्य को उत्तम बनाए बल्कि समाज के समग्र उत्थान में भी सहायक हो। आचार्यजी का मानना था कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन और आत्मा का वास होता है, और इसी आधार पर उन्होंने स्वास्थ्य रक्षा के लिए दस सूत्र निर्धारित किए।

### (१) दो बार का भोजन:

उन्होंने दिन में केवल दो बार भोजन करने की सलाह दी, जिससे पाचन तंत्र पर अनावश्यक भार न पड़े और शरीर प्राकृतिक लय के साथ कार्य कर सके। बार-बार खाने की प्रवृत्ति को त्यागकर आत्मसंयम को प्राथमिकता देने का आग्रह किया गया है। यह न केवल शारीरिक स्वास्थ्य बल्कि मानसिक दृढ़ता को भी सुदृढ़ करता है।

### (२) भोजन को ठिक तरह से चबाया जाय:

भोजन को ठीक प्रकार से चबाने पर विशेष बल दिया गया है, जिससे भोजन का पाचन सुगमता से हो सके और अपच संबंधी रोग न उत्पन्न हों। यह मात्र एक स्वास्थ्य संबंधी निर्देश नहीं, बल्कि अनुशासन का भी प्रतीक है, जिससे व्यक्ति में संयम और धैर्य की भावना विकसित होती है।

### (३) भोजन अधिक मात्रा में न हो:

आचार्यजी ने अति भोजन को स्वास्थ्य के लिए अहितकारी माना और "आधा पेट भोजन, एक चौथाई जल और एक चौथाई साँस के लिए खाली रखने" की नीति अपनाने को कहा। यह न केवल एक वैज्ञानिक तथ्य है बल्कि भारतीय योग परंपरा का भी मूल तत्व है, जो शरीर और मन दोनों की शुद्धि के लिए आवश्यक है।

### (४) स्वाद की आदत छोड़ी जाय:

मानव को स्वाद की आदत से मुक्त होने के लिए प्रेरित किया गया, क्योंकि अचार, मुरब्बे, मसालेदार भोजन, अधिक मीठा और तली-भुनी चीज़ें शरीर को रोगग्रस्त बनाती हैं। उनके अनुसार, भोजन का उद्देश्य केवल स्वाद की तृप्ति नहीं बल्कि शरीर के पोषण और जीवनशक्ति का संवर्धन होना चाहिए। यह विचार व्यक्ति को इंद्रिय संयम और आत्मनिर्भरता की ओर ले जाता है।

### (५) शाक और फलो का अधिक प्रयोग:

शाकाहार को प्राथमिकता देते हुए आचार्यजी ने पौष्टिक आहार को अपनाने पर जोर दिया। फल, सब्ज़ियाँ, अंकुरित अनाज और दूध आदि को भोजन में सम्मिलित करने से व्यक्ति न केवल स्वस्थ रहता है बल्कि प्रकृति और अन्य जीवों के प्रति करुणा एवं संवेदना का भाव भी विकसित करता है। यह मानवीय मूल्यों का संवर्धन करने वाली जीवनशैली है।

### (६) हानिकारक पदार्थों से दूर रहें:

मांसाहार, नशा, तंबाकू और अन्य व्यसनों को स्वास्थ्य एवं समाज के लिए हानिकारक मानते हुए आचार्यजी ने इनके परित्याग पर विशेष बल दिया। उनका मत था कि ये बुरी आदतें न केवल शारीरिक विकार उत्पन्न करती हैं बल्कि मानसिक दुर्बलता और नैतिक पतन का भी कारण बनती हैं। अतः समाज में शुद्धता और सात्त्विकता बनाए रखने हेतु इनसे बचना आवश्यक है।

### (७) भाप से पकाये भोजन के लाभ:

खाद्य पदार्थों को भाप से पकाने की विधि को अपनाने की बात कही गई, जिससे उनके पोषक तत्व नष्ट न हों। आचार्यजी के अनुसार, आधुनिक प्रक्रियाओं से आटा पिसवाने और भोजन पकाने से उसमें जीवन-शक्ति समाप्त हो जाती है, जिससे अनेक रोग उत्पन्न होते हैं। उन्होंने हाथ की चक्की और पारंपरिक पद्धतियों के उपयोग को स्वास्थ्यवर्धक माना।

### (८) स्वच्छता:

व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक स्तर पर स्वच्छता को सर्वोपरि बताया गया। शरीर, वस्त्र, घर, भोजन, जल और निवास स्थान की स्वच्छता पर विशेष बल देते हुए उन्होंने इसे केवल स्वास्थ्य से जोड़कर नहीं देखा, बल्कि इसे नैतिकता, आत्मसंयम और सामाजिक उत्तरदायित्व से भी जोड़ा। स्वच्छता का यह संदेश समाज के सामूहिक कल्याण की भावना को विकसित करता है।

### (९) खुली हवा में रहिए:

खुली हवा, प्रातः भ्रमण, व्यायाम और मालिश को दैनिक जीवन का अभिन्न अंग बनाने की प्रेरणा दी गई। प्रातः जल्दी उठने और सूर्य की ऊर्जा ग्रहण करने से शरीर एवं मन की स्फूर्ति बनी रहती है। उन्होंने न

केवल स्वास्थ्य की दृष्टि से बल्कि मानसिक एकाग्रता और आध्यात्मिक उन्नति के लिए भी इस अभ्यास को महत्वपूर्ण बताया।

### (१०) ब्रह्मचर्य का पालन:

ब्रह्मचर्य को न केवल संयम और आत्मनियंत्रण का प्रतीक माना, बल्कि इसे मानसिक दृढ़ता और शारीरिक सशक्तिकरण का आधार भी बताया। विशेष रूप से छात्रों और बुद्धिजीवियों के लिए इसे अनिवार्य मानते हुए आचार्यजी ने इसे जीवन शक्ति के संरक्षण का सर्वश्रेष्ठ उपाय बताया।

### मानवीय दृष्टिकोण से निष्कर्ष:

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा प्रतिपादित **आहार-विहार की सुव्यवस्था** केवल स्वास्थ्य संबंधी निर्देश नहीं हैं, बल्कि यह मानवीय संवेदनाओं, नैतिकता, आत्मसंयम और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को विकसित करने वाला एक समग्र जीवन-दर्शन है। यह न केवल व्यक्ति के शारीरिक स्वास्थ्य को उन्नत करता है, बल्कि मानसिक शुद्धि, भावनात्मक स्थिरता और आध्यात्मिक चेतना को भी जागृत करता है।

इन दस सूत्रों में न केवल स्वास्थ्य रक्षा का विज्ञान समाहित है, बल्कि यह समाज सुधार, आत्मनियंत्रण और आध्यात्मिक उन्नति की दिशा में भी एक सशक्त कदम है। यदि इन सिद्धांतों को अपनाया जाए, तो यह निश्चित रूप से व्यक्ति, परिवार और समाज के समग्र कल्याण का आधार बन सकता है।

## ६.५.२. स्वास्थ्य संवर्धन के सामूहिक प्रयास (११ से २० सूत्र):

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा प्रतिपादित स्वास्थ्य संवर्धन के ११ से २० सूत्र न केवल शारीरिक स्वास्थ्य को सुधारने की दिशा में मार्गदर्शक हैं, बल्कि मानवीय चेतना, सामाजिक सुधार और आध्यात्मिक उन्नति के भी अभिन्न अंग हैं। इनका व्यापक विश्लेषण करते समय यह स्पष्ट होता है कि आचार्य जी ने व्यक्ति, समाज और प्रकृति के बीच सम्यक संतुलन स्थापित करने का प्रयास किया है।

### (११) वनस्पतियों का उत्पादन:

आचार्य जी का यह सुझाव केवल खाद्य उत्पादन तक सीमित नहीं है, बल्कि प्रकृति के साथ सामंजस्य बैठाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह न केवल पोषण और स्वास्थ्य सुधार में सहायक है, बल्कि श्रमशीलता, आत्मनिर्भरता और पर्यावरण संरक्षण की भावना को भी विकसित करता है। वनस्पतियों की उपस्थिति मानसिक शांति प्रदान करती है और जैव विविधता को संरक्षित रखने में योगदान देती है।

### (१२) पकाने की पद्धति में सुधार:

भाप से भोजन पकाने की विधि अपनाने और हाथ से पिसे आटे का उपयोग करने से भोजन की पौष्टिकता बनी रहती है। यह उपाय केवल शारीरिक स्वास्थ्य के लिए ही नहीं, बल्कि मानसिक और आध्यात्मिक उन्नति के लिए भी आवश्यक हैं। आचार्य जी ने इसे एक आंदोलन का रूप देने का सुझाव दिया, जिससे यह व्यक्तिगत परिवर्तन के साथ-साथ सामाजिक चेतना का भी अंग बन सके।

### (१३) सात्विक आहार की पाक विद्या:

सात्विक भोजन का प्रचलन करना केवल स्वास्थ्य सुधार का माध्यम नहीं, बल्कि मानसिक और आध्यात्मिक शुद्धता का भी आधार है। इस संदर्भ में आचार्य जी ने तली-भुनी चीजों के स्थान पर स्वास्थ्यवर्धक और प्राकृतिक व्यंजनों को बढ़ावा देने की बात कही है। यह विचार न केवल रोगों से बचाव करता है, बल्कि जीवनशैली को सरल और संतुलित बनाता है।

### (१४) गंदगी का निराकरण:

स्वास्थ्य केवल पोषण और व्यायाम तक सीमित नहीं, बल्कि स्वच्छता और शुद्ध वातावरण से भी जुड़ा हुआ है। आचार्य जी ने सार्वजनिक सफाई को व्यक्तिगत उत्तरदायित्व बताया और इसे सामूहिक प्रयासों से लागू करने की बात कही। उनके विचार महात्मा गांधी के 'स्वच्छता ही सेवा' के सिद्धांत से मेल खाते हैं और समाज में नैतिक जागरूकता को बढ़ावा देते हैं।

### (१५) नशे का त्याग:

आचार्य जी ने नशे को केवल शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए ही नहीं, बल्कि सामाजिक पतन का भी कारण माना है। नशे से मुक्त समाज आत्मनिर्भर, जागरूक और सकारात्मक ऊर्जा से परिपूर्ण होता है। इस दिशा में धार्मिक और सामाजिक आंदोलनों को जोड़कर उन्होंने इसे एक व्यापक जन-जागृति अभियान बनाने की आवश्यकता पर बल दिया।

### (१६) व्यायाम और उसका प्रशिक्षण:

व्यायाम को केवल शारीरिक बल प्राप्त करने का माध्यम नहीं, बल्कि एक समग्र चिकित्सा शास्त्र के रूप में प्रस्तुत किया गया है। योग, प्राणायाम, सूर्य नमस्कार जैसे उपायों से व्यक्ति न केवल शारीरिक रूप से स्वस्थ रहता है, बल्कि मानसिक शांति और आध्यात्मिक उन्नति भी प्राप्त करता है। आचार्य जी ने इसे जीवनशैली का अभिन्न अंग बनाने का सुझाव दिया, जिससे एक सक्रिय, अनुशासित और साहसी समाज का निर्माण हो सके।

### (१७)साप्ताहिक उपवास:

उपवास का वैज्ञानिक और आध्यात्मिक लाभ दोनों ही हैं। यह शरीर को विश्राम देने के साथ-साथ मानसिक और आत्मिक शुद्धि का भी मार्ग प्रशस्त करता है। आचार्य जी का यह सुझाव मानवता की उस भावना को बल देता है, जिसमें आत्मसंयम, त्याग और संतुलित जीवनशैली को महत्व दिया जाता है।

### (१८) बड़ी दावतें और जूठन:

आचार्य जी ने अन्न की बर्बादी को न केवल आर्थिक हानि, बल्कि नैतिक पतन के रूप में देखा। अन्न का सम्मान करना, संतुलित मात्रा में भोजन ग्रहण करना और जूठन न छोड़ने की प्रवृत्ति विकसित करना मानवीय मूल्यों को पोषित करता है। इस सिद्धांत को अपनाकर समाज में संतुलित खाद्य वितरण और भूखमरी की समस्या को कम किया जा सकता है।

### (१९) संतान की सीमा मर्यादा:

आचार्य जी ने परिवार नियोजन को केवल आर्थिक दृष्टि से नहीं, बल्कि संतान के संपूर्ण विकास और माता-पिता के उत्तरदायित्व के रूप में देखा। सीमित संतान नीति अपनाने से परिवार और समाज की संपूर्ण प्रगति सुनिश्चित की जा सकती है।

### (२०) प्राकृतिक चिकित्सा की जानकारी:

प्राकृतिक चिकित्सा केवल रोगों के पंच तत्वों सें निवारण का साधन नहीं, बल्कि एक समग्र जीवनशैली का अंग है। आचार्य जी ने इसे आत्मनिर्भरता से जोड़ा, जिससे व्यक्ति अपनी चिकित्सा स्वयं कर सके और बाहरी दवाओं पर निर्भर न रहे। यह विचार प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करने और सरल जीवनशैली अपनाने की प्रेरणा देता है।

**निष्कर्ष**

स्वास्थ्य संवर्धन के इन ११ से २० सूत्रों में केवल शारीरिक स्वास्थ्य की चिंता नहीं, बल्कि समग्र मानवीय चेतना के विकास का संदेश समाहित है। आचार्य श्रीराम शर्मा ने व्यक्ति, समाज और प्रकृति के बीच संतुलन स्थापित करने के लिए इन उपायों को आंदोलन का रूप देने की बात कही। इनके माध्यम से एक ऐसा समाज निर्मित किया जा सकता है, जो न केवल रोगमुक्त और सशक्त हो, बल्कि मानसिक और आध्यात्मिक दृष्टि से भी उन्नत हो।

## ६.५.३. अशिक्षा का अंधकार दूर किया जाए (२१ से ३० सूत्र)

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का जीवन और उनका युग निर्माण अभियान मानवीय मूल्यों को पुनः स्थापित करने का प्रयास था। उनके द्वारा प्रतिपादित २१ से ३० सूत्र न केवल समाज में साक्षरता को बढ़ावा देने के उपाय हैं, बल्कि वे एक ऐसे समाज की रचना का मार्ग भी दिखाते हैं जो समरस, समान और प्रबुद्ध हो। मानवता के उत्थान के लिए शिक्षा को आधारभूत अधिकार मानते हुए उन्होंने इसे सामाजिक उत्थान का अनिवार्य घटक माना। उनके अनुसार, शिक्षा केवल अक्षरज्ञान तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि वह नैतिकता, सदाचार और समाज कल्याण की दिशा में भी अग्रसर हो।

### (२१) बच्चों को स्कुल भिजवाया जाय:

बच्चों को विद्यालय भेजने की प्रेरणा देना केवल शिक्षा का प्रचार-प्रसार नहीं है, बल्कि यह समाज में जागरूकता और भविष्य निर्माण का कार्य भी है। जब हर बच्चा शिक्षा प्राप्त करेगा, तो समाज में समता, विकास और ज्ञान का संचार होगा। यह प्रयास मानवता के विकास का मूल आधार है।

### (२२) शिक्षितों की पत्नी अशिक्षित न रहे:

महिलाओं को शिक्षित करने से संपूर्ण परिवार शिक्षित होता है। आचार्यश्री का यह सूत्र केवल साक्षरता अभियान नहीं, बल्कि समाज में महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने का एक आंदोलन है। जब महिलाएँ शिक्षित होती हैं, तो वे अपने अधिकारों को पहचानती हैं और सामाजिक परिवर्तन की वाहक बनती हैं।

### (२३) प्रौढ़ पाठशालाओं का आयोजन:

जो व्यक्ति किसी कारणवश शिक्षा से वंचित रह गए, उनके लिए वयस्क शिक्षा का प्रबंध किया जाना चाहिए। यह सूत्र मानवता के व्यापक दृष्टिकोण को दर्शाता है, जहाँ हर व्यक्ति को सीखने और आगे बढ़ने का अवसर मिलना चाहिए, चाहे उसकी आयु कुछ भी हो।

### (२४) प्रौढ़ महिलाओं की शिक्षा व्यवस्था:

आर्थिक अभाव के कारण कोई भी शिक्षा से वंचित न रहे, यह सुनिश्चित करना समाज का कर्तव्य है। आचार्यश्री का यह सूत्र समानता और समरसता की भावना को बढ़ावा देता है, जिससे शिक्षा केवल धनवानों की संपत्ति न रहकर सभी के लिए उपलब्ध हो।

### (२५) शिक्षा के साथ दीक्षा भी:

शिक्षा का उद्देश्य केवल साक्षरता तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि उसे नैतिकता और जीवन मूल्यों से जोड़ना चाहिए। सही शिक्षा वह होती है, जो चरित्र निर्माण में सहायक हो और समाज में सद्भावना, सहयोग और सेवा की भावना विकसित करे।

### (२६) नये स्कूलों की स्थापना:

शिक्षा के प्रचार के लिए अधिक से अधिक विद्यालयों की स्थापना आवश्यक है। इससे दूरदराज के क्षेत्रों में भी शिक्षा की रोशनी पहुँच सकेगी। यह सूत्र केवल भौतिक संसाधनों की वृद्धि नहीं, बल्कि ज्ञान के विस्तार और सामाजिक उत्थान का मार्ग है।

### (२७) रात्रि पाठशाला चलाई जाएँ:

जो लोग दिन में कार्य करते हैं और पढ़ाई नहीं कर सकते, उनके लिए रात्रि पाठशालाएँ एक वरदान हैं। यह योजना मानवता के प्रति आचार्यश्री के गहरे सरोकार को दर्शाती है, जिससे श्रमिक वर्ग भी शिक्षा प्राप्त कर सके और अपने जीवन स्तर को सुधार सके।

### (२८) शिक्षित ज्ञान-ऋण चुकाएँ:

शिक्षा सबसे बड़ा दान है। जो भी शिक्षित हैं, उन्हें अपना ज्ञान दूसरों को देना चाहिए। यह सूत्र समाज में शिक्षकों की भूमिका को महत्वपूर्ण बनाता है और हर व्यक्ति को ज्ञानवर्धन का माध्यम बनने की प्रेरणा देता है।

### (२९) पुस्तकालय और वाचनालय:

ज्ञान का प्रचार-प्रसार पुस्तकालयों और वाचनालयों के माध्यम से किया जा सकता है। पुस्तकालय और वाचनालय केवल किताबों का भंडार नहीं होते, बल्कि वे समाज में बौद्धिक जागरूकता और अध्ययनशीलता की संस्कृति को विकसित करने का कार्य करते हैं।

### (३०) अध्ययन की रुचि जगाएँ:

अध्ययनशील समाज ही प्रगति कर सकता है। जब व्यक्ति नियमित रूप से ज्ञान प्राप्त करेगा, तो वह अपने विचारों में परिष्कार कर सकेगा और समाज में सकारात्मक परिवर्तन ला सकेगा। यह सूत्र आत्मविकास और समाज सुधार की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

### निष्कर्ष

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा प्रतिपादित २१ से ३० सूत्र केवल शिक्षा सुधार के उपाय नहीं हैं, बल्कि वे एक समरस, विकसित और सशक्त समाज की नींव रखने वाले सिद्धांत हैं। उनका यह शतसूत्री कार्यक्रम केवल शिक्षा के प्रचार-प्रसार तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज में मानवीय मूल्यों की स्थापना करने का भी एक प्रयास है। शिक्षा को जीवन का आधार बनाकर उन्होंने एक ऐसे समाज की कल्पना की, जहाँ सभी को समान अवसर मिलें, जहाँ ज्ञान केवल सूचनाओं तक सीमित न रहे, बल्कि वह व्यक्तित्व और समाज निर्माण का सशक्त साधन बने।

## ६.५.४. जनमानस को धर्म दीक्षित करने की योजना (३१ से ४० सूत्र)

धर्म केवल पूजा-पाठ और परंपराओं तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मानवता को एक सकारात्मक दिशा देने का एक सशक्त साधन भी है। प्रस्तुत ३१ से ४० सूत्रों में धर्म को मानव जीवन में किस प्रकार समाहित किया जाए, इस पर व्यापक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है। ये सूत्र केवल धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित न होकर नैतिकता, सद्भाव और सामाजिक कल्याण के व्यापक उद्देश्य को भी साधते हैं।

## (३१) आस्तिकता की आस्था:

आस्तिकता का अर्थ केवल ईश्वर में विश्वास करना नहीं, बल्कि एक नैतिक अनुशासन और आचरण की पवित्रता भी है। जब व्यक्ति यह स्वीकार करता है कि परमात्मा न्यायकारी है, तो वह अपने कार्यों में पारदर्शिता और ईमानदारी को बनाए रखता है। यह आस्था समाज में नैतिकता, ईमानदारी और आपसी विश्वास को बढ़ावा देती है, जिससे मानवता को अधिक सुरक्षित और संतुलित वातावरण प्राप्त होता है।

## (३२) स्वाध्याय की साधना:

स्वाध्याय अर्थात उत्तम साहित्य का अध्ययन, व्यक्ति को आत्मबोध और नैतिक उन्नयन की ओर प्रेरित करता है। सत्साहित्य का निरंतर अध्ययन कुविचारों को समाप्त कर सकारात्मक सोच को जन्म देता है, जिससे व्यक्ति में सेवा और परोपकार की भावना विकसित होती है। यह समाज में शांति, प्रेम और सद्भाव को बढ़ावा देने का महत्वपूर्ण साधन है।

## (३३) संस्कारित जीवन:

संस्कारों का उद्देश्य केवल धार्मिक कर्मकांड नहीं, बल्कि जीवन को नैतिक और प्रेरणास्पद बनाना है। जब व्यक्ति इन संस्कारों के वास्तविक अर्थ को समझता है, तो वह आत्मसंयम, सेवा और कर्तव्यपरायणता के मार्ग पर अग्रसर होता है। संस्कारों की पुनर्स्थापना समाज में नैतिक मूल्यों को पुनर्जीवित करने का सशक्त माध्यम हो सकती है।

## (३४) पर्व और त्योहार का संदेश:

त्योहार केवल आनंद और उल्लास का ही नहीं, बल्कि समाज को एकता, प्रेम और सहयोग का संदेश देने का अवसर भी होते हैं। यदि इन उत्सवों को सही ढंग से मनाया जाए, तो समाज में सामाजिक समरसता, सौहार्द और नैतिक जागरूकता बढ़ाई जा सकती है। धार्मिक पर्वों के माध्यम से सामूहिक उत्थान और मानवीय मूल्यों को बढ़ावा देना आवश्यक है।

## (३५) जन्मदिन समारोह:

जन्मदिन केवल उत्सव नहीं, बल्कि आत्मनिरीक्षण और नए संकल्पों का अवसर होना चाहिए। यदि जन्मदिन पर व्यक्ति अपने जीवन को और अधिक नैतिक, सेवाभावी और समाजोपयोगी बनाने का संकल्प ले, तो यह व्यक्तिगत और सामाजिक स्तर पर एक महत्वपूर्ण परिवर्तन ला सकता है। यह परंपरा व्यक्ति को आध्यात्मिक रूप से उन्नत करने के साथ-साथ समाज के प्रति उसकी जिम्मेदारी को भी स्पष्ट करती है।

## (३६) व्रतशीलता की धर्म धारणा:

व्रत केवल उपवास नहीं, बल्कि आत्मसंयम, अनुशासन और जीवनशैली को मर्यादित करने की एक प्रणाली है। भोजन, समय प्रबंधन, स्वाध्याय, व्यायाम आदि में संयम का पालन करने से व्यक्ति आत्मनिर्भर, अनुशासित और कर्तव्यनिष्ठ बनता है। यह एक स्वस्थ और सकारात्मक समाज की नींव रखने में सहायक होता है।

## (३७) मंदिरों को प्रेरणा केंद्र बनाया जाए:

मंदिरों को केवल पूजा स्थल न मानकर सामाजिक सुधार और शिक्षा के केंद्र के रूप में विकसित किया जाए। यदि मंदिरों में नैतिक शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएँ, संस्कार प्रशिक्षण और स्वावलंबन की योजनाएँ चलाई जाएँ, तो यह समाज में जागरूकता और सुधार का महत्वपूर्ण साधन बन सकते हैं।

### (३८) युग निर्माण के ज्ञान मंदिर:

ज्ञान मंदिर समाज में बौद्धिक और नैतिक क्रांति लाने का एक माध्यम हो सकते हैं। यदि प्रत्येक स्थान पर ऐसे केंद्र स्थापित किए जाएँ, जहाँ सत्साहित्य का अध्ययन, धार्मिक प्रवचन, आत्मचिंतन और सेवा कार्यों की योजना बनाई जाए, तो समाज में सकारात्मक परिवर्तन संभव होगा।

### (३९) साधु-ब्राह्मण भी कर्तव्य पालें:

धर्मगुरुओं, पुजारियों और संत-महात्माओं का कर्तव्य केवल धार्मिक अनुष्ठान करना नहीं, बल्कि समाज को नैतिक दिशा देना भी है। यदि ये धार्मिक व्यक्ति जनसेवा, नैतिक शिक्षा और समाज सुधार में अपनी भूमिका निभाएँ, तो समाज में अंधविश्वास, रूढ़िवादिता और अन्य सामाजिक बुराइयों को समाप्त किया जा सकता है।

### (४०) वानप्रस्थ का पुनर्जीवन:

वानप्रस्थ जीवन की अवधारणा, जिसमें व्यक्ति अपने उत्तरदायित्वों से मुक्त होकर समाजसेवा में संलग्न होता है, अत्यंत आवश्यक है। यदि वृद्धजन समाज के कल्याण में अपनी भूमिका निभाएँ, तो उनका अनुभव और मार्गदर्शन युवा पीढ़ी को नैतिक और सामाजिक रूप से सुदृढ़ बना सकता है। यह न केवल समाज के उत्थान में सहायक होगा, बल्कि वृद्धजनों को भी जीवन में संतोष और सार्थकता की अनुभूति कराएगा।

### निष्कर्ष:

धर्म दीक्षा का अर्थ केवल धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि यह मानवता के कल्याण का एक व्यापक प्रयास होना चाहिए। उपरोक्त सूत्रों में नैतिकता, आत्मसंयम, शिक्षा, सेवा और सामाजिक समरसता की जो दिशा बताई गई है, वह मानव समाज को और अधिक उन्नत और सशक्त बना सकती है। यदि इन सूत्रों का सही तरीके से पालन किया जाए, तो समाज में नैतिक और आध्यात्मिक जागृति लाकर एक सशक्त और समरस समाज का निर्माण किया जा सकता है।

## ६.५.५. सभ्य समाज की स्वस्थ रचना (४१ से ५० सूत्र)

### (४१) सम्मिलित कुटुम्ब प्रथा:

सम्मिलित कुटुम्ब प्रथा भारतीय समाज की आधारशिला रही है, जो आत्मीयता, परस्पर सहयोग और सहिष्णुता को बढ़ावा देती है। मानवता की दृष्टि से यह व्यवस्था स्वार्थ से परे जाकर परमार्थ की ओर प्रेरित करती है। इसमें परिवार के सभी सदस्यों को समान रूप से सम्मान और प्रेम मिलता है, जिससे समाज में एकता और समरसता बनी रहती है।

### (४२) पारिवारिक विचार गोष्ठी:

पारिवारिक विचार गोष्ठी सामाजिक चेतना और नैतिक मूल्यों के संवर्धन का प्रभावी माध्यम है। इस परंपरा से परिवार में नैतिकता, संस्कार और सत्संग की महत्ता बनी रहती है, जिससे मानवता का विकास होता है। इससे प्रत्येक सदस्य में ज्ञानार्जन, आत्मविश्लेषण और विवेकशीलता विकसित होती है, जो समाज में परोपकार और सेवा की भावना को जागृत करती है।

### (४३) सत्प्रवृत्ति का अभ्यास:

सत्प्रवृत्ति का अभ्यास समाज को सकारात्मक दिशा देने का कार्य करता है। इसमें परिश्रम, मितव्ययिता, स्वावलंबन, सहयोग और शिष्टाचार जैसी प्रवृत्तियों को विकसित करने पर बल दिया गया है। मानवता के उत्थान के लिए यह आवश्यक है कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति में सहयोग की भावना हो और वे जीवन को अनुशासनपूर्वक जीने का प्रयास करें।

### (४४) संतान और उसकी जिम्मेदारी:

संतान को संस्कारवान बनाना केवल पारिवारिक ही नहीं, अपितु सामाजिक और राष्ट्रीय उत्तरदायित्व भी है। मानवता की दृष्टि से यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि नई पीढ़ी को उत्तम संस्कार और नैतिकता प्राप्त हो। माता-पिता को चाहिए कि वे अपने आचरण और व्यवहार से बच्चों को सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा दें, ताकि समाज में सद्भाव और सुसंस्कृति का विकास हो।

### (४५) सत्कार्यों का अभिनंदन:

मानवता को विकसित करने के लिए यह आवश्यक है कि समाज में अच्छे कार्यों को मान्यता और प्रोत्साहन मिले। यदि समाज में दानशील, त्यागी, परोपकारी और विद्वान लोगों का सम्मान किया जाए, तो इससे अन्य लोग भी अच्छे कार्य करने के लिए प्रेरित होंगे। इससे समाज में नैतिक मूल्यों का उत्थान होगा और सत्कर्मों की परंपरा को बल मिलेगा।

### (४६) सज्जनता का सहयोग:

सज्जनता का सहयोग मानवता के उत्थान का महत्वपूर्ण तत्व है। जब समाज में सज्जनों को सहयोग मिलेगा और दुष्ट प्रवृत्तियों का विरोध किया जाएगा, तब समाज में सदाचार की वृद्धि होगी। यह नीति मानवता को सुरक्षित और सशक्त बनाने में सहायक होती है।

### (४७) नैतिक कर्तव्यों का पालन:

नैतिकता और नागरिक कर्तव्यों का पालन एक सभ्य समाज की नींव होती है। यदि प्रत्येक व्यक्ति ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, संयम और परोपकार की भावना अपनाए, तो समाज में अन्याय, अपराध और भ्रष्टाचार समाप्त हो सकते हैं। मानवता की दृष्टि से यह समाज को सुव्यवस्थित और आत्मनिर्भर बनाने का प्रभावी साधन है।

### (४८) सहयोग और सामूहिकता:

सामूहिकता और सहयोग मानवता के संवर्धन के लिए अत्यंत आवश्यक है। यदि लोग मिल-जुलकर कार्य करें और परस्पर सहयोग की भावना विकसित करें, तो समाज में आर्थिक और सामाजिक प्रगति तीव्र गति से संभव होगी। सहयोग समितियों और सामूहिक प्रयासों से समाज में एकजुटता बनी रहती है और परस्पर प्रेम बढ़ता है।

### (४९) कंजूसी और विलासिता छूटे:

धन-संग्रह और विलासिता मानवता के विरुद्ध मानी जाती है। यदि लोग आवश्यकता से अधिक धन अर्जित कर केवल अपने लिए संचित करते हैं, तो समाज में विषमता और असमानता उत्पन्न होती है। समाज के दीन-दुखियों और अभावग्रस्त लोगों की सहायता करना मानवता का कर्तव्य है। इसलिए, उदारता और दानशीलता को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

### (५०) श्रम का सम्मान:

श्रम को सम्मान देना मानवता की रक्षा का एक महत्वपूर्ण तत्व है। यदि शारीरिक श्रमिकों को भी समान प्रतिष्ठा मिले और श्रम का उचित मूल्यांकन हो, तो समाज में संतुलन बना रहेगा। समाज को यह स्वीकार करना होगा कि बिना श्रम के कोई भी प्रगति संभव नहीं है। यदि श्रम का सम्मान बढ़ेगा, तो प्रत्येक व्यक्ति परिश्रम करने के लिए प्रेरित होगा और इससे राष्ट्र की समृद्धि होगी।

### निष्कर्ष

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा प्रतिपादित यह ४१ से ५० सूत्र समाज को नैतिकता, सहयोग, परिश्रम और परोपकार की दिशा में अग्रसर करते हैं। मानवता की दृष्टि से इन सूत्रों का क्रियान्वयन एक आदर्श समाज की स्थापना के लिए अनिवार्य है। यदि हम इन मूल्यों को अपने जीवन में उतारें, तो सभ्य समाज की स्वस्थ रचना संभव हो सकेगी।

## ६.५.६. इन कुरीतियों को हटाया जाए (५१ से ६० सूत्र)

मानव समाज में सुधार और प्रगतिशील परिवर्तन की दिशा में पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा प्रस्तुत ५१ से ६० तक के सूत्र अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इन कुरीतियों के उन्मूलन का उद्देश्य एक ऐसा समाज निर्मित करना है, जो समानता, न्याय, और सद्भाव पर आधारित हो। इन बिंदुओं का मानवतावादी दृष्टिकोण से विश्लेषण इस प्रकार किया जा सकता है:

### (५१) वर्ण व्यवस्था का शुद्ध स्वरूप:

प्राचीन वर्ण व्यवस्था समाज की कार्य विभाजन प्रणाली थी, जिसमें ऊँच-नीच का भाव नहीं था। यह ज्ञान, धर्म, बल और श्रम पर आधारित थी। लेकिन कालांतर में यह व्यवस्था सामाजिक भेदभाव और असमानता का कारण बन गई। मानवता की दृष्टि से देखा जाए तो वर्णों की अवधारणा जन्म आधारित नहीं, बल्कि कर्म आधारित होनी चाहिए। सामाजिक न्याय और समानता के सिद्धांत को अपनाकर ही इस व्यवस्था की मूल भावना को पुनः स्थापित किया जा सकता है।

### (५२) उपजातियों का भेदभाव हटे:

उपजातियों के कारण समाज में ऊँच-नीच की भावना बढ़ी है, जिससे सामाजिक विघटन और असमानता उत्पन्न हुई। आचार्य जी का यह विचार कि उपजातियों की संकीर्णता को समाप्त किया जाए और विवाह-शादी में समानता का दृष्टिकोण अपनाया जाए, समाज के समरसता निर्माण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। इससे न केवल सामाजिक विभाजन समाप्त होगा, बल्कि दहेज प्रथा जैसी कुरीतियाँ भी मिटेंगी।

### (५३) नर-नारी का भेदभाव:

आचार्य जी का यह मत कि पुरुष और नारी को समान अधिकार मिलने चाहिए, पूर्णतः मानवतावादी है। समाज में महिलाओं को शिक्षा, रोजगार और स्वावलंबन के समान अवसर मिलने चाहिए। पर्दा प्रथा जैसी रूढ़ियाँ महिलाओं के आत्मनिर्भरता को बाधित करती हैं। यदि समाज में सच्ची समानता लानी है तो पुरुषों और स्त्रियों के बीच के कृत्रिम भेद को मिटाना आवश्यक है।

### (५४) अश्लीलता का प्रतिकार:

मानवता की गरिमा बनाए रखने के लिए समाज में व्याप्त अश्लीलता को रोकना आवश्यक है। आचार्य जी का यह दृष्टिकोण कि साहित्य, सिनेमा और अन्य माध्यमों में शील और मर्यादा का ध्यान रखा

जाए, स्वस्थ समाज के निर्माण की दिशा में एक आवश्यक प्रयास है। नैतिकता और चारित्रिक संतुलन बनाए रखने के लिए ऐसे प्रयासों की नितांत आवश्यकता है।

### (५५) विवाहों में अपव्यय:

विवाहों में अनावश्यक खर्च सामाजिक विषमता को जन्म देता है। गरीब और मध्यम वर्ग के लोगों पर इसका अत्यधिक आर्थिक बोझ पड़ता है। दहेज प्रथा जैसी अनैतिक प्रथाएँ इसी मानसिकता से जन्म लेती हैं। विवाह को सादगीपूर्ण और सामाजिक समरसता का माध्यम बनाया जाना चाहिए। यह विचार न केवल आर्थिक दृष्टि से लाभकारी है, बल्कि मानवीय गरिमा को भी बनाए रखने में सहायक है।

### (५६) बाल विवाह और अनमेल विवाह:

बाल विवाह न केवल बालकों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, बल्कि यह उनके व्यक्तित्व विकास को भी बाधित करता है। इसी प्रकार अनमेल विवाह जीवन में असंतोष और पारिवारिक विघटन का कारण बनते हैं। मानवता की दृष्टि से यह आवश्यक है कि विवाह समान आयु, समान मानसिक स्तर और परिपक्वता के आधार पर किए जाएँ।

### (५७) भिक्षावृत्ति की भर्त्सना:

आचार्य जी का यह विचार कि समर्थ व्यक्ति को भिक्षावृत्ति से बचना चाहिए और सरकार एवं समाज को अपंग एवं असमर्थ लोगों की जिम्मेदारी लेनी चाहिए, अत्यंत प्रासंगिक है। स्वावलंबन को बढ़ावा देना आत्मगौरव और आत्मनिर्भरता की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

### (५८) मृत्यु भोजन की व्यर्थता:

मृत्यु के उपरांत भोजनों का आयोजन न केवल आर्थिक रूप से हानिकारक है, बल्कि यह दिवंगत आत्मा की स्मृति का भी अपमान है। इसकी बजाय समाज सेवा, शिक्षा, और जरूरतमंदों की सहायता जैसे कार्यों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

### (५९) जेवरों में धन की बर्बादी:

आचार्य जी का यह विचार कि आभूषणों पर अत्यधिक व्यय व्यर्थ है, अत्यंत महत्वपूर्ण है। धन को उत्पादनशील कार्यों में लगाना अधिक लाभदायक है। यह न केवल आर्थिक स्थिरता को बढ़ाएगा, बल्कि सामाजिक असमानता को भी कम करेगा।

### (६०) भूत-पलीत और बलि प्रथा:

अंधविश्वासों और अज्ञान के कारण समाज में भूत-प्रेत और बलि प्रथा जैसी कुरीतियाँ फैली हुई हैं। यह न केवल आर्थिक शोषण को जन्म देती हैं, बल्कि समाज को पिछड़ेपन की ओर भी धकेलती हैं। वैज्ञानिक दृष्टिकोण और तर्कसंगत सोच को अपनाकर ही समाज को इन भ्रमों से मुक्त किया जा सकता है।

### निष्कर्ष

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा प्रतिपादित ये ५१ से ६० सूत्र न केवल सामाजिक सुधार के लिए आवश्यक हैं, बल्कि वे एक विकसित और मानवीय समाज के निर्माण में भी सहायक हैं। यदि इन कुरीतियों का उन्मूलन किया जाए, तो समाज अधिक न्यायसंगत, प्रगतिशील और मानवतावादी बन सकता है।

## ६.५.७. विभूतिवान् व्यक्ति यह करें (६१ से ६८ सूत्र)

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा प्रतिपादित शत-सूत्री कार्यक्रम का 61 से 68 सूत्रों वाला 'विभूतिवान् व्यक्ति यह करें'' यह भाग उन व्यक्तियों को समर्पित है जो अपनी विशेष प्रतिभा, ज्ञान, साधन या कला के माध्यम से समाज के उत्थान में योगदान दे सकते हैं। यह खंड साहित्य, पत्रकारिता, अनुवाद, प्रकाशन, प्रेस संचालन और संगीत-काव्य जैसे क्षेत्रों से जुड़े विभूतिवान् व्यक्तियों को युग निर्माण मिशन में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित करता है

### (६१) लेखकों और पत्रकारों से अनुरोध:

लेखकों और पत्रकारों को जनकल्याणकारी एवं प्रेरणादायक साहित्य रचने की प्रेरणा दी जाए। प्रकाशकों, समाचार पत्रों और पुस्तक विक्रेताओं को भी इस दिशा में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए। समाज के बौद्धिक विकास में लेखन की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि लेखक एवं पत्रकार अपने लेखन में नैतिकता, सामाजिक जागरूकता, और सुधारवादी विचारधारा को स्थान दें, तो समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सकता है। उचित साहित्य समाज को दिशा देने का कार्य करता है और इससे व्यक्ति में श्रेष्ठ विचारों का संचार होता है

### (६२) युग साहित्य के नवनिर्माता:

मिशनरी भावना से प्रेरित साहित्यकारों का एक विशेष वर्ग तैयार किया जाए, जो पूर्ण रूप से समाज के बौद्धिक उत्थान के लिए समर्पित हो। हर समाज को जागरूक और प्रगतिशील बनाने के लिए ऐसे साहित्यकारों की आवश्यकता होती है जो अपनी लेखनी से विचार क्रांति ला सकें। कई प्रतिभावान व्यक्ति संसाधनों और मार्गदर्शन के अभाव में अपनी क्षमताओं का पूरा उपयोग नहीं कर पाते। इस सूत्र का उद्देश्य ऐसे लोगों को प्रशिक्षित कर समाज में रचनात्मकता और जागरूकता को बढ़ावा देना है।

### (६३) प्रत्येक भाषा में प्रकाशन:

युग निर्माण साहित्य को भारत की सभी प्रमुख भाषाओं में प्रकाशित किया जाए, ताकि अधिक से अधिक लोग इससे लाभान्वित हो सकें। ज्ञान का प्रसार किसी एक भाषा तक सीमित नहीं रहना चाहिए। यदि युग निर्माण साहित्य विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध होगा, तो इसका प्रभाव व्यापक होगा। यह सांस्कृतिक और भाषाई एकता को भी प्रोत्साहित करेगा और विभिन्न समुदायों को जोड़ने का कार्य करेगा।

### (६४) अनुवाद कार्य का विस्तार:

अच्छी रचनाओं का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद किया जाए, ताकि श्रेष्ठ विचारों का अधिकतम प्रसार हो सके। भाषा की विविधता ज्ञान के प्रसार में बाधक नहीं होनी चाहिए। महान विचार और प्रेरणादायक साहित्य यदि अनुवाद के माध्यम से अन्य भाषाओं में उपलब्ध कराया जाए, तो इससे समाज में जागरूकता बढ़ेगी और विभिन्न संस्कृतियों के बीच सामंजस्य स्थापित होगा। इससे वैश्विक स्तर पर मानवीय एकता को भी बल मिलेगा

### (६५) पत्र-पत्रिकाओं की आवश्यकता:

नारी सशक्तिकरण, स्वास्थ्य, शिक्षा, अर्थव्यवस्था, धर्म, समाजशास्त्र आदि विषयों पर मिशनरी जोश से प्रेरित पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित की जाएँ। समाज में व्याप्त विभिन्न समस्याओं का समाधान करने के लिए सही जानकारी और विचारों का प्रचार-प्रसार आवश्यक है। यदि हर क्षेत्र के लिए समर्पित पत्र-पत्रिकाएँ

उपलब्ध होंगी, तो लोगों को सही मार्गदर्शन मिलेगा। यह विचार-क्रांति और समाज-सुधार का एक सशक्त माध्यम बन सकता है

### (६६) प्रकाशन की सुगठित श्रृंखला:

पुस्तक प्रकाशकों का एक संगठित नेटवर्क बनाया जाए, जिससे हर विषय पर गुणवत्ता पूर्ण साहित्य उपलब्ध हो और उसका प्रभावी वितरण हो सके। ज्ञान और विचारों का प्रसार केवल लिखने से ही संभव नहीं है, बल्कि उसे व्यवस्थित रूप से प्रकाशित और वितरित करना भी आवश्यक है। यदि प्रकाशक परस्पर सहयोग करें और ज्ञानवर्धक साहित्य को जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें, तो इससे समाज बौद्धिक रूप से समृद्ध होगा और नैतिक मूल्यों को बल मिलेगा

### (६७) युग निर्माण प्रेस:

प्रत्येक नगर में एक-एक युग निर्माण प्रेस स्थापित किया जाए, जिससे सत्साहित्य का सहज उपलब्धता हो और विचार क्रांति को बल मिले। विचार क्रांति के लिए साहित्य और सूचनाओं का व्यापक प्रसार आवश्यक है। यदि हर नगर में युग निर्माण प्रेस स्थापित हो जाए, तो इससे न केवल नैतिक और सुधारवादी साहित्य की उपलब्धता बढ़ेगी, बल्कि समाज में बौद्धिक चेतना का संचार भी होगा। यह रोजगार सृजन का भी एक माध्यम बन सकता है।

### (६८) कविताओं का निर्माण और प्रसार:

प्रत्येक भाषा में प्रेरणादायक कविताएँ और लोकगीत रचे जाएँ, ताकि समाज के हर वर्ग को सही दिशा में प्रेरित किया जा सके। कविता और संगीत का समाज पर गहरा प्रभाव पड़ता है। यदि लोकगीतों और प्रेरणादायक कविताओं में नैतिकता, राष्ट्रप्रेम, आध्यात्मिकता और सद्गुणों का समावेश किया जाए, तो यह समाज के हर वर्ग को जागरूक करने का प्रभावी माध्यम बन सकता है। किसान, गृहिणियाँ, युवा—हर वर्ग प्रेरणा लेकर समाज के विकास में अपना योगदान दे सकता है।

### निष्कर्ष

उपरोक्त ६१ से ६८ सूत्रों में पं. श्रीराम शर्मा आचार्यजी ने स्पष्ट किया कि विभूतिवान् व्यक्तियों को अपनी प्रतिभा और संसाधनों का उपयोग समाज और मानवता के कल्याण के लिए करना चाहिए। साहित्य, पत्रकारिता, अनुवाद, प्रकाशन, प्रेस संचालन, संगीत और काव्य जैसे क्षेत्रों से जुड़े व्यक्ति यदि मिशनरी भावना से कार्य करें, तो समाज में नैतिकता, जागरूकता और सद्भाव को बढ़ावा दिया जा सकता है। इससे युग निर्माण का लक्ष्य साकार हो सकता है और संपूर्ण मानवता को लाभ मिल सकता है।

## ६.५.८. कला और उसका सदुपयोग (६९ से ७६ सूत्र)

कला मानव हृदय को स्पर्श करने, चेतना को जाग्रत करने और समाज में नैतिक मूल्यों का संचार करने का एक प्रभावी माध्यम है। यदि इसका उपयोग सही दिशा में किया जाए, तो यह मानवीय संवेदनाओं को विकसित करने और समाज सुधार का एक शक्तिशाली उपकरण बन सकता है। पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने कला के इस सृजनात्मक पक्ष को समझते हुए उसे युग निर्माण और मानवता की सेवा में लगाने का संदेश दिया। नीचे प्रस्तुत आठ सूत्र इसी उद्देश्य को स्पष्ट करते हैं:

## (६९) वक्तृत्व कला का विकास:

वक्तृत्व कला केवल बोलने की क्षमता नहीं, बल्कि समाज को सही दिशा देने का माध्यम भी है। जो व्यक्ति प्रभावी ढंग से संवाद कर सकता है, वह लोगों को सत्कर्म और सृजनशीलता के मार्ग पर प्रेरित कर सकता है। मधुर और शिष्ट वाणी न केवल व्यक्तिगत संबंधों को मधुर बनाती है, बल्कि सामाजिक सौहार्द्र को भी बढ़ावा देती है। यदि युग निर्माण आंदोलन को व्यापक स्तर पर फैलाना है, तो जनसंवाद की इस कला का समुचित प्रशिक्षण आवश्यक है।

## (७०) गायकों का संगठन:

संगीत में भावनाओं को झकझोरने और प्रेरित करने की अद्भुत शक्ति होती है। गायन और भजन केवल मनोरंजन का साधन न बनें, बल्कि वे समाज को नैतिकता, सेवा और परोपकार की ओर प्रवृत्त करने वाले हों। इसलिए गायकों को ऐसे गीतों को अपनाना चाहिए जो युग निर्माण की भावना से ओतप्रोत हों। सामूहिक भजन-कीर्तन मंडलियों के गठन से समाज में सकारात्मक ऊर्जा का संचार किया जा सकता है।

## (७१) संगीत शिक्षा का प्रबंध:

संगीत की शिक्षा केवल व्यावसायिक दृष्टि से नहीं, बल्कि नैतिक उत्थान के लिए भी होनी चाहिए। जिनमें मधुर गायन की प्रतिभा है, उन्हें प्रशिक्षित कर समाज के कल्याण में उनकी भूमिका सुनिश्चित करनी चाहिए। विभिन्न पारंपरिक वाद्ययंत्रों की शिक्षा देकर नई पीढ़ी को संस्कृति और आदर्शों से जोड़ने का प्रयास किया जाना चाहिए।

## (७२) चित्रकला का उपयोग:

चित्रकला केवल सौंदर्य और सजावट तक सीमित न रहे, बल्कि इसे समाज सुधार का साधन बनाया जाए। महापुरुषों, लोकसेवियों और ऐतिहासिक प्रेरणाओं से युक्त चित्रों का अधिकाधिक प्रचार-प्रसार किया जाए, ताकि समाज में श्रेष्ठता और सद्गुणों का संचार हो। सामाजिक बुराइयों और अन्याय के प्रति व्यंग्य चित्रों का प्रयोग जागरूकता फैलाने में किया जा सकता है।

## (७३) प्रदर्शनियों का आयोजन:

प्रदर्शनियों के माध्यम से समाज में व्याप्त बुराइयों को उजागर किया जा सकता है, जिससे लोग उनके दुष्परिणामों को समझें और उन्हें दूर करने का संकल्प लें। साथ ही, सेवा, त्याग, प्रेम और उदारता जैसी महान भावनाओं को चित्रों और वाक्य पट्टों के माध्यम से जनता तक पहुँचाने का कार्य किया जाना चाहिए।

## (७४) अभिनय और लीलाएँ:

रामलीला और कृष्णलीला जैसे पारंपरिक नाट्य रूपों को केवल मनोरंजन तक सीमित न रखकर उनमें नैतिकता और शिक्षा का तत्व प्रमुख किया जाए। मेलों और उत्सवों में ऐसे नाट्य प्रस्तुत किए जाएँ, जो जनता को उनकी सांस्कृतिक विरासत और मूल्यों से परिचित कराएँ तथा उन्हें सेवा और त्याग की भावना से प्रेरित करें।

## (७५) नाटक और एकांकी:

नाटकों और एकांकियों का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि समाज को जागरूक करना होना चाहिए। महापुरुषों के जीवन प्रसंगों, ऐतिहासिक घटनाओं और सामाजिक समस्याओं पर आधारित नाटकों

को प्राथमिकता दी जाए। विद्यालयों और अन्य सामाजिक मंचों पर इनका आयोजन कर समाज में नैतिक उत्थान की भावना को विकसित किया जा सकता है।

### (७६) कला के वैज्ञानिक माध्यम:

रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा और सोशल मीडिया जैसे आधुनिक संचार माध्यमों का उपयोग यदि सही दिशा में किया जाए, तो वे समाज सुधार और मानवता के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। इन माध्यमों के द्वारा नैतिकता, सेवा, परोपकार और आध्यात्मिक मूल्यों का प्रसार किया जाए, जिससे लोगों की सोच और आचरण में सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सके।

### निष्कर्ष

उपरोक्त ६९ से ७६ सूत्रों के अनुसार, कला केवल आनंद और मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि यह समाज के नैतिक और आध्यात्मिक उत्थान का माध्यम भी बन सकती है। यदि वक्तृत्व, गायन, चित्रकला, अभिनय और तकनीकी माध्यमों का सही दिशा में उपयोग किया जाए, तो मानवता को एक उच्च स्तर पर पहुँचाया जा सकता है। यही युग निर्माण की सच्ची संकल्पना है।

## ६.५.९. सद्भावनाएँ बढ़ाने के लिए (७७ से ८६ सूत्र)

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा प्रतिपादित शतसूत्री कार्यक्रम का यह खंड मानवता के उत्थान और समाज में नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इन सूत्रों का उद्देश्य दया, करुणा, सेवा, उदारता, न्याय, संयम और विवेक को समाज में जागृत कर मानवीय संवेदनाओं को प्रखर बनाना है।

### (७७) सेवा कार्यों में अभिरुचि:

सेवा को मानवता का मूलमंत्र माना गया है। आचार्यश्री ने समाज में सेवा-भाव को जगाने के लिए व्यक्तिगत और सामूहिक सेवा कार्यों की महत्ता पर बल दिया है। चिकित्सा सेवा, प्राकृतिक चिकित्सा (जैसे तुलसी, सूर्य चिकित्सा) और सेवा समितियों के माध्यम से जरूरतमंदों की सहायता को प्रोत्साहित करने का यह प्रयास मानवीय मूल्यों को जाग्रत करने में सहायक सिद्ध होगा। यह दृष्टिकोण समाज में संवेदनशीलता बढ़ाने और परोपकार की भावना को सशक्त करने के लिए आवश्यक है।

### (७८) सार्वजनिक उपयोग के उपकरण:

सामाजिक सहयोग और पारस्परिक सद्भावना को बढ़ाने के लिए यह सूत्र अत्यंत उपयोगी है। सार्वजनिक उपयोग के उपकरणों को साझा करने से समाज में सहिष्णुता और सहयोग की भावना विकसित होती है। इस प्रकार की व्यवस्था से आर्थिक दृष्टि से कमजोर वर्गों को भी लाभ मिलता है और सामुदायिक सहयोग की भावना मजबूत होती है।

### (७९) जीव दया के सत्कर्म:

यह सूत्र करुणा और अहिंसा को प्रोत्साहित करता है, जो किसी भी सभ्य समाज की आधारशिला होती है। पशु-पक्षियों के प्रति संवेदनशीलता विकसित करने से मनुष्य में सहृदयता और करुणा का विकास होता है। आचार्यश्री का यह संदेश केवल धार्मिक पहलू तक सीमित नहीं, बल्कि पर्यावरणीय संतुलन और जैव विविधता की रक्षा के लिए भी अत्यंत प्रासंगिक है।

### (८०) ईमानदार उपयोगी स्टोर:

यह सूत्र व्यापार और अर्थव्यवस्था में नैतिकता स्थापित करने का संदेश देता है। आज के समय में शुद्ध और उचित मूल्य की वस्तुओं की उपलब्धता अत्यंत आवश्यक है। इस प्रकार के स्टोर न केवल समाज में नैतिकता और ईमानदारी की स्थापना करेंगे, बल्कि उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य और सुरक्षा की दृष्टि से भी लाभदायक होंगे।

### (८१) सम्मेलन और गोष्ठियाँ:

मानवीय मूल्यों के प्रचार-प्रसार के लिए विचार गोष्ठियों और सम्मेलनों का आयोजन आवश्यक है। इस माध्यम से समाज में नैतिकता, आध्यात्मिकता और सकारात्मक विचारधारा का प्रसार किया जा सकता है। छोटे स्तर पर होने वाले यह आयोजन लोगों को सक्रिय रूप से जागरूक करने में सहायक होते हैं।

### (८२) नवरात्रि में शिक्षण शिविर:

नवरात्रि के अवसर पर आयोजित शिक्षण शिविर व्यक्ति के आत्मिक एवं सामाजिक विकास में सहायक होते हैं। इन शिविरों में उपासना, विचार गोष्ठी, सत्संग एवं सामाजिक सुधार के लिए प्रेरणा देने वाले कार्यक्रम होते हैं, जो आत्मनिर्माण के साथ समाज निर्माण का आधार भी रखते हैं।

### (८३) धर्मप्रचार की पदयात्रा:

धार्मिक और सामाजिक जागरूकता फैलाने के लिए पदयात्राओं का महत्व अपरिमेय है। यह अभियान समाज में नैतिक उत्थान, आध्यात्मिक उन्नयन और जागरूकता बढ़ाने के लिए अत्यंत प्रभावी माध्यम है। इस प्रकार की यात्राएँ समाज को प्रेरित करने और सद्भावना को बढ़ाने में सहायक होती हैं।

### (८४) आदर्श वाक्यों का लेखन:

यह सूत्र शिक्षा और प्रेरणा देने के लिए दीवारों पर आदर्श वाक्यों का लेखन एक प्रभावी साधन हो सकता है। यह सहज, सस्ता और व्यापक प्रभाव डालने वाला माध्यम है, जिससे समाज में नैतिक मूल्यों का प्रसार हो सकता है।

### (८५) संजीवनी विद्या का विधिवत् प्रशिक्षण:

यह सूत्र जीवन प्रबंधन और समस्याओं के समाधान की शिक्षा प्रदान करने पर केंद्रित है। आधुनिक समय में तनाव, पारिवारिक विघटन और सामाजिक अस्थिरता को देखते हुए इस प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम अत्यंत आवश्यक हैं। यह न केवल व्यक्तिगत बल्कि सामाजिक जीवन की शांति और संतुलन बनाए रखने में सहायक हो सकता है।

### (८६) छोटे स्थानीय शिक्षण सत्र:

जो लोग बड़े स्तर पर प्रशिक्षण में भाग नहीं ले सकते, उनके लिए स्थानीय स्तर पर शिक्षण सत्रों की व्यवस्था करना महत्वपूर्ण है। इससे हर स्तर के व्यक्ति को आत्मविकास और समाजोत्थान की शिक्षा प्राप्त हो सकेगी। इस प्रकार के प्रशिक्षण सत्र समाज में नैतिक और आध्यात्मिक पुनर्जागरण का माध्यम बन सकते हैं।

### निष्कर्ष

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा प्रतिपादित ये ७७ से ८६ सूत्र समाज में सद्भाव, सेवा और नैतिक मूल्यों के विकास के लिए अत्यंत प्रभावी हैं। यह कार्यक्रम न केवल व्यक्तिगत स्तर पर आत्मविकास की प्रेरणा देते हैं, बल्कि समाज में परस्पर सहयोग, करुणा, सेवा और न्याय की भावना को भी प्रबल करते हैं।

मानवता की दृष्टि से इन बिंदुओं का महत्व इस बात में निहित है कि ये समाज में परस्पर प्रेम, सहानुभूति और सहयोग की भावना को बढ़ाने के लिए ठोस उपाय प्रस्तुत करते हैं। यह विचारधारा संपूर्ण मानव समाज को एक नई दिशा देने की क्षमता रखती है और आत्मविकास के साथ समाज सुधार के लिए भी प्रेरित करती है।

## ६.५.१०. राजनीति और सच्चरित्रता (८७ से ९४ सूत्र)

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का शतसूत्री कार्यक्रम न केवल समाज सुधार का व्यापक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, बल्कि उसमें नैतिकता, सच्चरित्रता और मानवीय मूल्यों की पुनःस्थापना का प्रयास भी स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। विशेष रूप से राजनीति और सच्चरित्रता से जुड़े ८७ से ९४ तक के सूत्रों में उन्होंने शासन तंत्र, सामाजिक नीतियों और न्याय व्यवस्था में नैतिकता की आवश्यकता पर बल दिया है। यदि मानवता के दृष्टिकोण से इन सूत्रों का विश्लेषण करें, तो स्पष्ट होता है कि ये सुझाव एक समतामूलक, न्यायसंगत और मानवीय मूल्यों पर आधारित समाज की स्थापना हेतु दिए गए हैं।

### (८७) गीता के माध्यम से जनजागरण:

गीता केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि एक जीवन-दर्शन भी है, जो व्यक्ति को आत्मबोध, कर्तव्यपरायणता और समाजोत्थान की प्रेरणा देता है। आचार्यश्री ने गीता को जनजागरण का माध्यम बनाने का जो सुझाव दिया, वह मानवता की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह समाज में नैतिकता, ईमानदारी और आत्मानुशासन की भावना को प्रोत्साहित करता है, जो एक समृद्ध और सशक्त राष्ट्र की नींव रख सकता है।

### (८८) मतदान और मतदाता:

प्रजातंत्र में प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य है कि वह योग्य प्रतिनिधियों का चुनाव करे। आचार्यश्री ने मतदाता को जागरूक बनाने पर विशेष बल दिया है। यदि हर व्यक्ति अपने मताधिकार का उपयोग सोच-समझकर करे और केवल योग्य, सच्चरित्र और ईमानदार प्रत्याशी को ही चुने, तो शासन व्यवस्था अधिक मानवीय और उत्तरदायी बन सकती है। इससे समाज में पारदर्शिता, न्याय और समानता का भाव उत्पन्न होगा।

### (८९) शिक्षा पद्धति का स्तर:

शिक्षा केवल विद्या प्राप्ति का साधन नहीं, बल्कि संस्कारों और चरित्र निर्माण की आधारशिला है। आचार्यश्री के अनुसार, यदि शिक्षा प्रणाली में नैतिकता, समाज सेवा और कर्तव्यपरायणता को प्रमुखता दी जाए, तो युवा पीढ़ी सच्चे अर्थों में मानवीय मूल्यों को अपनाएगी। सैनिक शिक्षा और नैतिक शिक्षा के समावेश से आत्मनिर्भर, साहसी और समाज के प्रति उत्तरदायी नागरिकों का निर्माण होगा।

### (९०) कुरीतियों का उन्मूलन:

सामाजिक कुरीतियाँ, जैसे दहेज प्रथा, मृत्यु भोज, बाल विवाह, वेश्यावृत्ति आदि, समाज की नैतिक गिरावट और अमानवीयता का प्रतीक हैं। आचार्यश्री का यह विचार कि इन कुरीतियों के उन्मूलन हेतु कड़े कानून बनाए जाएँ और उनका कठोरता से पालन हो, अत्यंत महत्वपूर्ण है। समाज में मानवीय मूल्यों को स्थापित करने के लिए इन बुराइयों को मिटाना आवश्यक है।

### (९१) सस्ता, शीघ्र और सरल न्याय:

न्याय प्रणाली का उद्देश्य समाज में संतुलन, शांति और न्याय की स्थापना करना है। यदि न्याय महंगा, जटिल और विलंबकारी हो, तो गरीब और कमजोर व्यक्ति न्याय से वंचित रह जाते हैं, जिससे समाज में असंतोष और अन्याय बढ़ता है। आचार्यश्री ने जो सुझाव दिए हैं, वे न्याय व्यवस्था को अधिक पारदर्शी, प्रभावी और आमजन के लिए सुलभ बनाने की दिशा में सार्थक प्रयास हैं। इससे मानवता का वास्तविक उत्थान होगा।

### (९२) अपराधों के प्रति कड़ाई:

समाज में भय, असुरक्षा और अमानवीयता को जन्म देते हैं। यदि अपराधियों को कड़ाई से कठोर दंड मिले और जेलों को सुधारगृह की तरह विकसित किया जाए, तो अपराधों में कमी आ सकती है। आचार्यश्री का यह विचार कि अपराधियों पर कड़ी नजर रखी जाए और उन्हें कठोर दंड मिले, एक सुरक्षित और न्यायसंगत समाज के निर्माण में सहायक हो सकता है।

### (९३) अधिकारियों की प्रामाणिकता:

शासन में नैतिकता और ईमानदारी लाने के लिए अधिकारियों का चरित्रवान और अनुभवयुक्त होना आवश्यक है। यदि भ्रष्ट अधिकारी शासन का हिस्सा बनते हैं, तो वे पूरे तंत्र को दूषित कर देते हैं। आचार्यश्री का यह सुझाव कि अपराध निरोधक पदों पर केवल परखे हुए और ईमानदार लोगों की नियुक्ति होनी चाहिए, भ्रष्टाचार और अन्याय के उन्मूलन के लिए अत्यंत आवश्यक है।

### (९४) आर्थिक विषमता घटे:

आर्थिक असमानता ही अधिकांश अपराधों, शोषण और अन्याय का मूल कारण है। यदि समाज में हर व्यक्ति को अपनी आवश्यकताओं के अनुसार संसाधन उपलब्ध कराए जाएँ और फिजूलखर्ची पर नियंत्रण रखा जाए, तो समाज अधिक न्यायसंगत और समावेशी बन सकता है। आचार्यश्री का यह विचार कि समाज पुनर्गठन में आर्थिक समानता और सामूहिकता को प्राथमिकता दी जाए, सामाजिक शांति और सद्भावना को बढ़ाने में अत्यंत सहायक होगा।

### निष्कर्ष

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा प्रस्तुत ८७ से ९४ सूत्र केवल शासन व्यवस्था में सुधार के लिए ही नहीं, बल्कि संपूर्ण समाज को मानवीय मूल्यों और सच्चरित्रता की दिशा में अग्रसर करने के लिए अत्यंत प्रभावी हैं। यदि इन सुझावों को व्यवहारिक रूप से अपनाया जाए, तो समाज में नैतिकता, न्याय, समानता और मानवता की भावना को पुनः स्थापित किया जा सकता है। मानवता की दृष्टि से इन सूत्रों का क्रियान्वयन संपूर्ण समाज के उत्थान के लिए अत्यंत आवश्यक है।

## ६.५.११. युग निर्माण की आध्यात्मिक पृष्ठभूमि (९५ से १०० सूत्र)

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा प्रतिपादित शतसूत्री कार्यक्रम का अंतिम भाग 'युग निर्माण की आध्यात्मिक पृष्ठभूमि' शीर्षक से प्रस्तुत किया गया है, जिसमें सूत्र ९५ से १०० तक के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि समाज सुधार, राजनैतिक या सामाजिक स्तर पर सीमित नहीं रह सकता, बल्कि इसका आधार आध्यात्मिक होना चाहिए। आध्यात्मिक चेतना से युक्त प्रयास ही मानवता के व्यापक उत्थान का मूल आधार बन सकते हैं। यह विश्लेषण इस तथ्य को उजागर करता है कि जब व्यक्ति के अंतःकरण में शुद्धता,

श्रद्धा और सेवा का भाव उत्पन्न होता है, तभी वह वास्तविक रूप से समाज के लिए कुछ करने की प्रेरणा प्राप्त करता है।

### (९५) गायत्री उपासना:

गायत्री उपासना केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि आत्मविकास और नैतिक उत्थान का साधन है। आचार्यश्री ने इसे संपूर्ण मानवता के लिए उपयोगी बताया है। गायत्री मंत्र व्यक्ति की आंतरिक शक्तियों को जागृत कर उसे सद्प्रवृत्तियों की ओर प्रेरित करता है। यदि हर व्यक्ति प्रतिदिन थोड़े समय के लिए भी गायत्री उपासना करे, तो उसकी मानसिकता में सकारात्मक परिवर्तन संभव है, जो संपूर्ण समाज में शांति, करुणा और मानवता का विस्तार करेगा।

### (९६) यज्ञ की आवश्यकता:

यज्ञ केवल अग्निहोत्र नहीं, बल्कि एक जीवनदर्शन है, जो लोकहित के लिए समर्पण की भावना को पुष्ट करता है। यज्ञीय भावना का अर्थ है, अपने प्रिय संसाधनों को समाज की भलाई के लिए अर्पित करना। यदि प्रत्येक व्यक्ति इस भावना को आत्मसात कर ले, तो समाज में सहयोग, संवेदना और परोपकार की भावना बढ़ेगी, जिससे मानवता को मजबूती मिलेगी। यह विचार स्पष्ट करता है कि आत्मत्याग और सेवा ही समाज की वास्तविक उन्नति के आधार हैं।

### (९७) समयदान यज्ञ:

मानवता की सेवा केवल धन और संसाधनों से ही नहीं होती, बल्कि समय और विचारों के समर्पण से भी संभव है। आचार्यश्री ने समयदान यज्ञ के माध्यम से इस तथ्य को रेखांकित किया कि प्रत्येक विचारशील व्यक्ति को समाज में नैतिकता और सद्भावना के प्रसार के लिए अपना समय देना चाहिए। यदि लोग अपने समय का एक अंश परमार्थ कार्यों के लिए समर्पित करें, तो यह समाज में चेतना जाग्रत करने की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम सिद्ध होगा।

### (९८) आत्म चिंतन और सत्संकल्प:

व्यक्ति के आत्मपरिष्कार के बिना समाज में सुधार संभव नहीं। आचार्यश्री का यह सूत्र बताता है कि हर व्यक्ति को प्रतिदिन आत्मचिंतन करना चाहिए, अपने कार्यों का विश्लेषण करना चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वह अपनी गलतियों को दोहराए नहीं। यदि समाज के प्रत्येक व्यक्ति में यह प्रवृत्ति आ जाए, तो समस्त विश्व में नैतिक मूल्यों का उत्थान संभव है। यह आत्म-जागरूकता मानवता के वास्तविक कल्याण का आधार बन सकती है।

### (९९) अविच्छिन्न दान-परंपरा:

दान केवल वित्तीय सहायता नहीं, बल्कि यह मानवता के प्रति समर्पण का एक अभिन्न अंग है। आचार्यश्री ने इसे आध्यात्मिक परंपरा के रूप में स्वीकार करने का सुझाव दिया है। यदि व्यक्ति अपनी आय का एक निश्चित अंश समाजसेवा में लगाए और धर्मकार्य हेतु नियमित रूप से अन्न, धन या अन्य संसाधन अर्पित करे, तो समाज में दयालुता और परोपकार की भावना को मजबूती मिलेगी। यह परंपरा सामाजिक समरसता और मानवता की रक्षा में सहायक हो सकती है।

### (१००) **सत्याग्रही स्वयंसेवक सेना:**

आचार्यश्री ने सत्याग्रही स्वयंसेवक सेना के गठन की बात कही, जो समाज में व्याप्त कुरीतियों और बुराइयों के विरुद्ध संघर्ष करे। यह सेना बिना किसी द्वेष और हिंसा के अपने संयम, त्याग और मधुर व्यवहार के माध्यम से समाज में परिवर्तन लाने का कार्य करेगी। यह विचार स्पष्ट करता है कि समाज सुधार के लिए संयमित और निःस्वार्थ कार्य करने वाले व्यक्तियों की आवश्यकता है।

### निष्कर्ष:

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा प्रस्तुत ९५ से १०० सूत्र का यह भाग संपूर्ण मानवता के लिए प्रेरणास्रोत है। यह विचारधारा स्पष्ट करती है कि समाज में स्थायी सुधार केवल बाह्य नीतियों या व्यवस्थाओं से संभव नहीं, बल्कि व्यक्ति के अंतःकरण की शुद्धता और आत्मपरिष्कार से संभव है। उपासना, त्याग, समयदान, आत्मचिंतन, परमार्थ और नैतिक क्रांति – ये छह आध्यात्मिक कार्यक्रम समाज को एक नई दिशा प्रदान कर सकते हैं। यदि मानवता को वास्तविक उन्नति की ओर ले जाना है, तो इन सिद्धांतों को व्यवहार में लाना ही एकमात्र उपाय है। पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा प्रतिपादित यह आध्यात्मिक पृष्ठभूमि संपूर्ण विश्व के लिए एक अमूल्य धरोहर है, जो युग परिवर्तन और नवसंस्कार की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करती है।

---

### साक्ष्य स्रोत:

उपरोक्त अध्याय ***"शत सूत्री कार्यक्रम'*** का अध्ययन निम्न साक्ष्य स्रोतों के आधार पर कर तार्किक विश्लेषण किया है।


- *पं. श्रीराम शर्मा आचार्य, युग निर्माण का शत सूत्री कार्यक्रम, श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट, पुनर्मुद्रण १९९९, पृष्ठ ५-६४.*
- *ब्रह्मवर्चस, पं. श्रीराम शर्मा आचार्य वाङ्.मय-६६: युग निर्माण योजना-दर्शन, स्वरूप व कार्यक्रम, युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट गायत्री तपोभूमि मथुरा, पुनरावृत्ति २०१८, पृष्ठ ४७८-४९९.*
- *All World Gayatri Pariwar, Website, https://www.awgp.org, युग निर्माण का शत सूत्री कार्यक्रम*

# ६.६. सप्तसूत्री आंदोलन

मानव सभ्यता के उत्थान और विकास में नैतिकता, स्वास्थ्य, शिक्षा, आत्मनिर्भरता, पर्यावरण संतुलन, नारी सशक्तिकरण और सामाजिक शुद्धि की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। जब-जब समाज में इन मूलभूत स्तंभों की उपेक्षा हुई, तब-तब मानवीय मूल्यों का ह्रास हुआ और सामाजिक विकृतियाँ पनपीं। आधुनिक युग में भौतिक प्रगति के बावजूद, मनुष्य आंतरिक अशांति, अस्वस्थ जीवनशैली, सामाजिक अन्याय और नैतिक पतन से जूझ रहा है। ऐसे में, समाज को पुनः एक संतुलित, सशक्त और मानवीय मूल्यों से युक्त दिशा देने के लिए गायत्री परिवार के सप्त आंदोलन की अवधारणा सामने आई।

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा प्रवर्तित ये सात आंदोलन—साधना, स्वास्थ्य, शिक्षा, स्वावलंबन, पर्यावरण, नारी जागरण और व्यसन मुक्ति एवं कुप्रथा उन्मूलन—केवल सुधारात्मक पहल नहीं, बल्कि नवयुग के सृजन हेतु मानवता की पुनर्स्थापना का आधार हैं। इनका उद्देश्य व्यक्ति, परिवार और समाज को जागरूक, आत्मनिर्भर और सद्गुणों से परिपूर्ण बनाना है। यदि इन सात क्षेत्रों में संतुलन स्थापित हो जाए, तो संपूर्ण विश्व में शांति, समृद्धि और सद्भाव की स्थापना संभव हो सकेगी।

## ६.६.१. साधना आंदोलन

साधना आंदोलन की मूल अवधारणा पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा प्रस्तुत युग निर्माण योजना का एक अभिन्न अंग है। यह आंदोलन केवल व्यक्तिगत आत्मशुद्धि तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका व्यापक उद्देश्य संपूर्ण समाज में नैतिक और चारित्रिक उत्थान के माध्यम से मानवता का पुनरुत्थान करना है। पिछले हजार वर्षों में भारतीय समाज जिन विकृतियों और नैतिक पतन से गुजरा, उसने राष्ट्र के विकास को बाधित कर दिया। इस पतन से उबरने के लिए केवल बाह्य सुधार पर्याप्त नहीं, अपितु आंतरिक एवं भावनात्मक नवजागरण आवश्यक है। इसीलिए आचार्यश्री ने एक प्रचंड साधना आंदोलन का सूत्रपात किया, जो व्यक्ति से लेकर समाज और संपूर्ण विश्व के चारित्रिक उत्थान का मार्ग प्रशस्त करता है।

(क) **साधना आंदोलन की आवश्यकता**

मानवता के पतन का मूल कारण चारित्रिक दुर्बलता, आत्मकेंद्रित स्वार्थपरता और असंयमित इच्छाएँ हैं। आचार्यश्री के अनुसार, समाज में सुधारात्मक योजनाएँ तभी सफल हो सकती हैं, जब मनुष्य स्वयं नैतिक और आध्यात्मिक रूप से समर्थ बने। साधना आंदोलन इसी दिशा में एक ठोस प्रयास है, जो व्यक्ति को आत्मसुधार के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करता है। यह आंदोलन न केवल आत्मोत्थान पर बल देता है, बल्कि इसे सामाजिक और राष्ट्रीय स्तर पर एक क्रांतिकारी परिवर्तन का साधन बनाता है।

(ख) **साधना आंदोलन की रूपरेखा**

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने साधना आंदोलन को तीन प्रमुख स्तंभों पर आधारित किया:

**(१) उपासना – ईश्वर से जुड़ाव**

- व्यक्ति को अपने इष्टदेव की आराधना करनी चाहिए, जिससे उसमें ईश्वर की निकटता का अनुभव जाग्रत हो।
- परम सत्ता की सर्वोच्चता को स्वीकार कर अहंकार का विसर्जन किया जाए।
- कर्मफल के नियम को समझकर अपने कार्यों में नैतिकता और औचित्य को महत्व दिया जाए।

- यह प्रक्रिया किसी विशेष संप्रदाय या मत को नहीं, बल्कि समस्त मानवता को ध्यान में रखते हुए की जानी चाहिए।

**(२) साधना — आत्मसंयम और आत्मनिर्माण**

- व्यक्ति को अपने विचार, इच्छाओं और भावनाओं को मर्यादित और उच्चस्तरीय बनाने का प्रयास करना चाहिए।
- आत्मसंयम, स्वाध्याय और साधना के माध्यम से अपने व्यक्तित्व को संस्कारित किया जाए।
- नैतिक और चारित्रिक उत्थान को प्राथमिकता देते हुए, एक आदर्श नागरिक, समाजसेवी और विचारक के रूप में विकसित हुआ जाए।

**(३) आराधना — समाज की सेवा**

- समाज और राष्ट्र के उत्थान के लिए अपने ज्ञान, श्रम और संसाधनों का उपयोग किया जाए।
- असहाय, शोषित एवं वंचित लोगों की सहायता करना ही सच्ची ईश्वर-सेवा है।
- यह आंदोलन व्यक्ति के जीवन को सेवा-धर्म से जोड़कर, उसे सामाजिक परिवर्तन के अभियान से जोड़ता है।

ये तीनों क्रियाएँ साधना आंदोलन के मूलभूत आधार हैं और इन्हीं के माध्यम से व्यक्ति के भीतर देवत्व का उदय संभव है।

### (ग) साधना आंदोलन का मानवता पर प्रभाव

साधना आंदोलन केवल आध्यात्मिक चेतना तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज में नैतिक मूल्यों और मानवता को पुनर्जीवित करने का एक सशक्त साधन है। इसके प्रभाव को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है:

१. **चरित्र निर्माण:** आत्मसंयम, नैतिकता और अनुशासन को प्रोत्साहित कर एक श्रेष्ठ मानव समाज का निर्माण।

२. **सामाजिक सौहार्द:** जाति, धर्म और संप्रदाय से ऊपर उठकर एक समरस समाज की स्थापना।

३. **कर्तव्यपरायणता:** समाज और राष्ट्र के प्रति जागरूकता बढ़ाकर सेवा और परोपकार की भावना को विकसित करना।

४. **सहयोग और सहअस्तित्व:** पारिवारिक और सामाजिक संबंधों को प्रगाढ़ बनाकर परस्पर सहयोग की संस्कृति को बढ़ावा देना।

५. **संघर्षशीलता:** समाज में व्याप्त अन्याय, शोषण और भ्रष्टाचार से संघर्ष कर एक न्यायसंगत व्यवस्था स्थापित करना।

### (घ) 'मनुष्य में देवत्व का उदय' एवं 'धरती पर स्वर्ग के अवतरण' की दिशा में साधना आंदोलन की भूमिका

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने "मनुष्य में देवत्व का उदय" और "धरती पर स्वर्ग के अवतरण" की अवधारणा प्रस्तुत की, जो साधना आंदोलन की मूल आत्मा है। यदि प्रत्येक व्यक्ति अपने भीतर सद्गुणों को विकसित करे और समाज की सेवा में अपने जीवन को समर्पित करे, तो संपूर्ण विश्व में आध्यात्मिक पुनर्जागरण संभव हो सकता है।

(ङ) **निष्कर्ष**

साधना आंदोलन केवल एक धार्मिक या आध्यात्मिक पहल नहीं है, बल्कि यह संपूर्ण मानवता के कल्याण का एक व्यापक अभियान है। यह आंदोलन व्यक्ति, समाज और राष्ट्र को नैतिक एवं चारित्रिक बल देकर विश्वशांति और मानव कल्याण की दिशा में कार्यरत है। पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का यह अभियान आज भी प्रासंगिक है और उनके विचारों एवं सिद्धांतों को अपनाकर एक समृद्ध, संतुलित एवं सद्भावनापूर्ण समाज की स्थापना संभव है।

## ६.६.२. स्वास्थ्य आंदोलन

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का संपूर्ण जीवन समाज के सर्वांगीण उत्थान के लिए समर्पित था। उनके चिंतन और प्रयासों में मानवता का मूल तत्व सदैव केंद्र में रहा। उनके द्वारा प्रवर्तित "युग निर्माण योजना" के अंतर्गत स्वास्थ्य आंदोलन एक अत्यंत महत्वपूर्ण पहल थी, जिसका उद्देश्य प्रत्येक नागरिक को स्वस्थ जीवन के मूलभूत सिद्धांतों से जोड़ना था। यह आंदोलन केवल शारीरिक स्वास्थ्य तक सीमित न होकर मानसिक, नैतिक और सामाजिक स्वास्थ्य को भी समाहित करता था। आचार्यश्री के अनुसार, "स्वस्थ शरीर, स्वच्छ मन और सभ्य समाज" का निर्माण ही एक उज्ज्वल भविष्य की नींव रख सकता है।

### (क) स्वास्थ्य आंदोलन और मानवता

मानवता का आधार स्वस्थ, सशक्त और सुदृढ़ समाज होता है। यदि समाज रोगों से ग्रस्त, मानसिक तनाव से पीड़ित और सामाजिक विकृतियों से भरा हो, तो उसमें मानवता के संवर्धन की कल्पना करना कठिन हो जाता है। आचार्यश्री ने इस तथ्य को भली-भाँति समझा और इसी कारण उन्होंने स्वास्थ्य आंदोलन को एक व्यापक दृष्टिकोण के साथ प्रस्तुत किया।

उनके अनुसार, स्वास्थ्य केवल चिकित्सा पर निर्भर नहीं है, बल्कि जीवनशैली, आहार-विहार, स्वच्छता और मानसिक संतुलन पर अधिक निर्भर करता है। यदि समाज को बचपन से ही सही जीवनशैली अपनाने की प्रेरणा दी जाए, तो अनेक रोगों से बचा जा सकता है। इस संदर्भ में उन्होंने लोकशिक्षण को आवश्यक बताया और कहा कि स्वास्थ्य रक्षा के लिए सही ज्ञान का प्रचार-प्रसार होना चाहिए।

### (ख) स्वास्थ्य आंदोलन के प्रमुख तत्व और मानवता से जुड़ाव

#### (१) स्वास्थ्य के तीन आयाम: शारीरिक, मानसिक और सामाजिक स्वास्थ्य

- **शारीरिक स्वास्थ्य** की रक्षा के लिए संतुलित आहार, व्यायाम, स्वच्छता और प्राकृतिक चिकित्सा को बढ़ावा देना।
- **मानसिक स्वास्थ्य** को बनाए रखने के लिए ध्यान, स्वाध्याय, सकारात्मक चिंतन और संतुलित जीवनशैली अपनाने की प्रेरणा देना।
- **सामाजिक स्वास्थ्य** को सुदृढ़ करने के लिए परस्पर सहयोग, सौहार्द्र, नैतिकता और आध्यात्मिकता का प्रसार करना।

#### (२) आहार-विहार का अनुशासन

- सात्विक और शुद्ध आहार का सेवन करना, मांसाहार का त्याग कर शाकाहार को अपनाना।
- "समस्त रोगों की जड़ पेट है", इस सिद्धांत के आधार पर अति भोजन, विषमाशन और अनुचित खानपान से बचने की प्रेरणा देना।

- तेल-मसालों का सीमित प्रयोग, अंकुरित अनाज एवं ऋतु अनुसार आहार लेना, जिससे शरीर प्राकृतिक रूप से सशक्त बना रहे।

**(३) स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण**

- व्यक्तिगत और सार्वजनिक स्वच्छता पर बल देकर संक्रामक रोगों को रोकने की दिशा में प्रयास करना।
- जल-संरक्षण, प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा और पर्यावरण अनुकूल जीवनशैली अपनाने का संदेश देना।
- स्वास्थ्य के साथ-साथ नैतिक और सामाजिक मूल्यों को जाग्रत करना ताकि समाज में स्वस्थ परंपराओं का विकास हो।

**(४) योग एवं व्यायाम द्वारा स्वास्थ्य संवर्धन**

- नियमित व्यायाम, योग और प्राणायाम को जीवन का अभिन्न अंग बनाना।
- खेलकूद, बागवानी, चक्की चलाना, लाठी चलाना आदि श्रमसाध्य क्रियाओं के माध्यम से शरीर को स्वस्थ बनाए रखना।
- श्रम की महत्ता को स्वीकार कर श्रम के माध्यम से संतुलित जीवनशैली अपनाने का संदेश देना।

**(५) मानसिक स्वास्थ्य एवं आत्मसंयम**

- मानसिक तनाव, चिंता, निराशा आदि समस्याओं से निपटने के लिए ध्यान, सत्संग, सकारात्मक सोच और सत्कर्म अपनाने की प्रेरणा देना।
- "जल्दी सोएँ, जल्दी जागें" जैसे अनुशासन का पालन कर दिनचर्या को व्यवस्थित रखना।
- "व्यस्त रहें, मस्त रहें" इस सिद्धांत को अपनाकर निरोगी जीवन जीने की राह दिखाना।

**(६) वनौषधियों एवं प्राकृतिक चिकित्सा का उपयोग**

- घरेलू जड़ी-बूटियों और आयुर्वेदिक औषधियों के माध्यम से रोगों का उपचार करना।
- रासायनिक दवाओं की अति निर्भरता से बचकर प्राकृतिक चिकित्सा अपनाने की प्रेरणा देना।
- प्रत्येक प्रज्ञा संस्थान में वनौषधि डिस्पेंसरी की स्थापना कर, जन-जन को प्राकृतिक चिकित्सा का लाभ पहुँचाना।

## (ग) स्वास्थ्य आंदोलन की प्रासंगिकता और सामाजिक योगदान

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का स्वास्थ्य आंदोलन आज भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना उस समय था। वर्तमान समय में असंतुलित जीवनशैली, प्रदूषण, तनाव और अस्वास्थ्यकर आहार के कारण अनेक रोग बढ़ रहे हैं। इस स्थिति में आचार्यश्री द्वारा प्रतिपादित स्वास्थ्य सिद्धांत अत्यंत आवश्यक प्रतीत होते हैं। यदि समाज को स्वस्थ और सशक्त बनाना है, तो आहार, व्यायाम, स्वच्छता और मानसिक संतुलन की दिशा में व्यापक लोकशिक्षण की आवश्यकता है। यह आंदोलन न केवल व्यक्तिगत स्वास्थ्य को मजबूत करता है, बल्कि सामाजिक स्वास्थ्य को भी सुनिश्चित करता है, जिससे समाज में परस्पर प्रेम, सहयोग और सद्भाव का विकास होता है।

### (घ) **निष्कर्ष**

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का स्वास्थ्य आंदोलन केवल चिकित्सा पद्धति तक सीमित नहीं था, बल्कि यह एक समग्र जीवनशैली का प्रस्ताव था। यह आंदोलन मानवता के उत्थान की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल थी, जो व्यक्ति, परिवार और समाज तीनों स्तरों पर स्वास्थ्य और नैतिकता को विकसित करने के लिए प्रेरित करता था। यदि इस आंदोलन के सिद्धांतों को अपनाया जाए, तो न केवल रोगों से बचाव होगा, बल्कि मानवता के उत्कर्ष की दिशा में भी महत्वपूर्ण कदम उठाया जा सकेगा।

आचार्यश्री के अनुसार, "स्वास्थ्य की रक्षा केवल व्यक्तिगत लाभ नहीं, बल्कि सामाजिक कर्तव्य भी है। यदि हम स्वस्थ रहेंगे, तो समाज स्वस्थ होगा, और यदि समाज स्वस्थ होगा, तो मानवता भी समृद्ध होगी।" अतः यह आंदोलन न केवल स्वास्थ्य का विषय था, बल्कि यह एक सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और मानवीय पुनर्जागरण का भी माध्यम था।

## ६.६.३. शिक्षा आंदोलन

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य केवल एक संत, विचारक या समाज सुधारक ही नहीं थे, बल्कि वे एक महान शिक्षा शिल्पी भी थे। उन्होंने शिक्षा को मात्र साक्षरता तक सीमित न रखते हुए उसे व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के उत्थान का माध्यम माना। उनके अनुसार, शिक्षा केवल किताबी ज्ञान तक सीमित न रहकर जीवन जीने की कला सिखाने वाली होनी चाहिए। उनके शिक्षा आंदोलन की जड़ें मानवीय संवेदनाओं में निहित थीं, जिनका उद्देश्य ज्ञान के प्रकाश से समाज को जागरूक और आत्मनिर्भर बनाना था।

आज भी भारत के ग्रामीण और वंचित तबकों में शिक्षा का अभाव देखने को मिलता है, जो आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पिछड़ेपन का मुख्य कारण है। पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने इस समस्या को समझते हुए शिक्षा को जन-जन तक पहुँचाने का संकल्प लिया और 'कामकाजी विद्यालय', 'बाल संस्कारशाला' तथा 'संस्कृति मंडल' जैसी योजनाएँ प्रारंभ कीं, जिनका मूल उद्देश्य था — समाज के हर वर्ग तक शिक्षा का विस्तार कर उन्हें आत्मनिर्भर बनाना।

### (क) शिक्षा आंदोलन और मानवता

#### १. अशिक्षा उन्मूलन: आत्मनिर्भरता की ओर पहला कदम

मानवता की सेवा का सबसे बड़ा कार्य किसी को आत्मनिर्भर बनाना है। अशिक्षा केवल अज्ञानता ही नहीं, बल्कि व्यक्ति के आत्मसम्मान को भी प्रभावित करती है। पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का मत था कि जब तक प्रत्येक व्यक्ति बुनियादी शिक्षा प्राप्त नहीं कर लेता, तब तक समाज में आर्थिक असमानता और सामाजिक शोषण की स्थितियाँ बनी रहेंगी। उन्होंने ‘कामकाजी विद्यालयों’ की स्थापना का विचार प्रस्तुत किया, जहाँ अशिक्षित श्रमिकों, मजदूरों, और कामकाजी लोगों को साक्षर बनाया जा सके।

इन विद्यालयों का उद्देश्य केवल अक्षर ज्ञान देना नहीं, बल्कि व्यक्ति को उसकी रोजमर्रा की जरूरतों के अनुसार शिक्षित करना था। जैसे—

- पढ़ने-लिखने की बुनियादी शिक्षा
- बैंकिंग कार्यों की जानकारी
- सरकारी योजनाओं का लाभ लेने की प्रक्रिया
- घरेलू मरम्मत कार्य (बिजली, साइकल, सिलाई आदि)

- स्वावलंबन के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण

इस प्रकार की व्यावहारिक शिक्षा न केवल व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाती है, बल्कि उसे दूसरों पर निर्भर रहने से मुक्त कर आत्मसम्मान के साथ जीवन जीने की प्रेरणा देती है।

### २. नैतिकता और सांस्कृतिक मूल्यों का विकास

शिक्षा का उद्देश्य केवल आजीविका कमाने तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि व्यक्ति के नैतिक और सामाजिक स्तर को ऊँचा उठाने वाला भी होना चाहिए। इस दृष्टिकोण से पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने विद्यालयों में 'संस्कृति मंडलों' का गठन करने की प्रेरणा दी। इन मंडलों के माध्यम से विद्यार्थियों को नैतिकता, आदर्श जीवनशैली और भारतीय संस्कृति के मूलभूत सिद्धांतों से परिचित कराया जाता था।

उन्होंने विद्यार्थियों को जीवन के उच्च मूल्यों की शिक्षा देने के लिए 'भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा' का आयोजन प्रारंभ किया, जो केवल ज्ञान अर्जन का नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण का अभियान था। शिक्षा के इस रूप ने समाज में नई विचारधारा को जन्म दिया, जो मानवीय संवेदनाओं से ओतप्रोत थी।

### ३. बाल संस्कारशालाएँ: भविष्य की पीढ़ी को दिशा देने का प्रयास

बच्चों का बचपन जिस शिक्षा और संस्कारों से पोषित होता है, वही उनके भविष्य की नींव बनता है। पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने इस सच्चाई को पहचाना और 'बाल संस्कारशालाओं' की स्थापना का विचार प्रस्तुत किया। इन संस्कारशालाओं में—

- नैतिक मूल्यों की शिक्षा
- कमजोर छात्रों के लिए ट्यूटोरियल सहायता
- संस्कृतिपरक साहित्य और गीत-कविता के माध्यम से चरित्र निर्माण
- सामाजिक कुरीतियों के प्रति जागरूकता

इस योजना का मुख्य उद्देश्य था – भावी पीढ़ी को ऐसी शिक्षा देना, जो न केवल उन्हें विद्वान बनाए, बल्कि उन्हें एक अच्छा नागरिक और मानवता का संवाहक भी बनाए।

## (ख) शिक्षा और सामाजिक समरसता

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का शिक्षा आंदोलन केवल व्यक्तिगत विकास तक सीमित नहीं था, बल्कि इसका व्यापक उद्देश्य समाज में समरसता और समानता स्थापित करना था। उन्होंने शिक्षा को सामाजिक शोषण और विषमता से मुक्ति का सबसे प्रभावी साधन माना। शिक्षा आंदोलन के निम्नलिखित प्रभाव स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं—

- **सामाजिक जागरूकता** – शिक्षा के माध्यम से समाज में व्याप्त अंधविश्वासों, जातिगत भेदभाव और रूढ़ियों को मिटाने की दिशा में कार्य हुआ।
- **महिला सशक्तिकरण** – महिलाओं को शिक्षित करने की प्रेरणा दी गई, जिससे वे आत्मनिर्भर बन सकें और अपने अधिकारों के प्रति सजग रहें।
- **आर्थिक उन्नति** – व्यावसायिक प्रशिक्षण के माध्यम से युवाओं और मजदूरों को स्वरोजगार के अवसर प्राप्त हुए, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत हुई।
- **राष्ट्र निर्माण** – विचार क्रांति के माध्यम से राष्ट्र के प्रति प्रेम, सेवा और कर्तव्यपरायणता की भावना का विकास हुआ।

### (ग) निष्कर्ष

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का शिक्षा आंदोलन केवल साक्षरता बढ़ाने का प्रयास नहीं था, बल्कि यह मानवता के पुनर्जागरण का अभियान था। यह एक ऐसी शिक्षा प्रणाली का स्वप्न था, जो व्यक्ति को आत्मनिर्भर, नैतिक और समाज के प्रति उत्तरदायी बनाए। उनका विचार था कि यदि समाज के अंतिम व्यक्ति तक शिक्षा का प्रकाश पहुँचे, तो राष्ट्र के उत्थान को कोई रोक नहीं सकता।

आज भी उनके विचार और उनके द्वारा प्रारंभ किए गए शिक्षा आंदोलन प्रेरणा स्रोत हैं। यदि आधुनिक शिक्षा प्रणाली में उनकी शिक्षण पद्धतियों को अपनाया जाए, तो भारत में न केवल अशिक्षा दूर होगी, बल्कि एक सशक्त, आत्मनिर्भर और मानवतावादी समाज की स्थापना भी संभव होगी।

इस प्रकार, पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का शिक्षा आंदोलन केवल शैक्षणिक सुधार नहीं, बल्कि मानवता की सेवा के लिए एक दिव्य यज्ञ था, जिसने भारत में ज्ञान, संस्कार और सामाजिक समरसता का एक नवीन युग प्रारंभ किया।

## ६.६.४. स्वावलंबन आंदोलन

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा प्रवर्तित स्वावलंबन आंदोलन न केवल आर्थिक आत्मनिर्भरता का माध्यम था, बल्कि यह एक व्यापक सामाजिक और नैतिक क्रांति की ओर भी संकेत करता है। इस आंदोलन की आधारभूत प्रेरणा यह थी कि कोई भी समाज या राष्ट्र तब तक सशक्त नहीं हो सकता जब तक उसके नागरिक आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर न हों। आचार्यश्री का यह दृष्टिकोण केवल आर्थिक पहलू तक सीमित नहीं था, बल्कि उन्होंने इसे मानवीय गरिमा, आत्मसम्मान और सामाजिक सद्भाव से भी जोड़ा।

स्वावलंबन का अर्थ केवल आर्थिक समृद्धि नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के आत्मसम्मान और उसकी गरिमा से भी जुड़ा हुआ है। आर्थिक परनिर्भरता व्यक्ति को कमजोर बनाती है और समाज में असमानता को जन्म देती है। इसलिए, आचार्यश्री ने इस आंदोलन के माध्यम से लोगों को आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित किया। उनका कहना था कि व्यक्ति को अपने जीवनयापन के साधन स्वयं जुटाने चाहिए, ताकि वह किसी पर बोझ न बने और समाज के लिए एक उपयोगी सदस्य बन सके। यह विचार केवल आर्थिक दृष्टि से नहीं, बल्कि नैतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह व्यक्ति में आत्मसम्मान और आत्मनिर्भरता की भावना विकसित करता है।

### (क) ग्रामोद्योग और मानव कल्याण

भारत एक कृषि प्रधान देश है, और इसकी अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से गाँवों पर आधारित है। आधुनिकता के प्रभाव में जब लोग गाँवों से शहरों की ओर पलायन करने लगे, तब आचार्यश्री ने ग्रामोद्योग को बढ़ावा देने का सुझाव दिया। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि अगर ग्रामीण स्तर पर कुटीर उद्योगों को पुनर्जीवित किया जाए, तो बेरोजगारी की समस्या को दूर किया जा सकता है और गाँवों को आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है। इससे न केवल गाँवों में रोजगार के अवसर बढ़ेंगे, बल्कि ग्रामीण संस्कृति और परंपराएँ भी संरक्षित रहेंगी। इस प्रकार, उनका स्वावलंबन आंदोलन केवल आर्थिक सुधार का साधन नहीं था, बल्कि यह मानवीय जीवन की संपूर्णता को सहेजने का एक प्रयास भी था।

### (ख) श्रम की प्रतिष्ठा और मानवता

आचार्यश्री का मानना था कि श्रम ही सृजन का आधार है और किसी भी राष्ट्र की उन्नति श्रमशील नागरिकों पर निर्भर करती है। उन्होंने कहा कि कोई भी कार्य छोटा या बड़ा नहीं होता, बल्कि श्रम ही सबसे

बड़ी पूजा है। इस विचार को जन-जन तक पहुँचाने के लिए उन्होंने कुटीर उद्योगों की स्थापना का समर्थन किया और इस दिशा में कई योजनाएँ प्रस्तुत कीं। उन्होंने यह भी कहा कि यदि हर व्यक्ति श्रम को सम्मान की दृष्टि से देखे और अपने हाथों से मेहनत करके कमाए, तो समाज में न केवल आर्थिक समृद्धि आएगी, बल्कि सामाजिक संतुलन भी बना रहेगा।

### (ग) सामूहिकता और सहयोग की भावना

स्वावलंबन आंदोलन में आचार्यश्री ने सामूहिक प्रयासों पर विशेष बल दिया। उनका मानना था कि अकेले प्रयासों से कोई बड़ा बदलाव संभव नहीं है, बल्कि सामूहिक प्रयासों से ही समाज में व्यापक परिवर्तन लाया जा सकता है। उन्होंने स्वयं सहायता समूहों की अवधारणा प्रस्तुत की, जिसमें 8-10 लोग मिलकर कुटीर उद्योग स्थापित करें और सामूहिक रूप से काम करें। यह विचार न केवल आर्थिक सहयोग को बढ़ावा देता है, बल्कि यह परस्पर सहयोग और सौहार्द्र की भावना को भी विकसित करता है, जिससे समाज में एकता और भाईचारा बढ़ता है।

### (घ) पर्यावरण संतुलन और मानवता

स्वावलंबन आंदोलन के अंतर्गत आचार्यश्री ने यह भी कहा कि कुटीर उद्योगों को इस तरह से विकसित किया जाना चाहिए कि वे पर्यावरण के लिए हानिकारक न हों। उन्होंने उन उद्योगों को बढ़ावा देने की बात की जो प्रकृति-संगत हों, जैसे कि जैविक कृषि, गौ-पालन, हस्तशिल्प और परंपरागत हस्तकला। इससे न केवल ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी, बल्कि प्राकृतिक संसाधनों का भी सतत उपयोग संभव होगा। यह विचार मानवता के व्यापक कल्याण से जुड़ा है, क्योंकि यह भावी पीढ़ियों के लिए भी प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण सुनिश्चित करता है।

### (ङ) बेरोजगारी उन्मूलन और आर्थिक न्याय

आचार्यश्री का स्वावलंबन आंदोलन केवल कुछ व्यक्तियों की आर्थिक स्थिति सुधारने तक सीमित नहीं था, बल्कि इसका उद्देश्य संपूर्ण समाज में आर्थिक न्याय की स्थापना करना था। उन्होंने कहा कि यदि प्रत्येक व्यक्ति को रोजगार का अवसर मिले और उसे अपने श्रम का उचित मूल्य प्राप्त हो, तो गरीबी और आर्थिक असमानता को समाप्त किया जा सकता है। इस दृष्टि से, उनका आंदोलन समाज के कमजोर और वंचित वर्गों को सशक्त बनाने की दिशा में एक प्रभावी कदम था।

### (च) टूटे वस्त्रों की मरम्मत और अपव्यय रोकने का संदेश

स्वावलंबन आंदोलन के तहत उन्होंने टूटी वस्तुओं की मरम्मत करने को राष्ट्रीय हित में एक महत्वपूर्ण नीति माना। उनका यह विचार आधुनिक उपभोक्तावाद के विरुद्ध एक सशक्त संदेश था, जहाँ चीजों को उपयोग के बाद फेंकने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। यदि लोग पुरानी वस्तुओं की मरम्मत करके उनका पुनः उपयोग करें, तो इससे न केवल आर्थिक बचत होगी, बल्कि संसाधनों का अपव्यय भी रुकेगा। यह सोच सामाजिक और पर्यावरणीय दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि इससे प्राकृतिक संसाधनों की बर्बादी कम होगी और गरीब वर्गों को सस्ते में वस्त्र व अन्य उपयोगी सामान उपलब्ध हो सकेगा।

### (छ) आत्मनिर्भरता और राष्ट्र निर्माण

आचार्यश्री का मानना था कि यदि प्रत्येक व्यक्ति आत्मनिर्भर बने और अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं करने में सक्षम हो, तो राष्ट्र की प्रगति अवश्यंभावी हो जाएगी। उन्होंने स्वावलंबन आंदोलन के

माध्यम से देशवासियों को यह प्रेरणा दी कि वे अपने पैरों पर खड़े हों और दूसरों पर निर्भर न रहें। यह आत्मनिर्भरता केवल आर्थिक क्षेत्र तक सीमित नहीं थी, बल्कि यह आत्मिक और नैतिक स्तर पर भी आवश्यक थी। उन्होंने कहा कि यदि व्यक्ति आत्मनिर्भर होगा, तो वह अपने समाज और राष्ट्र के लिए भी अधिक उपयोगी सिद्ध होगा।

(ज) **निष्कर्ष**

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा प्रवर्तित स्वावलंबन आंदोलन केवल आर्थिक सुधार का साधन नहीं था, बल्कि यह मानवीय गरिमा, आत्मनिर्भरता, श्रम की प्रतिष्ठा, पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक समरसता से जुड़ा एक व्यापक आंदोलन था। इसका मूल उद्देश्य प्रत्येक व्यक्ति को सशक्त बनाना और समाज में आर्थिक व सामाजिक न्याय की स्थापना करना था। यह आंदोलन आज भी प्रासंगिक है, क्योंकि यह हमें आत्मनिर्भरता, श्रम के सम्मान और परस्पर सहयोग की भावना का संदेश देता है। यदि इस आंदोलन को व्यापक स्तर पर अपनाया जाए, तो यह न केवल आर्थिक क्रांति लाने में सहायक होगा, बल्कि संपूर्ण समाज को भी एक नए मानवीय और नैतिक दृष्टिकोण से समृद्ध कर सकता है।

## ६.६.५. पर्यावरण आंदोलन

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का पर्यावरण के प्रति दृष्टिकोण अत्यंत व्यावहारिक और दूरदर्शी था। उन्होंने पर्यावरण संरक्षण को मात्र एक वैज्ञानिक और तकनीकी विषय न मानकर, इसे मानवीय संवेदना और नैतिक उत्तरदायित्व से जोड़ा। उनका मानना था कि यदि मनुष्य को अपना अस्तित्व बनाए रखना है, तो उसे प्रकृति के साथ सामंजस्य बैठाना होगा। उनकी यह सोच केवल सैद्धांतिक नहीं थी, बल्कि इसे उन्होंने युग निर्माण आंदोलन और अपने विविध प्रयासों के माध्यम से समाज में व्यावहारिक रूप से उतारा।

मानव जीवन पूरी तरह से प्रकृति पर निर्भर है। जल, वायु, मृदा, वनस्पति, और जीव-जंतु – ये सभी प्राकृतिक संसाधन हमारी आधारशिला हैं। किंतु आधुनिक युग में बढ़ती भोगवादी प्रवृत्ति और असंतुलित औद्योगीकरण ने पर्यावरण को भारी क्षति पहुँचाई है। परिणामस्वरूप, जलवायु परिवर्तन, भूमि क्षरण, वायु और जल प्रदूषण जैसी समस्याएँ समूचे विश्व के लिए चिंता का विषय बन गई हैं।

### (क) पर्यावरण संरक्षण के प्रति पं. श्रीराम शर्मा आचार्य की दृष्टि

आचार्य जी ने पर्यावरण संरक्षण के लिए निम्नलिखित बिंदुओं पर विशेष बल दिया:

**१. प्रदूषण नियंत्रण एवं रोकथाम**

पर्यावरण की शुद्धता बनाए रखने के लिए आचार्य जी ने प्रदूषण रहित जीवनशैली को अपनाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि उपयोगिता और आवश्यकता को समझते हुए ही संसाधनों का दोहन करना चाहिए। उनके अनुसार-

- **"उपयोग करो और फेंको" संस्कृति का त्याग करें** – प्लास्टिक, रासायनिक कचरे, और औद्योगिक अपशिष्टों को सीमित करने का सुझाव दिया।
- **प्राकृतिक और श्रम आधारित कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहित करें** – बड़े उद्योगों के स्थान पर, ग्रामीण स्वरोजगार आधारित उद्योग अपनाने की प्रेरणा दी।
- **डीजल और पेट्रोल पर निर्भरता कम करें** – सार्वजनिक परिवहन, साइकिल, और सौर ऊर्जा को प्राथमिकता देने पर बल दिया।

## २. वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों का उपयोग

पेट्रोलियम ईंधनों के बढ़ते उपयोग के कारण न केवल पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है, बल्कि प्राकृतिक संसाधनों की भारी क्षति भी हो रही है। इस समस्या के समाधान के लिए आचार्य जी ने वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों पर ध्यान केंद्रित करने का संदेश दिया।

- सौर ऊर्जा, बायोगैस, और पवन ऊर्जा को बढ़ावा देने पर बल दिया।
- भोजन पकाने और पानी गर्म करने के लिए सौर ऊर्जा का उपयोग करने की सलाह दी।
- पारंपरिक चूल्हों के स्थान पर आधुनिक निर्धूम चूल्हों को अपनाने का आग्रह किया।
- "२१वीं सदी का वाहन" कहकर साइकिल को बढ़ावा देने का संदेश दिया।

## ३. वनीकरण और हरित संवर्द्धन

वनों की अंधाधुंध कटाई ने जलवायु संतुलन को गहरी क्षति पहुँचाई है। आचार्य जी ने वन संरक्षण और वृक्षारोपण को एक सामाजिक और धार्मिक कर्तव्य बताया।

- प्रत्येक गाँव का अपना वन होना चाहिए, ताकि गाँव अपनी ईंधन आवश्यकताओं के लिए आत्मनिर्भर बनें।
- जन्मदिन, विवाहदिन, पुण्यतिथि, रक्षा बंधन एवं अन्य धार्मिक अवसरों पर वृक्षारोपण को एक अनिवार्य परंपरा के रूप में स्थापित करने की प्रेरणा दी।
- सार्वजनिक स्थलों (मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, स्कूल, अस्पताल) में वृक्षारोपण को श्रमदान द्वारा बढ़ावा देने की बात कही।

## ४. कचरे का पुनः उपयोग (Waste Management)

कचरे की अव्यवस्थित निकासी पर्यावरणीय संकट को बढ़ा रही है। आचार्य जी ने कहा कि यदि हम सही ढंग से कचरे का प्रबंधन करें, तो इससे कई समस्याओं का समाधान हो सकता है।

- **घरेलू और जैविक कचरे से खाद बनाना** – केंचुआ खाद और कंपोस्ट खाद के उपयोग पर बल दिया।
- **गाँवों में सामूहिक कचरा निस्तारण योजना** – जैविक और अजैविक कचरे को अलग-अलग रखने और पुनः उपयोग की व्यवस्था पर जोर दिया।
- **प्लास्टिक प्रतिबंध** – प्लास्टिक बैग्स और अन्य हानिकारक पदार्थों के उपयोग को सीमित करने का आह्वान किया।

## ५. यज्ञ विज्ञान द्वारा पर्यावरण शुद्धि

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने पर्यावरण संरक्षण में यज्ञ की महत्ता को भी वैज्ञानिक दृष्टिकोण से स्थापित किया। उन्होंने बताया कि यज्ञ केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं है, बल्कि यह वायुमंडल की शुद्धि करने का एक वैज्ञानिक तरीका है।

- वैज्ञानिकों के प्रयोगों के अनुसार, यज्ञ से वायुमंडल के जीवाणु नष्ट होते हैं और हवा में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है।
- उन्होंने भारत और विदेशों में 23 अश्वमेध यज्ञों का आयोजन किया, जिनका उद्देश्य न केवल आध्यात्मिक जागरण था, बल्कि पर्यावरण को शुद्ध करना भी था।

### (ख) पर्यावरण संरक्षण: मानवता के लिए एक अनिवार्य संकल्प

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का पर्यावरण संरक्षण आंदोलन केवल प्रकृति की रक्षा तक सीमित नहीं था, बल्कि यह एक मानवीय आंदोलन भी था। उन्होंने कहा कि —

*"जो मनुष्य प्रकृति का सम्मान नहीं करेगा, उसे स्वयं भी सम्मान नहीं मिलेगा।"*

पर्यावरणीय संकट केवल वैज्ञानिक या सरकारी समस्या नहीं है, बल्कि यह हर व्यक्ति की जिम्मेदारी है। जब तक आमजन इसमें सहभागिता नहीं करेगा, तब तक कोई भी प्रयास सफल नहीं होगा। इसलिए उन्होंने पर्यावरण संरक्षण को व्यक्तिगत कर्तव्य और सामाजिक आंदोलन के रूप में अपनाने का आग्रह किया।

### (ग) निष्कर्ष

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का पर्यावरण संरक्षण आंदोलन केवल प्रकृति की रक्षा का आह्वान नहीं था, बल्कि यह मानवता के अस्तित्व की रक्षा का प्रयास था। उनका दृष्टिकोण वैज्ञानिक, व्यावहारिक और आध्यात्मिक था। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि —

- यदि हमें अपनी अगली पीढ़ी को सुरक्षित भविष्य देना है, तो हमें प्रकृति के साथ सामंजस्य बैठाना होगा।
- पर्यावरण संरक्षण केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि यह हर नागरिक का नैतिक दायित्व है।
- छोटे-छोटे प्रयासों, जैसे कि वृक्षारोपण, ऊर्जा संरक्षण, कचरा प्रबंधन, और यज्ञ विज्ञान के प्रयोग से भी बड़े परिवर्तन लाए जा सकते हैं।

आचार्य जी ने यह सिद्ध कर दिया कि पर्यावरण की रक्षा कोई असंभव कार्य नहीं है। यदि हर व्यक्ति अपने स्तर पर योगदान दे, तो संपूर्ण समाज को एक हरित, स्वस्थ और संतुलित भविष्य दिया जा सकता है। यह आंदोलन केवल प्रकृति की रक्षा तक सीमित नहीं, बल्कि यह मानवता की सुरक्षा का भी प्रतीक है।

## ६.६.६. नारी जागरण आंदोलन

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का चिंतन संपूर्ण मानवता के कल्याण पर केंद्रित था। उन्होंने समाज की उन्नति में नारी शक्ति की महत्त्वपूर्ण भूमिका को स्वीकार करते हुए, नारी जागरण आंदोलन की आवश्यकता पर बल दिया। उनका मानना था कि जब तक नारी अपनी सृजनात्मक भूमिका में समर्थ और स्वावलंबी नहीं बनेगी, तब तक परिवार, समाज और राष्ट्र का उत्थान संभव नहीं। उनका नारी जागरण आंदोलन केवल नारी उत्थान तक सीमित नहीं था, बल्कि यह संपूर्ण मानवता के नैतिक और सांस्कृतिक पुनरुत्थान का आधार था।

### (क) नारी शक्ति का पराभव और पुनरुत्थान

प्राचीन भारतीय समाज में नारी को 'शक्ति' के रूप में पूजा जाता था। लेकिन कालांतर में उसे पारिवारिक और सामाजिक बंधनों में जकड़कर उसके आत्मसम्मान, शिक्षा और अधिकारों से वंचित कर दिया गया। परिणामस्वरूप, नारी का स्थान घर तक सीमित रह गया और समाज की मुख्यधारा में उसकी भागीदारी नगण्य हो गई।

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने इस स्थिति को बदलने के लिए नारी जागरण आंदोलन चलाया। उन्होंने कहा कि नारी केवल परिवार की सेवा करने वाली इकाई नहीं है, बल्कि वह समाज का निर्माण करने वाली शक्ति है। यदि नारी शिक्षित, सशक्त और आत्मनिर्भर होगी, तो संपूर्ण मानवता का विकास संभव होगा।

## (ख) नारी जागरण आंदोलन के प्रमुख आयाम

### १. नारी स्वास्थ्य और जीवन स्तर सुधार

मानवता के उत्थान में स्वस्थ नारी का विशेष योगदान होता है। परंतु सामाजिक परंपराओं, अज्ञानता और असंवेदनशीलता के कारण महिलाओं का स्वास्थ्य उपेक्षित रहा। पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने नारी स्वास्थ्य के सुधार के लिए निम्नलिखित बिंदुओं पर विशेष बल दिया—

- संतुलित दिनचर्या और नियमित आराम की व्यवस्था हो।
- अनियंत्रित प्रजनन से महिलाओं के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभाव को रोका जाए।
- महिलाओं को प्राकृतिक वातावरण में खुली हवा, धूप और मानसिक आनंद के अवसर दिए जाएँ।
- महिलाओं को मानसिक रूप से स्वस्थ बनाने के लिए ध्यान, योग और आध्यात्मिक साधना से जोड़ने के प्रयास किए जाएँ।

### २. नारी शिक्षा का प्रसार

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का स्पष्ट मत था कि नारी शिक्षा केवल नौकरी के लिए नहीं, बल्कि संपूर्ण व्यक्तित्व विकास के लिए होनी चाहिए। उन्होंने नारी शिक्षा के लिए निम्नलिखित सुझाव दिए—

- शिक्षा को केवल औपचारिक विद्यालयों तक सीमित न रखा जाए, बल्कि घरेलू शिक्षण केंद्र और पुस्तकालयों की सुविधा भी विकसित की जाए।
- पारंपरिक शिक्षा के साथ-साथ, नैतिक मूल्यों, परिवार प्रबंधन, शिशु पालन और सामाजिक दायित्वों की शिक्षा भी दी जाए।
- विवाहित और प्रौढ़ महिलाओं के लिए भी शिक्षा की विशेष योजनाएँ चलाई जाएँ।
- बालिकाओं को आत्मरक्षा और आत्मनिर्भरता के लिए प्रेरित किया जाए।

### ३. नारी का आर्थिक स्वावलंबन

नारी के शोषण और पिछड़ेपन का प्रमुख कारण उसकी आर्थिक निर्भरता है। यदि नारी आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बने, तो वह समाज में अपने अधिकारों की रक्षा कर सकती है। पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने नारी स्वावलंबन के लिए निम्नलिखित सुझाव दिए—

- घरेलू और कुटीर उद्योगों को बढ़ावा दिया जाए।
- महिलाओं को हस्तशिल्प, सिलाई, बुनाई, खाद्य प्रसंस्करण, जैविक खेती, डेयरी और अन्य स्वरोजगार के साधनों से जोड़ा जाए।
- महिलाओं को आर्थिक स्वतंत्रता के लिए समूह बनाकर कार्य करने के लिए प्रेरित किया जाए।
- स्वरोजगार योजनाओं के लिए बैंक, सहकारी समितियों और सामाजिक संस्थाओं से सहयोग लिया जाए।

### ४. सामाजिक परिवर्तन में नारी की भूमिका

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने नारी जागरण आंदोलन को केवल नारी उत्थान तक सीमित नहीं रखा, बल्कि इसे संपूर्ण समाज सुधार का आधार माना। उन्होंने नारी को पारिवारिक और सामाजिक जीवन में समान भागीदारी देने का समर्थन किया। उनके अनुसार—

- नारी केवल परिवार की सेवा तक सीमित न रहे, बल्कि समाज और राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाए।
- महिलाओं को नेतृत्व के लिए प्रशिक्षित किया जाए, जिससे वे राजनीति, शिक्षा, प्रशासन, कला, विज्ञान आदि क्षेत्रों में योगदान दे सकें।
- कन्या भ्रूण हत्या, दहेज प्रथा, बाल विवाह, स्त्री शिक्षा की उपेक्षा जैसी कुरीतियों को समाप्त किया जाए।
- महिलाओं को धर्म और आध्यात्मिकता से जोड़कर, उनके भीतर आत्मबल और आत्मसम्मान का संचार किया जाए।

### (ग) नारी जागरण और संपूर्ण मानवता का विकास

नारी जागरण केवल नारी के लिए नहीं, बल्कि संपूर्ण मानवता के लिए आवश्यक है। जब एक नारी शिक्षित और सशक्त बनती है, तो वह अपने परिवार, समाज और राष्ट्र को भी आगे बढ़ाने में सहयोग देती है। एक सशक्त नारी—

- एक सुसंस्कृत और संवेदनशील पीढ़ी को जन्म देती है।
- समाज में समानता, प्रेम और सद्भाव का संदेश फैलाती है।
- आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करती है।
- पर्यावरण संरक्षण, स्वास्थ्य जागरूकता और नैतिक उत्थान में योगदान देती है।

### (घ) निष्कर्ष

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का नारी जागरण आंदोलन केवल स्त्री स्वतंत्रता का आंदोलन नहीं था, बल्कि यह संपूर्ण मानवता के नैतिक और सांस्कृतिक पुनरुत्थान का एक व्यापक अभियान था। उन्होंने नारी को शिक्षित, स्वावलंबी और आत्मनिर्भर बनाने पर जोर दिया, जिससे संपूर्ण समाज और मानवता का उत्थान संभव हो सके।

आज, जब समाज परिवर्तन के एक नए युग में प्रवेश कर रहा है, तब भी आचार्य जी के विचार पूर्णतः प्रासंगिक हैं। नारी जागरण आंदोलन के माध्यम से हम न केवल महिलाओं को सशक्त बना सकते हैं, बल्कि एक स्वस्थ, समृद्ध और संतुलित समाज की आधारशिला भी रख सकते हैं। मानवता के वास्तविक उत्थान के लिए नारी शक्ति को पुनः जाग्रत करना अत्यावश्यक है।

## ६.६.७. व्यसन मुक्ति, कुप्रथा उन्मूलन आंदोलन

मानवता के उत्थान में सबसे बड़े बाधक वे अवांछनीय प्रवृत्तियाँ हैं, जो समाज को शारीरिक, मानसिक और आर्थिक रूप से कमजोर बनाती हैं। इनमें व्यसन (नशा) और कुप्रथाएँ प्रमुख हैं। पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने अपने जीवनकाल में इन सामाजिक बुराइयों को मिटाने के लिए सतत संघर्ष किया और जनमानस को चेतना देने का कार्य किया। उन्होंने केवल नैतिक उपदेश नहीं दिए, बल्कि वैज्ञानिक तथ्यों, आध्यात्मिक साधना और सामाजिक चेतना के आधार पर इस आंदोलन को गति प्रदान की।

### (क) व्यसन मुक्ति आंदोलन और आचार्यश्री का योगदान

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का मानना था कि यदि व्यक्ति नशे और अन्य बुरी आदतों से मुक्त हो जाए, तो वह स्वयं, समाज और राष्ट्र की उन्नति में भागीदार बन सकता है। उनके विचारों को समझने के लिए निम्नलिखित बिंदुओं पर विचार किया जा सकता है:

(१) **स्वास्थ्य की हानि:** तंबाकू, गुटखा, शराब, चाय-कॉफी जैसी नशीली वस्तुएँ शरीर में गंभीर बीमारियों को जन्म देती हैं। मुख कैंसर, हृदय रोग, लिवर सिरोसिस जैसी बीमारियाँ मुख्य रूप से नशे के कारण होती हैं। आचार्यश्री ने लोगों को बताया कि ये व्यसन केवल व्यक्तिगत हानि नहीं पहुँचाते, बल्कि परिवार और समाज को भी आर्थिक एवं मानसिक रूप से कमजोर बनाते हैं।

(२) **आर्थिक नुकसान:** नशे पर होने वाला खर्च सीधे-सीधे समाज की उत्पादकता को प्रभावित करता है। यदि एक व्यक्ति प्रतिदिन केवल ५ रुपये का तंबाकू या सिगरेट का सेवन करता है, तो ४० वर्षों में लाखों रुपये व्यर्थ चला जाता है। आचार्यश्री ने इसे राष्ट्रीय संपत्ति की हानि बताया और जनता को इस बात का एहसास कराया कि यदि यही धन विकास कार्यों में लगे, तो समाज और देश की दशा बदल सकती है।

(३) **मानसिक एवं सामाजिक अपराध:** आँकड़ों के अनुसार, ८५% अपराध नशे की वजह से होते हैं। घरेलू हिंसा, बलात्कार, हत्या, आत्महत्या, सड़क दुर्घटनाएँ—इन सभी के पीछे शराब और अन्य नशीली वस्तुओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। आचार्यश्री ने इस पर गहरा चिंतन किया और कहा कि जब तक मनुष्य नशे से मुक्त नहीं होगा, तब तक वह अपने चरित्र का निर्माण नहीं कर सकता।

(४) **नैतिक और आध्यात्मिक पतन:** आचार्यश्री के अनुसार, नशा केवल एक आदत नहीं, बल्कि एक मानसिक दुर्बलता है, जो व्यक्ति को आत्मिक और नैतिक रूप से पतित कर देती है। उन्होंने इसके समाधान के रूप में "गायत्री साधना" को अपनाने की प्रेरणा दी। उनका मत था कि आत्मबोध और आध्यात्मिक अनुशासन से व्यक्ति में इतनी शक्ति आ जाती है कि वह व्यसनों से स्वयं को मुक्त कर सकता है।

### (ख) कुप्रथा उन्मूलन और सामाजिक जागरूकता

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने नशा मुक्ति के साथ-साथ समाज में व्याप्त कई कुप्रथाओं के उन्मूलन का भी बीड़ा उठाया। उनके अनुसार, समाज में अनेक ऐसी रूढ़ियाँ और परंपराएँ व्याप्त हैं, जो मानवता के लिए घातक हैं। इनमें प्रमुख रूप से—

(१) **बाल विवाह और अनमेल विवाह:** समाज में यह मान्यता थी कि लड़कियों की शादी छोटी उम्र में कर देना उनके भविष्य के लिए उचित है, जबकि यह उनके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए हानिकारक सिद्ध होता था। आचार्यश्री ने इस अंधविश्वास के विरुद्ध जागरूकता फैलाई और महिलाओं को शिक्षित करने का आग्रह किया।

(२) **महँगे विवाह और दहेज प्रथा:** विवाह को एक सामाजिक समारोह के बजाय धन और प्रतिष्ठा के प्रदर्शन का साधन बना दिया गया था। महँगी दावतें, फिजूलखर्ची, और दहेज ने समाज को आर्थिक रूप से कमजोर किया। आचार्यश्री ने इन बुराइयों के विरुद्ध व्यापक आंदोलन चलाया और सादगीपूर्ण विवाह का संदेश दिया।

(३) **आडंबर और धार्मिक भ्रांतियाँ:** भूत-प्रेत, भाग्यवाद, टोना-टोटका जैसी भ्रांतियाँ समाज में व्याप्त थीं, जिससे लोग आलसी और निष्क्रिय बनते जा रहे थे। आचार्यश्री ने तर्क, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और आध्यात्मिक साधना के माध्यम से इन्हें दूर करने का प्रयास किया। उन्होंने बताया कि जीवन की सफलता पुरुषार्थ और सदाचरण पर निर्भर करती है, न कि अंधविश्वास पर।

## (ग) **कैसे छूटें व्यसन—कैसे मिटें कुरीतियाँ?**

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का दृष्टिकोण केवल समस्या के विश्लेषण तक सीमित नहीं था, बल्कि उन्होंने उसके समाधान भी सुझाए। उनके अनुसार, नशा और कुरीतियों से मुक्ति के लिए निम्नलिखित कदम उठाए जाने चाहिए—

(१) **शिक्षा और जनजागरण:** लोगों को यह बताना आवश्यक है कि ये व्यसन और कुप्रथाएँ कितनी घातक हैं। इसके लिए दीवार लेखन, पुस्तकों का वितरण, सत्संग, नाटक, रेडियो, टेलीविजन और जनसंपर्क का उपयोग किया जाना चाहिए।

(२) **आध्यात्मिक साधना:** व्यक्ति की मानसिक दुर्बलता को दूर करने के लिए गायत्री मंत्र जाप, ध्यान और संयम का अभ्यास आवश्यक है। इससे आत्मबल बढ़ता है और व्यक्ति नशे व बुरी आदतों से मुक्त हो सकता है।

(३) **सामाजिक दबाव:** धार्मिक आयोजनों में, पारिवारिक समारोहों में, और विवाह संबंधों में यह देखा जाना चाहिए कि संबंधित व्यक्ति नशे से मुक्त हो। यदि समाज में नशा करने वालों को आदर न दिया जाए, तो वे स्वयं इसे छोड़ने के लिए विवश हो सकते हैं।

(४) **नैतिक अनुशासन:** आचार्यश्री ने कहा कि नैतिकता ही वह आधार है, जिससे समाज को उन्नत बनाया जा सकता है। यदि परिवार और समाज के वरिष्ठजन आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करें, तो नई पीढ़ी भी उन्हें अपनाने के लिए प्रेरित होगी।

## (घ) **निष्कर्ष**

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का संपूर्ण जीवन समाज सुधार और मानवता की सेवा के लिए समर्पित था। उन्होंने व्यसन मुक्ति और कुप्रथा उन्मूलन को केवल एक सामाजिक सुधार आंदोलन नहीं, बल्कि आत्मिक उत्थान का एक महत्वपूर्ण साधन बताया। उनके विचारों के प्रभाव से लाखों लोगों ने नशे और बुरी आदतों को छोड़कर एक सृजनात्मक जीवन की ओर कदम बढ़ाया।

आज जब समाज फिर से नशे और अनैतिक कुरीतियों की चपेट में आ रहा है, तब आचार्यश्री की शिक्षाएँ और अधिक प्रासंगिक हो जाती हैं। यदि हम उनके द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलें, तो न केवल व्यक्तिगत जीवन में सुधार होगा, बल्कि संपूर्ण समाज एक आदर्श, समृद्ध और सशक्त राष्ट्र के रूप में विकसित हो सकेगा।

---

## **साक्ष्य स्रोत:**

उपरोक्त अध्याय "***सप्तसूत्री आंदोलन***" का अध्ययन निम्न साक्ष्य स्रोतों के आधार पर कर तार्किक विश्लेषण किया है।


- *पं. श्रीराम शर्मा आचार्य, हमारे सात आंदोलन, युग निर्माण विस्तार ट्रस्ट, गायत्री तपोभूमि मथुरा, २०१०, पृष्ठ १-३२.*
- *Vicharkranti Pustakalaya, Website – https://vicharkrantibooks.org, हमारे सात आंदोलन.*

# ६.७. साहित्यिक योगदान

परमपूज्य पं. श्रीराम शर्मा आचार्यजी का जीवन एक दिव्य तपस्वी, महान समाज-सुधारक, दूरदर्शी युगद्रष्टा और युगप्रवर्तक ऋषि का था। उनके अस्सी वर्षों के जीवन का एक-एक क्षण साधना, सेवा और सृजन को समर्पित रहा। लगभग ८० वर्षों के इस जीवनयात्रा में, यदि बाल्यकाल के १५ वर्ष भी निकाल दिए जाएँ, तो शेष ६५ वर्ष उन्होंने यथार्थतः तपस्वी की भाँति जिए—गायत्रीमय, कर्ममय और कल्याणमय। यह जीवन केवल उनका निजी आध्यात्मिक उत्थान नहीं था, बल्कि संपूर्ण मानवता के जागरण की एक महायात्रा थी, जिसकी धुरी बनी—उनकी लेखनी।

गुरुदेव ने अपने जीवन को साहित्य की साधना बना दिया। उन्होंने लेखन को आत्मशोधन, समाज निर्माण और युग परिवर्तन का माध्यम बनाया। उनकी लेखनी ने असंख्य जिज्ञासुओं, साधकों और सामान्य जन को न केवल दिशा दी, बल्कि उन्हें भीतर से झकझोरकर नवनिर्माण हेतु प्रेरित किया। उन्होंने लगभग ३,२०० पुस्तकों की रचना की, जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को स्पर्श करती हैं—व्यक्ति निर्माण, परिवार निर्माण, समाज और राष्ट्र निर्माण, आत्मचिंतन, स्वास्थ्य, योग-साधना, धर्म और विज्ञान का समन्वय, नैतिक मूल्यों का पुनरुत्थान, स्त्री जागरण, बाल निर्माण, युवाओं का चरित्र निर्माण, और मानवता के उत्थान जैसे अनगिनत विषय उनके साहित्य में समाहित हैं।

उनका साहित्य केवल नवीन रचनाओं तक सीमित नहीं रहा। उन्होंने वेद, उपनिषद, गीता, पुराण, स्मृतियाँ, षड्दर्शन, योग व तंत्र ग्रंथों सहित समस्त आर्ष वाङ्मय का सरल, सुलभ, वैज्ञानिक तथा व्यावहारिक भाष्य प्रस्तुत किया। प्राचीन ऋषियों के गूढ़ विचारों को आधुनिक संदर्भों से जोड़कर जनसामान्य के लिए उपयोगी बनाना—यह उनके साहित्य की विलक्षण विशेषता रही।

उनकी लेखनी जीवन को जागृत करने वाली एक ध्वनि थी—जो मूर्छितों में चेतना का संचार करे, शोकाकुलों में आशा का संचार करे और साधकों को पथ का प्रकाश दे। हर लेख में तप की ऊष्मा, करुणा की स्निग्धता, और विज्ञान की तर्कसम्मत स्पष्टता विद्यमान थी। वह साहित्य न केवल पढ़ने योग्य था, अपितु जीने योग्य था—एक जीवन-दर्शन की तरह।

गुरुदेव का साहित्य मात्र ग्रंथों का संग्रह नहीं, वह युगधर्म का घोष है; एक मिशन है—जो करोड़ों जीवनों को दिशा दे चुका है और अनंत काल तक देता रहेगा। यह अध्याय उनके साहित्यिक अवदान की उसी सशक्त धारा को उजागर करता है, जिसने युग निर्माण योजना की नींव रखी और एक विराट गायत्री परिवार के रूप में उसे मूर्त रूप प्रदान किया।

## ६.७.१. अखंड ज्योति पत्रिका:

पुज्यवर ने 'अखंड ज्योति' पत्रिका पहला अंक सन १९३७ में हाथ से बने कागज पर छापा था, पर यह मासिक नियमित न रहकर दो-ढाई वर्षो तक एक पाती का ही काम करता रहा। सन् १९४० से यह पत्रिका पहले आगरा व फिर मथुरा से प्रकाशित होने लगी। १९४० से प्रारंभ हुई 'अखंड ज्योति' पत्रिका आचार्यश्री की साहित्यिक क्रांति का प्रमुख स्तंभ बनी। यह पत्रिका मात्र एक साहित्यिक रचना न होकर समाज को जागरूक करने की एक महत्वपूर्ण सशक्त माध्यम बनी।

इसके माध्यम से पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने आत्मबोध, समाज सुधार, नारी जागरण, युवा प्रेरणा और विश्व शांति के संदेशों का प्रचार किया। इसमें प्रकाशित लेखों ने लाखों लोगों को नशामुक्ति, सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन, स्वावलंबन और नैतिक उत्थान की दिशा में प्रेरित किया। यह पत्रिका आज भी मानवता की सेवा में अपना योगदान दे रही है।

## ६.७.२. आर्ष ग्रंथों का सरल भाष्य:

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने भारतीय आध्यात्मिक परंपरा के सर्वाधिक महत्वपूर्ण ग्रंथों को केवल अध्ययन और पूजा तक सीमित न रखते हुए, उन्हें आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण और तर्कसंगत विश्लेषण द्वारा साधारण जनमानस के लिए सुलभ बनाया। उन्होंने ***चारों वेद, १०८ उपनिषद, १८ पुराण, ६ दर्शन शास्त्र, २० स्मृतियाँ, गीता तथा योगविद्या के गूढ़ सिद्धांतों*** का सरल हिंदी में भाष्य किया। यह कार्य केवल एक पंडितीय व्याख्या नहीं था, बल्कि मानवता के व्यापक कल्याण के लिए एक अभिनव प्रयास था। उनके इन भाष्यों ने समाज में एक नैतिक, आत्मिक और आध्यात्मिक पुनर्जागरण की शुरुआत की।

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा आर्ष ग्रंथों का सरल और वैज्ञानिक भाष्य केवल विद्वानों और शोधकर्ताओं के लिए नहीं, बल्कि हर व्यक्ति के लिए एक अमूल्य धरोहर है। उनके भाष्यों ने भारतीय आध्यात्मिकता को केवल धार्मिक कर्मकांडों से निकालकर एक व्यवहारिक जीवन पद्धति में रूपांतरित किया।

- उन्होंने प्राचीन ज्ञान को आधुनिक विज्ञान से जोड़ा और इसे आधुनिक समाज के लिए प्रासंगिक बनाया।
- उनके द्वारा लिखित ग्रंथों ने नैतिकता, चरित्र निर्माण, महिला सशक्तिकरण, सामाजिक समरसता और विश्वशांति की दिशा में एक क्रांतिकारी परिवर्तन किया।
- उनके प्रयासों ने वेदों, उपनिषदों और गीता को केवल ग्रंथों तक सीमित न रखते हुए, इन्हें एक आध्यात्मिक और सामाजिक सुधार के आंदोलन का आधार बना दिया।

इस प्रकार, उनके भाष्यों ने संपूर्ण मानवता को आध्यात्मिक ज्ञान, नैतिक उत्थान और आत्मिक शांति का मार्ग प्रदान किया, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए भी उतना ही मूल्यवान रहेगा।

## ६.७.३. गायत्री महाविज्ञान पर साहित्य:

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने अपने जीवनकाल में आध्यात्मिक जागरण के लिए असंख्य ग्रंथों की रचना की, जिनमें 'गायत्री महाविज्ञान' एक अत्यंत महत्वपूर्ण उपलब्धि है। गायत्री मंत्र भारतीय आध्यात्मिक परंपरा का प्राण है, और आचार्यश्री ने इसे केवल धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित न रखते हुए इसे मानवता की जागृति और सार्वभौमिक कल्याण का मंत्र बनाया। उनके द्वारा लिखित *'गायत्री महाविज्ञान', 'गायत्री कामधेनु', 'गायत्री का वैज्ञानिक आधार', 'गायत्री की सर्वसुलभ साधनाएँ', 'वेदशास्त्रों का निचोड़ गायत्री', 'गायत्री के चौदह रत्न'* सहित ढाई सौ से अधिक ग्रंथ न केवल आध्यात्मिक साधकों के लिए अमूल्य निधि हैं, बल्कि ये मानव समाज के नैतिक, मानसिक और आत्मिक उत्थान में भी सहायक सिद्ध हुए हैं।

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा लिखित गायत्री महाविज्ञान पर आधारित साहित्य केवल आध्यात्मिकता का प्रचार नहीं करता, बल्कि यह मानवता की मानसिक, नैतिक और आत्मिक उत्थान का आधार भी प्रस्तुत

करता है। उनके ग्रंथों ने यह सिद्ध किया कि गायत्री मंत्र केवल जप का विषय नहीं, बल्कि यह एक क्रांतिकारी विचारधारा है, जो व्यक्ति को आत्मशुद्धि, समाज सुधार और विश्व कल्याण की ओर अग्रसर करती है।

आचार्यश्री की लेखनी ने गायत्री मंत्र को एक सार्वभौमिक साधना, वैज्ञानिक प्रक्रिया और नैतिक उत्थान का माध्यम बनाकर इसे जन-जन तक पहुँचाया। उनका यह अद्वितीय योगदान मानवता के लिए एक अनमोल धरोहर है, जो आत्मिक शांति, सामाजिक समरसता और विश्व बंधुत्व की स्थापना की दिशा में एक महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान करता है।

## ६.७.४. विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय पर साहित्य:

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने अध्यात्म को केवल पूजा-पद्धति या उपासना तक सीमित न रखकर उसे विज्ञानसम्मत जीवनशैली के रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने मानव-कल्याण के लिए विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय को आवश्यक और अपरिहार्य माना। *"एक ही सत्य के दो अन्वेषक - धर्म और विज्ञान", "ज्ञान और विज्ञान एक दूसरे के सहोदर", "नर से नारायण बनने का प्रगति पथ", "भानुमती का जादुई पिटारा: मानवी मस्तिष्क", "पितर हमारे अदृश्य सहायक", "मरणोत्तर जीवन और उसकी सच्चाई"* जैसे दो दर्जन से अधिक ग्रंथों के माध्यम से उन्होंने युगबोधी चिंतन प्रस्तुत किया जो नितांत मौलिक भी है और प्रामाणिक भी।

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय पर जो अद्वितीय साहित्य सृजन किया, वह मानवता के लिए एक अभिनव चिंतनधारा के रूप में उभरकर सामने आया। उनके लेखन का उद्देश्य केवल ज्ञान का प्रसार नहीं था, बल्कि उन्होंने इसे मानव कल्याण और आत्मविकास का माध्यम बनाया। उन्होंने यह प्रतिपादित किया कि विज्ञान और अध्यात्म विरोधी नहीं, बल्कि एक ही सत्य के दो अन्वेषण हैं। विज्ञान बाह्य जगत को समझने का प्रयास करता है, जबकि अध्यात्म आंतरिक चेतना के रहस्यों को उद्घाटित करता है। आचार्यश्री का साहित्य इस समन्वय को उजागर कर मानवता को एक नई दिशा देने का कार्य करता है।

आचार्यजी का यह साहित्य केवल बौद्धिक अभ्यास नहीं, बल्कि एक मानवीय क्रांति है।

- उन्होंने आत्मा के उत्कर्ष और समाज के उत्कर्ष को एक साथ जोड़ा।
- उनके चिंतन ने अंधश्रद्धा और नास्तिकता दोनों का खंडन कर विवेकशील धार्मिकता की स्थापना की।
- उनका यह साहित्य विज्ञान में रुचि रखने वाले युवाओं को अध्यात्म की ओर और आध्यात्मिक साधकों को विज्ञान की ओर प्रेरित करता है, जिससे संतुलित और यथार्थ जीवनशैली का निर्माण होता है।
- यह दृष्टिकोण मानवता के उज्ज्वल भविष्य का आधार बनता है, क्योंकि इसमें जीवन की समस्याओं का वैज्ञानिक समाधान और आत्मा की शांति का आध्यात्मिक मार्ग दोनों समाहित हैं।

विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय पर पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का साहित्य आधुनिक मानवता के लिए एक संजीवनी सूत्र है। उनके द्वारा प्रस्तुत विचारधारा न तो केवल कर्मकांड है, न ही शुष्क बौद्धिकता; वह एक जीवंत चेतना है, जो व्यक्ति को आत्मोन्नति की ओर, परिवार को सुसंस्कार की ओर, और समाज को सामूहिक कल्याण की ओर ले जाती है। यह साहित्य आज के भौतिक और आध्यात्मिक द्वंद्व से ग्रस्त युग को समन्वय का सशक्त विकल्प देता है — यही उनकी *महानतम मानवीय देन* है।

## ६.७.५. धर्मतंत्र से लोकशिक्षण पर साहित्य:

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने धर्म को केवल पूजा-पाठ या कर्मकांड तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे मानवता के उत्थान का सशक्त साधन बनाया। उन्होंने अपने लेखन और जीवन-दर्शन से धर्म को लोककल्याण की दिशा में प्रवाहित किया। "*धर्मतंत्र से लोकशिक्षण: प्रयोग और उपलब्धियाँ*", "*रामायण कीर्तन*", "*श्रीराम कथा*", "*श्रीमद्भागवत के प्रेरक तत्व*", "*श्रीमद्भागवत कथा*", "*वक्तृत्व कला एवं शक्ति*", "*उत्कृष्ट चिंतन और उसकी प्रतिक्रिया*", "*मानस ज्योति*", "*मानस के मोती*", "*पर्वों की प्रेरणा और पद्धति*" जैसे सैकड़ों ग्रंथों के माध्यम से उन्होंने धर्म को जनसामान्य के जीवन में *संस्कार, प्रेरणा और चेतना का स्रोत* बना दिया।

आचार्यजी का यह साहित्य अंधविश्वासों को दूर करता है और *धर्म की वैज्ञानिक, तात्त्विक और व्यावहारिक व्याख्या* करता है। उन्होंने धर्म को वर्ग-विशेष का विषय नहीं, अपितु *जनसामान्य की चेतना का अंग* बनाया। उनके धर्म-आधारित लोकशिक्षण ने लोगों में सद्भाव, सहिष्णुता और सेवा की भावना को सुदृढ़ किया। इस साहित्य के द्वारा उन्होंने धर्म के माध्यम से समाज में एकता, जागरूकता और मूल्यनिष्ठा की नींव रखी।

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का "धर्मतंत्र से लोकशिक्षण" पर केंद्रित साहित्य धर्म की पुनः स्थापना का अद्भुत उदाहरण है। यह साहित्य न केवल धार्मिक भावना को जाग्रत करता है, अपितु उसे एक क्रियाशील, उद्देश्यपूर्ण और जनोपयोगी स्वरूप भी प्रदान करता है। उन्होंने धर्म को आत्मकल्याण से उठाकर समाज निर्माण और मानवता के जागरण का माध्यम बना दिया, जो उनके युगदृष्टा होने का प्रमाण है। यह साहित्य आज के समाज के लिए एक ऐसा पथप्रदर्शक है, जो आस्था को सक्रियता से जोड़कर मानव जीवन को गरिमामय और समाज को दिव्य दिशा देने वाला बनाता है।

## ६.७.६. व्यक्ति, परिवार और समाज निर्माण पर साहित्य:

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा रचित साहित्य केवल आध्यात्मिक या धार्मिक विचारधारा तक सीमित नहीं था, बल्कि उनके ग्रंथों में समाज के प्रत्येक पहलू—व्यक्ति, परिवार और समाज के नैतिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक उत्थान की प्रेरणा स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। उन्होंने यह भली-भाँति समझा कि किसी भी राष्ट्र या समाज की उन्नति का आधार व्यक्ति का आत्म-विकास, पारिवारिक समरसता और सामाजिक संरचना की दृढ़ता में निहित होता है। उनके इसी चिंतन का प्रतिफल उनके द्वारा लिखित अनेक पुस्तकों में दृष्टिगोचर होता है।

### (क) व्यक्ति-निर्माण: आत्म-विकास का आधार

व्यक्ति के नैतिक एवं आत्मिक उत्थान को आचार्यजी ने समाज के पुनरुत्थान की प्रथम शर्त माना। उन्होंने *'आत्मकर्षण आधार', 'हर दिन नया जन्म - हर रात नई मौत', 'मनुष्य शरीर की गौरव-गरिमा', 'अपनी प्रतिष्ठा अपने हाथ'* जैसी पुस्तकों के माध्यम से आत्मनिर्माण एवं आत्मपरिष्कार के लिए आवश्यक सिद्धांतों को प्रतिपादित किया। उनके अनुसार, व्यक्ति का आत्म-विकास न केवल उसे स्वयं में संतुलित एवं सशक्त बनाता है, बल्कि समाज में भी सकारात्मक ऊर्जा का संचार करता है।

## (ख) परिवार-निर्माण: सुसंस्कृत और गरिमामय दांपत्य जीवन

परिवार समाज की मूल इकाई है और इसके संतुलन एवं शुद्धता के बिना एक सभ्य समाज की परिकल्पना नहीं की जा सकती। आचार्यजी ने *'परिवार और उसका निर्माण', 'गृहस्थ एक योग साधना', 'परिवार को सुसंस्कृत बनाएँ', 'सफल दाम्पत्य सुखी जीवन', 'दाम्पत्य जीवन के स्वर्णिम सूत्र', 'संयुक्त परिवार सुख का द्वार'* जैसी पुस्तकों के माध्यम से पारिवारिक संबंधों को संतुलित, मर्यादित एवं गरिमामय बनाए रखने की प्रेरणा दी। उनका मानना था कि यदि प्रत्येक परिवार में नैतिकता, प्रेम, सम्मान और आपसी सहयोग की भावना हो, तो समाज स्वयं ही सशक्त और उन्नत बन सकता है। *'नारी जागरण', 'नारी और परिवार', 'गृहस्थ जीवन में स्त्री की भूमिका'* जैसी पुस्तकों के माध्यम से उन्होंने यह संदेश दिया कि स्त्रियों को पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त होने चाहिए और वे भी समाज के निर्माण में उतनी ही भागीदारी निभा सकती हैं।

## (ग) समाज-निर्माण: समरसता और नैतिकता का आधार

समाज का वास्तविक विकास तब संभव है, जब उसमें नैतिकता, सामाजिक न्याय और परस्पर सहयोग की भावना प्रबल हो। आचार्यजी *ने 'समय का सदुपयोग करें', 'उत्कृष्ट चिंतन और उसकी प्रतिक्रिया', 'मानस ज्योति', 'मानस के मोती', 'पर्वों की प्रेरणा और पद्धति'* जैसी पुस्तकों के माध्यम से सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय चेतना को जाग्रत करने का कार्य किया। उन्होंने समाज में व्याप्त कुरीतियों, असमानताओं और आडंबरों का खंडन करते हुए आत्म-परिष्कार एवं सेवा के माध्यम से समाज सुधार की दिशा में अग्रसर होने का संदेश दिया।

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा रचित व्यक्ति, परिवार और समाज-निर्माण पर केंद्रित साहित्य केवल शब्दों का संकलन नहीं है, बल्कि यह एक ऐसा मार्गदर्शन है, जो प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन को उच्च आदर्शों के अनुरूप ढालने और समाज के पुनर्निर्माण में योगदान देने हेतु प्रेरित करता है। उनका साहित्य मानवता के उत्थान का एक अभिन्न साधन है, जो युगों तक समाज को मार्गदर्शित करता रहेगा।

## ६.७.७. प्रज्ञापुराण: एक नवपुराण की संकल्पना

महापुरुषों का लेखन केवल शब्दों का संकलन नहीं होता, बल्कि वह समाज के लिए एक अमूल्य धरोहर होता है, जो आने वाली पीढ़ियों को दिशा प्रदान करता है। पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा रचित प्रज्ञापुराण इसी दिशा में एक अनूठा प्रयास है। यह केवल धार्मिक आख्यानों का संग्रह नहीं, बल्कि जीवन के हर पहलू को उन्नत करने वाली एक प्रेरणादायी रचना है, जो व्यक्ति, परिवार, समाज और संपूर्ण मानवता के लिए उपयोगी सिद्ध हुई है।

पौराणिक साहित्य भारतीय संस्कृति का मेरुदंड रहा है, किन्तु समाज में समय के साथ इसकी प्रासंगिकता को लेकर कई भ्रांतियाँ उत्पन्न हो गईं। इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए आचार्य जी ने अठारह पारंपरिक पुराणों के बाद *प्रज्ञापुराण के रूप में एक उन्नीसवें पुराण की रचना* की। इस मौलिक पुराण में उन्होंने आधुनिक संदर्भों को समाहित किया, जिससे यह एक समसामयिक और प्रेरणादायी ग्रंथ बन सका।

आचार्य जी ने प्रज्ञापुराण के माध्यम से भारतीय अध्यात्म को एक नई दिशा दी, जो केवल साधना या पूजा-पद्धति तक सीमित नहीं है, बल्कि वह व्यक्ति के जीवन के प्रत्येक पहलू को परिष्कृत करने का कार्य करती है। यह ग्रंथ लोगों को आत्मनिर्माण, समाजसेवा, नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना तथा मानवता की सेवा के लिए प्रेरित करता है।

प्रज्ञापुराण केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि सामाजिक पुनर्जागरण का एक महत्त्वपूर्ण साधन है। यह व्यक्ति के आत्मनिर्माण से लेकर संपूर्ण समाज के उत्कर्ष तक की यात्रा का पथप्रदर्शक है। आचार्य श्रीराम शर्मा का यह मौलिक साहित्य मानवता के लिए एक अनुपम भेंट है, जो आने वाले युगों तक लोगों को प्रेरित करता रहेगा।

## ६.७.८. सामाजिक कुरीति उन्मूलन पर साहित्य:

समाज में व्याप्त कुरीतियाँ और अंधविश्वास न केवल व्यक्तिगत विकास में बाधा डालते हैं, बल्कि सामाजिक प्रगति को भी अवरुद्ध कर देते हैं। पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने इस विकृति को गहराई से समझा और अपने साहित्य के माध्यम से सामाजिक सुधार की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने अपनी पुस्तकों और लेखों के माध्यम से समाज में फैली बुराइयों पर करारी चोट की तथा जनमानस को वैज्ञानिक, तार्किक और विवेकशील दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित किया। आचार्य जी ने अनेक पुस्तकें लिखकर यह स्पष्ट किया कि समाज में व्याप्त कई परंपराएँ और मान्यताएँ वास्तविक धर्म का हिस्सा नहीं हैं, बल्कि ये अज्ञानता और संकीर्णता के कारण विकसित हुई हैं। उनकी प्रमुख कृतियाँ जैसे—

### (क) विवाह संस्कार में सुधार:

विवाह के आदर्श सिद्धांतों पर लिखी गई उनकी रचनाएँ विवाह को मात्र एक रस्म के रूप में देखने की प्रवृत्ति को बदलने में सहायक बनीं। '*तीन दिन का सत्यानाशी विवाहोन्माद*' जैसी पुस्तक ने विवाह में फिजूलखर्ची और दिखावे की प्रवृत्ति पर गंभीर चोट की।

### (ख) भाग्यवाद से कर्मवाद की ओर प्रेरणा:

'*हम भाग्यवादी नहीं, कर्मवादी बनें*' के माध्यम से उन्होंने यह समझाया कि मनुष्य को अपनी उन्नति के लिए भाग्य के भरोसे नहीं बैठना चाहिए, बल्कि पुरुषार्थ और कर्तव्यनिष्ठा को अपनाना चाहिए।

### (ग) अंधविश्वासों के विरुद्ध अभियान:

'*अंधविश्वासी नहीं, विवेकशील बनें*' पुस्तक ने समाज में फैले मिथकों और अंधविश्वासों की वैज्ञानिक विवेचना प्रस्तुत की। उन्होंने धर्म और अध्यात्म के नाम पर फैलाए गए झूठे विश्वासों को तार्किकता की कसौटी पर परखा और समाज को जागरूक किया।

### (घ) भिक्षावृत्ति और मृतक भोज जैसी प्रथाओं के विरोध में जनजागरण:

'*भिक्षा-व्यवसाय: देश और समाज का कलंक*' में उन्होंने स्पष्ट किया कि भिक्षावृत्ति केवल समाज की कमजोरी नहीं, बल्कि राष्ट्र की आर्थिक और मानसिक दासता का प्रतीक है। इसी प्रकार '*मृतकभोज की क्या आवश्यकता?*' पुस्तक ने मृत्यु के बाद भोज जैसी गैर-जरूरी प्रथाओं पर सवाल उठाए और लोगों को इस दिखावे से मुक्त होने के लिए प्रेरित किया।

### (ङ) नारी गरिमा और समानता पर बल:

'*नारी को तिरस्कृत न किया जाए*' जैसी पुस्तक ने महिलाओं के सम्मान, उनके अधिकारों और समाज में उनकी गरिमा को स्थापित करने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का यह साहित्य केवल आलोचना तक सीमित नहीं था, बल्कि इसमें समाधान और सुधार के ठोस सुझाव भी प्रस्तुत किए गए। उनकी लेखनी ने हजारों लोगों को प्रेरित किया, जिससे समाज में सकारात्मक बदलाव आए।

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का सामाजिक कुरीति उन्मूलन पर लिखा गया साहित्य एक विचार क्रांति का माध्यम बना। उन्होंने अपने साहित्य के द्वारा मनुष्य को विवेकशील, तर्कसंगत और सामाजिक रूप से जागरूक बनने की प्रेरणा दी। उनकी पुस्तकों ने अंधविश्वास और रूढ़ियों को हटाकर एक उन्नत, सभ्य और मानवतावादी समाज की स्थापना की दिशा में मार्ग प्रशस्त किया। यह साहित्य युगों-युगों तक समाज सुधारकों और विचारशील व्यक्तियों को प्रेरणा देता रहेगा।

## ६.७.९. पर्वों और संस्कारों का पुनर्जागरण पर साहित्य:

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा रचित साहित्य में भारतीय संस्कृति की आत्मा—*पर्व और संस्कार*—को नवजीवन देने का कार्य विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उन्होंने *'श्रावणी पर्व विधान', 'पितृ अमावस्या पर्व विधान', 'विजयादशमी और दीपावली पर्व', 'गीता जयंती और वसंत पंचमी पर्व', 'शिवरात्रि और होलिका पर्व', 'गायत्री जयंती और गुरुपूर्णिमा पर्व'* तथा समग्र रूप में *'पर्व प्रकाश'* जैसे ग्रंथों द्वारा पर्वों को आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टि से पुनः प्रतिष्ठित किया।

हर पर्व को उन्होंने केवल धार्मिक अनुष्ठान न मानकर, *मानव जीवन की दिशा निर्धारण का प्रेरक पर्व* बताया। उदाहरणस्वरूप: *श्रावणी पर्व* को उन्होंने ज्ञान की दीक्षा का क्षण बताया। *पितृ अमावस्या* को पितृ ऋण और पारिवारिक उत्तरदायित्व का बोधक बनाया। *दीपावली और विजयादशमी* को आंतरिक अंधकार से मुक्ति और असुरता पर आत्मबल की विजय का प्रतीक बताया। इस दृष्टि से ये पर्व *व्यक्ति को आत्मचिंतन, आत्मसुधार और सामाजिक उत्तरदायित्व* के लिए जागृत करते हैं।

इसी प्रकार, संस्कार *विषयक 'पुसंवन और नामकरण संस्कार', 'अन्न प्राशन, चुड़ाकर्म और विद्यारंभ संस्कार', 'यज्ञोपवीत और वानप्रस्थ संस्कार', 'विवाह संस्कार', 'मरणोत्तर और अंत्येष्टि संस्कार', 'जन्मदिवस व विवाह संस्कार'*, तथा विशद ग्रंथों *'कर्मकाण्ड भाष्कर', 'षोडश संस्कार विवेचन'* और *'संस्कारों की पुण्य परंपरा'* के माध्यम से आचार्यजी ने षोडश संस्कारों का पुनरुद्धार कर धर्म को लोकहित का औजार बना दिया।

आचार्यजी के अनुसार, जन्म से मृत्यु तक के षोडश संस्कार केवल परंपरा नहीं, बल्कि *मानव जीवन को संस्कारित करने की सुनियोजित प्रणाली* हैं। *नामकरण से आत्मपहचान, विद्यारंभ से ज्ञान के प्रति श्रद्धा, यज्ञोपवीत से उत्तरदायित्वबोध, विवाह से पारिवारिक संतुलन* तथा *अंत्येष्टि से जीवन की शाश्वतता का बोध*—इन सभी संस्कारों को उन्होंने *आधुनिक दृष्टिकोण से पुनर्परिभाषित* किया। इससे समाज में एक नैतिक, उत्तरदायी और विचारशील मानव के निर्माण की दिशा प्रशस्त होती है।

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने अपने साहित्य के माध्यम से पर्वों और संस्कारों का जो पुनर्जागरण किया, वह केवल एक धार्मिक या सांस्कृतिक पुनर्निर्माण नहीं था, बल्कि मानवता के उद्धार के लिए एक सशक्त प्रयास था। उनके द्वारा प्रस्तुत पर्वों और संस्कारों का यह साहित्य समाज में आध्यात्मिक जागृति, सामाजिक जिम्मेदारी और मानव मूल्यों के प्रति संवेदनशीलता को बढ़ावा देता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि आचार्यजी ने धर्म, संस्कृति और समाज को समानांतर रूप से आगे बढ़ाने के लिए पर्वों और संस्कारों को एक सशक्त

साधन के रूप में प्रस्तुत किया, जो न केवल भारत, बल्कि सम्पूर्ण मानवता के लिए एक अमूल्य धरोहर साबित हुई।

## ६.७.१०. स्वास्थ्य संवर्धन और आरोग्य रक्षा पर साहित्य:

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने स्वास्थ्य को केवल शारीरिक तंदुरुस्ती तक सीमित न रखकर इसे आध्यात्मिक और मानसिक उन्नति से जोड़ा। उनका मानना था कि मानवता की सेवा और समाज सुधार के लिए व्यक्ति का स्वस्थ रहना अनिवार्य है। उन्होंने *'आरोग्य रक्षा के रहस्य', 'प्राकृतिक चिकित्सा विज्ञान', 'स्वच्छता मनुष्य का गौरव', 'व्यायाम हमारी अनिवार्य आवश्यकता', 'तन-मन स्वस्थ रहे ऐसा आहार करें'* जैसी पुस्तकों के माध्यम से स्वास्थ्य संवर्धन का एक वैज्ञानिक और व्यावहारिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया।

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का स्वास्थ्य संवर्धन  और आरोग्य रक्षा पर किया गया लेखन केवल चिकित्सकीय दृष्टिकोण तक सीमित नहीं, बल्कि यह संपूर्ण मानवता के लिए एक आदर्श जीवनशैली का मार्गदर्शन करता है। उनके साहित्य ने व्यक्ति, समाज और राष्ट्र को एक समग्र स्वास्थ्य दृष्टिकोण प्रदान किया, जिससे सभी लोग आत्मनिर्भर, स्वस्थ और संतुलित जीवन जी सकें।

## ६.७.११. संतों, महापुरुषों और समाज सुधारकों के जीवन पर साहित्य:

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने समाज सुधार और आत्मोत्थान के लिए संतों, महापुरुषों और समाज सुधारकों के जीवन को एक अनुकरणीय उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने सौ से अधिक संतों और महापुरुषों के जीवनचरित लिखे, जिससे प्रत्येक व्यक्ति उनके विचारों को आत्मसात कर अपने जीवन को उत्कृष्ट बना सके। उनके द्वारा लिखित जीवन चरित्र केवल ऐतिहासिक दस्तावेज़ नहीं हैं, बल्कि वे एक आदर्श जीवन जीने की प्रेरणा भी प्रदान करते हैं।

### (क) **संतों के जीवनचरित:**

आचार्य जी ने भारत के महान संतों जैसे – *समर्थ गुरु रामदास, संत कबीर, संत तुलसीदास, गुरु नानक, संत ज्ञानेश्वर, संत तुकाराम, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, विनोबा भावे* आदि अनेक महान संतों के जीवन चरित्र लिखकर उनकी शिक्षाओं को सरल भाषा में जनसामान्य तक पहुँचाया। इन संतों के जीवन में भक्ति, ज्ञान, सेवा और मानव कल्याण के जो मूल्य थे, उन्हें आचार्य जी ने अपने लेखन के माध्यम से पुनर्जीवित किया।

### (ख) **महापुरुषों के जीवनचरित:**

उन्होंने महापुरुषों के जीवन पर भी गहराई से प्रकाश डाला, जिनमें शामिल हैं – *वीर शिवाजी, वीर सावरकर, महात्मा गांधी, नेताजी सुभाषचंद्र बोस, भगत सिंह, लोकमान्य बालगंगाधर तिलक, सरदार पटेल, मदन मोहन मालवीय* आदि अनेक महापुरुषों के संघर्ष, नेतृत्व और समाज सुधार के प्रयासों को उन्होंने विस्तार से वर्णित किया, ताकि युवा पीढ़ी उनसे प्रेरणा लेकर समाज और राष्ट्र के उत्थान में योगदान दे सके।

### (ग) **समाज सुधारकों के जीवनचरित:**

उन्होंने कई समाज सुधारकों के कार्यों को भी जनसामान्य तक पहुँचाया, जिनमें प्रमुख हैं - *राजा राममोहन राय* (सती प्रथा उन्मूलन), *स्वामी दयानंद सरस्वती* (आर्य समाज आंदोलन), *ईश्वरचंद्र विद्यासागर*

(महिला शिक्षा) इन समाज सुधारकों के कार्यों को उजागर करके उन्होंने समाज में फैली कुरीतियों, अंधविश्वासों और रूढ़ियों को दूर करने का मार्ग प्रशस्त किया।

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा लिखे गए संतों, महापुरुषों और समाज सुधारकों के जीवन चरित केवल ऐतिहासिक विवरण नहीं हैं, बल्कि वे सामाजिक क्रांति और आत्म-विकास के लिए एक मजबूत आधारशिला हैं। उन्होंने इन्हें केवल पढ़ने की वस्तु नहीं, बल्कि जीवन में उतारने योग्य शिक्षाओं के रूप में प्रस्तुत किया। उनके इस योगदान ने न केवल भारतीय समाज को दिशा दी, बल्कि पूरे विश्व के लिए एक प्रेरणास्रोत का कार्य किया।

## ६.७.१२. मानव उत्थान और युग निर्माण पर साहित्य:

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने अपने लेखन और विचारों के माध्यम से समाज में परिवर्तन लाने हेतु "युग निर्माण योजना" की अवधारणा प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कि यदि व्यक्ति स्वयं को बदल ले, तो समाज और राष्ट्र में स्वतः ही सकारात्मक परिवर्तन आएगा। इस विचार को मूर्त रूप देने के लिए उन्होंने *"युग निर्माण योजना के आदर्श सिद्धांत," "युग निर्माण की शिक्षण प्रक्रिया," "हम बदले तो दुनिया बदले," "सतयुग की वापसी", "समाज की अभिनव रचना," "नये युग का सूत्रपात"* जैसी सैकड़ों पुस्तकों की रचना की। इन ग्रंथों के माध्यम से उन्होंने न केवल मानवता के उत्थान का मार्ग प्रशस्त किया, बल्कि एक आदर्श समाज की रचना के लिए ठोस कार्य योजना भी प्रस्तुत की।

आचार्य जी ने अपने साहित्य में बताया कि युग निर्माण केवल एक सुधार आंदोलन नहीं, बल्कि ***मनुष्य में देवत्व जागरण एवं धरती पर स्वर्ग के अवतरण*** की एक सशक्त प्रक्रिया है। उनके अनुसार, युग परिवर्तन का कार्य चार प्रमुख स्तंभों पर आधारित है:

१. **विचार क्रांति** - नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों का पुनर्जागरण

२. **व्यक्तित्व निर्माण** - आत्मसंस्कार और आत्मोत्थान

३. **परिवार निर्माण** - संस्कारित और सुसंस्कृत परिवारों की स्थापना

४. **समाज निर्माण** - शोषणमुक्त, न्यायपूर्ण और समतामूलक समाज की रचना

इन स्तंभों को मूर्त रूप देने के लिए उन्होंने सैकड़ों पुस्तकों के माध्यम से समाज को प्रेरित किया।

आचार्य जी की युग निर्माण साहित्य श्रृंखला का मानवता पर व्यापक प्रभाव पड़ा। उनके विचारों ने लाखों लोगों को प्रेरित किया और समाज में अनेक सकारात्मक बदलाव लाए।

**१. मानव चेतना का जागरण:** उनके साहित्य ने लोगों को आत्मपरिष्कार और आत्मोत्थान के लिए प्रेरित किया।

**२. समाज में नैतिकता और सदाचार की पुनर्स्थापना:** उनके द्वारा बताए गए सिद्धांतों को अपनाकर समाज में नैतिकता और ईमानदारी को पुनर्जीवित करने का प्रयास हुआ।

**३. परिवार संस्था को सशक्त बनाया:** उनके ग्रंथों ने संयुक्त परिवार प्रणाली, आपसी प्रेम, आदर और सहयोग को पुनः स्थापित करने में योगदान दिया।

४. **युवाओं को दिशा दी:** उनके साहित्य ने विशेष रूप से युवा पीढ़ी को राष्ट्र सेवा और समाज कल्याण की ओर प्रेरित किया।

५. **विश्व शांति और एकता का संदेश:** उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से समस्त मानव जाति के कल्याण के लिए कार्य करने की प्रेरणा दी।

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने अपने "युग निर्माण साहित्य" के माध्यम से न केवल व्यक्ति के आत्म-विकास की दिशा में मार्गदर्शन किया, बल्कि संपूर्ण समाज को एक नई चेतना और दिशा देने का कार्य किया। उनकी रचनाएँ मात्र पुस्तकों का संग्रह नहीं हैं, बल्कि वे एक आंदोलन, एक क्रांति और एक नवयुग की आधारशिला हैं। *उन्होंने मानवता के उत्थान के लिए जो साहित्य लिखा, वह आने वाले समय में भी समाज को प्रकाशमान करता रहेगा।*

## ६.७.१३. बाल निर्माण पर साहित्य:

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने बालकों को राष्ट्र और समाज के भविष्य का निर्माणकर्ता मानते हुए उनके सर्वांगीण विकास पर विशेष ध्यान दिया। उन्होंने इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए *"बच्चे और उनका मनोविज्ञान," "बालकों का नवनिर्माण," "बच्चों की शिक्षा-दीक्षा," "बाल विकास की समस्याएँ," "बालकों को इस तरह सुधारिए"* जैसी अनेक पुस्तकों की रचना की। इन ग्रंथों के माध्यम से उन्होंने यह दर्शाया कि यदि बचपन को सही दिशा दी जाए, तो एक उज्ज्वल और सशक्त समाज का निर्माण संभव है।

आचार्य जी का बाल निर्माण साहित्य केवल बालकों के विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका व्यापक प्रभाव संपूर्ण समाज पर पड़ता है। उनके विचारों के आधार पर किए गए प्रयासों से समाज में अनेक सकारात्मक बदलाव देखने को मिले:

१. **चरित्रवान पीढ़ी का निर्माण:** उनके साहित्य ने समाज को यह संदेश दिया कि यदि बचपन में सही संस्कार दिए जाएँ, तो व्यक्ति अपने जीवन में सच्चाई, ईमानदारी और परोपकार को अपनाता है।

२. **नैतिक शिक्षा का प्रसार:** उनके द्वारा लिखित पुस्तकों ने माता-पिता, शिक्षक और समाज को प्रेरित किया कि वे बच्चों को केवल बौद्धिक शिक्षा न दें, बल्कि उनमें नैतिकता और मानवीय गुणों का विकास भी करें।

३. **परिवार और समाज में समरसता:** उनके साहित्य से यह संदेश मिला कि बालकों के उचित विकास के लिए परिवार, समाज और राष्ट्र को अपनी जिम्मेदारी निभानी होगी।

४. **राष्ट्र निर्माण की आधारशिला:** उन्होंने यह स्पष्ट किया कि यदि बचपन को सही दिशा दी जाए, तो आने वाले समय में एक आदर्श समाज और सशक्त राष्ट्र का निर्माण संभव है।

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का बाल निर्माण पर लिखा गया साहित्य केवल शैक्षिक या नैतिक उपदेश नहीं है, बल्कि यह संपूर्ण समाज को एक नई दिशा देने वाला प्रेरणास्रोत है। उनके ग्रंथों में न केवल बच्चों के मानसिक, शारीरिक और नैतिक विकास की बातें हैं, बल्कि यह भी बताया गया है कि परिवार, शिक्षक और समाज कैसे मिलकर एक उज्ज्वल भविष्य की नींव रख सकते हैं। उनके द्वारा दिया गया यह अमूल्य साहित्य आने वाली पीढ़ियों को सही मार्गदर्शन देने में सहायक रहेगा और एक आदर्श समाज की रचना का माध्यम बनेगा।

## निष्कर्ष

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का साहित्यिक योगदान केवल धार्मिक या आध्यात्मिक सीमाओं तक सीमित नहीं रहा, बल्कि वह बहुआयामी, जीवनोन्मुख और युगानुकूल रहा है। उनका समस्त लेखन मानवीय चेतना को झकझोरने, विचारों को उन्नत करने और जीवन में नैतिकता, विवेक एवं करुणा की स्थापना करने हेतु समर्पित रहा है।

उन्होंने न केवल गायत्री महाविज्ञान और वेद-मंत्रों का सरल भाष्य प्रस्तुत कर जन-सामान्य को आध्यात्मिक ज्ञान का सहज सुलभ मार्ग दिखाया, बल्कि विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय द्वारा जीवन के गूढ़ रहस्यों को भी उजागर किया। अखंड ज्योति जैसी पत्रिका के माध्यम से उन्होंने एक सतत वैचारिक आंदोलन खड़ा किया, जो आज भी करोड़ों व्यक्तियों के मन-मस्तिष्क को आलोकित कर रहा है।

उन्होंने मानव मात्र के उत्थान के लिए ऐसा साहित्य रचा, जिसमें एक ओर सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन का प्रखर स्वर है, तो दूसरी ओर संस्कारों के पुनर्जागरण और परिवार निर्माण की सूक्ष्म प्रक्रिया भी वर्णित है। उनका लेखन व्यक्ति निर्माण की एक प्रयोगशाला है, जिसमें जीवन के प्रत्येक पक्ष को सकारात्मक परिवर्तन की दृष्टि से देखा गया है। बाल निर्माण, आरोग्य रक्षा, संतों-महापुरुषों के जीवन तथा युग निर्माण अभियान जैसे विषयों पर उनका साहित्य, मानवता को उसकी श्रेष्ठतम संभावनाओं की ओर ले जाता है। उन्होंने मानव जाति के कल्याण के लिए अपने जीवन के अंतिम क्षण तक कलम नहीं छोड़ी। उनका साहित्य मात्र पठन सामग्री नहीं, बल्कि आत्मचिंतन, आत्मपरिष्कार और आत्मोत्थान का माध्यम है।

इस प्रकार, पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का साहित्य मानवता की सेवा में समर्पित एक विराट जीवन-दर्शन है, जो न केवल वर्तमान समय की समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करता है, अपितु भविष्य की दिशा को भी आलोकित करता है। उनका यह साहित्यिक उत्तराधिकार, युगों तक मानवता को ज्ञान, श्रद्धा, सेवा, आत्मबल और विवेक से सुसंपन्न करता रहेगा।

---

## साक्ष्य स्रोत:

उपरोक्त अध्याय "***साहित्यिक योगदान***" का अध्ययन निम्न साक्ष्य स्रोतों के आधार पर कर तार्किक विश्लेषण किया है।


- *ब्रह्मवर्चस, पं. श्रीराम शर्मा आचार्य वाड्.मय-१: युगद्रष्टा का जीवनदर्शन, अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा, संशोधित संस्करण २०२१, पृष्ठ ६२०-६२२, ७१२-७४५.*
- *ब्रह्मवर्चस, ब्रह्म कमल, श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट, शान्तिकुंज, हरिद्वार, प्रथम खण्ड २०११, पृष्ठ ७७-८०, १०७-११०.*
- *युग निर्माण योजना, युग निर्माण योजना- एक परिचय, युग निर्माण विस्तार ट्रस्ट, गायत्री तपोभूमि मथुरा, पुनरावृत्ति २०१८, पृष्ठ ३५-११४.*

# ७. स्वाभिमत (खुद का नजरिया)

## ७.१. भूमिका

'मनुष्य में देवत्व का उदय और धरती पर स्वर्ग का अवतरण' — यह कोई कल्पना नहीं, बल्कि युगद्रष्टा पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा दी गई वह दार्शनिक दृष्टि है, जो मानवता को उसकी दिव्यता की ओर जागृत करने का सत्प्रयास है। इस विचार को मैं केवल एक आदर्श नहीं, बल्कि एक आचरणीय जीवनशैली मानता हूँ। इसी भावभूमि पर आधारित यह मेरा शोधकार्य, गुरुदेव के जीवन, व्यक्तित्व और कार्यों के माध्यम से मानवता के नव निर्माण की संभावनाओं की तलाश है।

श्रीमद्भगवद्गीता के अध्याय ४ (ज्ञान योग) का श्लोक संख्या ७ *"यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानम् अधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥"* के अनुसार मैं मानता हूँ कि किसी भी युग में जब अंधकार, अन्याय, मूल्यहीनता और अमानवीय प्रवृत्तियाँ बढ़ने लगती हैं, तब समय एक नई चेतना, एक नवीन सृजन, एक दिव्य दृष्टा की माँग करता है। उन्नीसवीं सदी के अंत और बीसवीं सदी के मध्य भाग में भारत सहित संपूर्ण विश्व ने जब भौतिकता की अंधी दौड़ में आत्मिक मूल्यों को तिलांजलि दी, तब पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जैसे महामानव का उदय हुआ। उनका जीवन एक महाकाव्य है — जिसमें तप है, त्याग है, चिंतन है, और सबसे बढ़कर — मानवीय करुणा से ओतप्रोत कार्य।

गुरुदेव ने अपने ८० वर्ष के जीवनकाल में, बाल्यावस्था के लगभग १५ वर्षों को छोड़कर, शेष ६५ वर्षों तक सतत लेखनी चलाई और ३२०० से अधिक ग्रंथों की रचना की। यह साहित्य केवल लेखन नहीं, तपश्चर्या, साधना और आत्मबोध से उपजा हुआ अमृत है। यदि कोई साधक या लेखक इन ग्रंथों का पूर्णत: अध्ययन कर उनके अनुरूप लेखन का प्रयास करे, तो शायद उसे ८०० वर्ष भी कम पड़ें। उनके विशाल व्यक्तित्व और वृहद् कार्य को यदि कोई उपमा दी जा सकती है, तो वह है — गागर में सागर।

इस असीम सागर में डुबकी लगाकर, मैंने केवल कुछ रत्नों को खोजने का प्रयास किया है। गुरुदेव के जिन ग्रंथों और विचारों तक मेरी पहुँच हुई, उनका अध्ययन-मनन करते हुए मैंने 'पं. श्रीराम शर्मा आचार्य: उनका व्यक्तित्व एवं कार्य और मानवता' विषयक यह शोध प्रबंध तैयार किया है।

इस संदर्भ में मुझे प्राचीन दृष्टांत — 'हाथी और अंधों की कहानी' स्मरण होती है। जैसे प्रत्येक अंध व्यक्ति हाथी के जिस अंग को छूता है, वह उसी को ही हाथी समझ लेता है, वैसे ही मेरी स्थिति भी कुछ वैसी ही है। गुरुदेव का संपूर्ण व्यक्तित्व और उनका कार्य एक विराट सत्ता है, और मेरी दृष्टि उसमें से केवल उतने ही अंश को पकड़ सकी है, जितनी मुझे अनुभूति हुई। फिर भी, यह प्रयास पूर्ण श्रद्धा, अध्ययन और साधना के भाव से किया गया है, और आशा करता हूँ कि यह मानवता के दृष्टिकोण से उपयोगी सिद्ध होगा।

मेरे शोध का उद्देश्य केवल उनके योगदानों की गणना करना नहीं, बल्कि यह समझना है कि उनके जीवन और विचारों ने मानवता को किस प्रकार गहराई से प्रभावित किया और आगे के युगों के लिए क्या दिशा-निर्देश छोड़े हैं। इस दृष्टि से जब मैं उनके ग्रंथों की रचना, और साधना-संयम से युक्त जीवन को देखता हूँ, तो यह स्पष्ट होता है कि यह साधारण पुरुष का नहीं, एक ऋषि चेतना का कार्य था, जिसे उन्होंने "युग निर्माण" नाम दिया।

मैं इस शोधकार्य को केवल एक शैक्षणिक प्रक्रिया के रूप में नहीं देखता। यह मेरे लिए एक आध्यात्मिक यात्रा, एक साधना, और एक आत्मिक संवाद का माध्यम बन गया है, जिसमें मैंने न केवल गुरुदेव के जीवन और कार्यों को पढ़ा, अपितु उन्हें महसूस भी किया।

## ७.२. गुरुदेव का व्यक्तित्व: संयम, तप और दृष्टा का समन्वय

शोध की आरंभिक अवस्था में जब मैंने पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के बाल्यकाल, शिक्षा, गुरुदीक्षा, स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ाव, हिमालय यात्रा, साहित्यिक रचनाएँ, संस्थागत निर्माण और सामाजिक आंदोलनों का अध्ययन किया, तो यह अनुभव हुआ कि उनका जीवन प्रारंभ से ही असाधारण था। मात्र १५ वर्ष की आयु में उन्होंने गायत्री मंत्र की दीक्षा लेकर जो २४ महापुरश्चरणों का संकल्प लिया, वह एक सामान्य व्यक्ति की सामर्थ्य से परे था। यह उनके भीतर उपस्थित आध्यात्मिक धैर्य, नैतिक दृढ़ता, और स्व-अनुशासन का प्रमाण है।

इस अध्ययन में मैंने पाया कि वे न केवल एक गायत्री के सिद्ध साधक थे, बल्कि आध्यात्मिक गुरु, दूरदर्शी विचारक और युगदृष्टा, समाज सुधारक और कर्मयोगी, सादा जीवन - उच्च विचार धारण करने वाला व्यक्तित्व, दयालु और संवेदनशील स्वभाव के धनी, साधना, तप और आत्मसंयम का जीवन जीने वाला व्यक्तित्व, साहित्यिक और बौद्धिक व्यक्तित्व, अद्भुत संगठनकर्ता और नेतृत्व क्षमता वाला व्यक्तित्व, विनम्रता और आत्मीयता से परिपूर्ण व्यक्तित्व, विज्ञान और अध्यात्म के समन्वयक, अनुशासनप्रियता और आत्मनिर्माण के प्रेरक, राष्ट्रवादी और समाजनिष्ठ विचारक, प्रेरक वक्ता, सृजनशील कार्यकर्ता, मार्गदर्शक और एक लोकसेवी आदी के रूप में भुमिका का था। उन्होंने अपने विचारों, लेखनी और कर्मों से समाज में नैतिक उत्थान और आध्यात्मिक जागरूकता की लहर उत्पन्न की।

आचार्यजी का संदेश यही है कि सच्ची आध्यात्मिकता केवल पूजा-पाठ में नहीं, बल्कि समाज सेवा, राष्ट्र प्रेम, आत्मसंयम और नैतिक जीवन में है। उनका जीवन सिखाता है कि यदि हम सादगी, अनुशासन और आत्मनिर्माण को अपनाएँ, तो न केवल अपना जीवन सफल बना सकते हैं, बल्कि संपूर्ण समाज और राष्ट्र के उत्थान में योगदान दे सकते हैं।

उनकी शिक्षाएँ और जीवन दर्शन आज भी प्रासंगिक हैं और आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करते रहेंगे। वे केवल अतीत की महान विभूति नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए भी एक प्रकाशस्तंभ हैं, जो हमें सत्य, प्रेम, करुणा और सेवा के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं। उनकी विचारधारा को आत्मसात कर हम न केवल स्वयं का उत्थान कर सकते हैं, बल्कि संपूर्ण मानवता के लिए योगदान दे सकते हैं।

गुरुदेव के व्यक्तित्व की जितनी गहराई है, उससे अधिक उसकी व्यापकता है। उनकी दृष्टि केवल भारत तक सीमित नहीं थी, वे संपूर्ण मानवता की चेतना को जाग्रत करना चाहते थे। यही कारण था कि उन्होंने 'अखिल विश्व गायत्री परिवार' की स्थापना कर जन-जन को साधना, सेवा और स्वावलंबन से जोड़ने का कार्य किया।

## ७.३. गुरुदेव के कार्य: विचार, संस्था और संस्कार

गुरुदेव के कार्यों की जब मैं गहराई से विवेचना करता हूँ, तो पाता हूँ कि उनका समग्र जीवन एक सुनियोजित, सुव्यवस्थित एवं दूरदर्शी परियोजना के रूप में विकसित हुआ। "अखण्ड ज्योति संस्थान"

"गायत्री तपोभूमि" की स्थापना से लेकर "शांतिकुंज" के उदय और "ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान" के सृजन तक — हर संस्था के पीछे एक गहरी वैज्ञानिक सोच, सामाजिक विश्लेषण और आध्यात्मिक उद्देश्य था।

गुरुदेव ने न केवल संस्थाएँ खड़ी कीं, बल्कि उनमें कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए संस्कार और अनुशासन की शिक्षा भी दी। वे मानते थे कि व्यक्ति बदलो, युग बदलेगा। इसी कारण उन्होंने युग निर्माण योजना के अंतर्गत लाखों स्वयंसेवकों को प्रेरित किया — जो आत्मनिर्माण, परिवार-निर्माण और समाज-निर्माण में जुटे।

## ७.४. गुरुदेव का साहित्य: विचार क्रांति का वाहक

जैसे-जैसे शोध आगे बढ़ा, मैं उनके साहित्य के विराट स्वरूप से प्रभावित होता गया। उनकी लेखनी में शब्दों की साधना है, विचारों की तीव्रता है और आत्मिक ऊर्जा का संचार है। उन्होंने ३२०० से अधिक पुस्तकों की रचना की — और ये केवल धार्मिक या आध्यात्मिक नहीं थीं, बल्कि 'गायत्री महाविज्ञान', 'आर्ष ग्रंथों का भाष्य', 'व्यक्ति, परिवार और समाज निर्माण', 'विज्ञान और अध्यात्म का समन्वय', 'स्वास्थ्य संवर्धन और आरोग्य रक्षा', 'शिक्षा','पर्वो और संस्कारों का पुनर्जागरण', 'महिला जागरण', 'सामाजिक कुरीती उन्मुलन', 'मानव उत्थान और युग निर्माण' जैसे विविध विषयों को स्पर्श करती हुई मानवता का संदेश देती है।

उनका लेखन विचार क्रांति का आधार बना। वे मानते थे कि विचारों से ही परिवर्तन संभव है। उन्होंने शब्दों को यंत्र नहीं, मंत्र बनाया — जो पाठक के अंतःकरण में चेतना का संचार करते हैं।

## ७.५. शोध की यात्रा : जिज्ञासा से समर्पण तक

इस शोध के आरंभ में मैं केवल एक शोधार्थी था, परंतु जैसे-जैसे गुरुदेव के जीवन और साहित्य का अध्ययन करता गया, मेरा अंतर्मन उनके विचारों में डूबता गया। उनके व्यक्तित्व की सरलता, जीवन की सादगी, और विचारों की गहराई ने मुझे भीतर से झकझोर दिया।

यह शोध मेरे लिए एक 'बौद्धिक प्रयास' नहीं रहा, यह तो मेरे लिए 'आत्मिक रूपांतरण' की प्रक्रिया बन गई। मैंने जाना कि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य केवल एक विचारक नहीं, एक जीता-जागता युग हैं। उन्होंने एक नहीं, अनेक युगों का मार्ग प्रशस्त किया।

इस शोध यात्रा में मुझे यह स्पष्ट हुआ कि यदि युगऋषि आचार्य जी के जीवनदर्शन को भारत सहित विश्व के नागरिक आत्मसात करें, तो न केवल सामाजिक असमानताएँ समाप्त होंगी, बल्कि एक सहिष्णु, शिक्षित, आत्मनिर्भर और आध्यात्मिक दृष्टिकोण से समृद्ध मानव समाज की स्थापना होगी।

मेरा यह भी मानना है कि आज जब वैश्विक सभ्यता अनेक संकटों – जैसे मानसिक तनाव, पारिवारिक विघटन, नैतिक पतन, पर्यावरण असंतुलन और वैचारिक भ्रम – से जूझ रही है, तब गुरुदेव के साहित्य और चिंतन से प्रेरणा लेकर पुनः एक जीवन-दृष्टि विकसित की जा सकती है, जो संतुलन, समरसता और मानव-कल्याण की ओर अग्रसर हो।

इस शोध के माध्यम से मैंने यह भी जाना कि गुरुदेव ने मानवता को केवल भाषणों और लेखों के माध्यम से नहीं, बल्कि स्वयं आचरण करके जीकर दिखाया। उन्होंने जीवन भर सादा जीवन जिया, निजी

सुख-सुविधाओं का परित्याग किया, पत्नी भगवती देवी के साथ एक तपस्वी दांपत्य जीवन जिया, और राष्ट्र व समाज के लिए समर्पित जीवन का उदाहरण प्रस्तुत किया।

यह स्पष्ट है कि उनका संपूर्ण जीवन 'मानव में देवत्व' की स्थापना और 'धरती पर स्वर्ग' के अवतरण के लिए ही था। उन्होंने मनुष्य को उसकी महानता का बोध कराया, उसे आलसी भाग्यवादी नहीं, कर्मठ सृजनकर्ता बनने की प्रेरणा दी।

इस शोध के माध्यम से मैंने केवल 'व्यक्तित्व' और 'कार्य' का विवेचन नहीं किया है, बल्कि उस भावभूमि को पकड़ने का प्रयास किया है, जो गुरुदेव के समस्त प्रयासों के मूल में रही — और वह है 'मानवता'।

## ७.६. आत्म-साक्षात्कार : मेरा भाव और श्रद्धा

इस शोध को लिखते समय मैं कई बार मौन हो गया। शब्द नहीं मिलते थे; विचारों से अधिक भाव उमड़ते थे। ऐसा प्रतीत होता था जैसे गुरुदेव की चेतना मेरे भीतर उतर रही हो। कभी अश्रु बनकर, कभी प्रेरणा बनकर।

मैं यह स्वीकार करता हूँ कि मेरे पास उनकी विशालता को पूरी तरह समझने की सामर्थ्य नहीं है, परंतु जितना भी समझ पाया हूँ, वही मेरे लिए अमूल्य है। इस शोध के माध्यम से यदि मैं एक भी पाठक या जिज्ञासु को गुरुदेव के साहित्य, चिंतन या कार्य से जोड़ सका, तो यही मेरी सार्थकता होगी।

मैं स्वयं इस शोधकार्य से आत्मिक रूप से गहराई तक जुड़ गया हूँ। यह मेरे लिए केवल शैक्षणिक अन्वेषण नहीं, बल्कि एक साधना बन गई। प्रत्येक अध्याय लिखते हुए, मैंने उनके विचारों को स्वयं में उतरते हुए अनुभव किया। उनका साहित्य मेरे लिए केवल ग्रंथ नहीं, जीवन के दिशा-निर्देशक बन गए।

## निष्कर्ष:

अंततः मैं यही कहना चाहूँगा कि मेरा यह शोध एक विनम्र प्रयास है — उस ऋषि चेतना को समझने और व्यक्त करने का, जिसने न केवल मानवता को नवदृष्टि दी, बल्कि उसे एक अनुकरणीय मार्ग भी दिखाया। मेरी दृष्टि सीमित हो सकती है, मेरी भाषा अल्प हो सकती है, लेकिन मेरा भाव और श्रद्धा अगाध है।

यदि मेरा यह शोधप्रबंध किसी एक जिज्ञासु को भी गुरुदेव के साहित्य के अध्ययन या जीवन को अनुकरणीय मानने की प्रेरणा दे सके, तो मैं मानूँगा कि मेरा यह प्रयास सार्थक हुआ। यही मेरी आंतरिक संतुष्टि और शोध की पूर्णता होगी।

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य एक व्यक्ति नहीं, एक चेतना हैं — जो काल, देश और परिस्थिति से परे होकर आज भी मानवता का पथदर्शन कर रही है।

मेरा यह शोध उनके श्रीचरणों में एक विनम्र श्रद्धा-सुमन है।

*— गोवर्धन आड़कुजी बिसेन*

*शोधार्थी*

# ८. शोध सार

## ८.१. भूमिका

"मनुष्य में देवत्व का उदय और धरती पर स्वर्ग का अवतरण"—यह कोई भावनात्मक कल्पना नहीं, अपितु युगद्रष्टा तपस्वी पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा प्रतिपादित, प्रतिपालित और जीवन में पूर्णतः आत्मसात किया गया वह व्यावहारिक दर्शन है, जो उनके समग्र चिंतन, साधना और सेवा के केंद्र में स्थित रहा है। यह दर्शन न केवल उनके व्यक्तिगत जीवन का पथदर्शक रहा, बल्कि करोड़ों व्यक्तियों के जीवन में नैतिक, आध्यात्मिक एवं सामाजिक दिशा देने वाला एक युगानुकूल अभियान भी बन गया।

बीसवीं शताब्दी के मध्य काल में, स्वतंत्र भारत के नव निर्माण की प्रक्रिया जहाँ राजनीतिक दृष्टि से सक्रिय थी, वहीं सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर नैतिक मूल्यों का ह्रास, जातीय विघटन, आस्थाहीनता और मानसिक दुविधा जैसे संकट स्पष्ट दिखाई देते थे। ऐसे जटिल संक्रमण काल में पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का अवतरण एक युग-परिवर्तनकारी घटना सिद्ध हुआ। वे केवल एक संत, तपस्वी या लेखक भर नहीं थे, अपितु एक ऐसे आध्यात्मिक वैज्ञानिक और चिंतक थे, जिन्होंने भारतीय संस्कृति के गूढ़ तत्वों को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उतरने योग्य व्यावहारिक स्वरूप में प्रस्तुत किया।

उनका जीवनदर्शन किसी एक पंथ, संप्रदाय या समुदाय तक सीमित नहीं रहा। उन्होंने वसुधैव कुटुंबकम् की उदात्त भावना को आत्मा की गहराइयों से अनुभूत कर उसे अपने जीवन की कार्यदिशा बना लिया। उनकी दृष्टि में धर्म का अर्थ केवल कर्मकांड या आडंबर नहीं था, बल्कि वह मानवता के मूल मूल्यों की प्रतिष्ठा थी—सहयोग, करुणा, अनुशासन, स्वावलंबन, सेवा और साधना के समन्वित स्वरूप में।

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का सम्पूर्ण चिंतन, साहित्य और क्रियात्मक कार्य मानव-मात्र के उत्कर्ष हेतु समर्पित रहा। उन्होंने साधना, सेवा और सृजन को जीवन की त्रैतीय आधारशिलाएं घोषित करते हुए व्यक्ति के आंतरिक विकास से लेकर समाज के सामूहिक पुनरुत्थान तक की सम्पूर्ण प्रक्रिया को अपने विचारों और कार्यक्रमों के माध्यम से मूर्त रूप प्रदान किया।

आज जब मानवता पुनः गहरे संकटों—जैसे नैतिक क्षरण, भोगवाद, पर्यावरणीय असंतुलन, हिंसा, और मानसिक तनाव—से जूझ रही है, तब पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा प्रतिपादित जीवनदर्शन की प्रासंगिकता और भी अधिक बढ़ जाती है। ऐसे समय में यह शोधप्रबंध एक प्रयास है—उनके विचारों और कार्यों का मानवता की कसौटी पर विश्लेषण करने का, और यह देखने का कि उनके जीवन और सन्देश में आज के विश्व को क्या समाधान प्राप्त हो सकता है।

यह शोधकार्य न केवल युगऋषि के विराट व्यक्तित्व और बहुआयामी कृतित्व का विवेचन करता है, अपितु उनके द्वारा प्रतिपादित मानवीय मूल्यों, सामाजिक दृष्टिकोणों और आध्यात्मिक अनुशासनों की समसामयिकता की पड़ताल करता है। यह मानवता के नवनिर्माण हेतु उनके अवदान को समझने की एक गहन और शोधपरक यात्रा है।

## ८.२. आचार्यजी के जीवन दर्शन में समाहित उनका व्यक्तित्व

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का जन्म २० सितंबर १९११ को उत्तर प्रदेश के आँवलखेड़ा ग्राम में हुआ। धार्मिक परिवेश में पले-बढ़े आचार्यश्री को बचपन से ही आध्यात्मिक संस्कार और सेवा भाव मिला। उनका

बाल्यकाल करुणा, सेवा, निर्भयता और संवेदना से भरा हुआ था। प्राणियों के प्रति आत्मीयता और आध्यात्मिक साधना की ओर उनका झुकाव प्रारंभ से ही स्पष्ट था।

उन्होंने जीवन के प्रारंभिक वर्षों में ही यह सिद्ध कर दिया कि सेवा, आत्मबोध और नैतिकता जैसे गुण एक युगप्रवर्तक व्यक्तित्व का आधार बन सकते हैं। स्वदेशी चेतना, शस्त्रविद्या और साहसिक हस्तक्षेप उनके भीतर निहित मानवता, संस्कृति और न्याय की भावना को दर्शाते हैं। उनका जीवन यह सिखाता है कि आध्यात्मिकता, नैतिकता और साहस— मानवता की रक्षा के लिए समान रूप से आवश्यक हैं।

आचार्यश्री का जीवन करुणा और निष्कलंक सेवा का पर्याय था। जात-पाँत या सामाजिक स्थिति की परवाह किए बिना उन्होंने सेवा को ही सच्चा धर्म माना। चाहे वह दलित छपको अम्मा की करुणा से भरी सेवा हो या अत्याचारी हुब्बालाल पटवारी जैसे व्यक्ति की निष्कपट सेवा। उनका आचरण "पाप से घृणा करो, पापी से नहीं" को जीवंत करता है। जीवों के प्रति करुणा की भावना गाय और कुत्ते की रक्षा जैसे प्रसंगों से स्पष्ट होती है।

उनकी आध्यात्मिक यात्रा को दिशा मिली महामना पं. मदन मोहन मालवीय द्वारा प्रदत्त गायत्री मंत्र की दीक्षा से। वे केवल साधक या चिंतक ही नहीं, एक सच्चे देशभक्त भी थे। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भाग लिया और जेल भी गए। उनका राष्ट्रप्रेम स्वदेशी उद्योगों के विकास और समाज सुधार में भी परिलक्षित होता है।

हिमालय की साधना, महापुरुषों का सान्निध्य, तथा अखण्ड ज्योति के माध्यम से जनचेतना का विस्तार— इन तीनों ने उनके जीवन को मानवता का एक सशक्त मिशन बना दिया। वंदनीया भगवती देवी शर्मा ने उनके मिशन में सशक्त सहयोगिनी की भूमिका निभाई।

२ जून १९९० को गायत्री जयंती के दिन उन्होंने अपनी सूक्ष्म साधना के माध्यम से महाप्रयाण किया। आचार्यश्री का जीवन सेवा, तपस्या और परोपकार की अद्भुत मिसाल है, जो आज भी मानवता को दिशा दे रहा है।

## ८.३. पं. श्रीराम शर्मा आचार्यजी के प्रमुख कार्य

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य एक युगद्रष्टा, समाज सुधारक एवं आध्यात्मिक मार्गदर्शक थे, जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन मानवता की सेवा, नैतिक पुनर्निर्माण और विश्व शांति की स्थापना हेतु समर्पित किया। उन्होंने साधना, सेवा और स्वाध्याय के त्रिसूत्रीय मार्ग द्वारा मानव चेतना को जाग्रत करने का मार्ग प्रशस्त किया।

इस शोधप्रबंध में उनके कार्यों को सात भागों में विभाजित किया गया है:

१. संगठन एवं मिशन
२. महत्वपूर्ण संस्थापनाएँ
३. प्रमुख अभियान
४. इक्कीसवीं सदी का संविधान — युग निर्माण सत्संकल्प
५. शत सूत्री कार्यक्रम
६. सप्त सूत्री आंदोलन
७. साहित्यिक योगदान

पं. श्रीराम शर्मा आचार्यजी ने अखिल विश्व गायत्री परिवार और युग निर्माण योजना की स्थापना की, जो आज सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक जागरण का वैश्विक केंद्र बन चुका है। युगतीर्थ आँवलखेडा, मथुरा में अखण्ड ज्योति संस्थान और गायत्री तपोभूमि, हरिद्वार में शांतिकुंज, ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान और देव संस्कृति विश्व विद्यालय एवं देशभर में गायत्री शक्तिपीठ, प्रज्ञापीठ और चेतना केंद्र जैसे प्रज्ञा संस्थान की स्थापना कर उन्होंने युग परिवर्तन के संगठित कार्य को दिशा दी। इक्कीसवीं सदी का संविधान, विचार क्रांति अभियान, नारी जागरण अभियान, यज्ञ अभियान, आपदा राहत अभियान, शत सूत्री कार्यक्रम और सप्त सूत्री आंदोलन उनके प्रमुख प्रेरणादायी कार्य हैं। उनका साहित्यिक योगदान मानवता को दिशा देने वाला जीवन-दर्शन है।

## ८.३.१. संगठन एवं मिशन

जब मानवता दिशाहीन और मूल्यविहीन हो जाती है, तब कोई युगद्रष्टा मार्गदर्शन हेतु आगे आता है। पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ऐसे ही युगप्रवर्तक संत, विचारक एवं साधक थे, जिन्होंने मनुष्य में देवत्व का उदय और धरती पर स्वर्ग का अवतरण के संकल्प के साथ अखिल विश्व गायत्री परिवार की स्थापना की। यह संगठन केवल धार्मिक मंच न होकर सेवा, साधना और त्याग के त्रिमार्ग से जनचेतना को जाग्रत करने वाला मानवतावादी आंदोलन है।

उन्होंने मानवता के समग्र उत्थान हेतु युग निर्माण योजना का सूत्रपात किया, जिसकी औपचारिक शुरुआत १९६२ में हुई। इसका मूल मंत्र था— हम बदलेंगे, युग बदलेगा। यह योजना व्यक्ति, परिवार और समाज के नैतिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक उत्थान का आधार बनी। इसका उद्देश्य था मनुष्य में देवत्व का उदय और धरती पर स्वर्ग का अवतरण। युग निर्माण योजना तीन मूल स्तंभों पर आधारित है:

१. व्यक्ति निर्माण – आत्मपरिष्कार से समाज सुधार
२. परिवार निर्माण – सशक्त समाज की नींव
३. समाज निर्माण – विचार क्रांति से नवजागरण

इसके प्रमुख उद्देश्य थे – वसुधैव कुटुंबकम् की भावना, भावनात्मक परिष्कार, स्वस्थ शरीर, स्वच्छ मन, सभ्य समाज की स्थापना। इसका प्रतीक लाल मशाल ज्ञान, ऊर्जा और जनजागरण का प्रतिनिधित्व करता है।

यह आंदोलन केवल आध्यात्मिक नहीं, बल्कि सामाजिक, नैतिक, शैक्षिक और वैज्ञानिक सुधार का सशक्त अभियान है, जिसने आज भी करोड़ों लोगों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाया है। पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा प्रवर्तित यह मिशन तब तक चलता रहेगा जब तक समाज में देवत्व और आदर्श मानवता की स्थापना नहीं हो जाती।

## ८.३.२. महत्त्वपूर्ण स्थापनाएँ

युगतीर्थ आँवलखेड़ा, पं. श्रीराम शर्मा आचार्य की जन्मस्थली, केवल एक स्थान नहीं बल्कि युगधर्म, विचारधारा और क्रांति का केंद्र है। यहाँ शिक्षा, नारी सशक्तिकरण, स्वास्थ्य सेवा और आत्मिक जागरण के माध्यम से समाज का नव निर्माण हो रहा है। यह भूमि आज भी साधकों और समाजसेवियों को प्रेरणा देती है।

अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा से आरंभ हुआ विचार आंदोलन न केवल भारत, बल्कि विश्वभर में सेवा, साधना और जागरण का संदेश पहुँचा रहा है। यह संस्थान सीमित संसाधनों में भी असाधारण कार्य करने की प्रेरणा देता है और आज भी गुरुदेव-माताजी की चेतना का जीवंत प्रतीक बना हुआ है।

गायत्री तपोभूमि, मथुरा एक साधना केंद्र ही नहीं, बल्कि धर्म, विज्ञान और समाज के समन्वय से युग परिवर्तन का कार्यक्षेत्र बना। यहाँ से समाज को दिशा देने वाले कर्णधारों का निर्माण हुआ और यह स्थल आत्मकल्याण के साथ लोकमंगल की प्रेरणा देता है।

शांतिकुंज, हरिद्वार आध्यात्मिकता, नैतिकता और आत्म-विकास का विश्वस्तरीय केंद्र है। यहाँ साधना और सेवा के माध्यम से साधक समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने की प्रेरणा पाते हैं। यह स्थान भारतीय संस्कृति के पुनरुत्थान का सशक्त प्रतीक है।

ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय का केंद्र है, जहाँ योग, ध्यान, यज्ञ चिकित्सा आदि को वैज्ञानिक प्रमाणों के साथ प्रस्तुत कर अंधविश्वास को तर्कशील दृष्टिकोण से बदलने का प्रयास किया जा रहा है।

देवसंस्कृति विश्वविद्यालय केवल शिक्षा का नहीं, बल्कि जीवन निर्माण का केंद्र है, जहाँ विद्या, साधना और सेवा का समन्वय भावी पीढ़ियों को समाजोन्मुख बनाता है। यह गुरुदेव के दिव्य स्वप्न का मूर्त रूप है।

गुरुदेव द्वारा स्थापित देशभर में गायत्री शक्तिपीठ, प्रज्ञापीठ एवं चेतना केंद्र जैसे प्रज्ञा संस्थान न केवल धार्मिक स्थल हैं, बल्कि ये आत्मविकास, सामाजिक सुधार और राष्ट्र निर्माण के प्रेरणास्त्रोत हैं। ये संस्थान विचार क्रांति और मानवता की सेवा के प्रतीक बन चुके हैं।

### ८.३.३. महत्त्वपूर्ण अभियान

विचार क्रांति अभियान पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा आरंभ किया गया एक मानवीय आंदोलन है, जो विचारों की शुद्धि से व्यक्ति, समाज और युग को बदलने का प्रयास करता है। यह आंदोलन वर्तमान युग की विषमताओं, तनावों और संकटों में आशा की एक किरण है। यह आह्वान है कि हम अपने विचारों को दिव्य बनाकर मानवता को नवजीवन दें।

नारी जागरण अभियान केवल नारी सशक्तिकरण तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह संपूर्ण मानवता के उत्थान का प्रयास था। आचार्य जी ने नारी को राष्ट्र निर्माण की धुरी बताया और भविष्यवाणी की कि "अब नारी का वर्चस्व प्रमुख होगा।" यह अभियान समाज में समता, सम्मान और न्याय की स्थापना के लिए प्रेरक सिद्ध हुआ।

यज्ञ अभियान पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा आरंभ एक सामाजिक-आध्यात्मिक क्रांति है, जिसका उद्देश्य था — मानव जीवन में मूल्यों का पुनर्स्थापन। उन्होंने यज्ञ को कर्मकांड नहीं, बल्कि आत्मशुद्धि और सामाजिक शुद्धिकरण का वैज्ञानिक माध्यम बताया। यज्ञों के माध्यम से उन्होंने सेवा, अनुशासन और लोकमंगल की चेतना जगाई, जिससे समाज में नैतिकता और चेतना का नवसंचार हुआ।

गायत्री परिवार का आपदा राहत अभियान यह दर्शाता है कि अध्यात्म का वास्तविक स्वरूप सेवा और करुणा में है। पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के अनुसार मनुष्य तभी ईश्वर के निकट है, जब वह पीड़ित मानवता की सहायता करता है। शांतिकुंज से प्रेरित यह अभियान केवल भौतिक सहायता नहीं, बल्कि करुणा और आत्मीयता का संदेश है, जो समाज में सच्चे परिवर्तन और मानवता की रक्षा का आधार बनता है।

### ८.३.४. इक्कीसवीं सदी का संविधान — युग निर्माण सत्संकल्प

इक्कीसवीं सदी का संविधान — युग निर्माण सत्संकल्प केवल धार्मिक घोषणापत्र नहीं, बल्कि मानवता के नैतिक पुनर्जागरण की योजना है, जो आत्मनिर्माण के माध्यम से समाज व युग परिवर्तन की प्रेरणा देता है।

युग निर्माण योजना के अठारह सत्संकल्प नैतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक रूपांतरण की आधारशिला हैं। ये न केवल व्यक्ति के चरित्र को शुद्ध व सशक्त करने का आह्वान करते हैं, बल्कि समाज व राष्ट्र के समग्र उत्थान की दिशा भी निर्धारित करते हैं।

इनमें आत्मनिरीक्षण, संयम और सेवा जैसे गुणों पर बल दिया गया है, वहीं व्यसन, अंधविश्वास, जातीयता और सामाजिक असमानताओं का विरोध करने की प्रेरणा भी निहित है। हम सुधरेंगे—युग सुधरेगा जैसे वाक्य व्यक्ति को विवेकशील, आत्मनिर्भर और करुणामयी बनने हेतु प्रेरित करते हैं।

इन सत्संकल्पों में वैश्विक आध्यात्मिक क्रांति की आवश्यकता व्यक्त की गई है, ताकि व्यक्ति संकीर्णताओं से ऊपर उठकर समाज कल्याण में जीवन समर्पित करे। यही नव-जागरण की वह प्रक्रिया है जो विश्व को उज्ज्वल भविष्य की ओर ले जा सकती है।

## ८.३.५. शत सूत्री कार्यक्रम

युग निर्माण योजना का उद्देश्य आत्म-निर्माण, परिवार-निर्माण और समाज-निर्माण के माध्यम से स्वस्थ शरीर, स्वच्छ मन और सभ्य समाज की रचना करना है। यह अभियान १९६३ से अखण्ड ज्योति परिवार द्वारा आरंभ किया गया, जिसका उद्देश्य आर्थिक विकास से अधिक नैतिक उत्थान है। यह आंदोलन आत्म-परिष्कार व समाजोत्थान के लिए एक सशक्त साधना के रूप में कार्य कर रहा है।

शत-सूत्री कार्यक्रम के प्रथम ३० सूत्र स्वास्थ्य, शिक्षा, आत्मनियंत्रण और सामाजिक नैतिकता से संबंधित हैं। ये सूत्र समाज के समग्र कल्याण के लिए आवश्यक हैं, जिनमें केवल शारीरिक स्वास्थ्य ही नहीं, अपितु मानसिक और आध्यात्मिक चेतना के विकास की भी प्रेरणा है। आचार्य श्री ने शिक्षा को जीवन निर्माण का आधार बनाते हुए इसे मानवीय मूल्यों की स्थापना का माध्यम माना।

सूत्र ३१ से ६० धर्म, नैतिकता, सहयोग और परोपकार को जीवन में उतारने की प्रेरणा देते हैं। इनमें न केवल धार्मिकता का व्यवहारिक दृष्टिकोण है, बल्कि समाज को न्यायसंगत और मानवतावादी बनाने की दिशा भी समाहित है। प्रतिभावान व्यक्तियों से आह्वान किया गया है कि वे साहित्य, पत्रकारिता, संगीत और कला के क्षेत्र में मिशनरी भावना से समाज के कल्याण हेतु कार्य करें।

सूत्र ६१ से १०० समाज में सद्भाव, सेवा, कला, शासन और अध्यात्म का समन्वय स्थापित करते हैं। इनमें कला और तकनीकी माध्यमों को मानव उत्थान का साधन माना गया है, वहीं अंततः यह स्पष्ट किया गया है कि समाज में स्थायी सुधार आत्मपरिष्कार और अंतःकरण की शुद्धता से ही संभव है। त्याग, उपासना, परमार्थ और नैतिक क्रांति के माध्यम से ही युग परिवर्तन की संकल्पना साकार हो सकती है।

## ८.३.६. सप्तसूत्री आंदोलन

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा प्रवर्तित सात आंदोलन—साधना, स्वास्थ्य, शिक्षा, स्वावलंबन, पर्यावरण, नारी जागरण, और व्यसन मुक्ति व कुप्रथा उन्मूलन—नवयुग की पुनर्संरचना के स्तंभ हैं। इनका उद्देश्य व्यक्ति, परिवार और समाज को जागरूक, आत्मनिर्भर और सद्गुण सम्पन्न बनाना है, जिससे विश्व में शांति, समृद्धि और सद्भाव की स्थापना संभव हो सके।

साधना आंदोलन केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि मानवीय चारित्रिक बल और आत्मशक्ति के माध्यम से विश्वकल्याण का अभियान है, जो आज भी प्रासंगिक है।

स्वास्थ्य आंदोलन जीवनशैली, नैतिकता और सामूहिक चेतना के विकास की दिशा में एक सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक पहल थी, जिससे रोगों की रोकथाम और समग्र मानव विकास संभव है।

स्वावलंबन आंदोलन आत्मनिर्भरता, श्रम की प्रतिष्ठा और सामाजिक न्याय को समर्पित था। यह आंदोलन आज की चुनौतियों के संदर्भ में भी अत्यंत उपयोगी है, जो समाज को आत्मसजग एवं समरस बनाता है।

पर्यावरण आंदोलन प्रकृति संरक्षण के साथ-साथ मानवीय अस्तित्व की रक्षा का प्रयास था। छोटे प्रयासों से भी बड़े बदलाव संभव हैं—यह आचार्य जी ने सिद्ध किया।

नारी जागरण आंदोलन महिलाओं को शिक्षित, स्वावलंबी और सशक्त बनाकर पूरे समाज के नैतिक उत्थान की आधारशिला रखता है।

व्यसन मुक्ति एवं कुप्रथा उन्मूलन आत्मिक जागरण का माध्यम है, जिसने लाखों को जीवन की दिशा बदलने की प्रेरणा दी। आज भी ये विचार समाज सुधार के लिए अत्यंत प्रासंगिक हैं।

### ८.३.७. साहित्यिक योगदान

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का जीवन एक तपस्वी, समाज-सुधारक और युगद्रष्टा ऋषि का था, जिसने साधना, सेवा और सृजन को समर्पित लगभग ६५ वर्ष जिए। उनका यह जीवन केवल आत्मिक उत्थान नहीं, बल्कि संपूर्ण मानवता के जागरण की यात्रा थी, जिसकी धुरी बनी—उनकी लेखनी।

उन्होंने लेखन को आत्मशोधन, समाज निर्माण और युग परिवर्तन का माध्यम बनाया। लगभग ३,२०० पुस्तकों की रचना के माध्यम से उन्होंने जीवन के हर पहलू को छुआ—व्यक्ति, परिवार, समाज, स्वास्थ्य, धर्म, विज्ञान, स्त्री जागरण, बाल एवं युवा निर्माण और नैतिक मूल्यों की स्थापना। उनकी लेखनी ने असंख्य लोगों को जागरूक कर सृजनात्मक दिशा दी।

उनका साहित्य केवल मौलिक रचनाओं तक सीमित नहीं रहा। वेद, उपनिषद, गीता, योग और तंत्र ग्रंथों का सरल व वैज्ञानिक भाष्य कर उन्होंने ऋषि परंपरा को जनसामान्य के लिए सुलभ बनाया। आधुनिक संदर्भों में इन ग्रंथों की प्रासंगिकता सिद्ध करना उनकी विशेषता रही।

उनका लेखन धार्मिक और आध्यात्मिक सीमाओं से परे, जीवनोन्मुख और युगानुकूल रहा। उन्होंने विज्ञान और अध्यात्म का समन्वय करते हुए जीवन के रहस्यों को उजागर किया। 'अखंड ज्योति' जैसी पत्रिका के माध्यम से उन्होंने एक वैचारिक आंदोलन खड़ा किया, जो आज भी करोड़ों लोगों को प्रेरित कर रहा है।

उनका साहित्य सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन, संस्कार जागरण और परिवार निर्माण की प्रक्रिया का मार्गदर्शक है। उन्होंने जीवन के प्रत्येक पक्ष को आत्मोत्थान की दृष्टि से देखा। उनका लेखन मात्र पठन सामग्री नहीं, बल्कि आत्मचिंतन और आत्मपरिष्कार का उपकरण है।

इस प्रकार, पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का साहित्यिक योगदान मानवता को दिशा देने वाला जीवन-दर्शन है, जो युगों तक श्रद्धा, सेवा, विवेक और आत्मबल का आलोक देता रहेगा।

## ८.४. निष्कर्ष एवं शोध की उपादेयता

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का जीवन और कार्य मानवता के कल्याण के लिए एक अभूतपूर्व प्रेरणा है। उनका जीवनदर्शन न केवल आध्यात्मिक उत्थान, बल्कि समाज सुधार और वैश्विक शांति की दिशा में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है। पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने भारतीय संस्कृति और मानवता के समृद्ध विचारों को न केवल व्यावहारिक रूप में प्रस्तुत किया, बल्कि उन्होंने समाज के हर वर्ग को जागरूक और सशक्त बनाने के लिए अपने साहित्य, आंदोलनों और संस्थाओं के माध्यम से अभूतपूर्व कार्य किया।

आचार्यश्री के विचारों और कार्यों का आज भी समकालीन समाज पर गहरा प्रभाव है। उन्होंने मानवता के लिए जो मार्गदर्शन प्रदान किया, वह आज के संकटपूर्ण समय में अत्यधिक प्रासंगिक है, जहाँ नैतिक पतन, सामाजिक विषमताएँ, पर्यावरणीय असंतुलन और मानवता के संकट गहरे होते जा रहे हैं। उनके विचारों की कसौटी पर आज का समाज और युग परखने से यह स्पष्ट होता है कि उनका जीवनदर्शन और उनकी शिक्षाएँ आज भी उतनी ही महत्वपूर्ण हैं, जितनी वे उनके समय में थीं।

उनका 'युग निर्माण योजना', 'शत सूत्री कार्यक्रम', 'सप्त सूत्री आंदोलन' और 'इक्कीसवीं सदी का संविधान' जैसे अभियानों में निहित नैतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक प्रासंगिकता की आवश्यकता को बल देती है। पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का साहित्य केवल एक ज्ञान का भंडार नहीं है, बल्कि यह आत्मचिंतन, समाजोत्थान और व्यक्तिगत परिवर्तन का एक सशक्त माध्यम है। उनके कार्यों का उद्देश केवल व्यक्ति निर्माण ही नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र निर्माण के माध्यम से समग्र मानवता का उत्थान करना है।

शोध का यह प्रयास पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के योगदान को समर्पित है, जो उनके जीवन और कार्यों के महत्व को समझने और उसे आधुनिक संदर्भ में लागू करने का एक उत्तम प्रयास है। यह शोध न केवल आचार्य जी के जीवन को और उनके विचारों को समग्र रूप से प्रस्तुत करता है, बल्कि यह समाज, संस्कृति और मानवता के भविष्य में एक आदर्श परिवर्तन की दिशा में एक प्रेरणा स्रोत भी बनता है। उनके सिद्धांतों को अपनाकर समाज में नैतिक, मानसिक और आध्यात्मिक सुधार की प्रक्रिया को साकार किया जा सकता है।

इस शोध के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का योगदान मानवता के पुनर्निर्माण के लिए अपरिहार्य और अमूल्य है, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए एक अमिट धरोहर के रूप में कार्य करेगा।

# ९. संदर्भ सूचि (Bibliography)

## क) पुस्तके (Books)


१. ब्रह्मवर्चस, *पं. श्रीराम शर्मा आचार्य वाड्.मय-१: युगद्रष्टा का जीवनदर्शन*, अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा, संशोधित संस्करण २०२१, पृष्ठ ४-८, १०-१२, ४२-६४, ७२-७७, ८६-८८, ९२-९५, ६२०-६२२, ७१२-७४५.

२. ब्रह्मवर्चस, *पं. श्रीराम शर्मा आचार्य वाड्.मय-६६: युग निर्माण योजना – दर्शन, स्वरूप व कार्यक्रम*, अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा, संशोधित संस्करण २०१२, पृष्ठ ९०-११५, २९०-३१२, ४७८-४९९.

३. युग निर्माण योजना, *आओ जाने युगऋषि को*, युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट गायत्री तपोभूमि मथुरा, पुनरावृत्ति २०१८, पृष्ठ ३-७७, ८२-८३.

४. ब्रह्मवर्चस, *ब्रह्म कमल*, श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट, शान्तिकुंज, हरिद्वार, प्रथम खण्ड २०११, पृष्ठ १३-२१, २८-३०, ७७-८०, १०७-११०, १३०-१३१, १७३-१७५, २०५-२०७, २०९-२१४. २४७.

५. युग निर्माण योजना, मथुरा, *दुनिया बदलेगी इन विचारों से*, युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट, मथुरा, २०१८, पृष्ठ १५-२७, २८-३१-३२.

६. युग निर्माण योजना, *युग निर्माण योजना- एक परिचय*, युग निर्माण विस्तार ट्रस्ट गायत्री तपोभूमि मथुरा, पुनरावृत्ति २०१८, पृष्ठ १८-२५, २७-३०, ३५-११४.

७. ब्रह्मवर्चस, *शक्तिपीठ संदर्शिका*, श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट शांतिकुंज, हरिद्वार, तृतिय संस्करण २०१२, पृष्ठ ११-३५.

८. शर्मा, पं. श्रीराम आचार्य, *मातृ सत्ता श्रद्धांजलि पुस्तकमाला*-७७ - विचार क्रांति अभियान, युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि, मथुरा, प्रथम संस्करण - १९९५, पृष्ठ ३-८०.

९. शर्मा, पं. श्रीराम आचार्य, *कर्मकाण्ड भाष्कर*, युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि, मथुरा, संशोधित संस्करण – २००८, पृष्ठ २५-७६

१०. शर्मा, पं. श्रीराम आचार्य, *इक्कीसवी सदी का संविधान*, युग निर्माण विस्तार ट्रस्ट गायत्री तपोभूमि मथुरा, २०१०, पृष्ठ –संपूर्ण.

११. शर्मा, पं. श्रीराम आचार्य, *युग निर्माण का शत सूत्री कार्यक्रम*, श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट, पुनर्मुद्रण १९९९, पृष्ठ ५-६४.

१२. शर्मा, पं. श्रीराम आचार्य, *हमारे सात आंदोलन*, युग निर्माण विस्तार ट्रस्ट गायत्री तपोभूमि मथुरा, २०१०, पृष्ठ १-३२.

१३. शर्मा, पं. श्रीराम आचार्य, *हमारी वसीयत और विरासत*, युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि, मथुरा, १९९९.

१४.शर्मा, पं. श्रीराम आचार्य, *सुनसान के सहचर*, शान्तिकुंज, हरिद्वार, १९९५.

## ख) पत्र-पत्रिका (Magazine/Periodicals)

१. पं. श्रीराम शर्मा आचार्य, *अखण्ड ज्योति (मासिक)*, अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा, मार्च १९५८.

२. पं. श्रीराम शर्मा आचार्य, *अखण्ड ज्योति (मासिक)*, अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा, अप्रैल १९६३.

३. डॉ. प्रणव पण्ड्या, *अखण्ड ज्योति (मासिक)*, अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा, जुलाई २०२५.

## ग) वेबसाइट (Web Sources)

१. All World Gayatri Pariwar, http://literature.awgp.org, व्यक्तित्व निर्माण युवा शिविर-युग निर्माण योजना एक परिचय, पृष्ठ २६

२. All World Gayatri Pariwar, http://literature.awgp.org, अखण्ड ज्योति, अगस्त १९५३,

३. Vicharkranti Pustakalaya, https://vicharkrantibooks.org शक्तिपीठ संदर्शिका.

४. All World Gayatri Pariwar, https://www.awgp.org, विचार क्रांति अभियान.

५. Vicharkranti Pustakalaya, https://vicharkrantibooks.org, विचार क्रांति अभियान.

६. All World Gayatri Pariwar, https://www.awgp.org, गायत्री परिवार का यज्ञ अभियान

७. All World Gayatri Pariwar, www.awgp.org, युग निर्माण मिशन का घोषणा-पत्र - इक्कीसवी सदी का संविधान, पृष्ठ संपूर्ण.

८. All World Gayatri Pariwar, https://www.awgp.org, युग निर्माण का शत सूत्री कार्यक्रम

९. Vicharkranti Pustakalaya, https://vicharkrantibooks.org, हमारे सात आंदोलन.

१०. Shantikunjvideo Gayatri Pariwar, www.youtube.com/@shantikunjvideo. पर उपलब्ध डॉ. प्रणव पंड्या जी के उद्बोधन

११. Shantikunjvideo Gayatri Pariwar, www.youtube.com/@shantikunjvideo. पर उपलब्ध डॉ. चिन्मय पंड्या जी के उद्बोधन

१२. AWGP Yoth TV, www.youtube.com/@AWGPYOTHTV पर उपलब्ध विरेश्वर उपाध्याय जी के उद्बोधन

१३. Vireshwar Upadhyay Live, www.youtube.com/@VIRESHWARUPADHYAY LIVE पर उपलब्ध विरेश्वर उपाध्याय जी के उद्बोधन

१४.Jan Expresslive, https://janexpresslive.com, हरिद्वार शांतिकुंज: आपदा की घड़ी में सेवा का सशक्त प्रतीक - दि. ७ अगस्त २०२५.

१५. All World Gayatri Pariwar, https://www.awgp.org, देशभर में चलाये जा रहे रचनात्मक आन्दोलन.

१६. All World Gayatri Pariwar, https://www.awgp.org, शांतिकुंज से उत्तरकाशी आपदा राहत दल रवाना, दि. ८ अगस्त २०२५.

१७.Navbharat Times, https://www.navbharattimes.indiatimes.com दि. २७ अप्रैल २०२५.

# १०. शोधार्थी का परिचय

## १. व्यक्तिगत परिचय :

- **नाम** : इंजी. गोवर्धन बिसेन "गोकुल"
- **जन्म तिथी** : दि. २५/०९/१९६६.
- **माताजी** : स्व. लक्ष्मीबाई बिसेन
- **पिताजी** : स्व. आड़कुजी बिसेन
- **पत्नी** : सौ. तेजेश्वरी बिसेन
- **पुत्री** : डॉ. रिनल बिसेन,
  M.B.B.S., M.D. (Community Medcine)
- **पुत्र** : इंजी. गौरव बिसेन,
  B.Tech., M.Tech. (I.I.T. Kharagpur)
- **मुल गांव** : मु. पो.- बडेगांव (तिरोडा), जिला - गोंदिया (महाराष्ट्र)
- **वर्तमान निवास** : गायत्रीकुंज, गजानन कालोनी, अंगूर बगिचा रोड, गोंदिया - ४४१६१४.
- **संपर्क** : ९४२२८३२९४१, **ई-मेल** : gabisen66@gmail.com

## २. शैक्षणिक योग्यता :

- H.S.C. (Science)
- Diploma in Civil Engineering
- B.A. (Hindi Literature)
- Certificate in Natural Health and Yogic Sciences,

## ३. संप्रति :

- महाराष्ट्र शासन के मृद एवं जलसंधारण विभाग (जिला परिषद, गोंदिया) में जलसंधारण अधिकारी (राजपत्रित) पद से सेवानिवृत्त.

## ४. अभिरुचि :

- पोवारी, मराठी एवं हिंदी में कविता, संस्मरण, बोधकथा एवं लेख लिखना, किताबे पढना, सामाजिक कार्य करना.

## ५. साहित्यिक उपलब्धियाँ / ग्रंथसंपदा :

### अ) प्रकाशित पुस्तके :

- **पोवारी भाषा:**
  - *मयरी* (काव्य संग्रह)
  - *पुरखाइनको गौरवशाली इतिहास* (इतिहास, संस्मरण एवं लघु बोध कथाएँ)
- **मराठी भाषा:**
  - *मृदगंध* (काव्य संग्रह)

**ब) भविष्यकालिन पुस्तके**:

- पोवारी काव्यसंग्रह - १
- हिंदी काव्यसंग्रह - १
- मेरी बाल कहानिया - १

**क) अन्य:**

- भारत के सबसे बडे बहुभाषी साहित्य मंच 'स्टोरीमिरर', 'अमर उजाला' 'शॉपीजन' और 'प्रतिलिपी' के वेबसाईटपर पोवारी, मराठी एवं हिंदी की कई कथा, कविताएँ प्रकाशित.
- कई सामाजिक पत्रिकाए, साझा काव्य संग्रह एवं समाचार पत्र में कविता एवं लेख प्रकाशित
- मराठी, हिंदी एवं पोवारी साहित्य के प्रत्यक्ष मंच तथा आभासी मंच से काव्यपाठ.
- अब तक स्वयं की ४ पुस्तकों सहित जरुरतमंद साहित्यकारों के लिए किफायती मुल्योपर लगभग ३० पुस्तकों का आय.एस.बी.एन. के साथ प्रकाशन.

## ६. सम्मान एवं पुरस्कार:

- स्टोरीमिरर द्वारा "साहित्यिक ब्रिगेडियर" पद से सम्मानित. सप्टेंबर-२१ मे लगातार दो बार ऑथर ऑफ दि विक का सम्मान और ऑथर ऑफ दि ईयर - २०२१ के लिए नामित.
- BMP पब्लिशर द्वारा उत्कृष्ट साहित्य सृजन हेतु "साहित्य कला रत्न" से सम्मानित.
- कृष्ण कलम मंच द्वारा "राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान- २०२२" तथा "राष्ट्रीय साहित्यकार सम्मान- २०२२" से सम्मानित.
- अखिल भारतीय पोवार (पँवार) महासंघ भारत द्वारा ४थे राष्ट्रीय पोवारी साहित्य सम्मेलन में 'पोवारी साहित्य रत्न पुरस्कार' से सम्मानित.
- साहित्य और समाजसेवा के क्षेत्र में अद्वितीय योगदान के लिए एशिया बुक ऑफ वर्ल्ड रेकार्ड श्रीलंका, धराधाम अंतराष्ट्रीय गोरखपुर, दिव्य प्रेरक कहानिया मानवता अनुसंधान केंद्र आजमगढ़ और गौरैया विहंग फाउंडेशन नालंदा द्वारा संयुक्त रूप से 'अंतर्राष्ट्रीय मगध गौरव सम्मान' से सम्मानित
- पोवारी, हिंदी और मराठी के कई आभासी पटल पर काव्यस्पर्धा में सहभागी होकर राज्यस्तरपर प्रथम, व्दितीय क्रमांक का सम्मानपत्र. तथा उत्कृष्ट लेखन के लिए कई बार सम्मान पत्र.

## ७. अन्य उपलब्धियाँ:

- **राष्ट्रीय अध्यक्ष:** राष्ट्रीय पोवारी साहित्य समिती, अ. भा. क्षत्रिय पोवार (पँवार) महासंघ.
- **कार्यकारिणी सदस्य:** अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार (पँवार) महासंघ
- **जिल्हाध्यक्ष:** अखिल भारतीय साहित्य परिषद, नवी दिल्ली (गोंदिया जिल्हा).
- **अध्यक्ष:** गजानन महाराज सेवा संस्थान, गजानन कालोनी, गोंदिया.
- **प्रचारक:** अखिल विश्व गायत्री परिवार, शांतिकुंज, हरिद्वार (उत्तराखण्ड).